मसीही
शिष्यता की
निर्देश-पुस्तिका

मसीही शिष्यता की निर्देश-पुस्तिका

विलियम मॅकडोनाल्ड

ALETHIA Publications

मसीही शिष्यता की निर्देश-पुस्तिका

By William MacDonald

Copyright ©2004 by William MacDonald under the title *The Disciple's Manual*.
Originally published by Christian Missions in many Lands, Inc. Translated and published by **Alethia Publications** with permission. All rights reserved.

First Hindi Edition 2017.

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, Electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any Information storage and retrieval system, without permission in writing from the publisher.

Published by
ALETHIA Publications.
Chandra Niwas Building, Bitco Point, Nashik Road 422101,
Maharashtra, India.
www.alethiabooks.com

ALETHIA Publications is the publishing division of
Alethia Publication & Training Pvt. Ltd.
alethiapublications@gmail.com

Price: ₹300

Translated by Sameer Salve
Cover Design: John Battenfield

Printed and bound in India by
GS Media, Secunderabad 500 067
E-mail: printing@ombooks.org

विषय–सूची

प्रस्तावना 9

कार्य के प्रशिक्षण पर एक स्पष्टीकरण. 11

भाग 1 – मसीही शिष्यता

1. शिष्य बनना 17
2. यीशु की क्रांतिकारी शिक्षाएं 21
3. यह तत्वरुप में भिन्न प्रशिक्षण है – भाग 1 (लूका 6:12–26) 29
4. यह तत्वरुप में भिन्न प्रशिक्षण है – भाग 2 (लूका 6:27–38) 35
5. यह तत्व रुप में भिन्न प्रशिक्षण है – भाग 3 (लूका 6:31–49) 41
6. सुरक्षित भविष्य पायें (मत्ती 6:19–34) 45
7. उसने कहा, ''अपना सब कुछ त्याग दो'' (लूका 14:25–35) 49
8. परमेश्वर से सौदेबाजी न करे (मती 20:1–16) 55
9. अपने धन से मित्र बना लो (लूका 16:1–15) 61
10. वह पाप जिसे कोई अंगीकार नहीं करता (1 तीमुथिसुस 6:6–10; 17–19) 67
11. परमेश्वर के लिये केवल सर्वोत्तम 73
12. 20/20 दृष्टि (2 कुरि. 5:9–21). 79

भाग 2 – मसीही चरित्र

13. यीशु के समान बनने का लक्ष्य रखें 87
14. आप आपके प्रेम के लिये पहिचाने जाये 101
15. दूसरों के प्रति तरस रखें 107
16. पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते जाओ (इफिसियों 5:18) 109

17. नीचें का स्थान ग्रहण करें 113
18. हे प्रभु, मुझे तोड़ दीजिये 117
19. स्वयं को पवित्र रखें 133

भाग 3 – मसीही जीवन

20. सम्पूर्ण समर्पण 141
21. आप निश्चय जान सकते है 155
22. अनंतकालीन उद्धार 161
23. बप्तिस्मा लो 167
24. प्रभु – भोज (लुका 22:7–20, 1 कुरिन्थियों 11:13–34) 171
25. अब मार्गदर्शन के विषय में 173
26. अपनी बाइबल को जाने 179
27. ग्रहण योग्य ठहरने के लिये अध्ययन करें 191
28. सदैव प्रार्थना करें 195
29. यीशु के साथ आपका प्रतिदिन का जीवन 199
30. आराधक बनें 203
31. मसीह की मण्डली से प्रेम करो 207
32. शालीनता का आचरण करे 221
33. नासमझ न बने 225
34. कभी हार न मानें 231
35. जीवित एवं शुद्ध विवेक रखे 235
36. जहां तक संभव हो सबके साथ मेलमिलाप से रहे 239
37. त्यागपूर्वक जीवन जीएं 245
38. जीभ को लगाम दो 249
39. विवाह 257
40. माता–पिता के उत्तरदायित्व पूरे करना 261
41. हमारा नहीं परन्तु परमेश्वर का तरीका 265

भाग 4 – मसीही सेवा

42. अपने वरदानों को जाने 271
43. सबके सेवक बने 273
44. व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की चुनौती 277
45. वचन का प्रचार करें – सेवकाई की महिमा 283

46. अनजाने में स्वर्गदूतों का आतिथ्य किया 289
47. विश्वास का जीवन 293
48. यीशु के लिए आवेशी बनें 297
49. लोगप्रसिद्धी से बचें. 301
50. स्थानीय मण्डली के विशेषाधिकार और जिम्मेदारियां 305
51. कलीसिया (मण्डली) रोपन. 309
52. सुसमाचार प्रचार द्वारा कलीसिया की उन्नति 313
53. व्यक्तिगत रूप से शिष्य बनाना. 317
54. नेतृत्व प्रशिक्षण 319
55. पैराचर्च संस्थाएं. 323
56. जितना छोटा उतना बेहतर 327

भाग 5 – समारोप

57. अंतिम सुझाव 333

परिशिष्ट

परिशिष्ट अ – उसे दिखाएं, उसका डंका न बजाएं. 337
परिशिष्ट ब – सुसमाचार प्रचारकिय जीवन–शैली. 343
परिशिष्ट क – शिष्यता की जीवन–शैली. 347
परिशिष्ट ड – मुझे मण्डलियां पसंद है. 351
परिशिष्ट इ – क्या हमें पासबान को परिश्रमिक के रूप में रखना चाहिए? 355
परिशिष्ट फ – परमेश्वर के समान सोचना. 359
परिशिष्ट ग – मसीही साहित्य – संभावनाएं और सीमाएं. 363
परिशिष्ट च – मौलिक, महत्वपूर्ण और अनावश्यक विषय. 367
टिप्पणियां 375

प्रस्तावना

हम में से प्रत्येक की एक भूमिका है

जेब निकोलसन

इस पुस्तक के समझदार पाठक स्वाभाविक रुप मे जान लेंगे कि यह पुस्तक लेखक ने केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रम के लिये नहीं लिखी हे। मसीही शिष्यता आधी सदी से अधिक वर्षो तक उसका जीवन एवं सेवकाई रही है। यह पुस्तक शिष्यों और शिष्य बनाने वाले दोनों को व्यवहारिक सहायता देने के अभिप्राय से लिखी गई है। यह एक सामान्य पाठक के लिए संरचित एक छोटी पुस्तिका नहीं है। यद्यपि इसका लेखन दृढ और सीधे तौर पर है, इसमे समय, सावधानी पूर्वक विचार और क्रिया करने की आवश्यकता है।

इसकी विस्तारवादी प्रकृति के कारण संभव है कुछ व्यक्ति युवा विश्वासियों को शिष्यता की प्रक्रिया में संलग्नता की दिशा में निराशा का अनुभव करें, ''इस मे तो वे बाते भी है, जो मै दुसरो को नही सिखा सकता।'' आपका प्रत्युत्तर होगा, ''क्योकि मैं स्वयं उन पर अमल नहीं करता।''

ठीक है, आप सब कुछ नहीं कर सकते इस विचार के कारण आप जो कर सकते हैं उसे करने से पीछे न हटें। 'किसी' भी स्कूल शिक्षक से यह आशा नहीं की जाती मानो कि वह किसी छात्र को किंडरगार्डन से लेकर स्कूली शिक्षा पूरी करने तक शिक्षा दे। निर्माण की कोई परियोजना जो एक कलीसिया के समान 'जटिल' है, एक ही व्यक्ति को नही सौपी जा सकती। प्रभु चाहते है कि प्रत्येक परियोजना में अपना भाग पूरा करे। कलीसिया को दिये गये विभिन्न दान–वरदानो का वर्णन करने के बाद पौलुस लिखते है, ''परन्तु सब से प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है '' (1 करि. 12:11)। हम में से प्रत्येक को एक बडी भूमिका दी गयी है हमे परमेश्वर की समग्र योजना में जिसे पूरा करना है। शत्रु आपके कान मे निराशा के शब्द फुस फुसाएगा, आप से कहेगा कि आप कहाँ असफल हुए है, और आप क्या करने के लिए सुसज्जित नहीं है। परन्तु आप उसकी बात न सुनें। प्रभु आपको सामर्थ और योग्यता देगा ताकि वे आप से जो भी काम चाहते

है, आप उसे कर सकें, ''क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन मे इच्छा और काम, दोनो बातों को करने का प्रभाव डाला है '' (फिलि. 2:13)। इसलिए, शिष्य बनाने के लिये आप क्या योगदान दे सकते है? वे कौन से क्षेत्र है, जिसमे आप विश्वास करते हैं कि अनतंकालीन समय के लिए कुछ काम करने प्रभु ने आपकी सहायता की है? उसने आपको क्या सिखाया है जो आप उत्सुक अध्ययन के दौरान दुसरों को बता सकते है? क्या आप बीमारों से मिलने जाते है? क्या आप विधवाओं को उत्साहित करते हैं? एक युवक को साथ ले और उसे वह स्वाद चखाएं जिसे याकूब 'सच्चा धर्म' कहता है। उसे दिखाए कि कैसे मुलाकात कम समय में की जाये, कैसे उसे मधुर और आत्मिक रुप मे लाभपद बनाया जा सकता है।

क्या आप कुछेक युवाओं को सिखा सकते हैं कि बाइबिल टीका या बाईबिल के किसी 'सॉफ्टवेयर' का उपयोग कैसे करते हैं? या फिर वाइन्स के शब्दकोष से किसी शब्द का अर्थ कैसे खोजा जाये? तब उन्हें रविवार दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करे और बाद में रसोईघर के उसी टेबिल पर पुस्तके फैला दे। यह उनके जीवन को बदलने वाला कार्य हो सकता है। कुछ नवयुवक जिन्हें संगीत में रुचि है, उन्हे गीत गवाने में अगुवाई करते समय सहायता की आवश्यकता होती है। कुछ जरुरत मंद या आयु में अधिक व्यक्तियों से जुडी किसी कार्यशाला या परियोजना में उन्हें आमंत्रित करके आप उनमें प्रभु के काम के प्रति वास्तविक रुचि जगा सकते है और उद्धारकर्ता के लिए सच्चे परिश्रम का स्वाद चखा सकते हैं।

मेरे 10 वर्षे के पुत्र को एक शिष्य बनानेवाला नवयुवक ले गया कि एक वरिष्ठ व्यक्ति के फर्नीचर को जमाने में मदद करे। बाद में उसने फोन पर मुझे बताया, ''पिताजी, मै सीख रहा हूँ कि प्रभु के लिए पसीना बहाना अच्छी बात है।'' वास्तव मे यह अच्छी बात है। क्या आपकी मंडली में शिष्यता के लिये कोई युवा विश्वासी नही है? मैं यह साहस कर सकता हूँ कि आपसे कहूँ, क्या आप मदद करने तैयार है और उस शिष्य बनाने वाले महान् प्रभु से निवेदन करे, कि कुछ युवाओं को भेजें, वह सहर्ष आपकी बात का उत्तर देगा।

कार्य के प्रशिक्षण पर एक स्पष्टीकरण

किसी शिक्षक के लिये यह निष्कर्ष निकालना, आसान होगा कि यदि उसके शिष्य ऐसी किसी पुस्तक को पढ़ ले, तो वे समुचित रीति से प्रशिक्षित हो जाएंगे। गलत! पुस्तिका में दी गई सामुग्री महत्वपूर्ण है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। इसमे मसीही शिष्यता के कुछ प्रमुख विषयों को सम्मिलित किया गया है, परन्तु कार्य कैसे करे के विषय का व्यवहारिक ज्ञान इसमे अछूता है। अवश्य है कि शिष्य को पुस्तक पढ़ने के साथ –साथ कार्य के समय प्रशिक्षण भी दिया जाए उसे मसीही सेवा को विभिन्न शाखाओं से परिचित कराया जाना चाहिए। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि वह इन बातों को उसके शेष जीवन भर करता रहेगा। परन्तु यह जानने में सहायक होगा कि उसके दान वरदान किस क्षेत्र में हैं।

यह प्रभु के कार्य करने का तरीका *(modus operandi)* था। वह बारहो के साथ रहा, उन्हें वचन और उदाहरण से शिक्षा दी, तब उन्हे महिमामय मिशन पर भेजा। उसके तौर तरीके अवश्य ही सर्वश्रेष्ठ है। यदि उनसे भी बेहतर तरीके होते, वह उन पर अमल करता। किसी का प्रशिक्षक बनना, व्यक्ति को भयभीत करता है। आप अपने आप को चोट खाने तैयार बनाते हैं। आप वास्तव में क्या है, आपके शिष्य जान लेंगे– मस्से, झुर्रियां और अन्य सभी बातें। चिन्ता न करे। नव–युवक सिद्धता की आशा नही रखते। वे केवल ईमानदारी और पारदर्शिता चाहते है, आप जैसे है, वे आपको वैसा ही स्वीकार करेंगे।

एक यू. एस. मरीन अधिकारी अपने सैनिकों की युद्ध मे अगुवाई करता है। जब वे आग बढते है, वह पीछे नहीं बैठता, वह उनके सामने खड़ा होता है। उन्होंने मूल बातें पहिले ही सीख ली है – और उन्हे उनका व्यवहारिक अभ्यास भी है – अब वे अधिकारी के उदाहरण से सीखी गई बातों पर अमल करते है।

इस तरीके पर अमल करने मे असफल होना, वह कारण है जो बहुत से शिष्यता प्रशिक्षण कार्यक्रमों मे त्रुटियों या असफलताओं का उत्तरदायी है। अगुवो को ऐसे बाईबिल शिक्षक पाने मे जरा भी कठिनाई नहीं है जो पुस्तकों के द्वारा सिखा सकते है, पर उन्हे वे व्यक्ति नहीं मिलते जो अपने जीवनों से आदर्श प्रस्तुत करे। कुछ शिक्षक आपत्ति कर सकते है कि वे सबकुछ सीखने के लिये आतुर शिष्य

के सामने सब बातों को नही कर पाएंगे। ऐसी दशा में उन्हें कुछ दुसरे व्यक्तियों को लाना चाहिए जो विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ हैं। इसमें पहिले से विचार करने और योजना बनाने की आवश्यकता है, पर यह संभव है। बहुत लंबे समय से प्रशिक्षण उनके शिष्यों को बहुत देर तक सारी सूचनाएं देकर सतुंष्ट हो जाते है, परन्तु कार्य को सरलता और प्रभावी ढंग से करने की योग्यता के बिना अकेला छोड़ देते है। यह योग्यता कदम–ब–कदम व्यवहारिक अनुभव से आती है।

शिष्यता कार्यक्रम की एक सफल सभा से स्नातक एक शिष्य ने मिशन – फिल्ड से लिखा, ''यदि इस कार्यक्रम में मुझे व्यवहारिक प्रशिक्षण न दिया जाता, तो मै यहां आकर अपने आप से यह प्रश्न करता, अब मैं क्या करुं?'' सौभाग्यवश, जब वह वहां पहुंचा, उसे ठीक – ठीक पता था कि उसे क्या करना था। वह अपने काम में तन्मय हो गया और परमेश्वर की आधीनता में सफलता पाने लगा। आरंभ करने के लिये – प्रतिदिन का व्यक्तिगत शांत समय एक अच्छा स्थान है। प्रशिक्षक को चाहिए कि वह शिष्यों को दर्शाए कि वह वचन का पक्का अध्ययन कैसे करता है, प्रभु से संदेश कैसे पाता है, और प्रभावशाली रुप में प्रार्थना कैसे करता है।

तब, उन सेवकाईयों मे आगे बढ़ने की इच्छा करनी चाहिए जो अपेक्षाकृत कम खतरनाक है। अवश्य है कि शिष्य अपने प्रशिक्षक को नाके पर, चौराहो और दुकानों पर सुसमाचार की परचीयां बांटते हुए देखें, जहां किसी दुसरे व्यक्ति से संपर्क होता है। तब वह भी कुछ सुसमाचार की परचीयां रखे और स्वयं भी वैसा ही करे। अवश्य है कि प्रत्येक प्रशिक्षक वचन का गंभीर अध्ययन करने वाला बनने के लिये उत्साहित किया जाये, अन्यथा वह भागना चाहेगा, पर उसके पास संदेश नहीं होगा। यदि उसके पास सही धर्मशिक्षा और आलोचकों के लिये उत्तर देने तयार रहना है तो अवश्य है कि वह अपनी बाइबिल को मानें। कृपा करके, हे शिक्षक, शिष्य को बताये कि वचन का अध्ययन कैसे करना चाहिए, अन्यथा किसी और को यह सिखाने की जिम्मेवारी सौंप दे।

जब कोई प्रशिक्षक किसी सभा मे बोलते हैं, वे विद्यार्थी को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि वह साक्षी दे। हम सबको कहीं न कहीं आरंभ करना होगा। यदि शिष्य डरपोक है, तो उसे यह कार्यभार सौंप दे कि प्रत्येक रविवार वह स्थानीय कलीसिया में किसी ऐसे व्यक्ति से स्वयं का परिचय कराए जिससे पहिले कभी बात न की हो, और वह उनसे बातचीत करेगा। यह बातचीत उसके लिये स्थानीय कलीसिया से बाहर किसी अजनबी के साथ सुसमाचार बाँटते के कार्य को अधिक आसान बना देगी।

आगे, उसे सिखाया जाये कि वह सुसमाचार संदेश कैसे तैयार करे और प्रचार करे। आशा है कि अंत में प्रशिक्षक उसे प्रोत्साहित करेगा और परामर्श देगा कि वह कैसे सुधार और बेहतरी लायें। जैसे जैसे वह प्रगती करता है, युवा विश्वासी को सण्डे–स्कूल या गृह बाइबिल कक्षा में प्रचार करने का अवसर प्राप्त होने की लालसा करनी चाहिए। खुले आसमान के नीचे प्रचार करना एक अमूल्य प्रशिक्षण है। आरंभ में यह अति भयभीत करनेवाला है, पर अकसर यह बाह्य संपर्क के लिए वास्तविक प्रेम को उभारता है। सबसे बड़ा लाभ जो इसमें हैं कि यह प्रचार करने वाले को अपनी वाणी निखारने की शिक्षा देता है। यदि श्रोता उसे सुन नहीं पाते, वे बिखर जाते है। आपको उनकी रुचि बनाकर रखनी होगी, वे बंधक श्रोता नहीं है।

हम दूसरों के साथ प्रार्थना करके प्रार्थना के बारे में बहुत कुछ सीखते है। अवश्य है कि शिष्यता कार्यक्रम मे यह एक प्राथमिक विषय हो। प्रशिक्षक को अपने प्रार्थना के जीवन के बारे में बताना चाहिए।

भेट या मुलाकात करना महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षक सेवानिवृत्तों के गृह, अस्पतालों और अन्य प्रशिक्षण केंद्रों में भेट या मुलाकात का समय नियत करे। साथ ही लोगो के घरों मे सुसमाचार के लिये या मसीहियो की उन्नति और सहायता के लिये भेंट या मुलाकात की जा सकती है। प्रशिक्षक बात करे, शिष्य बैठे और सुने। वह सीखें कि मुलाकात और पूछतांछ के बाद, बातचीत का रुख आत्मिक महत्व की बातो की ओर कैसे मोड़ा जाता है।

प्रशिक्षक के लिये आदर्श अवसर है कि वह उन सभो में बैठकर सुने, जहां प्रशिक्षक या कलीसिया के प्राचीन परामर्श दे रहे हो। लोगों को जिनमें सहायता की आवश्यकता होती हैं उन समस्याओं की संख्या और विभिन्नता के प्रकार जान कर वह चकित रह जायेगा। और परामर्श देनेवाले को उत्तर के लिये परमेश्वर के वचन पर निर्भर होते देख, वह प्रभावित हो जायेगा। जिन्हे बाइबिल का गंभीरता पूर्वक ज्ञान है, उन्हें इस क्षेत्र में अधिक लाभ मिलता है।

जब भी कोई विवाह या अंतिम क्रिया की विधि हो, प्रशिक्षक को तैयारी करके रखनी चाहिए कि कहीं उसे उसमे भाग लेने का अवसर मिलेगा। संभव है कि शिष्य किसी दिन सभा का प्राचीन बनें। इस विचार के अनुसार बेहतर होगा कि शिष्य को कभी –कभी प्राचीनों की सभा मे बैठने दिया जाये जबकि वहां कोई गोपनीय विचार विमर्श न चल रहा हो। मुझे आशा है कि प्रशिक्षक अपने युवा शिष्य को यह सीखने का अवसर देगा कि गीत गाने में कैसे अगुवाई करे, या किसी सभा की अध्यक्षता कैसे करे। ऐसा करने से श्रोता गण एक फूहड प्रदर्शन देखने से बच सकते है जो पूर्ण रीति से स्तरहीन होते है।

एक शिष्य को सभा स्थल में कार्यवाही देखना और उन्हें करना सिखाए जाने की आवश्यकता है। अकसर कुर्सियाँ जमाने, गीत की पुस्तके रखने, संदेश को टेप पर रिकार्ड करने जैसे काम करने होते है। एक शिष्य सेवा करके अपनी महानता को प्रदर्शित कर सकता है।

यहाँ तक कि युवाओं को भी अतिथि सत्कार करने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। उन्हें आगंतुको का अभिवादन करने और उन्हे भोजन कराने लाने – ले जाने जैसे काम करने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है। मुझे खुशी होती है जब युवा यीशु के नाम में दया और कृपा के कार्य अचानक कर बैठते हैं। यह एक आदत है, जिसे विकसित किया जा सकता है।

भाग - 1

मसीही शिष्यता

अध्याय - 1

शिष्य बनना

शब्द 'शिष्य' और 'शिष्यता' पर बहुत काम किया जा चुका है, अब उन्हें उपयोग करनेवाले जो चाहे, वही अर्थ निकाला जाता है। वे हमे लेविस कॅरोलस् के उस शिशे का स्मरण कराते है जिसमे हमटी–डमटी 'महिमा' शब्द का उपयोग करता है। जब एलिस ने उस से पूछा कि उसका शब्द महिमा से अभिप्राय क्या है? उसने कहा, ''जब मैं किसी शब्द का उपयोग करता हूँ तो मैं जो चाहता हूँ, उसका वही अर्थ निकालता हूँ न उससे अधिक, न उस से कम।''

परन्तु यदि हम शिष्यता पर यीशु की शिक्षाओं को समझना चाहते है, हमे समझना होगा कि इस शब्द से उसका (यीशु का) अभिप्राय क्या था – न कि हमने उससे क्या समझा। हमे यीशु की शिक्षाओं में और उसके प्रेरितो के लेखनों में शिष्यता का जो वर्णन मिलता है, उसी की धारणा को समझना होगा और साथ ही हमे शिष्यता का परीक्षण यह सीखने के लिये करना होगा कि यीशु शिष्यता की कौनसी अवधारणा प्रस्तुत कर रहे थे। यह सब करके, हम पाते है कि शिष्य एक छात्र है, सीखनेवाला है। शिष्यता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गुरु या शिक्षक एक छात्र को उसकी धर्म शिक्षा और विधियो मे प्रशिक्षित करता है। यह बात प्रभु यीशु के द्वारा बारह चेलो को नियुक्त करने के तरीके मे देखी गई है, ''कि वे उसके साथ –साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करे''(मरकुस 3:14)। ये पुरुष उद्धारकर्ता के साथ रहे, उसकी धर्मशिक्षा को सुना उसकी जीवनशैली का अवलोकन किया, और तब उसके संदेश को फैलाने आगे बढ़े। यह काम करते समय प्रशिक्षण था।

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिए गये निर्देश मे भी हम शिष्यता को पाते है, ''और जो बाते तू ने बहुत से गवाहो के सामने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौप दे जो दूसरो को भी सिखाने के योग्य हो'' (2 तीमुथियुस 2:2)।

हम आसानी से समझ सकते हैं कि इस पद मे विश्वासियों की चार पीढियां है, पौलुस, तीमुथियुस, विश्वास योग्य पुरुष, और अन्य। मसीही विश्वास का विस्तार, सभी विश्वासियों द्वारा इस वृद्धिकारक

प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देने पर निर्भर है। प्रशिक्षण की यह विधि सबसे उत्तम प्रविधि होनी चाहिए, क्योंकि यदि प्रशिक्षण का इस से बेहतर प्रारुप होता, प्रभु यीशु ने उसे उपयोग किया होता।

'शिष्यता' का लक्ष्य है कि सीखनेवाला उसको सिखानेवाले के समकक्ष बन जाये। ''चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है'' (मती 10:25)। एक शिक्षक स्वयं की उपलब्धियों के स्तर से आगे अपने शिष्य को नही ले जा सकता। ''चेला अपने गुरु से बड़ा नही परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा'' (लूका 6:40)। ''आप जो नही जानते, वह सिखा नही सकते'। आप उस मार्ग पर अगुवाई नहीं कर सकते जिस पर आप नहीं गये।''

प्रत्येक सच्चा विश्वासी प्रभु यीशु मसीह का शिष्य है। उन बारहों के साथ और भी लोग थे जो यीशु के पीछे चलते थे और उसने उन सबको भी शिष्य माना है। उनके बीच शिष्यता की श्रेणियां थी, उनके विश्वास और आज्ञाकारिता के आधार पर यह बात तय की जाती थी। ''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो'' (मती 9:29)। ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे'' (यूहन्ना 8:31)।

कभी – कभी अविश्वासियों को भी चेले के रूप मे संबोधित किया गया है। यूहन्ना 2:23–24 में हम पढते है कि कुछ लोगों ने उसके नाम पर विश्वास किया परन्तु यीशु ने उन पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने कभी नया जन्म नहीं पाया था। पुनः, यूहन्ना 6:66 में, ''इस पर उसके चेलो में से बहुत से उलटे फिर गये और उसके बाद उसके साथ न चले।'' उन्होंने परमेश्वर के पुत्र को त्याग कर यह प्रदर्शित किया कि वे प्रभु के नही थे। उनकी शिष्यता सतही थी (पढे, यूहन्ना 8:31–33)।

प्रभु यीशु वास्तविक शिष्य है, यशायाह 50:4–5 में वह कहता है, *''प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवाले की जीभ दी है कि मै थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानू। भोर को वह मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।''* प्रत्येक भोर वह अपने पिता के सामने जाता था कि उस दिन के लिये निर्देश प्राप्त करे।

मसीही शिष्यता का पाठ्यक्रम बाइबिल के पन्नो में मिलता है। एक परिपक्व शिष्य बनने के लिये, बाइबिल को जानना और उसकी आज्ञा मानना अवश्य है। नये नियम मे जिन बातो पर प्रमुख रुप में जोर दिया गया है उनमें से एक मसीही चरित्र का विकास है।

- मती 5:1–12 यहां परमेश्वर के राज्य के नागरिक का चरित्र –वर्णन है।
- यूहन्ना 15:1–17 यह प्रभु मे बने रहने का जीवन कहलाता है।
- गलतियों 5:22–23 यहां आत्मा के फल का वर्णन है।
- इफिसियों 6:10–20 यहां परमेश्वर के समस्त हथियारों का वर्णन है।
- 2 पतरस 1:5–11 भले चरित्र (स्वभाव) की कुछ आवश्यक बातो का वर्णन किया गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि चरित्र (स्वभाव) सेवकाई (सेवा) से अधिक महत्वपूर्ण है। शिष्यता का अर्थ इस पुस्तक के समान किसी पुस्तक के अध्यायो को पढ़ने से कही अधिक है। यह कार्य करते हुए प्रशिक्षण पाना है। इसका अर्थ है शिक्षक के साथ समय व्यतीत करना, और मसीही सेवा के विभिन्न स्वरुपों मे

उसके साथ शामिल होना। पुरुषों के संदर्भ मे, इसका अर्थ–सेवकाईयों में सक्रिय रुप में भाग लेना हो सकता है जैसे कि प्रचार, शिक्षण, व्यक्तिगत सुसमाचार–प्रचार कार्य, खुले मैदान में सुसमाचार प्रचार, परामर्श देना और मुलाकाते करना। स्त्रियों के संदर्भ में तीतुस 2:3–5 के समान शिक्षा देना, परामर्श देना और मुलाकात करना हो सकता है। जबकि एक शिष्य इन गतिविधियों में सलग्न होता है, वह शीघ्र ही अपने दान–वरदानों की पहचान करता है और प्रशिक्षक के बिना, स्वतंत्र रुप में सेवा करने योग्य बनता है। तब उसे कुछ और युवा विश्वासी खोजने चाहिए जिन्हें वह शिष्य बना सके।

शिष्य बनानेवाले को उसके शिष्यों का मित्र बनना चाहिए, भले ही सीखने वाले शिष्य की सीखने की गति कम हो। प्रशिक्षक बहुत अधिक तंग करने वाला और मांग करने वाला नहीं होना चाहिए। भला हो कि वह उनकी सुने। अच्छा होगा यदि वह किसी खेलकूद या सामाजिक आयोजनों के अवसरों पर अपने शिष्यो से मुलाकात कर सके, और सकंट के समय पहिले से निर्धारित समयो के अतिरिक्त कभी भी मेल मुलाकात करने तैयार रहे। सभी शिष्यों के लिये एकसमान यथावत कार्यक्रम पर अमल करने की अपेक्षा बेहतर होगा कि शिष्य बनाने वाला व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर हो। पवित्रात्मा संप्रभु है; वह सदैव एक जैसे तरीके से काम नहीं करता।

आने वाले पन्नों में आप बहुत से ऐसे विषयों को पाएंगे जो आप एक युवा विश्वासी को सिखाना चाहेंगे जिसके लिये आप प्रशिक्षक के रुप में कार्य कर रहे है। और बहुत से विषय है जिन्हें आप सूची मे जोड सकते है। परन्तु जो दिये गये है, वे कम से कम आरंभ करने में काम आएंगे।

अध्याय - 2

यीशु की क्रांतिकारी शिक्षाएं

प्रभु यीशु मसीह एक क्रांतिकारी थे। किन्तु, जब हम ऐसा कहते है तब हमारे कहने का अर्थ यह नही होता कि वे सशस्त्र आतकंवादी थे जो सरकार को नष्ट करने पर आमादा थे। वे प्रेम के क्रांतिकारी थे, नफरत के नहीं। वे सेवा के क्रांतिकारी थे, तानाशाही के नही, वे उद्धार के क्रांतिकारी थे, विनाश के नही। जब हम कहते है कि यीशु क्रांतिकारी थे, तब हमारे कहने का अभिप्राय है कि उनकी शिक्षाएं तत्वरुप में इतनी अधिक भिन्न थी, जैसी इस पृथ्वी पर पहिले कभी नहीं दी गयी थी।

समस्त साहित्य में 'पहाडी उपदेश' के समान कुछ नही है। किसी अन्य महान अगुवे ने शिष्यता की ऐसी कठोर अहर्ताएं कभी तय नहीं की जैसी प्रभु यीशु ने तय की थी। किसी भी अन्य शिक्षा मे कभी ऐसे आत्मिक, नैतिक, या नीति संबंधी परिवर्तन नहीं किये, जैसे मसीही विश्वास में किये है।

दिक्कत यह है कि हम यीशु के वचनो के इतने अभ्यस्त हो चुके है कि हमने उसके क्रांतिकारी अभिप्रायों को विस्मृत कर दिया है। यह दुखद है कि हम उन्हे पढ़ सकते है, फिर भी हमें कुछ फर्क नहीं पड़ता। वे कभी भी हमे सहज रखने के लिये संरचित नहीं किये गये थे। उनका उद्देश्य हमारे जीवनों को रुपान्तरित करना और हमे जलते प्रकाश स्तंभ के रुप में और ज्वलनशील धुन के संदेश वाहक बनाकर भेजना था।

हम अकसर सोचते हैं कि यीशु जब यहां पृथ्वी पर थे, तब उनके साथ यात्रा करना अद्भूत अनुभव रहा होगा। हम कल्पना कर सकते है कि यीशु के और उनके शिष्य साथ–साथ चहल कदमी करते और बाइबल की लगातार चलनेवाली सभा में आनंद उठाते होगे। पर ऐसा नही था। यह झुलसाने वाला अनुभव अधिक था जिसमें चेलो ने उनकी पापमयता और असफलताओं को सीखा, और जिसमें उन्होंने सताव, दुख और मृत्यु के मार्ग पर चलने की बुलाहट को पाया।

यदि हम यीशु के कथनो को पढ़े और फिर भी अप्रभावित बने रहे, तो इसका अर्थ है कि हम उन्हे सही रुप में नही समझते। यदि हम उन्हें पढ़कर, उन्हे आसान समझते है, तो हमने मुद्दे की बात

को समझा ही नही है। यीशु की मांगे मानवीय शक्ति में असंभव है। मसीही शिष्यता का जीवन, हमारे भीतर निवास करनेवाले पवित्रात्मा की अलौकिक शक्ति के द्वारा ही संभव है।

आधुनिक मनुष्य ने प्रभु यीशु की उग्र सुधारवादी शिक्षाओं को स्वीकार करने का एक खतरनाक कौशल विकसित कर लिया है, और उनके वास्तविक अर्थ को चुरा लिया है, और उनमे इतना भी सार तत्व शेष नहीं बचा कि किसी बीमार के लिए सूप बनाया जा सके। परमेश्वर या मसीह के वचनो को शाब्दिक रुप मे लेने के बदले हमने धर्मविज्ञान के 60 तरीके बना लिये है कि उनकी व्याख्या करे। परिणाम यह है कि जो मसीहत नये–नियम के युग में थी और जो मसीहत हम आज देखते है उसमे बड़ा भारी अतंर है। आज मसीहत का अर्थ है, चर्च जाना जब भी सुविधाजनक हो, दान संग्रह मे धन देना, और यीशु को एक शाम देना जिसमें कोई काम न हो। क्या यह सच्ची मसीहत है? नही! सच्ची मसीहत, शिष्यता का एक उग्र सुधारवादी जीवन है, जिसमे बलिदान युक्त सेवा है, परमेश्वर के पुत्र के प्रति सम्पूर्ण समर्पण है। इसका अर्थ है सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धर्मिकता की खोज करना।

अपनी पुस्तक 'बॉर्न आफ्टर मिडनाईट' में ए. डबल्यू टोजर ने लिखा है:

> मसीह लोगों को क्रूस उठाने बुलाते है, पर हम उन्हे उसके नाम मे मजे करने बुलाते है, वह उन्हे संसार का परित्याग करने बुलाते है, पर हम उन्हे आश्वस्त करते है कि यदि वे केवल यीशु को ग्रहण कर ले, यह संसार उनके लिए सिपी के समान है। वह उन्हें दुख भोगने बुलाते है पर हम उन्हें बुलाते है कि वे आधुनिक सभ्यता की सभी मध्यम वर्गीय सुविधाओं का उपभोग करे। वह उन्हे स्वयं का इन्कार करने और मृत्यु के लिये बुलाते है, पर हम उन्हे तेजपत्र के हरे – हरे वृक्षों के समान फैलाने और यदि संभव हो तो धर्म के राशिचक्र के दयनीय पाचवे स्तर पर नक्षत्र, बनने के लिये बुलाते है, वे उन्हे पवित्रता के लिये बुलाते है, पर हम उन्हे सस्ती और दिखावटी खुशी के लिये बुलाते है जिसे आत्मसंयमवाद के छोटे से छोटे दार्शनिक भी उपहास करके अस्वीकृत करेंगे।[2]

एक अन्य स्थल मे टोजर ने लिखा है:

> हमारे प्रभु ने मनुष्यों से उसके पीछे चलने के लिये कहा, परन्तु उसने कभी भी मार्ग को आसान नही बनाया। वास्तव मे कोई भी यह स्पष्ट रुप मे समझ सकता है कि उन्होंने इस मार्ग को अत्याधिक कठिन दर्शाया। उसने चेलो से और संभावित शिष्यों से वे बाते भी कही है जिन्हे हम प्रभु के लिये मनुष्यो को जींतने की मनसा से जान बुझकर नही बोलते या उनको दोहराते नहीं। क्या वर्तमान युग के सुसमाचार प्रचारक को प्रश्नकर्ता से यह कहने का साहस होगा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पिछे चले। क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाएगा, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण गवांएगा, वह उसे पाएगा। और जब कोई हमसे पूछता है कि यीशु का अभिप्राय क्या था, जब उसने कहा – यह न सोचो कि मे पृथ्वी पर मेल कराने आया हूं, मै, मेल कराने नहीं परन्तु तलवार चलवाने...'' और हम उन्हें कितना लंबा –चौड़ा स्पष्टीकरण देते है।
>
> ऐसी कठोर और थकानेवाली मसीहत किसी विशेष मिशनरी या संसार के किसी पर्दे के पीछे किसी विश्वासी के लिये छोड़ दी गयी है। मसीहत का अंगीकार करनेवाले बड़े जनसमूहों मे वह

> नैतिक शक्ति नही है जो उन्हे ऐसे मार्ग पर ले चले जो इतना स्पष्ट और निश्चित है। तत्कालीन नैतिक वातावरण मे किसी दृढ़ और सुत्रमय विश्वास को समर्थन नहीं मिलता जैसा हमारे प्रभु और उनके प्ररितो द्वारा सिखाए गये विश्वास को मिला है। हमारे धार्मिक निरापद, संस्थानो मे तैयार होनेवाले नाजुक और क्षणभंगुर संतो की तुलना उन समर्पित और सच्चे बलिदानी विश्वासियो से नहीं की जा सकती, जिन्होंने एक समय मनुष्यों के बीच अपनी साक्षी दी थी। त्रुटियां हमारे अगुवो में है, वे लोगों से संपूर्ण सत्य कहने से डरते है। वे अब लोगों से कह रहे है कि परमेश्वर को वह दो 'जिस का दाम न चुकाना पड़े।' हमारी कलीसियाएँ इन दिनों में, कम से कम एक चौथाई, ऐसे मसीहियों से भरी है, जो नाजुक नस्ल के है, उन्हें नुकसान न पहुंचाने वाले आनंद के ऐसे भोजन का पोषण देना अवश्य है जो उनमें रुचि बनाकर रखे। धर्मविज्ञान के विषय में वे कुछ नहीं जानते। बिरले ही उनमें से किसी ने मसहित की महान् प्राचीनतम पुस्तकों मे से किसी एक को पढ़ा होगा। परन्तु उनमे से अधिकतर धार्मिक कल्पना और सनसनीखेज फिल्मों से परिचित हैं। आश्चर्य नहीं कि उनकी नैतिक एवं आत्मिक संरचना इतनी कमजोर है। ऐसे व्यक्तियों को विश्वास से जुड़े निर्बल व्यक्ति कहा जा सकता है, जो वास्तव मे उस विश्वास को नही समझते।[3]

ई. स्टेनली जोन्स ने भी मिलता–जुलता कथन कहा है:

> मनुष्य मसीहत का इंकार नहीं करते, बस, वे उसे निरापद बना देते हैं। वे मनुष्यों को मसीहत के एक हल्के स्वरुप से परिचित करा देते है ताकि वे वास्तविक, गंभीर बातो के प्रति अप्रभावित बन जाए (क्राइस्ट्स ऑल्टरमेटिव टु कम्युनिज्म से)।

प्रभु यीशु आज ऐसे मनुष्यों की खोज में है जो उनकी शिक्षाओं को शाब्दिक रुप मे ले, उन पर अमल करे, भले ही वे किसी और को उन पर अमल करता हुआ न देखे। वह ऐसे स्त्री – पुरुषों, युवकों और युवतियों की खोज में है, जो आत्मकेंद्रित जीवन जीकर थक चुके है, जो यह समझते है कि भौतिक वस्तुएँ खुशी नहीं देती, जो जानते है कि यहां मसीही लोग धन कमाने से अधिक किसी बड़े काम के लिये है। वह ऐसे शिष्यों की खोज मे है जो फैशन परेड़, व्यंजनों, सामाजिक उथलपुथल और देहसौंदर्य इत्यादि की तानाशाही से नफरत करते है। दुख के साथ सच कहना पड़ता है कि अकसर हम एक औसत मसीही की तुलना मे औसत कम्युनिस्ट या औसत सप्रंदायवादी में अधिक सच्चाई पाते हैं। हम संसार के उद्धारकर्ता के लिये जितना करना चाहते है लोग राजनैतिक और सामाजिक कारणों के लिये उससे कहीं अधिक करने के लिये तैयार है। हम परमेश्वर के मसीह के लिये जितना समर्पण दिखाते हैं उस से अधिक समर्पण वे झूठे धर्मो के प्रति दर्शाते है। हम उद्धारकर्ता के प्रेम से जितने प्रेरित है उससे अधिक वे 'डॉलर' से प्रेरित है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि कुछ बेहतर करने की– विशेष कर युवाओं में–अब भी भूख–प्यास हैं। अभी कुछ समय पहिले मैने एक सभा मे कुछ समर्पित युवाओं के बारे में कहा जो समुद्रपार बलिदान की सेवाओं में जीवनों की पूर्णता प्राप्त कर रहे थे। घर लौटने पर, मैने एक युवा स्त्री का नीचे लिखा पत्र पाया, जो वहां सभा मे थी, उसने पत्र का शीर्षक दिया था – वास्तविकता – कैसे मिलती है?

> पिछले कुछ दिनों में हम ने यूरोप और एशिया के देशो में कुछ युवाओं के साहस, सताव, और बलिदानी जीवन के बारे में सुना। उन्होंने मसीही जीवन में उस वास्तविकता को पा लिया है,

> जिसे मैं और दर्जनों अन्य युवाओं ने लंबे समय से खोजा है। मुझे इस संसार की किसी भी अन्य चीज से बढ़कर वह वास्तविकता चाहिए। किंतु मै जाल में फसी हूँ क्योंकि हम अमरीकी युवाओं के पास हर विलासिता, हर सुविधा, और साक्षी देने का प्रत्येक अवसर उपलब्ध है, जो अब चुनौती नहीं रहा, यदि आप समझ रहे है कि मेरा अभिप्राय क्या है – लडने के लिये कुछ नहीं है। मै बड़ी बेसब्री से मसीह के लिये सभी बातो और स्वार्थमय अभिलाषाओं को छोंडना चाहती हूँ, पर यह हारे हुये युद्ध जैसा लगता है। क्या आप जानते है कि कैसा महसूस होता है? यह फंदा है, शैतान का लगाया गया एक जीवित फंदा कि लगता है, मै इसे तोड़ नहीं सकती। मै अपने आप के लिये जीवन जीते – जीते अब थक चुकी हूँ। मुझे एक चुनौती चाहिए। स्वयं को भूलने और प्रभु के लिये जीवन जीने का अवसर। परमेश्वर के लिये इस भूख प्यास को पाने के लिये मैं कुछ भी देने तैयार हूँ, गिरफ्तारी, जेल जाना या सताव मे पड़ना – कुछ भी, पर यहाँ बुद्धिवादी अमरीका में कोई चुनौती नहीं, कोई विरोध नहीं है और इस कारण वश, हम युवाओं के पास आश्वस्त रहने और शारीरिक बनने के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं है। कृपया मदद करे, जहां तक मेरा प्रश्न है, सबकुछ परमेश्वर के लिये, वरना कुछ भी नही, क्या इसका कोई उत्तर है?

हमने आरंभ करते हुये कहा था कि प्रभु यीशु की शिक्षाये क्रांतिकरी है। आइये अब हम नया नियम खोले और देखे कि वे तत्वरुप में कितनी भिन्न और क्रांतिकारी है। मैं सोचता हूँ कि यदि हम पहिलीबार ही नया –नियम पढ़ सके, हम जान लेगे कि यह पुस्तक कितनी क्रांतिकारी है।

सबसे पहिले, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे एक क्रांतिकारी जीवन स्तर अपनाएं। लूका 14:33 में उसने कहा, ''इसी रीति से तुम में से जो कोई, अपना सबकुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नही हो सकता।'' 1 तीमु. 6:8 मे पौलुस भी यही प्रतिध्वनि देते है जब वे कहते है, ''यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हों, तो इन्ही पर संतोष करना चाहिए।'' उद्धारकर्ता कहते है कि हमे सब त्याग देना चाहिए। पौलुस कहते है कि हमें केवल खाने और पहिनने 'से' सतुंष्ट रहना चाहिए। देखिए कि यह एक क्रांतिकारी जीवन स्तर है। यह सादगी के जीवन को दर्शाता है – यह त्याग–बलिदान के साथ जीवन जीने की ओर संकेत करता है।

न केवल यह, परन्तु प्रभु यीशु ने वह भी सिखाया जिसे हम क्रांतिकारी सामाजिक जीवन कह सकते है। लूका 14:12–14 में उसने कहा था,

> *जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रो या भाइयों या कुटुम्बियों, या धनवान पड़ोसियो को न बुला, कहीं ऐसा न हो कि के भी तुझे नेवता दें – और तेरा बदला हो जाये। परन्तु जब तू भोज करे तो कंगालो, टुण्ड़ो, लंगडो और अंधो को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर इसका प्रतिफल मिलेगा।*

प्रभु यीशु मसीह के ये शब्द आज स्त्री पुरुषों मे प्रचलित आम नीति पर करारी चोट करते है, कि उनको आमंत्रित करो, जो बदले में आमंत्रित करे, जो कि एक प्रकार की अदला–बदली है। और यही विचारधारा सर्वाधिक आधुनिक समाज को परिभाषित करती है। परन्तु प्रभु ने कहा कि जब हम आमंत्रित करे, तब 'ऐसा' न करे। उन्हे आमंत्रित करे जो बदले में आमंत्रण न दे सके और आप को धर्मियों के जी उठाने पर इसका प्रतिफल मिलेगा।

तब प्रभु यीशु ने सिखाया कि हमे पृथ्वी पर संबंधो के प्रति और अन्य सभी प्रियजनों को तुलना की दृष्टि से अप्रिय माना जाना चाहिए। परन्तु मेरे विचार से इस पद की सबसे अधिक क्रांतिकारी अभिव्यक्ति है – ''यदि कोई मेरे पास आये और अपने पिता, माता, पत्नि, बच्चों तथा भाई बहनों को, यहां तक कि अपने प्राण भी को अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।''

अब, जब वह कहता है, ''..... अपने पिता, माता, पत्नि, बच्चों तथा भाई बहनों को, अप्रिय न जाने,'' इसका अर्थ यह नही कि हम हमारे प्रियों के प्रति द्वेष या घृणा की भावना प्रदर्शित करे। परन्तु उनके कहने का अर्थ है कि जीवन मे वह प्रथम हो और अन्य सभी प्रिय जनों को तुलना की दृष्टि से अप्रिय माना जाए। परन्तु मेरे विचार से इस पद की सबसे अधिक क्रांतिकारी अभिव्यक्ति यह है – ''यदि कोई मेरे पास आये और.......अपने प्राण भी को अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।'' इस का अर्थ निश्चित तौर पर यह हुआ कि हम मसीह के काम को अपने जीवनो से बढ़कर प्राथमिकता दे। हमे अपनी देह और प्राण प्रभु परमेश्वर के लिये तैयार रखने चाहिए कि वह उन पर अपना हल चलाये। एक अन्य स्थल पर प्रभु यीशु ने कहा था – यदि कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, परंन्तु जो अपना प्राण मसीह के लिये और सुसमाचार के लिए खोएगा, वह उसे पाएगा।

तब मती 6:33 में उद्धारकर्ता ने सिखाया कि हमारे अस्तित्व का केंद्रीय कारण है – परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करना। सबसे पहिले उसने कहा, '' पहिले उसके राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं तुमको मिल जायेगी।'' यह बात क्रांतिकारी है। बहुत से लोग सोचते है कि वे इस संसार में नल कूप सुधारने, बिजली का काम करने, डॉक्टर बनने, शिक्षक बनने या नर्स बनने या ऐसा ही कुछ करने आये है। परन्तु हमारी बुलाहट और रोजगार मे अंतर है। परमेश्वर की संतान की बुलाहट प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने की है। उसका रोजगार केवल प्रतिदिन की रोटी उपलब्ध करने के लिये है न कि धनवान बनने या उसमे परिपूर्णता खोजने के लिये है। पौलुस तंबू बनानेवाला था, पर अपनी पत्रियों का आरंभ करते हुए उसने कभी नही लिखा, ''पौलुस जो तंबू बनाने के लिये बुलाया गया है।'' उसने सदैव यह लिखा, ''पौलुस प्रेरित होने बुलाया गया।'' जीवन मे उसकी बुलाहट प्रेरित बनने की थी और अपनी तात्कालिक आवश्यकताएं पूरी करने उसने तंबू बनाने का काम लिया।

तब मती 19:19 में, प्रभु यीशु ने जो कहा, उसे कुछ लोग उसका सबसे अधिक बड़ा क्रांतिकरी कथन मानते है। उसने कहा, ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'' हम अब इन शब्दो के इतने अधिक अभ्यस्त हो चुके हैं कि उसके शब्द अब हमें चुभते नहीं और न हम यह समझ पाते है कि वे कितने महत्वपूर्ण है। थोडी देर आप इन पर विचार करे। ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'' सोचिए कि हम अपने आप से कितना प्रेम रखते है, हम स्वयं को कितना खिलाते पिलाते है, कितनी चिन्ता करते हैं कि हम भरपेट खाएं, दांतो मे ब्रश करे, और अपनी देह की देखभाल करे, ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'' मेरा पड़ोसी कौन है? प्रत्येक जो आवश्यकता मे है, मेरा पडोसी है। यदि मैं अपने पड़ोसी से वास्तव में अपने समान प्रेम रखता हूँ, तो 'मैं' तब तक सतुंष्ट नही हो सकता, जब तक समस्त संसार के लोग प्रभु यीशु मसीह को न जान ले, उससे परिचित न हो जाये, और जब तक उनके पास परमेश्वर के वचन की प्रतियां न पहुंच जाये।

हमारे प्रभु ने बड़ा या प्रधान होने का एक क्रांतिकारी विचार सिखाया है। उनके राज्य में बड़े होने का अर्थ है, उसकी आज्ञाओं और शिक्षाओं पर अमल करना और उन्हें सिखाना (मत्ती 5:19 ब), सेवा करना, यहाँ तक कि दुसरों की गुलामी भी (मती 20:1–16, लूका 17:7–10, 22:26), और सबसे छोटा स्थान ग्रहण करना (लुका 9:48)। संसार के विचार से यह कितना भिन्न है। वहां बड़ा या प्रधान वह है जो दूसरों पर अपना भार डालता, अपने आदेश सुनाता और अन्य दूसरों पर प्रभुता करता है।

अंत में, प्रभु यीशु ने भविष्य के लिये सुरक्षा का एक क्रांतिकारी विचार रखा है। मती 6:19 में लिखा है:

> अपने लिये पृथ्वी पर धन इकठ्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते है, और चोर सेंध लगाते और चुराते है; परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकठ्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते है, और जहां चोर सेंध लगाते और न चुराते है।

उसके बाद, उसी अध्याय के पद 25 में उसने कहा, ''अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?'' यहाँ प्रभु यीशु अपने चेलों को पूर्ण रुप में मना करते है कि बुरे दिनों के लिये कुछ बचाकर न रखें। यीशु ने वास्तव में उनसे यह कहा – ''देखो, सबसे पहिले मेरी बातों को स्थान दो। स्वयं की तात्कालिक आवश्यकताओं और अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने डटकर परिश्रम करों। प्रभु के काम की बातों को सबसे प्रथम स्थान दो, और मैं तुम्हारे भविष्य की चिन्ता करुंगा। मैंने तुम्हें विश्वास के जीवन की बुलाहट दी है, एक जीवन जो आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिये मुझ पर भरोसा रखता है। और यदि तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की सबसे पहिले खोज करते हो, तो ये सारी वस्तुएं भी तुम्हे दे दी जायेगी।''

यूहन्ना 3:3 से एक अंतिम पद देखिए, यीशु ने कहा, ''मैं तुझ से सच–सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' नीकुदेमुस एक धार्मिक अगुवा प्रभु यीशु के पास रात में आया था और प्रभु यीशु ने उसका सामना इस क्रांतिकारी सत्य के साथ किया। उसने कहा, ''नीकुदेमुस यदि तुम परमेश्वर का राज्य देखना चाहते हो, तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना होगा, अर्थात नया जन्म एक अनिवार्य आवश्यकता है।'' और संयोगवश, यही वह स्थान है जहां शिष्यता का जीवन आरंभ होता है। आप शिष्यता का जीवन जीने के कारण मसीही नहीं बनते, परन्तु आप मसीही बन जाने के बाद शिष्यता का जीवन जीते है, और आप नया जन्म पा लेने के द्वारा मसीही बनते है।

निश्चय, यह प्रश्न उठता है, ''मनुष्य नया जन्म कैसे ले सकता है? उत्तर है, सबसे पहिले अपने पापों से पश्चाताप कर के। उद्धार पाने के लिये अवश्य है कि व्यक्ति अंगीकार करे कि वह पापी है – और नरक जाने के योग्य है। जब वह इस स्थान में आता है, उसे यह मानना होगा कि प्रभु यीशु कलवरी के क्रूस पर उसके स्थान में मरे ताकि वे पापी के पाप का दण्ड चुका सके। तब विश्वास के एक निश्चित कार्य के द्वारा उसे अपना भरोसा प्रभु यीशु मसीह पर रखना चाहिए। इसी अध्याय में, प्रभु यीशु ने कहा है, ''क्योकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये'' (यूहन्ना 3:16)।

जिस पल आप विश्वास के उस निश्चित कार्य के द्वारा पापियों के उद्धारकर्ता को ग्रहण करते है, आप परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर जान सकते है कि आपको उद्धार मिल गया है, और आपने नया जन्म पा लिया है। क्या अब आप आगे प्रभु यीशु के मार्ग पर एक शिष्य के समान चलना चाहेंगे? तब अपना विश्वास और भरोसा उस पर रखे और समस्त संसार को उसकी महिमा की बातें बताने निकल पड़े।

आनेवाले अध्यायों में हम यीशु की तत्वरूप भिन्न और क्रांतिकारी शिक्षाओ में से कुछ का अधिक विस्तार पूर्वक परीक्षण करेंगे।

अध्याय - 3

यह तत्वरुप में भिन्न प्रशिक्षण है - भाग 1

लूका 6:12-26

जल्दी ही प्रभु यीशु पापियों के स्थान पर क्रूस पर मृत्यू का मरण मरने जा रहे थे। वे उद्धार का मार्ग देने जा रहे थे जो सभी मानवजाति के लिये उपलब्ध होगा। परंन्तु इस का अर्थ यह है कि इस शुभ – समाचार की विश्वस्तर पर उद्घोषणा होनी चाहिए। अवश्य है कि समस्त संसार में सुसमाचार प्रचार किया जाये। यह कैसे हो सकता है?

उद्धारकर्ता की रणनीति बारह मनुष्यों को चुनने और उन्हे उनके राज्य के सिद्धांतो में सिद्ध हस्त बनाने की थी, ताकि उन्हें संसार में ज्वाला के समान संदेश वाहकों के रुप में भेजा जाये। यदि उसे केवल वे बारह मिल जाये, जो पूरे ह्दय के साथ उससे प्रेम रखे, पाप को छोड अन्य किसी से न डरे, और सपूर्ण रीति से उसकी आज्ञा का पालन करे, तो वह संसार को उथल – पुथल कर सकता था। उसका प्रथम चरण था, पर्वत पर एक रात प्रार्थना में बिताना। परमेश्वर के पुत्र की तस्वीर अपने मन में बनाये, भूमि पर लंबवत् लेटकर अपने पिता की इच्छा की खोज कर रहा था। इसमे संदेह नहीं कि उसकी प्रार्थनाओं का प्रमुख विषय चेलो का चुनाव करना था। सदा की भांति वह परमेश्वर के मार्गदर्शन पर निर्भर होकर उसने 'शिष्यों के चुनाव' को एक लंबी और ईमानदार प्रार्थना की विषयवस्तु बना दिया। यह दर्शाता है कि उसने प्रार्थना को कितनी प्राथमिकता दी। यह हमारी प्रार्थना न करने के प्रति फटकार है, हम जो शायद ही कभी एक रात प्रार्थना में बिताते हैं।

अगले दिन वह अपने अनुयायियों से मिला और उसने उन बारहों को अलग किया जिन्हें हम प्रेरित के रुप मे जानते है। उसका चुनाव अनेक अर्थो में लक्षनीय थाः चुने हुओं की संख्या; उनकी आयु; उनकी सामान्य शिक्षा का 'स्तर' और उनमें 'एक विश्वासघाती' भी। सबसे पहिले चुने हुओं की संख्या पर विचार करे, न 12000, 1200 या 120, पर केवल 12 ...। क्यों इतनी 'छोटी टोली'। एक बात

के कारण कि शिष्यता एक छोटे समूह में ही अतिप्रभावी रुप में करायी जा सकती है। साथ ही, संख्या कम होना आवश्यक है ताकि किसी भी सफलता का श्रेय केवल प्रभु को मिले।

उस समय संभवतः चेलो की आयु बीस के दशक में थी। स्वयं प्रभु 30 वर्ष के आसपास थे और सामान्य रुप में शिक्षक अपने शिष्यों से अधिक बड़ी आयु का होता है। साथ ही प्रभु जानते थे कि युवाओं मे ही उन्हे ढ़ालने बदलने और मानव–आत्मा को प्रज्वलित करने के सर्वोत्तम अवसर मिलेंगे। शिष्यों की अहर्ताएं प्रभावपूर्ण नहीं थी। वे सामान्य मनुष्य, घरेलू और किसी उच्च शिक्षा संस्थान से पढ़े लिखे नहीं थे। उनमें से किसी को धर्मविज्ञान की शिक्षा प्राप्त नहीं थी। कोई भी धनी नहीं था। रॉबर्ट कोलमैन उनका वर्णन करते हुए लिखते है कि वे संस्कृति के किसी भी मानदण्ड से, मामूली व्यक्तियों का गठजोड़ थे...उन दिनो के समाज के औसत नागरिको के प्रतिनिधी।" हम उनके बारे मे कह सकते है, जैसे किसी दूसरे के बारे में भी, कि उनमें एक मात्र अद्‌भूत बात उनका मसीह के साथ संबंध था।

यहूदा इस्करियोति के चुने जाने मे एक रहस्य है। निश्चय सर्वज्ञानी प्रभु जानते थे कि यहूदा उन्हे धोका देगा, फिर भी उन्होंने उसे चुना। सर्वोत्तम बात यही होगी कि हम इसे रहस्य ही रहने दे।

तुरन्त ही शिष्यों को काम पर प्रशिक्षण दिया जाने लगा। वे प्रभु को ध्यान पूर्वक देखते और सुनते जब वह भीड को शिक्षा देता, बीमारों को चंगा करता और अशुद्ध आत्माओं को निकालता। वे आश्चर्य से स्तब्ध रह जाते जब देखते कि भीड की भीड स्वामी को स्पर्श करने उमड़ पड़ती। वे सीखते कि लोग बता सकते है जब परमेश्वर की सामर्थ किसी मनुष्य में होकर प्रवाहित होती थी।

उद्धारकर्ता का संदेश सुनने में, मत्ती 5–7 में दिये पहाडी उपदेश का आंशिक दोहराव जान पड़ता है, परन्तु वैसा नहीं है। यह संदेश एक पठार पर या समतल भूमि पर दिया गया था (पद 17), किसी पहाड़ पर नही। परम आशीषवचन भिन्न है। मत्ती मे, धन्य वे है जो मन के दीन है और जो धर्म के भूखे और प्यासे है!लुका मे वे, वे है जो शारिरीक रूप मे निर्धन और भुखे है। यह उपदेश प्रमुख रुप मे चेलो के लिए था। (लूका 6:20) मे चार 'हाय' है, जो मत्ती मे नही है।

सबसे पहिले प्रभु अपने प्रेरितों से कहते है कि वे निर्धन व्यक्ति के समान बन जाए। हम जानते है कि यहां उनका अभिप्राय भौतिक रुप में निर्धन से है न कि आत्मा में दीन से, जो पद 24 के विपरीत है – "हाय तुम पर जो धनवान हो।" उसने आत्मा में धनवान नहीं कहा, उसका कोई अर्थ नहीं निकलता। वह यहां प्रचुरता की कमी या धन की कमी की बात कह रहा है। परन्तु क्या निर्धन होना आशीष है? सारे संसार मे हर कहीं लोग निर्धनता में पिसे जा रहे है, उनके लिये निर्धनता एक आशीष नहीं परन्तु शाप है। तो फिर किस दृष्टि से शिष्य निर्धन होकर आशीषित ठहरेंगे? अर्थ का सूत्र पद 22 के अंत में है – "मनुष्य के पुत्र के कारण।" अपने निज लाभ के लिये संपत्ति का ढ़ेर लगाने के बदले, बारहों को निर्धन बनना है कि अन्य दूसरे आत्मिक रुप में धनवान बन सके।

जब हम इस पर विचार करना बंद करते है, उचित यही था कि वे निर्धन बने रहते। वे उस के प्रतिनिधी थे जो एक निर्धन यहूदी परिवार मे जन्मा, उसके पास कभी धन नहीं था, उसे सिर धरने के लिये भी जगह नहीं थी। वे उसके अभिकर्ता थे जो धनी था, पर स्वेच्छा से कगांल बना ताकि हम धनवान बन सके। वे उसके अधिकृत प्रतिनिधी थे जिसने इस पृथ्वी पर एक सिद्ध जीवन जीया

... जिसके पास कुछ संपत्ति नहीं थी और उसने विरासत में कुछ नहीं छोडा–केवल उन वस्त्रों के जो उसने अपने जीवन काल में पहिने थे। (डेनी)

यदि वे मंहगे वस्त्र पहिनते, मंहगी केश सज्जा करते, मोटी–मोटी रकम खर्च करते और बेश कीमती आभूषणों का प्रदर्शन करते, तो यह मसीह के जीवन के सर्वषा विपरीत होता। यह उस प्रभु की एक बिल्कुल गलत तस्वीर देता जिसने इनमे से किसी बात की कभी परवाह नहीं की। ई. एस. जोन्स बताते है कि वे एक कैथड्रिल मे गये जहां उन्होंने शिशु यीशु की प्रतिमा देखी, जिसे कलीसियाने बेश कींमती आभूषणों और रत्नों से लपेटा था। तब वे गलियों में गये और भूख से बेहाल बच्चो के उतरे हुए चेहरे देखे। उनके मन में विचार आया, "मुझे संदेह है कि बैम्बीनों को आभूषणो मे आनंद आ रहा है। तो मैंने निर्णय किया है कि आगे मै बैम्बीनी के बारे मे कभी नहीं सोचूंगा। फिर भी कलीसिया ने विश्वास का अंगीकार करने के बावजूद यीशु को विलासिता के महंगे–महंगे परिधानों में सजाकर संसार के सामने सादगी से रहनेवाले परमेश्वर के जन के स्थान पर विलासिता में रहने वाले एक धनवान मनुष्य के रुप में प्रस्तुत किया है।

यदि चेले धनवान व्यक्ति के रुप में जाते, वे ऐसे अनगिनत अनुयायियों को आकर्षित करते जिनका उद्देश्य स्वयं को आर्थिक रुप में बेहत्तर बनाना होता। लोग एक कटोरा चावल पाने के लिये विश्वास का अंगीकार कर लेंगे, परन्तु उनकी बड़ी आवश्यकता परमेश्वर के समक्ष पश्चाताप करना और यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर सच्चे विश्वास में ग्रहण करना है।

यदि बारह शिष्य धनवान बनकर जाते, तो प्राप्त सफलता का श्रेय परमेश्वर की सामर्थ को नहीं परन्तु धन की सामर्थ को जाता। साथ ही वे ऐसे महंगे कार्यक्रमो और परियोजनाओं में जाने की परीक्षा में पड़ जाते, जो शायद परमेश्वर की इच्छा में नहीं होते। मसीही सेवकाई या सेवा मे निर्धनता मनुष्य को प्रभु पर निर्भर करती है और निश्चयता देती है कि प्रभु जो भी आज्ञा देंगे, उन सब के लिये व्यवस्था भी करेंगे।

इसमें संदेह है कि शिष्यों ने जो कुछ किया वे, वे सब कर पाते, यदि वे निर्धन के रुप में नहीं जाते। धन उनके लिये उत्तरदायित्व बन जाता जबकि निर्धनता उनके काम आयी। ये मनुष्य धनवान हो सकते थे, पर उन्होंने इस संसार में धनवान बनना न चाहा जहां हजारो लोग भूखे मरते है, और जहां यीशु का नाम आज भी भीड़ की भीड़ के लिए अपरिचित है।

चेलो को न केवल बिना धन जाना था, उन्हें भूखे–प्यासे होने को आशीष को भी समझना था। क्या भूखे रहना आशीष है? हां, परन्तु केवल तब आशीष है, जब मनुष्य के पुत्र के लिये भूखे रहने का निर्णय लिया जाये। 'शिष्यो' की बुलाहट यह नहीं थी कि वे विशेष प्रकार की कॉफी पीये, मनपसंद भोजन करे और विशेष स्थानों में बनी दाखमधु का सेवन करे, परन्तु यह कि कम खर्च में रहे, अपने संसाधनों का अधिक से अधिक सुसमाचार के प्रसार के लिये उपयोग करे।

आगे, उनकी सेवकाई एक रोने की सेवकाई थी। परन्तु यहाँ रोने का अर्थ उस सामान्य अक्रांदन से नही है जो हमारे पीड़ामय संसार में एक आम बात है। यह एक विशेष दुःख है, मनुष्य के पुत्र के लिये सहा जाने वाला दुःख। उन्हें मनुष्यों की मरनेवाली आत्माओं के लिये कड़वे आसूं बहाने थे। उन्हें

कलीसिया की विभाजित दशा पर विलाप करना था। उन्हें स्वयं अपने पापों और कमी – घटियों के लिये शोक करना था। यदि वे रोते हुये जाते, बहुमूल्य बीज लेकर ताकि वे आनंद करते हुए लौटते, हाथों में पूलियां लिये हुये (पढे, भजन संहिता 126:6)। ''आत्माओं को जीतने वाले के लिये सर्वप्रथम आत्माओं के लिये रोना अवश्य है।''

उन्हें न केवल निर्धन, भूखा और रोने वाला बनना था, बल्कि उन्हे मनुष्य के पुत्र के लिये बदनाम भी होना था। मसीह के साथ उनकी विश्वासयोग्य संगति उनके लिये नफरत, बहिष्कार, निंदा और अपमान लेकर आयेगी। परन्तु चिंता न करे! यह सब बड़े आनंद की बात होगी। वे पुराने नियम के भक्त भविष्यवक्ताओं के समान अनुभवो को प्राप्त करेंगे और उन्हें स्वर्ग में निश्चय बहुत बड़ा प्रतिफल प्राप्त होगा।

कोई व्यक्ति यह पूछने की परीक्षा मे पड सकता है, ''यीशु मूर्खो की प्रचार श्रेणी की सेना से क्या कर पाएंगे – निर्धन, भूखे, रोनेवाले और तुच्छ समझे जाने वाले?'' उत्तर है – वे उनके द्वारा संसार को उलट पुलट देंगे, और उन्होंने यही किया। यह आशा करते हुये कि शिष्यो की भावी पीढ़ियां बलिदानी जीवन शैली और अपने आप से इंकार को भूलकर उस सुविधा भोगी और आराम तलंब विलासिता को ग्रहण करेगी जो आत्मा को मार देती है, प्रभु ने चार 'हाय' कहीं।

हाय तुम पर जो धनवान हो। ये अंगीकार करने वाले वे चेले है जिनका मूलमंत्र है – ''परमेश्वर के लोगों के लिये कुछ भी बहुत अच्छा नहीं।'' वे यह भुलकर कि इस संसार का उपभोग अपने आप मे नही है, 1 तीमु. 6:17 का उद्धरण देते है, ''(परमेश्वर) जो हमारे सुख के लिये सबकुछ बहुतायत से देता है, पर जैसा कि अगले पद मे कहता है, वे भलाई करें और भले कामो मे धनवान बनें, और उदार और सहायता देने मे तत्पर हों। वे यह समझने से इंकार करते है कि धन का संचय करना कितना पापमय है, जबकि वह धन खोये हुओं में सुसमाचार–प्रचार के लिये खर्च किया जा सकता है। वे भूल जाते हैं कि परमेश्वर के पवित्र पुत्र ने कहा था, ''धनवानो का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से उँट का सूई के नाक से निकल जाना सहज है'' (लूका 18:24–25)।

हाय तुम पर जो अब तृप्त हो। ये वे शिष्य है जो विश्वास का अंगीकार करते है परन्तु अपनी भूख को तृप्त करने के लिये जीते है। स्वार्थ या अहं उनके जीवनो का केंद्र और परिधि है। वे भव्य रेस्त्रां मे खाते पीते, स्वादिष्ट व्यंजनो का रसा स्वादन करते, मजे करते, समुद्री यात्राओं पर जाते, उत्कृष्ट क्लबो और होटलों का आनंद लेते है। उनका जीवन बस रसोईघर और भोजनकक्षों में बीत जाता है। लाजर उनके द्वार के बाहर भूखा है इस बात से उन्हें चिन्ता नहीं होती।

हाय तुम पर जो अब हंसते हो। उनका पाप यह नहीं है कि वे एक अच्छे चुटकुले पर हंसते है, पर उनके लिए जीवन मे सबकुछ एक चुटकुला है। वे समय और अनंत–काल, मरनेवाली आत्माओं, सिसकती मानवता, या अनंत नर्क जैसे मसलो के प्रति जरा मी गंभीर नहीं है। आत्मिक रुप में वे सबसे हल्के भार वर्ग में है। जीवन उनके लिये रस का प्याला है। उनके मन खाली है, उनकी वाणी खाली है, उनके जीवन खाली है।

हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें। वे स्वयं को यीशु का शिष्य कहते है, परन्तु वास्तव में वे प्रतिष्ठा के गुलाम है। वे परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक मनुष्यों की प्रशंसा से प्रेम करते है। वे स्पष्ट और निडरता पूर्वक सत्य कहने से बचते है कि कहीं किसी को बुरा न लगे। ये मनुष्य गिरगिट है, श्रोताओं के अनुसार संदेश बनाते है। वे मूँह के दोनो छोर से एक साथ बोल सकते है। वे पुराने नियम के झूठे भविष्यवक्ताओं की निदंनीय पंक्ति में है।

इस कारण, शिष्यों को समझ–बूझकर एक चुनाव करना होगा। एक ओर निर्धनता, भूख, आँसू और बदनामी है, और दुसरी ओर, धन–संपत्ति, भरपूरी का भोजन, आनंद का वातावरण और मनुष्यों की ओर से मिलने वाली प्रशंसा है। वे जो दूसरी बात को चुनते है उन्हें अभी प्रतिफल मिलेगा किंतु बाद में दुःख और पछताना होगा। वे जो पहिली बातो को चुनते है वे स्वर्ग के राज्य के वारिस होंगे और उसके सभी आनंद उन्हे मिलेगे।

अध्याय - 4

यह तत्वरुप में भिन्न प्रशिक्षण है - भाग 2

लूका 6:27-38

जबकि शिष्य – गण युद्ध के मैदान में जाने पर है, अनिवार्य है कि उनके पास एक समुचित हथियार हो, इस कारण, उद्धारकर्ता परमेश्वर के भंडार से एक गुप्त हथियार उन पर प्रगट करते है। यह प्रेम है। उसका हथियार क्रांतिकारी है – नफरत का नहीं, पर प्रेम का, हिंसा का नहीं, पर दया का। यह प्रेम उस प्रेम से भिन्न है जिसे संसार जानता है – यह अलौकिक है, दूसरे संसार का प्रेम। यह मनुष्य का प्रेम मात्र नहीं है जिसे अविश्वासीजन भी प्राप्त कर सकते है। यह वह प्रेम है जिसे केवल अलौकिक जीवन रखनेवाले प्रदर्शित कर सकते है। यहां तक कि विश्वास करनेवाले भी अपनी शक्ति से यह प्रेम दर्शा नहीं सकते। इसका प्रदर्शन केवल हमारे भीतर निवास करने वाले पवित्रात्मा की सामर्थ के व्दारा किया जा सकता है।

यह प्रेम हमारी भावनाओं से अधिक हमारी इच्छा से संबंधित है, हालांकि भावनाएं भी इसमें शामिल होती है। यह संक्रमन से लगनेवाली बात नहीं है, जैसे कि जुकाम, परन्तु यह प्रेम यीशु के कदमों पर बैठकर संवर्धित किया जाता है। यह हॉलीवुड से नही पर स्वर्ग से आता है। जैसे वासना पाने की प्रतिक्षा नहीं कर सकती, प्रेम देने की प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

जिनका ह्दय परिवर्तन नहीं हुआ है वे ऐसे प्रेम का सामना होने पर अभिभूत हो जाते है। वे समझ ही नहीं पाते कि कैसी प्रतिक्रिया करे। वे मानवीय प्रेम का प्रतिदान देना जानते है और आक्रामकता का सामना होने पर प्रत्युत्तर मे लड़ना भी निश्चय जानते है। परन्तु जब उनकी अभद्रता के बदले उन्हे भलाई मिलती है, वे नहीं जानते कि क्या सोचे, क्या करे और क्या कहे। यही संपूर्ण विचार है – शिष्य – गण कभी भी संसार पर अपनी छाप नहीं छोड सकते यदि वे 'मांस और लोहू' के स्तर से उपर नहीं उठते।

अवश्य है कि वे पुरुषो और स्त्रियाँ को प्रेम के एक बड़े विस्फोट के द्वारा स्तब्ध कर दे। पद 27 से लेकर पद 31 में, उद्धारकर्ता बताते है कि प्रेम दूसरों से कैसा आचरण करता है। उदाहरण के लिये वह केवल मित्रो तक नहीं परन्तु शत्रुओं तक पहुंचता है। अब यह स्वाभाविक नहीं है। शत्रु से प्रेम करना मानवीय प्रवृत्ति की सीमा के बाहर जाने की बात है, नफरत का बदला दया के कामों से, और शाप देनेवालो के लिये परमेश्वर की आशीष मांगना, या उनके लिये प्रार्थना करना जो हमें सताते है – फिर भी, इस मार्ग पर स्वामी गया था, तो क्या सेवक नहीं जायेंगे? जब मसीही लोग उनके सतानेवालों से प्रेम करते और सताने वालो के लिए प्रार्थना करते है, तब क्या मनुष्यों पर वास्तव मे कुछ प्रभाव पड़ता है? मै आपको एक कहानी बताता हूँ –

मिट्सुओ फू चिदा नाम के जापानी पायलट ने दिसम्बर 1841 मे पर्ल हार्बर पर आक्रमण की अगुवाई की थी। यह वही थे जिसने रेडियों पर वापस टोकिया खबर भेजी थी – ''टोरा, टोरा, टोरा ''अर्थात मिशन पूरी तरह सफल रहा। वह विजय के उन्मांद मे था, जब तक कि युद्ध का ज्वार अतंतः उतर नहीं गया। अंत में उनके देश को आत्मसमर्पण करना पड़ा। पराजय से कुचला फूचिदा संकल्प कृत था कि विजेताओं को युद्ध से संबंधित अपराधो के लिए एक अंर्तराष्ट्रीय न्ययालय मे सुनवाई का सामना करने बुलाया जाये। प्रमाणों को इकट्ठा करने उसने जापानी युद्ध सैनिको से साक्षात्कार लिये, जिन्हें यू–एस, मे युद्ध बंदी के तौर पर रखा गया था। परन्तु क्रूरता की बाते सुनने के बदले उसने बार–बार एक मसीही स्त्री के बारे में सुना जो युद्धबंदी शिबिर में आया करती थी और उनके (जापानियो) के प्रति दया दिखाती थी, उसने उन्हें एक मसीही–पुस्तिका 'नया–नियम' भी दी। जब उन्होंने पूछा कि वह शत्रु देश के बंदियो के साथ इतनी भलाई क्यो करती थी, उसने बताया कि उसके माता–पिता फिलीपीन मे मिशनरी थे, उनको जापानियो ने मार दिया था, परन्तु मृत्यु से पहिले उन्होंने एक विशेष प्रार्थना की, और उस प्रार्थना के कारण ही उसने निर्णय किया कि वह आवश्यकता में पडे जापानी युद्धबंदियो से प्रेम करेगी और उनकी परवाह करेगी।

मिटसुओ फूचिदा उस रहस्यमय प्रार्थना का विचार मन से निकाल नहीं सका। वह बात बार–बार उसे कचोटती रही। उसने नये नियम की एक प्रति प्राप्त की और उसे पढ़ना आरंभ किया। जब वह लूका 23:34 पर पहुँचा उसे पता चल गया कि उसने उस प्रार्थना की खोज कर ली है ''हे पिता, इन्हे क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे है,'' अब उसके मन मे अमरीकी स्त्री का विचार नहीं था और न जापानी युद्ध बंदियो का विचार था, वह स्वयं के बारे में सोचने लगा कि वह मसीह का कितना दुर्दान्त शत्रु है जिसे परमेश्वर अपने क्रूस पर चढ़े उद्धारकर्ता की प्रार्थना के उत्तर मे क्षमा करने तैयार थे, उसी पल उसने प्रभु को खोजा और मसीह पर विश्वास करने के द्वारा क्षमा और अनंत जीवन प्राप्त किया। मिट्सुओं फूचिदा ने अपना शेष जीवन मसीह के अगम्य धन का सारे संसार मे प्रचार करते हुये बिताया।[4]

प्रेम पलटा नहीं लेता या जैसे को तैसा प्रतिफल नहीं देता, परन्तु वह दूसरा गाल फेर देता है। ''अपना दूसरा गाल फेर देने के द्वारा आप शत्रु को निःशस्त्र करते है, वह आपको गाल पर थप्पड़ मारता है, और आप अपनी नैतिक दृढ़ता के कारण, उसकी ओर दूसरा गाल फेरकर, उसके हृदयपर

चोट करते है। उसकी शत्रुता लोप हो जाती है, आपका शत्रु चला जाता है। आप अपनी शत्रुता से पीछा छुड़ाकर अपने शत्रु से पीछा छुड़ा लेते हैं .... संसार उस मनुष्य के कदमो मे झुक चुका है जिसमे पलटकर वार करने की सामर्थ्य तो थी पर जो पलटकर वार न करने की सामर्थ भी रखता था। यही सामर्थ्य है–अंतिम और सर्वोच्च सामर्थ"(इ.स्टेनली जोन्स)।

प्रेम भौतिक सम्पत्ति पर इतनी हलकी पकड़ रखता है कि मांगे जाने से अधिक देने सहर्ष तैयार रहता है। हमारे लिये इस उदाहरण पर अमल करना इतना कठिन इसलिए है कि हम इतनी अधिक सम्पत्ति रखते है कि उसका हम पर शिकंजा कस जाता है।

प्रेम दान देने मे स्वयं को प्रगट करता है।
प्रेम सदा देता है, क्षमा करता है, और जीवन के बाद भी बना रहता है
और सदा खुली बाहों के साथ मिलता है,
और जब तक जीता है, देता है,
प्रेम का यही गुण यही प्रकृति है –
देना, और देना, और देना......!

शिष्यो को आरंभ में ही जानने की आवश्यकता थी कि उनकी सेवकाई देने की सेवकाई होगी। 'प्रश्न यह नहीं है, "मुझे इससे क्या मिलेगा? पर यह कि – "मै कैसे अधिक से अधिक दूँ?" उन्हें पाने की आशा नहीं करनी चाहिए, पर देने की करनी चाहिए, उन्हें लगातार ऐसे लोग मिलेंगे जिन्हें वास्तव मे सहायता की आवश्यकता होगी, यद्यपि वे स्वयं निर्धन है वे उन जरुरत मंदो की सहायता कर सकेगे। उनसे तब ही न देने की आशा की जा सकती है जब उनके देने से किसी व्यक्ति को हानि होगी – यदि देने से आलस्य उत्पन्न हो या फिर बुरी आदत के लिए प्रयोजन हो जाये। यदि कभी शंका उत्पन्न हो, या फिर बुरी आदत के लिए प्रयोजन हो जाये। यदि कभी शंका उत्पन्न हो, शिष्य को अनुग्रह करने से रुकना चाहिए।

मूल सिद्धांत यह है कि मसीह के अनुयायी दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करे जैसा व्यवहार वे स्वयं के लिये चाहते है। इसका अर्थ है कि उन्हें शालीन, उदार, धीरजवन्त, निस्वार्थी, निष्पक्ष, क्षमा करनेवाला, सहायक, होना चाहिए और या सूची अंतहीन है।

अब यीशु इस बात पर जोर देते है कि हमारा व्यवहार या आचरण अविश्वासियों के आचरण से बेहतर हो (पद 32–35)। अपने संबंधियों और मित्रो से प्रेम करना ही पर्याप्त नहीं है। गिरोह बाज भी ऐसा करते है। जो हमसे दया पूर्ण व्यवहार करते है उनके प्रति दया दर्शाना ही पर्याप्त नहीं है, हत्यारे और व्याभिचारी भी ऐसा करने मे सक्षम है। पुनः पाने की आशा रखकर देना पर्याप्त नहीं है, स्थानीय कर्ज देनेवाली कंपनी यह कर सकती है। यदि हम संसार पर प्रभाव डालना चाहते है तो हमें उस सीमा से आगे निकलना होगा जो केवल मानवीय है और वहां पहुँचना होगा, जहां ईश्वरीय जीवन प्रगट होता है। हम उन्हे प्रेम करके जो प्रेम के योग्य नही है जो दुष्ट और कृतघ्न है, उनके साथ भलाई करके जो भलाई के योग्य नहीं है, और वापस पाने की आशा रखे बिना देकर यह कर सकते है। परमेश्वर शिष्यता के ऐसे आदर्श को भरपूरी से प्रतिफल देगा, और हम सर्वोच्च परमेश्वर की सन्तानें ठहरेंगे।

सर्वोच्च परमेश्वर की सन्तान बनने का यह मार्ग नहीं है। उसका एक मात्र मार्ग है – परमेश्वर के समक्ष पश्चाताप और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास। पर हम इन कामो के द्वारा संसार को यह दर्शाते है कि हम परमेश्वर को सन्ताने है। हम कृतघ्न और बुरे लोगों के प्रति दया का व्यवहार करके अपने पारिवारिक गुणो का प्रदर्शन करते है।

प्रभु की सेवा करते समय बारहो का सामना सभी प्रकार की मानवीय आवश्यकताओं से होगा – बीमार, अंधे, बहिरे, बुजुर्ग, बिगड़े, हुए, विक्षिप्त, दुष्टात्माग्रस्त, अकेले, निर्धन और निराश्रिय। ऐसे समय भी आएंगे जब वे अधीर हो उठेंगे, शारीरिक रुप में थक जाएंगे और भावनात्मक रुप में चुक जाएंगे, और वे उन बेचारे लोगों को डाटने–फटकारने पर उद्यत हो जायेंगे। यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया कि वे दयावन्त बनें जैसा उनका स्वर्गीय पिता है।

"दोष मत लगाओ ... तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे बहुत से लोग जिन्हें शेष बाइबल का ज्ञान नहीं है वे यह पद जानते है और वे इसे किसी प्रकार की आलोचना या सुधार के स्वर को चुप कराने में उपयोग करते है। यदि वे शेष बाइबल पढें, वे जान लेंगे कि दोष लगाने का समय और दोष न लगाने का समय भी है।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर के वचन के आधार पर हमें शिक्षकों को परखना चाहिए और उनकी धर्मशिक्षा को भी (1 करि. 14:29)। हमें परखना चाहिए कि दूसरे लोग सच्चे विश्वासी है या नहीं अन्यथा हम असमान जुएं में न जुतने की निषेधाज्ञा का पालन नहीं कर सकते (2 करि. 6:14)। हमें विश्वासियों के बीच मतभेदो को परखना चाहिए (1 करि. 6:1–6)। हमें अपने स्वयं के जीवन में पाप को परखना चाहिए (1 करि. 11:31)। स्थानीय कलीसिया को पाप के विभिन्न चरम स्वरुपों को परखना चाहिए (1करि. 5:12)। स्थानीय कलीसिया को जाँचकर देखना चाहिए कि प्राचीन और सेवक बनने के प्रत्याशी क्या अहर्ताधारी है (1 तीमु. 3:1–13)।

परन्तु अन्य क्षेत्र है जिनमें हमें दोष देखना या परखना नहीं चाहिए। हमे दूसरों के मनोभावों को नहीं परखना चाहिए क्योंकि केवल परमेश्वर जानते है कि उनके मन में क्या चल रहा है। हमें परमेश्वर के सेवको की सेवा को नहीं परखना चाहिए (1 करि. 4:5)। केवल एक ही है जो जानता है कि वे सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थरों से निर्माण कर रहे है, या काठ, खूंटी और भूसा रख रहे है (1 करि. 3:12)। हमें उन पर दोष नहीं लगाना चाहिए जो हम से नैतिक असहमति या अमहत्वपूर्ण मसलो पर भिन्न विचार रखते हे (रोमियों 14:3–4, 13)। अतं में, हमे बाहरी रुप–रंग के आधारपर किसी के बारे मे निर्णय नहीं करना चाहिए (यूहन्ना 7:24)। पक्षपात नही करना चाहिए (याकूब 2:1–4)।

"दोष मत लगाओ, और तुम पर भी दोष नहीं लगाया जायेगा।" यदि चेले सदैव दूसरों पर दोष लगाते रहे तो यह उद्धारकर्ता की गलत छवि दर्शाएगा, क्योंकि यीशु दोषी ठहराने नहीं परन्तु उद्धार करने आये थे। उसके अनुयायियों को आलोचना करनेवाल, निंदा करनेवाले और दोष ढुंढने वाला नहीं होना चाहिए। सत्य है कि वे गंभीरतापूर्वक सत्य के पक्ष में बोले, पर इसके लिए लगातार नकारात्मक सेवकाई करने की आवश्यकता नही है। जो लोग सदैव आलोचना या दोष ढूँढने का काम करते है, वे अपने सदृश लोगो को आकर्षित करते है, और ऐसी कलीसिया में विघटन या विभाजन अटल है।

''क्षमा करो और तुम्हे भी क्षमा किया जायेगा।'' यह क्षमा माता–पिता से मिलनेवाली क्षमा है और यह न्यायिक क्षमा से भिन्न स्वरुप मे है। जब कोई पापी उद्धारकर्ता पर भरोसा करता है तो उसे न्यायिक क्षमा मिलती है, अर्थात् परमेश्वर जो न्यायधीश है, वह उसे पाप का दाम, या दण्ड चुकाये बिना क्षमा करता है, परन्तु जब एक मसीही पाप करता है, तब उसे पिता की क्षमा की आवश्यकता होती है। जब वह अपने पाप का अंगीकार करता है, तब वह क्षमा पाता है (1 यूहन्ना 1:8)। यह क्षमा सशर्त होती है। यदि विश्वासी पश्चाताप करने वाले भाई को क्षमा करने से इन्कार करता है तो परमेश्वर परिवार के संबंधो का पुर्नगठन करनेवाली क्षमा नहीं प्रदान करेंगे। परमेश्वर की प्रत्येक संतान को लाखों बार क्षमा किया गया है, उसे भी कुछ सौ बार क्षमा करने तैयार रहना चाहिए (मती 18: 23–35)।

शिष्यों को एक सबक आरंभ में ही सीख लेना चाहिए कि वे परमेश्वर से अधिक बढ़ कर दान नहीं दे सकते, यदि वे वास्तव में उदार बनना चाहते है, तो परमेश्वर स्वयं सुनिश्चित करेंगे कि उनके लिये उदारता के साधनों की कमी न हो। यदि वे दान करेंगे, परमेश्वर उन्हें वापस दान करेंगे, और परमेश्वर का देना और भी अधिक बढ़कर होता है। सोचकर देखिए कि यह सेवकाई के आम विचार से कितनी भिन्न है जिसमे सेवकाई को आर्थिक सुरक्षा का साधन समझकर उपयोग किया जाता है। पवित्र शास्त्र यह नहीं सिखाता कि ''जितना भी मिल सके, समेट लो,'' पर ''जितना भी दे सको, दे दो।''

जब सभी बातें असफल सिद्ध होती है, तब प्रेम विजयी होता है। एसाफ की एक कहानी में, सूर्य और हवा प्रतिस्पर्धा करते है कि कौन एक मनुष्य का ओवरकोट उतरवा देगा। हवा जितनी तेज बहती वह मनुष्य ओवरकोट को और भी कसकर पकड़ता और छोड़ता नहीं, जब सूर्य की बारी आई, वह उस पर चमका और मनुष्य ने कांपना छोड़ दिया और अपना ओवरकोट भी उतार दिया। गर्माहट जीत गई।

एक छोड़ा लड़का किसी खाली जगह में खेल रहा था जहाँ आवाज गूंजती थी। वह चिल्लाया – ''मैं तुम से नफरत करता हूं'' और प्रतिध्वनि गूंज उठी – ''मै तुम से नफरत करता हूँ।'' जितनी बार भी वह जोर से चिल्लाया, प्रतिध्वनि भी उतरी ही तेज होकर आई। वह दौडकर सुबकता हुआ अपनी मां के पास गया और उसे बताया – ''पड़ोस में एक लड़का है जो मुझ से नफरत करता है।'' मां ने उसे बुद्धिमानी से सलाह दी कि वह उससे कहे वह उससे प्रेम करता है। हर बार जब वह लड़का चिल्लया – ''मैं तुमसे प्रेम करता हूँ'', तब उसने वही प्रतिध्वनि सूनी ''मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।''

संसार थोड़ा सा प्रेम पाने के लिये तरस रहा है। मसीह अपने शिष्यों को बुलाहट देते है कि वे परमेश्वर द्वारा उनके ह्दयों में बहाये गये प्रेम को लेकर संसार में जाये।

अध्याय - 5

यह तत्व रुप में भिन्न प्रशिक्षण है - भाग 3

लूका 6:31-49

मसीही शिष्यों की सेवकाई चरित्र की सेवकाई है। उनकी आत्मिक और नैतिक एकनिष्ठा ही उनकी संपत्ति है जिसका कारोबार चलता है। वे क्या करते और क्या कहते हैं उससे कहीं बढ़कर महत्वपूर्ण है कि वे क्या है। मजबूत मसीही चरित्र का संवर्धन ही मुख्य बात है। वास्तव में नये नियम में, आत्माओ को जीतने के संबंध में प्रोत्साहन का बहुत कम वर्णन मिलता है, जबकि पवित्र जीवन जीने के सैकड़ो प्रोत्साहन मिलते है। जब यीशु ने कहा, "मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हे मनुष्यों को पकड़नेवाला मछुवारा बनाऊंगा," उसने मसीह के समान जीवन जीने को सफलतापूर्वक आत्माओं को जीतने की पूर्व अहर्ता के रुप मे विकसित किया।

मैं आप को कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ कि यह कैसे काम करता है। एक उद्धार न पाया हुआ नाविक एक मसीही साथी के व्यवहार से प्रभावित हो गया। मसीही व्यक्ति संतुलित, आत्मनियंत्रित और ईमानदार था। वह किसी भी बातचीत मे बिना अपशब्द कहे, बातें कर सकता था। एक रात डिक ने अपने मित्र से कहा – "बर्ट, तुम अलग हो, तुम मे कुछ है जो मुझ में नही है मुझे नहीं पता वह क्या है, पर मैं उसे पाना चाहता हूँ," बर्ट के लिये उस रात डिक को प्रभु के पास लाना आसान था।

जब एक विश्वविद्यालयीन छात्र अधिक मदिरा सेवन करने के कारण प्रतिकर्षक हो गया, उसके अपने मित्र उससे दूर हो गये। वास्तव में उसके साथ एक ही कमरे मे रहनेवाले साथियों ने भी उसे कमरे से जाने का आदेश दिया। उसे कोई नहीं चाहता था। अंत में, एक जोशीले विश्वासी ने उसकी तकलीफ समझकर उसे अपने साथ रहने का निमंत्रण दे दिया। पियक्कड़ तो असहनीय था पर भले सामरी ने उसके लिये भोजन तैयार करने और उसके कपड़े धोने के काम किये। अकसर उसे उसकी उल्टी साफ करनी पड़ती, उसे नहलाना पड़ना और सुलाना पड़ता। धीरे – धीरे पियक्कड़ का धीरज खोने लगा, एक दिन वह क्रोध में चिल्लाया, "सुनो, तुम यह सब क्यों कर रहे हो? तुम चाहते क्या

हो?'' मसीही ने शांत स्वर मे उत्तर दिया ''मै तुम्हारी आत्मा को बचाना चाहता हूं।'' वह समझ गया। एक कहानी और है, सर हेनरी एम. स्टेनली की जो मिशनरी कार्यकर्ता डेविड लिनिंगस्टोन की खोज में आफ्रिका गया था। स्टेनली ने बाद के दिनों में लिखाः

> धर्म के प्रति पूर्वाग्रहों के साथ मै आफ्रिका गया, जैसे कि लंदन में अनेक धर्म के विरोधी है, मेरे जैसे संवाद दाता के लिए जिस का संबंध केवल युद्धो, जन–समूहों, सभाओ, और राजनैतिक जमावड़े से रहा था, भावनात्मक बातें मेरी रुचि के क्षेत्र से बाहर थी। परन्तु मेरे अंदर अवलोकन और परावर्तन करने का एक लंबा समय बीता। मै वही सांसारिक संसार से बहुत दूर था। मैंने उस अकेले बूढे (लिविंग स्टोन) को देखा, और स्वयं से प्रश्न किया, ''वह ऐसे स्थान में क्यों ठहरा है? कौन–सी बात उसे प्रेरणा देती है?
>
> उन से मिलने के महीनों बाद, मैं उनकी बातों पर ध्यान देने लगा, और उस बूढ़े के इन शब्दों पर 'अमल को देखकर चकित होता – 'सबकुछ त्यागकर, मेरे पीछे चलो।' परन्तु धीरे – धीरे उनका संत स्वभाव, शालीनता, लगन, सच्चाई और यह देखकर कि वे कैसे चुपचाप अपना काम करते जाते है, मेरा ह्दय–परिवर्तत हो गया, यद्यपि उन्होंने ऐसा करने के लिये कभी कोई प्रयास नहीं किया।

बाहरी संसार हमे बाइबिल से अधिक पढ़ता है। एडगर गेस्ट के साथ लोग कहते है ''किसी दिन उपदेश सुनने की अपेक्षा मैं उसे देखना अधिक पसंद करुंगा।'' और अकसर वे यह कहने के लिये विवश हो जाते है कि ''आप जो बोलते है, इतना जोर से बोलते है कि मैं सुन नहीं पाता आपने क्या कहा।'' जब एक प्रचारक मंच पर था उसकी मण्डली चाहती थी कि वह मंच से कभी न उतरे। जब वह मंच पर नहीं होता, वे चाहते थे वह कमी मंच पर न चढें। भले ही वह बड़ा प्रचारक था, उसका जीवन उसके प्रचार से मेल नहीं खाता था। हम में से प्रत्येक या तो बाइबल है या किसी की निंदा के कथन।

> एक कवि हमें स्मरण कराते हैं –
> *आप सुसमाचार लिख रहें है, हर दिन एक अध्याय,*
> *जो काम आप करते हैं या जो बातें आप कहते है,*
> *उनके द्वारा, लोग पढ़ते है, जो आप लिखते है चाहे अविश्वसनीय या सत्य! कहिये।*
> *आप के अनुसार सुसमाचार क्या है?*

एक बार पूछे जाने पर कि आपकी पसंद का सुसमाचार कौन सा था – 'एक' मनुष्य ने उत्तर दिया – ''वह सुसमाचार जो मेरी माँ के अनुसार है।'' इसी दिशा में, जॉन वेसली ने कहा था कि उसने सारे यूरोप के धर्मविज्ञानियों से बढ़कर अपनी मां से मसीहत के बारे में सीखा था।

एक प्रसिद्ध सेवक का एक भाई मेडीकल डॉक्टर था। एक दिन एक महिला प्रचारक के द्वार पर आई परन्तु असमजंस में पड़ गई कि कौन से भाई का घर था। जब उसने दरवाजा खोला उस महिला ने पूछा – ''क्षमा करे, क्या आप वह डॉक्टर है जो प्रचार करते है या वह जो प्रेक्टिस करते है?'' उस प्रश्न ने उसे आंदोलित कर दिया और उसने निश्चय किया कि वह जो प्रचार करता है, उस से बढ़कर उन सत्यों पर अमल करेगा।

वर्षों पहले मैंने अपनी बाइबिल के मुखपृष्ठ पर यह छंद लिखा था –

यदि मसीह के बारे में जानने का एक मात्र अवसर
उन्हें मुझे देखने पर मिलता है,
मैक डॉनल्ड वे मुझ में क्या देखते है?

यह एक स्वस्थ स्मारक है कि बहुत से लोगों के लिए उद्धारकर्ता को देखने का एक मात्र अवसर, जो उन्हें मिलेगा, वह हम ही है। लूका 6:31–44 में हमारे प्रभु अपने चेलो से चरित्र के बारे में बातें कर रहे हैं कि चरित्र कितना महत्वपूर्ण है। सबसे पहिले, वे संकेत करते है कि हम एक सीमा तक ही दूसरो की सहायता कर सकते है। अंधा, अंधे को मार्ग नहीं दिखा सकता। यदि हमारे जीवन में कोई अंधकार है, पाप की कोई आदत जिस पर हम ने जय नहीं पाई, कुछ आज्ञाएं जो हमने पालन नहीं की, कुछ चरित्रगत बड़ी निर्बलताएं – हम दूसरों को नहीं सिखा सकते कि वे कैसे विजय पाए। यदि हम प्रयास करेंगे, संभव है, उत्तर मिले –''हे वैद्य, पहिले स्वयं को चंगा कर।''

एक शिक्षक अपने शिष्य को उस सीमा तक ही सिखा सकता है, जहां तक वह स्वयं पहुंचा है, वह शिष्य से आशा नहीं कर सकता कि वह उस सीमा से आगे निकल जाये। सीखनेवाले के लिये शिष्यता का लक्ष्य अपने प्रशिक्षक जैसा बनना होता है।

यीशु ने आंख में 'तिनके' और 'लट्ठे' का उदाहरण देकर इसी सत्य की व्याख्या की है। एक पवित्र कल्पना का उपयोग कर हम मन में एक व्यक्ति की तस्वीर बनाये जो खलिहान में से गुजर रहा था। अचानक हवा के झोके से एक तिनका उड़कर उसकी बाँयी ऑख में बैठ जाता है। वह आँख मलता, और मलता है, और वह जितना अधिक मलता है उसे उतनी अधिक तकलीफ होती है। मित्र उसे घेर लेते है और उपचार के नुस्खों बताते है। एक कहता है – ''अपनी आँख की उपरी पलक को नीचे तक खींचकर ढ़ांक लो।'' पर कोई लाभ नहीं मिलता। तब मैं आकर सहानुभुतिपूर्वक सहायता करने का निवेदन करता हूँ – जब कि मेरी अपनी आँख में 'टेलीफोन पोल' जैसा बड़ा–सा लट्ठा है। क्या होता है? वह मेरी ओर देखता है, उसकी लाल–लाल आँखो से, और कहता है – क्या आपको नहीं लगता कि आपको अपनी आँख से यह पोल निकलवाना चाहिये?''

निश्चय, मै किसी ऐसे मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते जो किसी नैतिक या आत्मिक समस्या में है, यदि मुझे भी वही समस्या है, और विशेषकर तब जब मेरी समस्या अधिक बड़ी समस्या है, और विशेषकर तब जब मेरी लिये बेहतर होगा कि अपने जीवन की समस्या को पहिले सुधारुं। यह समझाने के लिये कि संदेश का विषय 'मनुष्य' स्वयं है, यीशु भले और बुरे वृक्ष, भले और बुरे मनुष्य और घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख मनुष्य का उदाहरण देते है। भले वृक्ष भले फल लाते है, वृक्ष जो स्वस्थ नहीं होते वे बुरे (कीड़े लगे) फल देते है। एक वृक्ष उसके फलों से पहिचाना जाता है। कंटीली झाड़ियां अंजीर उत्पन्न नहीं कर सकती और चुभनेवाली झाड़ियो में अगूंर नहीं फलते।

मनुष्यों के साथ भी यही होता है। एक भला व्यक्ति उन्नति, राहत और दूसरों के लिये प्रोत्साहन के शब्द कहता है। वह जिनसे भी संपर्क करता है उनके लिये उसका जीवन आशीष का कारण बनता

है। दुष्ट व्यक्ति दूसरी ओर अशुद्ध करनेवाली, विनाशक और व्यर्थ की बाते कहता है। किसी व्यक्ति की सेवकाई इस आधार पर तय होती है कि वह भीतर से कैसा है। बातचीत चरित्र का संकेतक है।

जब प्रभु यीशु मैदान के अपने संदेश के अंत में पहुंचते है, यह जानकर कि वह तत्वरुप में कितना भिन्न और क्रांतिकारी है, वे पहिले से ही देख लेते हैं कि चेले इस परीक्षा में पड़ेंगे कि इसे सुनें पर करे नहीं। वे उसे 'हे प्रभु, हे प्रभु कहकर पुकारेंगे, पर वह नही करेंगे जो वह कहता है। इसलिए वे एक बुद्धिमान और एक मूर्ख घर बनानेवाले के बारे में बताते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति उसके वचन को सुनता और उन पर चलता है। उस मनुष्य का जीवन सुदृढ़ आधारशिला पर बना है। जब उसके जीवन में तूफान आते है, और वे आयेंगे ही, वह अटल बना रहता है। उसका जीवन मसीही शिष्यता के सही सिद्धांतो पर बना है, जिन्हें प्रभुने अभी–अभी सिखाया था।

मूर्ख मनुष्य वह है जो सुनता है पर आज्ञा पालन नहीं करता। वह अपनी स्वयं की बुद्धि और सामान्य ज्ञान पर (अधिक) निर्भर होता है। वह विचार करता है कि उद्धारकर्ता का कार्यक्रम ऐसे संसार में, जैसा यह संसार है, कभीं काम नहीं करेगा। इसलिये वह सांसरिक बुद्धि की धसकने वाली बालू पर अपना घर बनाता है। जब तूफान आता है, तब उसका बनाया हुआ जीवन ढ़ह जाता है। उसका आत्मा भले ही बच जाये, पर उसका जीवन नष्ट हो जाता है। उसके पास व्यर्थ बर्बाद हो चुके वर्षो का कोई कारण नहीं होता कि वह बता सके। बर्बाद होने वाला जीवन एक भयंकर बात है।

अध्याय - 6

सुरक्षित भविष्य पायें

मत्ती 6:19-34

प्रभु यीशु के पास उनके शिष्यों के लिये एक सुरक्षा कार्यक्रम है। पहिली दृष्टि में लगता है कि अब तक हमें सुरक्षा के विषय में जो सिखाया गया है, बुद्धिमानी और सामान्य ज्ञान यह कार्यक्रम उन सब मान्यताओं को भंग करता है। परन्तु 'कठोर सत्य' यही है कि प्रभु की योजना 100 प्रतिशत सुरक्षित है जबकि मनुष्यों की सभी योजनाओं में खतरा और असुरक्षा है।

सबसे पहिले प्रभु पृथ्वी पर धन इकठ्ठा करने से मना करते है। वे बरसात के दिन के लिये, या बुरे दिनों के लिये जमा करके रखने की सर्वमान्य बुद्धि के विरुद्ध बोल रहे है। हमें सदैव यह शिक्षा दी जाती रही है कि ''बुद्धिमान मधुमखियाँ शहद जोड़ती है, और बुद्धिमान व्यक्ति धन (रुपया) जोड़ते है।'' हमारे मनो में यह बात बैठाई गई है कि जीवन के अंतिम दिनों में आर्थिक निर्भरता से बचनें के लिये हमें कुछ करना चाहिए। हम सोचते है कि यदि हमारे पास पर्याप्त पैसा है, हम बिना डरे भविष्य का सामना कर सकते है। हमें लगता है कि भौतिक धन सम्पत्ति हमें सुरक्षा प्रदान करती है।

किसी को आपत्ति हो सकती है कि यदि वह केवल विश्वास से जीवन जीयें, तो उसका मानसिक संतुलन खो जाएगा। नहीं, ऐसा नहीं है, यीशु ने कहा। संसार में जमा धन एक नहीं परन्तु तीन प्रकार से मानसिक संतुलन को बिगाडता है -''कोड़े....काई....चोर।'' बाइबिल के दिनों में धन वस्त्रो एवं सिक्को के रुप में होता था, कपड़ो में कोड़े लग सकते थे, और सिक्को में काई, और दोनों को लगातार चोरी हो जाने का खतरा बना रहता था। वास्तविक सुरक्षा पाने का तरीका था कि स्वर्ग में धन जमा किया जाये। जीवन भर एक अनिश्चित भविष्य के लिये नाश होने वाला धन एकत्रित करने के स्थान पर हमें अपने सर्वाधिक उत्तम गुणों का उपयोग करके अनंतकाल के लिये निवेश करना चाहिए। हम ऐसा करते है, निश्चय, जब प्रभु के काम के लिये अपना धन लगाते है, विश्वास योग्यता और अथक परिश्रम के साथ प्रभु की सेवा करते है, और जीवन वस्तुओं के लिये नहीं परन्तु लोगों के लिये जीते है।

चर्चा में आग बढ़ने से पहिले, हम जोर देकर कहना चाहते है कि यह वृतान्त हमारी तात्कालिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के विषय में नही कह रहा है। हमे अपनी और परिवार की वर्तमान आवश्यकताओं के लिये कड़ा परिश्रम करना चाहिए। परन्तु जब वे आवश्यकताएं पूरी हो जाए, हमें सब कुछ स्वर्गीय भंडार में निवेश कर देना चाहिए और भविष्य के लिये परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। यदि हम ऐसा करे, हमारे भंडार मे कभी कीड़े, काई और चोरों से नुकसान नहीं होगा।

इस तथ्य से इकांर नहीं किया जा सकता कि जहां हमारा धन होता है, हमारा मन भी वही लगा रहता है। दूसरे शब्दों में, हमारी रुचि, स्नेह और महत्वाकांक्षाए या तो बैंक से जुड़ी है या फिर स्वर्ग से। हमारे ह्दय की लगन उसके लिये है, जिसके लिये हम जीते है। यह दर्शाता है कि हमारे ह्दय के केंद्र में क्या है। यदि हमारा ध्येय पृथ्वी पर धन का सग्रंह करना है तो यह हमें आंतरिक रुप में भस्म कर देगा। इस बारे में कोई गलती न करे। हम पृथ्वी के धन और स्वर्गीय धन दोनो के लिये एक साथ नहीं जी सकते। यीशु ने मानव आँख का उदाहरण देकर इसे समझाया है। शरीर का दीया आँख है, आँख के द्वारा प्रकाश देह में प्रवेश करता है और व्यक्ति को मार्गदर्शन देता है। यदि आँख निर्दोष है, अर्थात सही है, व्यक्ति साफ – साफ देखता है कि कहां जाये। यदि आंख दोष पूर्ण है – अर्थात व्याधिग्रस्त है तो आगे का मार्ग धुंधला और दुर है।

इसकी आत्मिक व्याख्या यह हैः निर्दोष आँख केवल स्वर्गीय भडांर के लिये जीवन जीने के संकल्प की प्रतिनिधी है। वह व्यक्ति जो अपना धन स्वर्ग में इकठ्ठा करता है उसे कभी परमेश्वर के मार्गदर्शन का अभाव नहीं होगा। बुरी आँख, दोनों संसारों की अभिलाषा करती है, वह दोनो स्थानों में धन रखना चाहती है। ऐसा व्यक्ति जिसके उद्देश्य विभाजित है, आत्मिक अंधकार का अनुभव करेगा। उसे प्रभु की और से स्पष्ट दिशा – निर्देश मिलने का अभाव होगा। वास्तव में उसका अंधकार उस व्यक्ति के अंधकार से अधिक बढ़कर होगा जिसे इस विषय पर कभी प्रकाश नहीं मिला। उद्धारकर्ता की इस यह शिक्षा कि स्वर्ग में धन जमा करो, इस विषय पर न जानना अधिक बेहतर होता, बजाए इसके कि उन्हें जानकर अस्वीकृत करता है। ज्योति का प्रतिरोध करना ज्योति से इंकार करना है। ''परन्तु जिसके पास नही है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जायेगा''(मत्ती 25:29)। एक स्वामी को दूसरे से अधिक महत्व दिये बिना दो स्वामियों की सेवा करना असंभव है, स्वामिभक्ति का विभाजन करना ही होगा। अटल रुप में स्थितीयां आयेगी जिन में दोनो स्वामियों के हित परस्पर टकरा जाएंगे। एक चुनाव करना होगा। यदि हम धन के लिये जीते है, हम परमेश्वर के लिये नहीं जी सकते। हमें पृथ्वी पर धन और स्वर्ग में धन दोनों में से एक को चुनना होगा।

हमारे प्रभु ने छः कारण दिये हैं कि क्यो हमें भविष्य की आवश्यकताओं के विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिये, जहां तक इस जीवन की आवश्यकताओं का संबंध है – प्रथम, यह गलत बात पर जोर देता है कि महत्वपूर्ण क्या है। हमें भोजन, खाने पीने और वस्त्रों के लिये ही नहीं जीना चाहिए कि मानो ये ही वे बातें है जो जीवन में वास्तव में महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने हमें खाने पीने और वस्त्र पहिनने से कहीं अधिक बड़े उद्देश्य से पृथ्वी पर रखा है।

दूसरा, संभावित भविष्य के संकटों के लिये व्यग्र होकर चिन्ता करना, हमारे पिता द्वारा हमारी परवरिश की परवाह पर संदेह करना है। यीशु ने सुझाया कि हम पक्षियों से इस बारे में सीखें। उसने

कहा वे न तो बोते है न काटते है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम भी ऐसा न करे। पक्षी न बो सकते है, न फसल काट सकते है, पर हम ऐसा कर सकते है। वे प्रतिदिन भोजन पाने के लिये परिश्रम करते है और वे भविष्य की चिंन्ता नहीं करते। चिड़ियों को चिन्ता के कारण अलसर नहीं होते और न ही वे तनाव संबंधी व्याधियों के लिये मनोचिकित्सक की खोज करते है। वे एक बार में एक दिन जीते है और उनका भविष्य उनके सृजनहार के हाथो में है। किसी पक्षी के घोसले में भंडारगृह या खत्ते नहीं होते। शताब्दियों से पक्षियों की जनसंख्या, धुंधले और अनजाने भविष्य के लिये संग्रह किये बिना भी अस्तित्व में बनी है। यदि परमेश्वर अपनी पंखोवाली सृष्टि की इतनी चिन्ता करता है, वह हमारी चिन्ता कितनी अधिक करता है।

चिन्ता करने से मना करने का तीसरा कारण यह है कि चिन्ता करना व्यर्थ है। ''तुम में कौन है जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? या, उद्धारकर्ता का प्रश्न इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है, ''तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी का समय बढ़ा सकता है?'' यहां जीवन को एक यात्रा के समान माना गया है, बहुत से मील की यात्रा, और प्रश्न है कि ''कौन भविष्य की चिन्ता करके उसमें अठाराह इंच जोड़ सकता है?'' प्रयास करना व्यर्थ है। वास्तव में चिन्ता करना जीवन को बढ़ाता नहीं परन्तु घटाता है।

यदि हम विचार करना बंद कर दे, हम यह बात समझ लेंगे कि हमारे भविष्य के लिये सुरक्षा प्रदान करना एक बात के कारण पूर्णतः असंभव है। हम नहीं जानते कि हम कितने समय तक जीएंगे। हमें नहीं पता कि भविष्य में रूपये का मूल्य क्या होगा। हमें नहीं पता कि हमारे सामने कौन से खर्चे आएंगे। बहुत सी बातें है जिन्हें हम नहीं जानते, इसलिये 'बुरे दिनो' के लिये योजना बनाना संभव नहीं है।

तब यीशु ने फूलों की ओर संकेत करके दर्शाया कि वस्त्रों के बारे में चिन्ता करना, परमेश्वर मे विश्वास का अभाव है। वह ईस्टर के समय गमलों में लगी कुमुदनी के बारे में नहीं सोच रहा था, परन्तु उन घास के फूलो के बारे में सोच रहा था, जो इस्राएल के पहाड़ी मैदानों में अपने आप भरपूरी के साथ खिलते है। प्रभु ने अत्याधिक भव्यता और निपुणता के साथ उनकी संरचना की है, और उन्हें हतप्रद करनेवाली सुंदरता से सजाया है। यहां तक कि सुलैमान ने भी अपने सारे विभव में उनके जैसे भव्य वस्त्र नहीं पहिने। फिर भी ये मैदान के फूल जो भूमि को रंग बिरंगा करके ढांक देते है, कल काट दिये जायेंगे और खुली भट्टियों में झोंक दिये जायेंगे, जहां उनकी आग से मध्य–पूर्व की ''फ्लैट ब्रेड'' बनायी जायेगी। सोचिये, यदि परमेश्वर, जंगली फूलो को इतनी अधिक सुंदरता के वस्त्र देता है, तो वह अपनी प्रजा को समुचित वस्त्र कितना बढ़कर देगा?

जॉन स्टाट ने कहा था,

> भौतिक वस्तुओं में इतना लिप्त हो जाना कि वे हमारा ध्यान खींच ले, हमारी उर्जा सोख ले, और हमें व्यग्रता से भर दे, मसीही विश्वास और सामान्य ज्ञान दोनो के अनुकुल नहीं है। यह हमारे स्वर्गीय पिता के प्रति अविश्वास और स्पष्ट रुप में मूर्खता है।

पांचवां कारण कि हमें क्यो भोजन, पानी और वस्त्रों की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि अन्य जातीय लोग यही करते है। परमेश्वर नहीं चाहते कि हम अन्यजातियों के समान बने। अन्यजातीय प्रथम स्थान

शरीर को देते है, वे उसे संवर्धित करने के लिए जीते है, वे आवश्यक रुप मे सांसारिक, पृथ्वी के और शारीरिक होते है। बिना ईश्वरीय जीवन, उनसे 'मांस और लोहू' के स्तर से उपर उठने की आशा नहीं की जा सकती। परन्तु विश्वासीयों को भिन्न होना चाहिए। उन्हें अपने जीवन की सर्वोत्तम बातें अनंतकाल के लिये खर्च करनी चाहिये।

अंतिम कारण, कि चिंता करना अनावश्यक है, ''क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हे इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।'' यह सरल तथ्य कि वह जानता है, इस काल की गारंटी है कि वह हमारी देखभाल करने के लिये तैयार है और समर्थ भी है। हमारा भविष्य उस से बेहतर हाथों में नहीं हो सकता।

अब, प्रभु यीशु हम सबके साथ जो उसके शिष्य है, एक वाचा बांधने के लिये तैयार है। वे जानते है कि यदि हमें स्वयं अपने भविष्य के लिये व्यवस्था करनी होगी, तो हम धन संग्रह करने मे व्यस्त हो जाएंगे, और हमारे पास हमारे प्रमुख कार्य अर्थात परमेश्वर की सेवा करने का समय नहीं बचेगा। हम अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन धन के संग्रह में लगा देगे, और अनंतकाल के मूल्यो का विचार करके जीवन नहीं जीयेगे। इस कारण वे हम से कहते है, जिसका अर्थ है, ''मेरा काम पहिले करो, अपनी और अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम करो। मेरे काम में शेष सब कुछ निवेश करो। और मैं तुम्हारे भविष्य की चिन्ता करने की प्रतिज्ञा देता हूँ। यदि तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज पहिले करो, तो तुम्हे जीवन की आवश्यक बातो की कभी कमी घटी नहीं होगी।''

संक्षेप में, हमारे प्रभु हमें भविष्य के विषय चिन्ता करने और बुरे दिनो के लिये धनसंग्रह करने मे जीवन का अपव्यय करने से मना करते है। हमारी जिम्मदारी है कि हम आज के दिन परमेश्वर के लिये जीये और भविष्य को उसकी चिंता स्वयं करने दे। आज के दिन में व्यस्त रहना और काम करना हमारे लिये पर्याप्त है।

किसी ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति बुरे दिन के लिये जीता है, तो परमेश्वर अवश्य उसके लिये 'बुरे दिन' भेजेंगे! और कैमरान थाम्पसन ने कहा था, ''परमेश्वर अपनी सर्वोत्तम आशीषें उन पर भेजते है जो किसी बात की चिन्ता नहीं करते। वे व्यक्ति जो वर्तमान दिनो में संसार के दुःख से अधिक बुरे दिनों को महत्व देते है, वे परमेश्वर से किसी आशीष को नहीं पाएंगे।''

अध्याय - 7

उसने कहा, "अपना सब कुछ त्याग दो"

लूका 14:25-35

संभव है कि ये पदें बाइबल की सबसे अलोकप्रिय पदें है –

> *और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे फिरकर उन से कहा। यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। और जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे न आए वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें। कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?*
>
> *या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूं कि नहीं? नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा। वह न तो भूमि के और न खाद के लिये काम में आता है, उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं, जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले।*

पद 25 *"और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे फिरकर उन से कहा"* ....। प्रभु भीड़ से बात कर रहा था, उद्धार पाये और उद्धार न पाये लोग उस भीड़ में थे। यीशु ने उद्धार न पाये हुओ के लिये भी अपने संदेश का एक सही रुप प्रस्तुत किया। इसका अर्थ है मसीह सबसे प्रथम हो, अन्य सभी प्रेम संबंध तुलना करने पर नफरत के समान हो। उसने अपनी सर्वोत्तम बातो को दिखाने के लिये ऊपर नहीं सजाया। मसीह द्वारा घटनी करने की प्रक्रिया पर ध्यान दे – ''पहिले

वह सभी को बुलाता है, बाद में छँटनी करता है'' (जी. कैम्पबैल मॉरगन)। ''उसने चेले बनाने के लिये अपनी सच्चाई (चोटों के निशान) कभी नहीं छुपाये।

पिछले भाग में उसने सुसमाचार दिया इस भाग में वह सेवा के विषय में कहता है। उसें शिष्य चाहिए निर्णय नहीं, वास्तविक योद्धा चाहिए, चॉकलेटी योद्धा नही, उसे गिनती नही गुणवत्ता चाहिए। स्मरण करे कि उसने गिदोन की सेना की गिनती कैसे 32,000 से घटा कर 300 कर दी थी।

पद 26 *"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"* ऐसा ही वृत्तान्त मती 10:37 में है, वहां लिखा है, ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं है, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नही।'' वाक्यांश 'मुझ से अधिक' दर्शांता है कि यीशु तुलना कर रहे थे। इस कारण, यीशु को अपने जीवन में सर्वप्रथम रखने का अर्थ है, तुलनात्मक रुप में अन्य सभी से नफरत करना। इसका अर्थ यह है कि मसीह को पहला स्थान मिले। तुलनात्मक रूप से अन्य सभी प्रेम द्वेश के समान हो।

परमेश्वर ने कहा, *''मै ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना''* (रोमियों 9:13)। याकूब से प्रेम करने की उसकी प्राथमिकता का अर्थ है तुलनात्मक रुप में उसने एसाव को अप्रिय जाना या उससे नफरत की। इसका अर्थ यह नहीं कि एसाव के प्रति उसने कठोर, घृणा या प्रतिशोध की भावना से नफरत की, परन्तु केवल यह कि उसने एसाव को याकूब से कम प्रेम किया जैसा कि याकूब के संप्रभु चुनाव से प्रगट है।

सी. टी. स्टड इस बात से आशंकित थे कि कहीं उनकी मंगेतर उन्हें यीशु से अधिक प्रेम न करने लगे, इसलिये उन्हों ने यह कविता लिखकर उसे दी और जीवन भर हर दिन दोहराने के लिये कहा –

हे यीशु, मैं तुझ से प्रेम करती हूँ
चार्ल्स मुझे कितना भी प्रिय लगे
आप मुझे उससे बढ़कर प्रिय है।

जब कवि रस्किनने एक मसीही महिला से विवाह का प्रस्ताव किया उस महिला ने पूछा, क्या तुम मुझ से यीशु मसीह से भी बढ़कर प्रेम करते हो? उसने माना कि वह यीशु मसीह से भी बढ़कर उस से प्रेम करता था। उस महिला ने कहा, ''अच्छा, यदि यह सत्य है, तो मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती।'' परन्तु एक गंभीर बीमारी से ग्रसित होने के बाद भी, रस्किन ने पुनः प्रयास किये, तब भी उसका उत्तर नहीं बदला। कुछ समय बाद उस स्त्री की मृत्यु हो गई। मसीह तब भी उसके जीवन में प्रथम था।

पद 26 मे हमारे उद्धारकर्ता ने किसी व्यक्ति की पत्नी का उल्लेख किया है। बहुत से पुरुष हैं जो उनकी पत्नियो को उनके उपर अधिकार देते है। यदि किसी की पत्नी सांसारिक है, तों उसके लिये वास्तविक शिष्यता का जीवन जीना बहुत कठिन है। परन्तु यदि वह मसीही है, तो उसे यह समझना होगा कि उसकी पत्नी को भी दुसरा स्थान ही लेना होगा। श्रीमती स्पर्जन ने चार्ल्स स्पर्जन की जीवनी में एक मजेदार घटना का वर्णन किया है:

जब स्पर्जन युवा थे, उन्हें अलग – अलग स्थानों पर सभा के लिये स्थान देखने जाना पड़ता था कि क्या वह भवन उन सब को जो सभा में आयेंगे, बैठाने की क्षमता रखता था या नहीं। वे आयु के बीसकें दशक के आरंभ में थे जब उन्होंने समुद्रतट पर बने एक्सीटर हॉल में प्रचार किया था। वहां सदैव बड़ी भीड़ होती थी। स्पर्जन की मंगनी एक युवा स्त्री से हो चुकी थी जिसका नाम सूसन थाम्पसन था। एक रात जब वे उसके घर पर थे, वे कार में एक साथ एक्सीटर हॉल की ओर एक सभा के लिये निकले। जब वे वहां पहुंचे, स्पर्जन तेजी से कार से बाहर निकले। वहां लोगों की बड़ी भीड़ थी। पुलिस वाले रास्ता बनाने और व्यवस्था करने और भीड़ को संभालने में लगे थे, पर फिर भी बड़ी कठिनाई हो रही थी। स्पर्जन को भीड़ में घुसकर, धक्का देकर मार्ग बनाना पड़ा ताकि वह हॉल में पहुंचे। वह उस बड़ी भीड़ को देखकर भावुक हो चले थे कि उन्हें इतनी बड़ी भीड़ को सुसमाचार का प्रचार करना है, अपनी जिम्मेदारी को छोड़ वे बाकी सबकुछ भूल गये। इस कारण वे भीड़ में धक्का देते, मार्ग बनाते हुए, अतं में मंच तक पहुंचे और उन्होंने प्रचार किया।

सभा समाप्ति के बाद उन्हें याद आया कि वे हॉल में किसी को साथ लेकर आए थे, पर उसे भीड़ में खो चुके थे। उन्होंने स्मरण करने का प्रयास किया कि क्या उन्होंने उसे मण्डली में कहीं देखा। तब उन्हें याद आया कि उन्होंने उसे वहां नहीं देखा। उन्हें लगा कि अब उनकी शामत आनेवाली है। इसलिए सभा के पश्चात् उन्होंने 'कैब' ली और मिस थाम्पसन के घर गये। वहां आकर, उन्हें पता चला कि वह उन से मिलना ही नहीं चाहती। वह उपरी कक्ष में थी और उसका मुँह बना हुआ था। उसने सोच रखा था कि वह सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी, सारी भीड़ से भी अधिक। स्पर्जन ने मिलने का हठ किया और अतं मे वह नीचे उतरकर आई। उसने उसको सारी बात समझायी, "मुझे अत्याधिक खेद है, कितुं हमारे लिये यह बात समझाना बेहतर होगा, कि मैं सबसे पहिले अपने स्वामी का दास हूं। उसे सदैव प्रथम स्थान मिलना चाहिये। मैं सोचता हूँ कि हम बड़ी खुशी के साथ जीवन बिताएंगे यदि तुम दूसरा स्थान लेने के लिये तैयार हो, परन्तु यह स्थान सदैव परमेश्वर के बाद का होगा। उसके प्रति मेरे दायित्व प्रथम है।"[5]

बाद के वर्षो में जब उनकी महान सेवकाई का अतं हुआ, श्रीमती स्पर्जन ने कहा कि उस दिन का सीखा सबक वह जीवन भर नहीं भूली। उन्होंने जान लिया कि कोई है जिसे उनके पति के जीवन में प्रथम स्थान प्राप्त है, और उनका स्थान दूसरा है। यह बड़ा ऊंचा स्तर है, है ना? परंन्तु यह बाइबल का मानदण्ड है। मसीह प्रथम स्थान की मांग करते है। यहीं बात मूसा द्वारा लेवी को दी गई आशीष से भी प्रगट है:

"उसने तो अपने माता – पिता के विषय में कहा, "मैं उनको नहीं जानता" और न तो उसने अपने भाइयो को अपना माना, और न अपने पुत्रो को पहिचाना (व्यवस्थाविवरण 33:9)।

जब इस्राएलियों ने सोने के बछड़े की पूजा की, तब लेवी के पुत्रों ने परमेश्वर का पक्ष लिया और अपने निज रिश्तेदारो को घात किया था (निर्गमन 32:26–29)। वास्तव मे, वह पुरुष जो मसीह को प्रथम स्थान देता है, वह सर्वोत्तम पति और पिता बनता है। पद 26 का समापन इन शब्दों से है – "वरन् अपने प्राण को भी प्रिय न जाने।" मेरे लिये यह वृतान्त का सबसे कठिनतम भाग है। हमें मसीह को स्वयं से भी पहिले स्थान पर रखना चाहिये पौलुस ने ठीक यही किया, और वह कह सकाः

> ''परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करुं जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।'' (प्रेरितों के काम 20:24)

प्रकाशित वाक्य 12:11 में क्लेशकाल के संतो के बारे में यह लिखा है, ''क्योंकि मृत्यु सहने तक भी उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना।'' यूहन्ना 12:24–25 में हमारे प्रभु ने इसे स्पष्ट किया है,

> ''.... मैं तुम से सच – सच कहता हूँ कि जब तक गेहू का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है वह अनंत जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा।''

मिशनरियों में अग्रधावक टी, जी. रैगलैण्ड ने कहा था,

> ''यदि हम गेंहू के दाने के समान भूमि में गिरने और मर जाने के लिये तैयार नहीं होतें है, यदि हम अपने लाभ की बातों को बलिदान नहीं करते, न चरित्र पर लांछन का खतरा मोल लेते, और सम्पत्ति एवं स्वस्थ कों जोखिम में नही डालते, और जब हम बुलाये जो है मसीह के लिए घर बार नही छोड़ते, पारिवारिक बंध नहीं तोड़ते, तो हम अकेले ही रह जाएगे। परन्तु यदि हम फलवन्त बनना चाहते है, तब हमे हमारे धन्य प्रभु का उदाहरण अमल में लाना चाहिए, और गेंहू का दाना बनकर भूमि में गिरना और मरना चाहिए, तब हम अधिक फल लायेंगे।

पद 27.... *''और जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे न आए वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।''* इसका अर्थ, बार बार, जान बूझ कर, ऐसा मार्ग चुनना जिस में मसीह के कारण तिरस्कार, लज्जा, पीड़ा, निर्धनता, एकांगीपन, विश्वास घात, इन्कार, घृणा, निन्दा, संताव, मानसिक यातना और यहां तक कि मृत्यु भी है। जब जानेवाले मिशनरी को एक मित्र ने चेतावनी दी, ''मत जाओ, तुम मर भी सकते हो,'' उत्तर मिला, ''मै पहिले ही मर चुका हूँ।'' यू.एस. के कोस्ट गार्ड के इतिहास में एक कालजयी कहानी कैप्टेंन पैट एथरिट्टन की है जो केथ बैटरने स्टेशन पर पदस्थ थे। एक रात तेज आंधी तूफान में उन्होंने एक जहाज से संकट कालीन संकेत पाया, जो कि खतरनाक डायमण्ड शाओल में, समुद्र में दस मील दूर डूब रहा था। जीवन रक्षक नौकाओं को रवाना करने का आदेश दिया गया। एक जीवन रक्षक सैनिक ने विरोध में कहा, ''कैप्टेन पैट, 'हम वहां जा तो सकते है, पर हम कभी लौटकर नहीं आ सकते।'' उत्तर ऐसा आया, जो इतिहास में अंकित हो गया. ''लड़को, हमें वापस आने की आवश्यकता भी नहीं है।''

> प्रभु यीशु मसीह ने हमें कूच करने का आदेश दे दिया है। उसने आज्ञा दी कि सारे जगत में सुसमाचार प्रचार किया जाये। उसने अपने संदेश वाहको से यह प्रतिज्ञा नहीं की कि उनका काम आसान होगा। उसने सुरक्षित घर वापिसी का कोई आश्वासन नहीं दिया है, परन्तु उसने कहा ''जाओ।''[6]

इटली के देशभक्त, गैरीबाल्डी ने रोम में उनके चारों ओर एकत्रित जनसमूह से सतं पौलुस का अनुसरण करते हुए कहा:

> मैं तुम्हें वेतन या भोजन का प्रस्ताव नहीं देता, मैं तुम्हे भूख, प्यास, न चाहकर भी कूच करने, युद्ध करने और मृत्यु का प्रस्ताव देता हूं, वहं जो अपने देश से प्रेम करता है, केवल ओंठो से नहीं परन्तु अनतंकालीन से, केवल वही मेरे पीछे आये।

सर अर्नेस्ट शैकलटन, अंटार्कटिका के खोजी ने लंदन के समाचार पत्र में एक विज्ञापन दिया। ''खतरों से भरी यात्रा करने पुरुष चाहिये। कम वेतन, भयंकर ठंड, महिनों चलनेवाला अंधकार, लगातार खतरा और वापस लौटना संदेह युक्त, यदि सफल हुए प्रतिष्ठा और सम्मान।'' वे सब जीवित लौटकर आये और उन्हें भरपूर प्रतिष्ठा और सम्मान दिया गया।

> जब हम स्वार्थमय और आत्मकेंद्रित अस्तित्व की मृत्यू के साधन के रुप में स्वेच्छापूर्वक जीवन की जोखिम भरी परिस्थितीयों को स्वीकार करते है, तब हम अपना क्रूस स्वयं उठाते हैं। सही रुप में पीड़ाओं को स्वीकार करके और जीवन की समस्याओं, परीक्षाओं और सीमाओं को स्वीकार करने पर हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ने की वास्तविक स्थिति में पहुंचते है। जो भी क्रूस के श्वेत – पक्ष को देखता है और उसे खुशी – खुशी स्वीकार करता है, वह उसके बोझ को वैसा हल्का पायेगा, जैसा किसी पक्षी के लिये उसके पंख होते है।[7]

''हे प्रभु, मुझे क्षमा करे, मैंने बहुत बार शिष्यता की पीड़ा और बलिदान से बचने के मार्ग खोजे है। आज के दिन मुझे आपके साथ चलने का बल दीजिये, उसकी कीमत चाहे कुछ भी हो – आप के नाम से मांगता हूँ – आमीन।'' (स्क्रिप्चर युनियन के डेलीनोट)।

मसीह निर्धन था उसके घावों के निशान थे। वह दूसरो के लिये जिया, वह एक बलिदान के रुप में मरा।

> **पद 28–32...** *तुम में से कौन है – जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठठ्ठो में उड़ाने लगें, ''यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका।'' या, कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो और पहिले बैठकर विचार न करले कि बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ या नहीं? नहीं, तो उसके दूर रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।*

केवल बेहतर आंरभ करना ही पर्याप्त नहीं है। बेहतर समापन करना महत्वपूर्ण है। बहुत से लोग लालसा करते है पर बहुत कम पाते है। हमें कीमत का आंकलन करना चाहिए। संसार में आधे – अधूरे मन के मसीहियों के लिये अनादर के सिवा कुछ नहीं है। जब कोई भवन अपूर्ण रह जाता है, लोग उसे जोन्स की मूर्खता कहते हैं या जो भी बनाने वाले का नाम हो। शिष्यता का जीवन केवल निर्माण की योजना बनाने का कार्यक्रम नहीं है, यह समग्र रुप में युद्ध है। इसमें पूर्ण प्रतिबद्धता है या फिर लज्जाजनक आत्म–समर्पण।

पद 33ः ''इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सबकुछ त्याग न दे वह मेरा चेला नहीं हो सकता।'' सबकुछ त्यागने का क्या अर्थ है? कोई किसी को बता नहीं सकता। भिन्न – भिन्न लोगों के लिये यह 'सबकुछ' भिन्न – भिन्न है। व्यक्ति को प्रभु के सामने जाने और पूछने की आवश्यकता

है कि लूका 14:33 का उसके जीवन में क्या अर्थ है? तब परमेश्वर उसे उन बातों कि बारे मे बताना आरंभ करेंगे।

मूसा, सब कुछ त्याग करने का एक उदाहरण है –
उसने मिस्र का यश (इ ब्रा. 11:24)
मिस्त्र के सुख (11:25)
मिस् के खजाने (11:26)
मिस् की राजनीति (11:27)
मिस् का धर्म (11:28) त्याग दिया।

सब कुछ त्याग करने के लिये तैयार होना पर्याप्त नहीं है। हमें वह त्याग करना चाहिये। ''यदि वह राजा है, तो उसे सब बातों पर अधिकार है''(पिल किंस्टन)। यदि हम उसके पीछे नहीं चलते, तब सबकुछ त्याग करना मूर्खता होगी। जब वह कहता है, ''मेरे पीछे आओ,'' तब वह हमारी सारी आवश्यकताओं की चिन्ता करता है। जब कम्युनिस्ट सबकुछ त्याग दे, क्या होगा? संसार में सुसमाचार–प्रचार हो जायेगा। यह कैसे होगा? मसीही समाज द्वारा दूसरों को बताने के द्वारा, रॉमल्ड सीडर ने अपनी पुस्तक ''रिच क्रिश्चियन्स इन एन एज ऑफ हंगर,'' में इसे बाँटने और प्रेम करने का समाज बताया है – जबकि सुरक्षा का आधार व्यक्तिगत संपत्ति नहीं, परन्तु आत्मा के प्रति खुलापन और न ये प्राप्त भाईयों और बहनों के लिये प्रेमपूर्ण परवाह है।''

पद 34: ''नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि– नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से नमकीन किया जायेगा?'' हमारी मेज पर रखा नमक अपना स्वाद नहीं खो सकता पर बाइबिल के दिनों में उन देशो में उसमे अशुद्धियां होती थी। इस कारण यह संभव था कि नमक दानी में जो नमक है उसमें स्वाद नहीं।

पद 35: ''वह न तो भूमि के और न स्वाद के लिये काम मे आता है, उसे तो लोग बाहर फेंक देते है। जिसके सुनने के कान हों, वह सुन लें।'' अशुद्ध नमक किसी काम का नहीं होगा। वह न तो खादं बनाने मे काम आयेगा, न किसी काम में उसे बाहर फेंका जायेगा। यही उस जीवन के साथ होता है जो मसीही शिष्यता के सिद्धातों पर अमल नहीं करता।

अध्याय - 8

परमेश्वर से सौदेबाजी न करे

मती 20:1-16

पहिली बार इस दृष्टांत को पढ़नेवाले को क्षमा किया जा सकता है यदि वह सोचे कि कितना बड़ा अन्याय किया गया है। बहुत से लोग आश्चर्य करते है कि कैसे इतनी गलत बात को बाइबल में स्थान दिया गया है। आइये, हम यह समझने के लिये पुर्ननिरिक्षण करे कि ऐसा क्यों है।

एक दाख की बारी के स्वामी को अंगूर इकठ्ठे करने के लिये मजदूरों की आवश्यकता थी, इसलिए वह सुबह चौराहे पर गया ताकि मजदूरों को दिहाडी पर रखे। (मान लो ६ बजे सुबह) और उसने कुछ लोगों को काम पर लगाया जो उसके साथ सौदेबाजी करके एक दीनार की मजदूरी पर काम करने तैयार थे। एक दीनार उन दिनों मे मजदूरों की मजदुरी थी।

सुबह के 9–00 बजे उसने फिर कुछ और लोगों की आवश्यकता महसूस की और मजदूरो ने जो भी उचित मजदूरी होगी उसपर काम करना स्वीकार किया। पुनः दोपहर को और तीन बजे शाम भी उस ने अतिरिक्त मजदूर दाख की बारी में भेजे। और उनसे प्रतिज्ञा की कि उन्हें सही मजदूरी दी जायेगी। जब वह 5–00 बजे चौराहे में आया, उसे कुछ बेरोजगार मिले जिन से उसने पूछा कि वे सारा दिन बिना काम क्यों थे। उन्होंने उसे निश्चय दिलाया कि वे आलसी नहीं है। वे काम करना चाहते थे पर किसी ने उन्हें काम पर नहीं लगाया। इसलिये उस ने उन्हें भी अपनी दाख की बारी में काम कर ने भेज दिया और प्रतिज्ञा की कि जो भी मजदूरी उचित होगी वह उन्हें देगा।

छः बजे शाम उसने अपने प्रबंधक को मजदूरी देने के लिये कहा और उन में से प्रत्येक को दिन भर की मजदूरी दी। उन्हें उल्टें क्रम में वेतन दिया गया। अर्थात जो सबसे बाद में आये थे, उन्हें सबसे पहिले और जो पहिले आये थे, उन्हें सब से बाद में मजदूरी दी गई। इसका अर्थ यह हुआ कि सुबह 6 बजे आनेवालों ने देखा कि शाम के 5 बजे आनेवालों ने उनके बराबर मजदूरी पाई, और उनकी प्रतिक्रिया समझने योग्य थी। उन्होंने कहा – हे स्वामी, यह सही नहीं है – हम ने बारह घण्टे दिन

की धूप में काम किया और इन लोगों ने केवल एक घंण्टा का किया, फिर भी हमारे बराबर मजदूरी पाई। ये कैसा हिसाब है? साफ तौर पर कहे, तो यह न्यायपूर्ण नहीं लगता, लगता है क्या? यदि हां, तो इसका क्या स्पष्टीकरण है?

सबसे पहिले, हमें देखना चाहिए कि यह पिछले अध्याय में आरंभ हुई चर्चा ही है, जो आगे बढ़ाई गई है – ध्यान दे, पद का आरंभ इस प्रकार है – ''स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्वामी के समान है ..... और यह पिछले अध्याय से जुडता है। वास्तव में यह दृष्टांत पिछले अध्याय 19 की अंतिम पद में की गयी चर्चा का ही स्पष्टीकरण है....''परन्तु बहुत से जो पहिले है 'पिछले होंगे' और जो पिछले है पहले होंगे।'' ध्यान दे, इस दृष्टांत का उन्ही समानांतर शब्दों से होता है, ''इसी रीति से जो पिछले है, वे पहिले होगे और जो पहिले है, वे पिछले होंगे''(20:16)।

आइये, हम पिछले अध्याय 19 की पद 16 को पढे – वहां यीशु का सामना एक धनी व्यक्ति से हुआ था जो अनंतजीवन पाने के लिये कुछ करना चाहता था। यीशु ने उसे दो बिंदुओं पर जाचा। प्रथम, उसने उस व्यक्ति को अवसर दिया की वह यीशु को माने, न केवल भला स्वामी परन्तु परमेश्चर माने। दूसरा, उसने व्यवस्था के उपयोग के द्वारा उस मे पाप के प्रति कायलपन उत्पन्न करने का प्रयन्त किया। धनी व्यक्ति दोनो जांच में असफल रहा और उदास होकर लौट गया। वह सबकुछ त्याग करके यीशु के पीछे चलने के लिये तैयार नहीं था। उस पृष्ठभूमि को स्मरण रखकर पतरस ने प्रभु को स्मरण दिलाया कि कैसे उसने और अन्य चेलों ने वह किया है जो वह धनी व्यक्ति नहीं कर सका था। उन्होंने शाब्दिक रुप में सब कुछ त्यागकर यीशु का अनुसरण किया था। तब पतरस ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न किया, ''हमें क्या मिलेगा?''

प्रभु ने उसे इस जीवन में और आने वाले जीवन में भी एक बड़े प्रतिफल का आश्वासन दिया, परन्तु उसने वास्तव में यह बात भी स्पष्ट की – ''किंतु पतरस, परमेश्वर के साथ सौदेबाजी में सावधान रहो – यदि तुम मोलभाव करोगे तो तुम्हे वह सब मिलेगा जो तुम चाहते हो, परन्तु हो सकता है कि प्रतिफल मिलते समय तुम अंतिम ठहरो। अपनी सेवा के लिये मत पूछो कि मुझे क्या मिलेगा? यह मुझपर छोड़ दो – मैं तुम्हे उचित रीति से प्रतिफल दूंगा।''

तब उसके बाद प्रभु ने मजदूरों का यह दृष्टांत कहा और अपनी कहीं बात को स्पष्ट किया। जिन्हें पहिले मजदूरी पर लिया गया था, उन्होंने सौदेबाजी की थी, उन्हें वहीं मिला जिस पर वे तैयार हुए थे, और उन्हें सबसे अतं मे प्रति फल मिला। शेष सभी जो काम पर लगे, मजदूरी तय किए बिना लगे थे और वे दाख की बारी के स्वामी पर निर्भर थे कि वह उन्हें न्यायपूर्वक मजदूरी दे। उन्हें उससे अधिक मिला जिस के वे हकदार थे।

जब सुबह 6–00 बजे आने वालो ने शिकायत की कि उन्हें कम मिला है, स्वामी ने उन्हें 'न्याय' और 'अनुग्रह' के बीच अतंर पर एक सबक सिखाया। उन्होंने एक दीनार की मजदूरी पर काम करने की सहमति दी थी और उन्होंने वहीं पाया जिस पर सहमति की थी। यह न्याय है। दूसरों ने स्वामी पर भरोसा किया कि वह सही मजदूरी देगा और उन्होंने उससे अधिक पाया जिसके वे हकदार थे। यह अनुग्रह है।

अनुग्रह न्याय से बेहतर है – उद्धार और सेवकाई दोनों में। उद्धार में यदि हमें न्याय मिलता तो हम सब अनतंकाल के लिये नाश हो जाते। जैसा कि मार्क ट्वेन ने कहा था, ''यदि प्रवीणताओं के बल पर स्वर्ग में प्रवेश मिलता, तो आपका कुत्ता वहां जाता, और आप बाहर रहते।'' प्रभु के प्रति सेवा या सेवकाई में, यदि हमें न्याय मिलता, हम सब हानि उठाते क्योंकि हम सब निकम्मे दास ठहरते। जब हम इन क्षेत्रो में प्रभु पर भरोसा करते है, हमे पाते है कि वह हमें हमारे मांगने और सोचने – विचारने से अधिक बढ़कर बहुतायत से देता है। यह उस लड़की के समान है जिसे उसके पिता उसके सपनों की दुनिया अर्थात् कैण्डी स्टोर ले गये। उसने उसकी पसंद की कैण्डी का एक बड़ा मर्तबान देखा और डैडी से पूछा कि क्या उसे कुछ कैण्डी मिल सकती है –

''अवश्य'' पिता ने कहा – ''जाओ, एक मुट्ठी भर कर ले लो''

नही डैडी, आप जाआ और अपनी मुट्ठी भर कर ले लो।''

''तुम क्यों चाहती हो कि मै अपनी मुट्ठी भर कर ले लुं?''

''क्योंकि आपकी मुट्ठी मेरी मुट्ठी से बड़ी है।''

यही बात है। परमेश्वर का हाथ हमारे हात से बड़ा है। इसलिए उस पर भरोसा करे कि वह वही करेगा जो सही है। और वह हमारी पसंद और आशा से अधिक बढ़कर करेगा। अनुग्रह को चुने। स्वामी की उदारता पर ध्यान दीजिये। उसने कहा ''मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे दूं उतना इस पिछले को भी दूं'' (पद 14ब)। इस प्रकार सोचिए, उसे पता था कि ये मनुष्य आलसी नहीं थे। वे काम चाहते थे परन्तु उन्हें काम मिला नहीं। वह यह भी जानता था कि उनके परिवार है जिसे भोजन की आवश्यकता थी। इसलिए उसने उन्हें काम के घण्टो के अनुसार मेहनताना दिया। परन्तु शेष चार समूहो को पर्याप्त मात्रा में अतिरिक्त धनराशि दी ताकि वे संसार का सामान खरीद सके।

प्रभु भी ऐसे है, वे आवश्यकता का विचार करते है – लालच का नहीं। सुबह 6–00 बजे काम पर आनेवाले आवश्यकता के अनुसार नहीं पर लालच के अनुसार काम करने गये। उन्हें परवाह नहीं थी कि दूसरो के पास परिवार का पेट भरने पर्याप्त था या नहीं। उनको बस केवल अपनी परवाह थी। वे हमे अर्नेस्ट की याद दिलाते है – यह लडका कंचो के खेल में माहिर था। वह आस–पड़ोस के सभी बच्चों को खेल में हरा सकता था। और उसके पास जीते गये ''कंचो'' से एक बड़ा बैग भर गया था।

एक बार एक प्रचारक उनके घर आया और उसने अर्नेस्ट की खूबी देखकर कहा –

''तुम कंचों के खेल में बहुत माहिर हो, हो ना?'' ''हां, सर, मैं हूँ।''

''क्या तुम खेल के लिये कभी प्रार्थना करते हो, अर्नेस्ट?'' ''हाँ, सर, मैं करता हूँ।''

''तुम क्या प्रार्थना करते हो।''

''मै प्रार्थना करता हूँ कि मैं जीतूं। ''

''क्या तुम कभी प्रार्थना करते हो कि खेल में दूसरा व्यक्ति जीते?''

''नहीं सर, मैं कभी ऐसी प्रार्थना नहीं करता।''

''क्यों नहीं करते?''

''क्योंकि, मै जीतना चाहता हूँ, सभी कंचे जीत लेना चाहता हूँ।''

''अर्नेस्ट, क्या कभी तुम कभी अपने उन साथियों को प्रभु के बारे में बताते हो?''

''हाँ, मै बताता हूँ, पर लगता है, उन्हें इस में कोई रुचि नहीं है।''

''मैं नही कहता कि इस में तुम्हारा दोष है। तुम उस प्रभु को प्रस्तुत करते हो जो चाहता है कि सभी कंचे तुम्हे मिले और उन में से किसी को कुछ न मिले। प्रार्थना करके देखो कि वे भी खेल में जीते। यही वास्ताविक मसीहत है।

''एफ. ई. मार्श ने संकेत किया था, ''हम मे से बहुतेरे उस लडके के समान है, जब तक हम जीतते रहते है, सबकुछ अच्छा है, परन्तु यदि हम हर गये, तो यह बुरा है। यदि हम मसीह के लिए जीवन जीते और परिश्रम करते है, हमें स्मरण रखना चाहिए कि सबसे पहिला सिद्धांत है अपने आप का इंकार करना।''[8]

अब दृष्टांत पर विचार करे, हम ने देखा कि अपनी बात पर जोर देकर स्वामी ने कहा था – ''क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहे सो करुं?'' उत्तर है – ''ठीक है,'' यह उसका धन है, वह जो चाहे, वह कर सकता है। यह बात हमें परमेश्वर की संप्रभुता बताती है, वह जिस बात से प्रसन्न होता है, उसे कर सकता है, और वह सदैव न्याय, दया, निष्पक्षता और भलाई से प्रसन्न होता है। समस्या गृहस्वामी के साथ नहीं परन्तु सुबह 6–00 बजे काम पर आनेवालो की थी। उसके शब्दो में, उनकी आँख (दृष्टिकोन) बुरी थी क्योंकि वह भला था। वे उसके अनुग्रह पर भरोसा करने के लिये तैयार नहीं थे और वे नहीं चाहते कि अन्य दूसरों को कुछ मिले।

समय नहीं बदला है। उद्धार के विषय में भी, लोग नहीं चाहते कि अयोग्य होने पर भी मिलने वाले परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करे, और वे यह भी नहीं चाहते कि वह दूसरों पर अनुग्रह प्रदर्शित करे। वे उसकी भलाई देखकर बिफर पड़ते है, व्यर्थ ही निःशुल्क उपहार या दान में प्राप्त करने के बदले प्रवीणता या हक के आधार पर प्राप्त करने को प्राथमिकता देते है।

इसलिये जो अंतिम है प्रथम होंगे, और जो प्रथम है अंतिम होंगे।[9] यदि वे चेले जों मसीहत के युग के प्रथम दिनों में थे, सौदेबाजी का दृष्टिकोन अपना कर प्रभु की सेवा करते, वे प्रतिफल पाने में अंतिम ठहरते। दूसरी ओर, वे जो युगो के अंतिम दिनों में रह रहे है यदि वे प्रभु की सेवा करते हुए सौदेबाजी की चेष्टा न करे, तो प्रतिफल पाने में प्रथम होंगे। हम जो मसीह के 2000 वर्ष बाद के संसार में रह रहे है, हमारे लिये यह सोचना आसान है कि सबसे उत्तम उपहार या प्रतिफल पहिले ही जीते जा चुके है। यह दृष्टांत हमें सिखाता है कि यह आवश्यक नही है, विशेषकर, जबकि हम किसी व्यक्तिगत लाभ का विचार किये बिना प्रभु की सेवा कर रहे है।

यदि अब भी आपको लगता है कि सुबह 6–00 बजे काम पर आने वालों का तर्क सही था क्योंकि उन्होंने अधिक लंबे समय तक काम किया इस प्रकार सोचिए, उन्हें कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्हें ऐसे अद्‌भुत स्वामी के आधीन कार्य करने का सौभाग्य मिला। वह स्वामी जो स्वयं के व्यक्तिगत लाभ से अधिक अपने कामगारों के हित की सोचता है। ऐसे लोग बहुत नहीं मिलते, संभव है कि यह सब काल्पनिक हो। क्या आज, हम परमेश्वर के साथ सौदेबाजी करते है? या फिर, यह केवल पतरस के जीवन की एक अकेली घटना थी?

नीचे दिये कथनों पर विचार करे –

- हे प्रभु, मै आपका अनुसरण करुंगा पर पहिले मैं विवाह कर लूं।
- मै अपना जीवन आपको सौंप दूंगा यदि आप मुझे मेरा काम करते रहने की अनुमति प्रदान करें।
- हे प्रभु मैं कुछ भी करुंगा, यदि आप मुझे मिशन–फिल्ड नहीं भेजेंगे।
- मेरा जीवन आपका है, हे प्रभु अर्थात जब मैं व्यवसाय से सेवानिवृत्त हो जाऊंगा।

ये सभी *यदि*, *परन्तु* और *शर्तें*, परमेश्वर से सौदेबाजी का प्रकार है, इनसे सावधान रहे। यदि आप इन पर अड़े रहे तो आप को वहीं मिलेगा जिस पर आप ने सौदेबाजी की जबकि आपको देने के लिए परमेश्वर के पास उससे अधिक बेहतर कुछ है।

एफ. बी. मेयर ने सही कहा था –

> हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम कुछ भी बचाकर न रखे। कही भी कुछ रोककर न रखें। हमारी आत्मा, प्राण और देह स्वेच्छा से संपूर्ण रुप में दाख की बारी के महान स्वामी को सौंप दिये जाये। हम जो परमेश्वर के मजदूर हैं, हमें उसकी फसल में अपने भाग को लेकर कोई सौदेबाजी नहीं करनी चाहिए, और उसके पवित्रात्मा के कार्य के लिये कोई भी भाग, भूमि का कोई 'एकड़' बचाकर नहीं रखना चाहिए, दे देना चाहिये।[10]

अध्याय - 9

अपने धन से मित्र बना लो

लूका 16:1-15

पहिली दृष्टि में लगता है, यह कहानी बाइबल में क्यों है। देखने से लगता है कि यह बेईमानी की सराहना करती है। निःसंदेह, इसे पवित्र बाइबल में शामिल देखकर विश्वासीजन असमंजस में पड़ जाते हैं। कुछ लोग सोचते है, इस पर विचार न करो, तो इसे भूल जाएगें। परन्तु भय खानेवाली कोई बात नहीं है। सही रुप में समझी जाये तो यह कहानी अर्थ में समृद्ध है। यह धोकेबाजी की सराहना या प्रशंसा नहीं करती। परन्तु यह एक सकारात्मक तरीका सिखाती है कि हम कैसे इस दूरदर्शी प्रबंधक का अनुसरण करे। आइये, हम कहानी पर विचार करे।

स्वामी के पास सूचना पहुंचती है कि उसका प्रबंधक उस के धन की चोरी कर रहा है – उसकी प्रतिक्रिया समझने योग्य है, वह प्रबंधक को पदच्युत कर देता है पर उस से पूरा हिसाब देने के लिए कहता है। स्वाभाविक है कि स्वामी उसके जाने से पहिले जानना चाहता है कि उसे कितनी हानि हुई है। यह जानकर चोर सकते में आ जाता है। अब उसके पास जीवन का खर्च चलाने कोई उपाय नहीं बचा, न भविष्य की सुरक्षा बची। आयु के हिसाब से शारीरिक श्रम करने के लिये वह अयोग्य था और भीख भी नहीं मांग सकता था। वह करें तो क्या करे?

अचानक उस के मन में एक किरण चमकी, उसे एक बढ़िया विचार सूझा। उसने तय कर लिया कि जाते–जाते कुछ ऐसा करेगा कि उस के पास सदैव मित्र रहे। उसके लिये दरवाजे खुले रहे और उसे सदा प्रवेश मिले और भोजन भी मिलता रहे। उसने अपने स्वामी के देनदारों को एक–एक करके बुलवाया।

''तुम पर कितना बाकी है?'' उसने एक से कहा

''800 गैलन जैतून का तेल। ''

ठीक है, मैं जो कहता हूँ वह कर, 400 गैलन लिख, बाकी हम समझ लेंगे।''

उसने दूसरे देनदार से पूछा, ''तुझ पर कितना बाकी है?''

''मेरे खाते के अनुसार ''1100 शेकेल गेहूं।''

''तू 880 लिख, और मै तुझे बाकी चुकता की रसीद दूंगा।''

भण्डारी अब भी हेराफेरी कर रहा था। उसे हिसाब में फेर बदल करने का अधिकार नहीं था। धन उस के स्वामी का था, उसका नहीं। और यही बात सोचकर, पद 8 पढ़ने पर आश्चर्य होता है। लिखा हे – 'स्वामी ने उस अधर्मी को सराहा कि उसने चतुराई से काम लिया।''[11] यह पढ़कर लगता है कि बेइमानी करनी चाहिए वरन् वह सराहनीय भी है। दो सूत्र है जो इस कहानी को समझने की कठिनाई सुलझाते हैं।

सूत्र –1: सराहना बेइमानी की नहीं परन्तु बंद्धिमानी और योजना की थी – ''स्वामी ने उस अधर्मी को सराहा क्योंकि उसने चतुराई से काम किया है।'' उसने बुद्धिमानी–पूर्वक ऐसा काम किया कि इस बात की गारंटी हो जाये कि, भविष्य में उसके पास मित्र बनें रहेंगे।

सूत्र –2: मसीहियो का भविष्य इस संसार में नहीं परन्तु स्वर्ग में है। ''इस संसार के लोग अपने समय के लोगो के साथ रिति व्यवहारो में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर है। दूसरे शब्दो मे, जिनका ह्दय परिवर्तत नहीं हुआ है, वे अकसर विश्वासियो से बेहतर समझ का प्रदर्शन करते है। जैसा कि दृष्टांत में यह व्यक्ति है, जिसका ह्दय –परिवर्तन नहीं हुआ है, ऐसा काम करता है कि भविष्य में उसके पास मित्र रहे, अर्थात उसका भविष्य जो पृथ्वीपर है। मसीही–जनों में इस प्रकार की चतुराई नहीं होती कि अपने भविष्य, अर्थात् स्वर्ग के लिए मित्र बना ले।

प्रभु यीशु मसीह अब उस दृष्टांत को अपने श्रोताओं पर लागू करने तैयार है, ''मैं तुम से कहता हूँ कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो, ताकि जब वह जाता रहें तो वे तुम्हें अनंत निवासो में ले लें''(पद 9)। अधर्म का धन रुपया–पैसा है। यद्यपि रुपया – पैसा अपने आप में भला या बुरा नहीं होता, यीशु उसे अधर्म का धन कहते हैं क्योंकि अकसर वह बेइमानी कर के कमाया जाता है और अकसर अधर्म के कामों में खर्च किया जाता है। वह स्वयं भी कुछ समय बाद चांदी के 30 सिक्कों के लिये विश्वासघात का शिकार बननेवाला था। आज भी हम धन को 'अधर्म की कमाइ' कहते है। पौलुस हमें स्मरण दिलाते हैं कि 'धन(रुपये) का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है (1 तीमु 6:10 अ)।

परन्तु फिर भी हम उसके द्वारा अपने लिये मित्र बना सकते है। हम ऐसा कैसे कर सकते है? धन को सुसमाचार के प्रचार –प्रसार में उपयोग करने के द्वारा धन को बाइबलों, नया –नियमों, और पवित्रशास्त्र के भागों के मुद्रण मे निवेश करके, मिशनरी कार्य में सहायता देकर, विश्वभर में सुसमाचार – प्रचार के प्रसारणो में योगदान देकर, हम ऐसा कर सकते है। संक्षेप में, प्रभु के कार्य में निवेश करने के द्वारा वे जो इन साधनो और प्रयासों के द्वारा उद्धार प्राप्त करेंगे, वे अनंतकाल के लिये हमारे मित्र है।

'ताकि जब वह जाता रहे' तो वे तुम्हे अनंत निवासों में ले ले। ''बाइबिल के संस्करणो में यहां भिन्नता है ... कुछ में लिखा है, ''जब आप न रहे,'' और कुछ दूसरों में, ''जब वह जाता रहे।'' परन्तु यह भिन्नता महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि जब चेला जाता रहता है या नहीं रहता, तब उसका धन भी चला जाता है। तब उसके लिये उस धन का कुछ मूल्य नहीं होता। जब वह जीवित है, उसे तब धन

का उपयोग कर लेना चाहिए, वरना मृत्यु के बाद कभी नहीं कर सकता। जब वह मरता है, उस का धन उसका नहीं रह जाता, प्रन्यास को जाता है।

''तो वे तुम्हे अनंत निवासों में ले ले।'' 'वे' का अर्थ उनसे हैं जो प्रभु के कार्य में उन के द्वारा धन का योगदान या निवेश करने के कारण उद्धार पाएंगे। अनंतकाल के निवास, वे बहुत से स्थान है जो हमारे पिता के घर में हैं (यूहन्ना 14:2)। वे मित्र जिन्हें हम अधर्म का धन लगाकर प्रभु में पाएंगे जब हम महिमा में प्रवेश करेंगे वे हमारा स्वागत करनेवालों में से होंगे। यह बात एक अज्ञात कवि के मनोरथ को पूरा करती है –

जब उन घरों मे जो स्वर्ग मे है, उद्धार पाए हुए लोग प्रगट होंगे,
मैं सुनना चाहता हूं कि कोई कहें, ''यह आप थे, जिसने मुझे सही बुलाया।''
अज्ञात

मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूँ कि यह किस प्रकार संभव है। जब एक भक्त मसीही 80 वर्ष का होने पर था, उसके पुत्र और पुत्रियां उसे दावत और कुछ उपहार देकर चकित कर देना चाहते थें, ऐसा कुछ जो सचमुच उसे पसंद आये। पर वे सोच मे पड गये कि ऐसा क्या दे जो वास्तव में अर्थपूर्ण हो, वे तय न कर सके। पर उन्होंने ऐसा करने का निश्चय किया। क्या अन्त में उन्होंने सोचा कि ऐसा क्या है जिसकी एक 80 वर्ष के व्यक्ति को अवश्यकता होगी? अंत मे वे उन से पूछने आये कि वे उन के जन्मदिन पर क्या उपहार दे। उसने कुछ–मिनट सोचकर कहा, ''मैं किसी भाषा में पवित्रशास्त्र का कुछ भाग छपवाना चाहता हँ, ऐसी भाषा में जो पहिले अनुवाद नहीं हुआ है।''

परिवार के लोगों के मन में ऐसी बात कभी नहीं आई थी। इसलिये वे बाइबिल सोसायटी गये और अपने पिता की असामान्य इच्छा को बताया। निदेशक ने कहा, 'यह तो मजेदार बात है, हम ने अभी यूहन्ना का सुसमाचार तैयार किया है – जिसे पहिली बार एक अफ्रिकी बोली में छापा जायेगा। जब परिवार ने मुद्रण का खर्च पूछा, वे आवाक रह गये परन्तु अब पीछे हटने का कोई कारण नहीं था। उन्होंने उत्साहपूर्वक धनराशि जामा की और बाइबिल सोसायटी को दी। पिता के 80 वे जन्म दिन पर वह पुस्तक छपकर आई। बूढा खुशी से भर गया।

अब हम इसके 100 वर्ष बाद की घटनाओ पर विचार करे। एक दिन यह धर्मी मसीही (अब वृद्ध न रहा) सुनहरे मार्ग पर चल रहा था तब वह मसिह मे एक भाई से मिला (स्वर्ग में कोई अजनबी नहीं है) उनके बीच कुछ इस प्रकार की बातचीत हुईः

''तुम इस अलौकिक नगरी में किस प्रकार आये?''

''अच्छा, तो मैं बताता हूँ, मै अफ्रिका मे रहता था, मूर्तिपूजा के अन्यजातीय कर्मकांडो में गहिरे तक रचा बसा था। परन्तु किसी ने मेरी और मेरे लोगो की पर्वाह की। हमे यूहन्ना का सुसमाचार हमारी अपनी भाषा में अनुवाद करके, छाप करके दिया गया। मैं उस दिन को कभी नहीं भूल सकता, जब सुसमाचार हमारे गांव पहुंचा था। जब मैं ने उद्धारकर्ता के प्रेम की अद्भुत कहानी को पढ़ा। मैंने मूर्तियां नष्ट कर दी, अपने पापों से पश्चाताप किया, और यीशु को स्वर्ग में प्रवेश की अपनी एकमात्र आशा के रुप में स्वीकार किया।''

कौन उस व्यक्ति के आनंद का वर्णन कर सकता है जब उसे अनुग्रह का वह पुरस्कार मिला, तो 80 वर्ष पूरे होने पर उसके जन्मदिन के उपहार के रुप में प्रभु के लिये जीता गया था?

जबकि अभी मैं यह लिख रहा हूँ, मुझे विक्लिफ बाइबल अनुवादकों का पत्र मिला, जिसने लिखा है, (आंशिक रुप में) ''कुछ समय पहिले मुझे 83,000 डॉलर का एक चौक मिला, एक 89 वर्षीय व्यापारी की ओर से कि घाना की तीन भिन्न''भिन्न बोलियों में नये–नियम का अनुवाद करे। उस के भतीजे के अनुसार, इस व्यक्ति के पास अपना स्टॉक या बॉण्ड या अन्य कोई बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है परन्तु वह चाहता है कि जो भी प्रभु उसे सौंपे, वह प्रभु के लिये दे दे, जितने जल्दी यह संभव हो। उसे समस्त संसार में अविलम्ब परमेश्वर का वचन प्रचार करने की आवश्यकता महसूस होती है।'' विचार किजिये कि जब वह स्वर्ग के घर जायेगा, उसका कैसा भव्य स्वागत किया जायेगा।

पद 10 मै, हमारे प्रभु बताते हैं कि हम धन का उपयोग जिस प्रकार करते है वह अन्य क्षेत्रों मे हमारी विश्वास योग्यता का मापदण्ड है। वे धन के बारे मे 'थोडे से थोडे' कहते है जबकि यह आधुनिक मनुष्यों की समझ से सर्वथा विपरीत है। वे धन को 'सबसे अधिक' मानते है। यदि हम किसी बात के भण्डारीपन में विश्वासयोग्य ठहरते है, जैसे कि धन जो कि महत्वपूर्ण नहीं है, तब हम अन्य मामलों में जैसे आत्मिक और अनंत काल के महत्वपूर्ण मसलों में भी विश्वास योग्य माने जाते है। जो 'धन' के मामले में अविश्वसनीय है, वह सच्चे धन के लिये भी अविश्वसनीय माना जायेगा (पद 11)। धन और सच्चे धन के बीच भिन्नता दर्शाते हुये उद्धारकर्ता इस मिथक को तोड़ते है, कि भौतिक सम्पत्ति किसी व्यक्ति को धनवान बनाती है। सच्चा धन वे आशीषें है जो मसीह यीशु में हमें प्राप्त होती हैः परमेश्वर के परिवार की विश्वव्यापी सहभागिता, प्रभु की सेवा करने का सौभाग्य एवं बाइबल के महान् सत्य, इत्यादि।

''और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे तो जो तुम्हारा है उसे तुम्हे कौन देगा?'' (पद 12,)। वाक्यांश 'पराये धन' का आशय हमें स्मरण दिलाना है कि हमारा धन वास्तव में हमारा है ही नहीं वह परमेश्वर का है, और हम उसके भण्डारी है जिसे उस धन को परमेश्वर के लिये उपयोग करना चाहिये। यदि वह हमें उसके धन का बुद्धिमानी पूर्वक उपयोग करने में विश्वसनीय नहीं मानता, तो उससे कैसे आशा की जा सकती है कि वह हमे हमारा अपना धन देगा? दूसरे शब्दों में, वह हमे भविष्य के मित्र कैसे देगा, जिन्हे हमारे भण्डारीपन के माध्यम से जीता जाएगा? कैसे वह हमें उसके वचन के गहिरे आत्मिक –सत्यों को दे सकता है? वह कैसे न्याय के सिंहासन पर हमें प्रतिफल दे सकता है?

सुसमाचारों में दूसरी बार, यीशु ने कहा कि परमेश्वर और धन के लिये एक साथ जीना एक नितान्त असंभव बात है। उस में उनके हितों का टकराव और स्वामिभक्ति का बँटवारा होता है। यद्यपि प्रभु ने अंतिम रुप मे यह बात कह दी है फिर भी मसीही लोग ऐसा करने का प्रयास करते है। अजीब बात है।

जब फरिसियों ने सुना कि यीशु ने धन के प्रति अपने विचार व्यक्त किये कि धन महत्वपूर्ण नहीं है, तब वे व्यंग से मुस्कुरा दिये। उन्हें लगा कि वे अधिक बेहतर जानते थे। संभवतः वह अपनी धन सम्पत्ति को ईश्वरीय अनुग्रह का प्रमाण मानते थे। वे धन से प्रेम करते थे, और अधिक से अधिक धन चाहते थे। वे सांसारिक रुप में बुद्धिमान थे। यीशु ने उनको 'पाखण्डी' कहा। वे अन्य मनुष्यों के सामने स्वयं

को धर्मी ठहराते थे परन्तु भीतर से वे भ्रष्ट थे। उनकी दृष्टि मे जिस धन का मूल्य था वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित था। वे लोभी, धर्मवादी किन्तु आत्मिक विपन्न लोग थे। वे उस भ्रष्ट भंडारी का पक्ष लेते जो थोडे से थोड़ा है, उस में अविश्वास योग्य, दूसरों के धन के संदर्भ में अविश्वासनीय और सच्चा धन दिये जाने के संदर्भ में अयोग्य था।

अध्याय - 10

वह पाप जिसे कोई अंगीकार नहीं करता

1 तीमुथिसुस 6:6-10; 17-19

1 तीमु. 6:3–5 में, पौलुस कुछ धार्मिक अगुवों के विरुद्ध तीमुथियुस को चेतावनी देते है जो मसीही सेवकाई को धनी बनने एक तरीका मानते थे। ये व्यक्ति मानते थे कि पेशवर भक्ति का आचरण उन की जेबों को सोने से भरने का आसान तरीका है। उनके वंशज आज भी हमारे साथ है – रेडियों और टेलीविजन की प्रख्यात हस्तियों ने धनसंग्रह करने को एक कला बना दिया है और एक विज्ञान का रुप दे दिया है। चतुराई के साथ तैयार मनोवैज्ञानिक चालबाजियों का उपयोग, भावुक मसीही व्यक्तियों के ह्दय के तारों को झंकृत करता है और वे अपना खेल खेलते है। उनके पास उनके विशाल साम्राज्य में जोड़ने के लिये कोई न कोई नयी परियोजना अवश्य होती है। वे विलासितापूर्ण भवनों में रहते है। भारी–भरकम निवेश करते है, प्रभावशाली वस्त्र और आभूषण पहिनते है, और केशविन्यास की नवीनतम आकर्षित करने वाली शैलियों का प्रदर्शन करते हैं। और यह सबकुछ वे हमारे नाजरत के कंगाल मित्र (यीशु) के नाम पर करते है।

प्रेरित तीमुथियुस को चेतावनी देते है कि वे वह इन धार्मिक खरीदने–बेचने वालो से और उनके व्यवहारों पर अमल करने सें बचकर रहे। आदर्श गठ जोड़ है – भक्ति और सन्तोष। एक भक्त व्यक्ति जो संतोषी है, अपने चरित्र में धनवान है और आवश्यकताओं की कमी में समृद्ध है, उसके पास वह है जो रुपया, पैसा खरीद नहीं सकता।

मैलकम मुगररिडज की साक्षी है कि उसके जीवन के सबसे अधिक सुखमय समय वह था, जब उनका जीवन सादगी और किफायती का जीवन था – एक छोटा–सा केबिन, एक मेज, एक कुर्सी, और हरी पत्तियों पर थोड़ा–सा चाँवल। उसने कहा, ये वस्तुएँ अपना स्वयं का परमानंद उत्पन्न करती है।

हम संसार मे कुछ लेकर नहीं आये, और यह भी उतना ही सत्य है कि हम कुछ लेकर नहीं जायेंगे। नये जन्में शिशु की मुट्ठियां बंद रहती है, पर वह कुछ लेकर नहीं आता। जीवन जीकर जब

वह मरता है, तब उसके हाथ खुले होते है और खाली। सिकंदर महान् ने निर्देश दिये थे कि जब उसकी मृत्यु हो, उसके हाथ दिखाई देने चाहिये – खाली हथेलियां कि उसने संसार पर विजय प्राप्त की परन्तु वह खाली हाथ मरा।

डॉ. जेम्स डॉबसन ने अपने परिवार के साथ एक खेल खेलते हुये यह सबक सीखा। हम उनके ही मुख से यह कहानी सुनेगे।

> शर्ली और मेरा विवाह 1960 में हुआ, और हमारे पास किसी प्रकार की आर्थिक समस्या नहीं थी, क्योंकि हम ने कोई लोन इत्यादि नहीं लिया था। चूंकि परमेश्वर ने हमे आशीष दी थी और हम ने वह सब देखा था, जैसे कि घर, कार और कुछ अन्य वस्तुएं, जिनके बारे मे संसार सोचता है कि वे खुश रहने के लिये आपको चाहिए। परन्तु मैं सीख रहा था, अधिक से अधिक कि आनंद भौतिक वस्तुओं में नहीं मिलता। प्रभु मुझे भौतिक वस्तुओं के व्यर्थ होने के बारे में सिखा रहे थे और उनका सन्देश एक खेल के द्वारा मुझ तक पहुंच रहा था।
>
> कुछ दिनों से हमारा परिवार खेल 'मोनोपली' खेल रहा था, और पिछले पंद्रह वर्षो में मैने पहिली बार उसे खेला। पुराने दिनों का रोमांच, खुशी और उत्साह लौट आया, विशेषकर जब मैं जीतने लगा, सब कुछ मेरे पक्ष में हो रहा था। और मैं खेल का गुरु बन गया। मैंने बोर्ड वॉक और पार्क प्लेस खरीदे, और सब स्थानों में मेरे पास मकान और होटल आ गये। मेरे परिवार वाले छटपटा रहे थे और मै अपनी जेब में बोर्ड के नीचे और सीट मे 500 डॉलर के बिल भर रहा था। अचानक खेल समाप्त हो गया, मैं जीत गया। शर्ली और बच्चें सोने चले गये और मैं सबकुछ खेल के बॉक्स में रखने लगा। तब अचानक मेरे भीतर एक खालीपन की भावना भर गई। जो रोमांच और खुशी मैं पहिले महसूस कर रहा था, अचानक चली गई। मेरे अधिकार में अब कुछ नहीं था, सिर्फ वे जिन्हें मैने हराया था। वह सब कुछ अब खेल के बॉक्स में वापस जा चुका था।
>
> प्रभु ने मुझे दर्शाया कि मोनोपली के खेल से परे एक सबक सीखना चाहिये। मैंने महसूस किया और माना कि मैं जीवन के खेल को भी समझ रहा था। हम परिश्रम करते, संग्रह करते, और खरींदते है, सम्पति बनाते, सामान खरीदते और आर्थिक लेनदेन करते और तब अचानक हम जीवन के अंत में पहुंच जाते और सभी कुछ हमें वापस उसी बॉक्स में रखना पड़ता है। हम एक पाई भी साथ नहीं ले जा सकते। अंधकार से भरी तराई से गुजरते समय हमारे साथ किसी और के पदचिन्ह नहीं होते। अब मैं समझता हूं कि पवित्र शास्त्र क्यों कहता है, "किसी का जीवन उसकी सम्पति की बहुतायत से नहीं होता" (लूका 12:15)।[12]

कुछ देशो में बंदर पकड़ने के लिये छोटे मुंह के बर्तन में चॉवल रख दिये जाते है। जिसके छोटे मुंह मे केवल बंदर का खुला हाथ जा सकता है। जब वह वहां आकर हाथ डालता और मुट्ठी भर चॉवल पकड़ लेता है, तब उसकी मुट्ठी उस संकरे छेद से बाहर नही निकलती। वह अब अपना हाथ निकाल नहीं सकता, परंन्तु वह चॉवल को छोड़ता नहीं है – वह चॉवल छोड़ना नहीं चाहता, और वहां फंस जाता है। वह अपने लालच के कारण फंसता है।

कुछ समय पहिले पौलुस ने संतोष करने के विषय में कहा था। अब 8 पद में वह सन्तोष, परिभाषित करते हुये उसे भोजन और वस्त्र कहता है। यहां उसने 'वस्त्र' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ केवल वस्त्रों से नहीं पर सिर के ऊपर एक छत से भी है, तो इसका अभिप्राय जीवन

की मूलभूत आवश्यकताओं से है। हम इस वचन के इतने आदी हो चुके हैं कि इस में तत्व रुप में जो भिन्नता है, उसे समझ नहीं पाते। संभव है कि हमें यह समझने में कुछ सहायता मिले यदि हम उन कुछ विश्वासियों को स्मरण करे जिन्हें हम जानते हैं कि वे केवल भोजन, वस्त्र और मकान से ही संतुष्ट है। जहां तक मसीही–जगत के बहुमत का प्रश्न है यह पद उनकी बाइबल में नहीं है।

पद 9 में प्रेरित आगे उनके विषय में कहते हैं जो धनवान बनना चाहते है। इस में वे सभी शामिल है, धनी और निर्धन, जो लोभी है। लोभ का अर्थ है और अधिक पाने का लालच या आग्रह, अधिक प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय, भले ही परमेश्वर की इच्छा न हो कि वह व्यक्ति वह प्राप्त करे। एक लालची व्यक्ति किसी बात में तब तक आनंदित नहीं हो सकता, जब तक उसे पा नले, या कम से कम उसका कुछ भाग न पा ले।

यह पाप यौन से संबंधित भी हो सकता है (तू किसी की स्त्री का लालच न करना)। या फिर, जैसा 1 तीमु. 6 मैं है, यह भौतिकवादी या संपत्तिपरक हो सकता है। दोनो ही मसलो मे यह मूर्तिपूजा है – क्योंकि यह सृष्टिकर्ता के बदले सृष्टि की वस्तु (या व्यक्ति) की आराधना और सेवा करता है।

दु:ख की बात यह है कि हम ने इस पाप को ले लिया और उसे मसीही बप्तिस्मे से बप्तिस्मा दे दिया है। अब हम इसे मसीही सम्मान मानते है और इसे बुद्धि–युक्ति, सामान्य–ज्ञान, आर्थिक–जबाबदारी, किफायत और पूर्वानुमान इत्यादि नाम देते है। जब हम कहते है, कि –''उस मनुष्य का मूल्य क्या है?'' हमारे कहने का अभिप्राय है – ''उसने कितना धन संचय करके रखा है?'' संसार में आगे बढ़ने का अर्थ है – भौतिक सम्पति का संग्रंह करते जाना। हम लालची लोगों को ''समाज के कर्णधार'' या ''सम्पन्न श्रेणी'' (संभ्रान्त) कहते है। किसी ने कहा कि लालच ने यीशु को 30 चांदी के सिक्को में बेच दिया। मसीह को क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये बेचने के बाद कलीसिया क्रूस को भी बेचने लगी, और तब उसने स्वर्ग का मार्ग भी बेचने का काम किया और क्षमा–पत्र (indulgence) के द्वारा शुद्ध करने के स्थान (purgatory) से छुटकारे की प्रतिज्ञा भी की।

लालच हमारे अस्तित्व के वास्तविक उद्देश्य का इन्कार करता है। वह भूल जाता है कि हम यहां धन कमाने या स्वयं को व्यस्त रखने से कहीं अधिक बड़े काम के लिये है। यह भुल जाता है कि धन का सर्वोत्तम उपयोग आत्मिक उद्देश्य के लिए है। यह धोका–धाड़ी है। जे. एच. जोवेट ने कहा:

> धन मनुष्य को यह सोच देता है कि वह बढ़ता जा रहा है जबकि पूरे समय वह घटता जाता है,
> वह अपने आकार को धन के आने की
>
> दृष्टि से देखता है, लाभों के जाने की दृष्टि से नहीं। जबकि आवक बढंती है, जावक घटती है।

यह तर्कपूर्व या विवेकपूर्ण रुप में सहीं नहीं है। हम उन वस्तुओं को जिन की हमें आवश्यकता नहीं उनको दिखाने के लिये प्राप्त करने का यत्न करते है जिन्हें हम पसन्द नहीं करते। धनी होने की अभिलाषा के कारण धन के संग्रह से विश्व में सुसमाचार–प्रचार करने की परमेश्वर कि योजना प्रभावित होती है, संग्रहित धन का उपयोग सुसमाचार के प्रचार प्रसार में किया जा सकता है, यह व्यक्ति को कलीसिया में नेतृत्व के लिये अक्षम साबित करता है – क्योंकि एक प्राचीन को धन का लोभी नहीं

होना चाहिए (1 तीमु. 3:3)। परन्तु उससे भी अधिक बुरी बात है कि यह व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य से बाहर कर देता है (1 करि. 6:10)।

यहाँ हमारे वृतांन्त में, पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि धनी होने की अभिलाषा परीक्षा में डालती है। एक लालची मनुष्य अवैध साधनों का सहारा लेगा कि वह जो चाहता है उसे प्राप्त करे। और यह कार्य जाल फंदे में फंसाता है। यह बिजली के तार को पकड़ने के समान है – वह आप से छूटेगा नहीं। या फिर नमकीन पानी पीने के समान है जो आपकी प्यास को और अधिक बढ़ाता है।

एक मनुष्य ने अपने मित्र से कहा, ''जब मेरे पास 50,000 डॉलर थे, मैं खुश था। अब मेरे पास 10 लाख है और मेरी दशा दयनीय है।''

''कोई बात नहीं,'' मित्र ने कहा, ''शेष 9,50,000 दान कर दो।'' लखपती विवशता से बोला, ''नहीं कर सकता।''

धन की अभिलाषा कई मुर्खतापुर्ण और विनाशकारी समुद्र में डुबो देती है।'' यह भाषा कठोर है। पौलुस चेतावनी देते है कि लालच अनंत विनाश मे ले जाता है। कितनी अजीब बात है कि परमेश्वर ने जिस बात को बार–बार गलत ठहराया, मसीही–जन बार–बार उसे ही माननीय ठहरा देते है। रुपयों का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। उदाहरण के लिये यह झूठ की जड़ है। जे.एच.जोवेट ने बताया कि उन्होंने न्यूयार्क के एक धनी व्यक्ति से किसी अति–आवश्यक कार्य के लिये सहायता मांगी।

> उसके चेहरे के भाव से मुझे तुरन्त उत्तर मिल गया, वह मुझ से ऐसे बाते करने लगा, मानों कंगालपन की कगार पर है, ''अब मैं और अधिक दान नहीं दे सकता, मै चाहे जो करुं, यह या वह, पता नहीं कि हमारा क्या होगा।'' कुछ सप्ताहों के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई और उसकी सपंत्ति का मूल्य 60 लाख डॉलर निकला। मै सोचता हूँ कि क्या जीवन के अतं में उसने प्रभु के संदेश वाहक को यह कहते हुये सुना होगा, ''हे मूर्ख, यदि आज की रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाये, तो यह सब किसका होगा?[13]

धन का लोभ धोंकेबाजी, चोरी और यहां तक कि हत्या की ओर लें जाता है। यह विवाहों को तोड़ता और बच्चों का जीवन तबाह करता है। यह स्नायु और भावना संबंधित व्याधियों को लाता और आत्महत्या के लिये प्रेरित करता है। धनवान व्यक्ति चोरो, अपहरण और लूटपाट के भय में जीते हैं। वे मुद्रास्फीति और बाजार में गिरावट की चिन्ता करते रहते हैं – वे विश्राम न पाने, मन उचाट रहने, असंतुष्टि और ईर्ष्या इत्यादि से पीड़ित रहते है। कभी–कभी वे बंदीगृह जाने योग्य और स्वयं का अपमान करने योग्य काम कर बैठते है।

पवित्रशास्त्र चूंकि उन की सम्पूर्ण जीवनशैली की भर्त्सना करता है, वे स्वयं मे परिवर्तन लाने के स्थान पर विश्वास से भटकते फिरते है। वे बाइबिल के वचनों को तोड़ते – मरोड़ते, पुनः लिखते और बदलते है ताकि वे अपनी समृद्धि को उचित ठहरा सके। न केवल यह, परन्तु ने स्वयं को नाना प्रकार के दु:खो से छलनी कर लेते है। जब हावर्ड हग्स की मृत्यु हुई, उसने लगभग 23 अरब डॉलर की सम्पत्ति छोड़ी, फिर भी एक समाचार पत्र ने लिखा:

> अपने संम्पूर्ण वैभव के साथ उसने सूर्य विहीन, आनंद विहीन, और अर्ध–विक्षिप्त जीवन जीया...। वह अपने भय और निर्बलताओं के पगंकारी भय मे मानो बंदीगृह की दीवारो के बीच फिरता रहा। एक समय वह सुंदर स्मारक और जीवन से भरा व्यक्ति था किंतु अपने जीवन के अंतिम पंद्रह वर्षो मे वह एक शोचनीय ककांल मात्र रह गया। वह नशे की दवाओं मे फंस गया। उसका रुपरंग भयानक हो चुका था। यद्यपि चार चिकित्सक लगातार उस की सेवा–सुश्रुषा में लगे थे, उसकी चिकित्सकीय दशा बुरी थी। उसका प्रमुख मनोरंजन फिल्मे देखना था। वह ऐसे भोजन पर निर्भर था जिसे एक टेनसेन्ट के स्टोर क्लर्क भी नापसन्द करते, परन्तु वह उसी भोजन के लिये जिद करता था। वह केवल एक चम्मच भर सूप पीता और फिर फिल्में देखने जाता। वही सूप बार बार दोबारा गर्म किया जाता था।[14]

इस भाग के समापन में, पौलुस तीमुथिसुस को निर्देश देता है कि वह उन्हें आज्ञा दे जो इस संसार मे धनी है कि वे अभिमानी और हठीलें न हो, और चंचल धन पर आशा न रखे, परन्तु जीवते परमेश्वर पर आशा धरें जो हमारे सुख के लिये सबकुछ बहुतायत से देता है। यह बाद की अभिव्यक्ति – जो हमारे सुख के लिये बहुतायत से सब कुछ देता है – अकसर धनसंचय को सही ठहराने के लिये उपयोग की जाती है। परन्तु अगला पद इसका अर्थ स्पष्ट करता है – हम धन का आनंद तब नहीं उठाते जब वह बैंक में निष्क्रिय पड़ा है – परन्तु तब जब उसे भले कामों में उपयोग किया जाता है। जरुरतमंदो को बाँट दिया जाता है – और अपने से कम सौभाग्यशाली पड़ोसियों को दिया जाता है। इस प्रकार भले कामों में धन लगाकर हम आने वाले संसार में अपने लिये बड़ा प्रतिफल एकत्रित करते है और उस जीवन का आनंद लेते है जो वास्तव में जीवन है।

निष्कर्ष, रॉजल्ड सीडर अपनी पुस्तक ''रिच क्रिश्चियन्स इन एन एज ऑफ हंगर'' में लिखते हैं –

> एक धनवान मूर्ख व्यक्ति एक लालची व्यक्ति का सर्वोतम प्रतिनिधि है। उस में लालच का आग्रह है कि अधिक से अधिक धन जमा करे, भले ही उसे उसकी आवश्यकता न हो। और यह संग्रह करने और अधिक से अधिक सम्पत्ति बनाने की उसकी बड़ी सफलता उसे इस निंदनीय निष्कर्ष पर पहुंचाती है कि भौतिक सम्पत्ति उसकी आवश्यकताओं को संतुष्ट कर सकती है। ईश्वरीय दृष्टि से यह मानसिकता पूर्ण पागलपन है। वह बकवास बातें करने वाला मूर्ख है।[15]

अध्याय - 11

परमेश्वर के लिये केवल सर्वोत्तम

एक सुनहरी रेखा है जो समस्त पवित्र शास्त्र में प्रवाहित होती है, एक सत्य जो बार–बार वचन के ताने बाने में प्रगट होता है – वह सत्य है परमेश्वर सर्व प्रथम चाहते है, वे हमारे जीवनों में सबसे प्रथम स्थान चाहते है और चाहते हैं कि हम सर्वोत्तम बलिदान चढ़ाये। बाइबल का आरंभ एक ऐतिहासिक कथन से होता है –''*आदि में, परमेश्वर।*'' परन्तु अवश्य है कि ये वचन हमारे जीवनों में सत्य हो। परमेश्वर का स्थान प्रथम होना चाहिये। वह जो प्रथम स्थान के योग्य है, वह अन्य किसी स्थान से सतुंष्ट नहीं होगा। जब प्रभु ने फसह का पर्व नियुक्त किया उसने इस्राएलियो को आज्ञा दी कि वे उसे निर्दोष मेम्ना चढ़ाये (निर्गमन 12:5)। उन्हें ऐसा कोई पशु परमेश्वर को बलिदान नहीं करना था जो लंगडा, अंधा, दोषपूर्ण या त्रुटिपूर्ण हो (व्यवस्थाविवरण 15:21, 17:1)। ऐसा करना घृणित था।

अब यह बात सुस्पष्ट है कि परमेश्वर को मनुष्यों से किसी पशु का बलिदान नहीं चाहिए। जंगल के सभी पशु उसी के है और हजारों पहाड़ो के जानवर उसके ही है (भजन संहिता 51:10)। तब उसने क्यों नियम बनाया कि केवल सिद्ध पशु ही उसे बलिदान किये जाये? उसने यह मनुष्य की भलाई के लिये किया न कि अपनी भलाई के लिये। उसने यह इसलिए किया कि वह एक शिक्षक के रुप में अपने लोगो को एक आधारभूत सत्य सिखा सके, अर्थात यह कि वे केवल तब आनंद, संतुष्टि और भरपूरी पा सकते है, जब वे परमेश्वर को उसका उचित स्थान अपने जीवनों में देते है।

निर्गमन 13:2 मे परमेश्वर ने अपनी प्रजा को आज्ञा दी कि अपनी संतानों में से पहिलोठे पुत्रों और पशुओं के पहिलौठो को अलग करे। ''क्या मनुष्य, क्या पशु के, इस्राएलियों में से जितने अपनी मां के जेठे हो, उन्हें मेरे लिये पवित्र जानना, वह मेरा ही है। प्राचीन संस्कृतियों में पहिलौठे को सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक प्रतिष्ठित माना जाता था। इसी कारण, याकूब ने अपने प्रथम पुत्र रुबेन के बारे में कहा, ''हे रुबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौरुष का पहिला फल हैं, प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है'' (उत्पत्ति 49:3)। प्रभु यीशु को इस अर्थ से ''सारी सृष्टि में पहिलौठा

है'' (कुलु. 1:15) कहा गया है कि वह सबसे अधिक उत्कृष्ट है और समस्त सृष्टि के उपर आदर – सम्मान के सबसे ऊंचे पद पर है।

अपने लोगों को यह आज्ञा देने के द्वारा कि वे अपने पहिलौठे पुत्रो को पवित्र करें वह उस अत्यन्त संवेदनशील नस को स्पर्श कर हा था, क्योंकि सबसे प्रथम पुत्र के लिये उसके माता–पिता के ह्दय में प्रेम का विशेष स्थान होता है। किंतु यह संरचना इसलिए की गई थी कि वह उन्हें यह कहना सिखायें–

वह बात जो मुझे सबसे अधिक प्रिय है, वह वस्तु या व्यक्ति कोई भी हो,
मेरी सहायता कर कि उसे सिंहासन से उतार दूँ और केवल तेरी ही आराधना करुं

(विलियम कॉपर)

अब्राहम ने यह सबक मौरे पर्वत पर सीखा (उत्पति 22)। अब उसके वंशजो को भी यही सबक सींखना चाहिये।

आगे, परमेश्वर ने किसानों को आदेश दिया कि वे अपनी भुमि के प्रथम फलों में से प्रथम फल प्रभु के घर में लाये (निर्गमन 23:19)। जब अन्न की फसलें पक जाती है, किसान को खेत जाकर, हाथ भर पकी फसल तोड़नी पडती थी और उसे परमेश्वर को भेंट करके चढ़ानी पडती थी। प्रथम फलों का गुच्छा इस बात को मान्यता देता है कि प्रभु परमेश्वर ही फसल का देनेवाला है, और अपने भाग को स्वीकार करता है। एक बार फिर यह स्वाभाविक सत्य है कि परमेश्वर को अन्न की आवश्यकता नहीं, परन्तु मनुष्य को यह बात लगातार स्मरण कराने के लिये ऐसा करना अवश्य है कि प्रभु सर्वप्रथम और सर्वोत्तम का हकदार है।

जब बलिदान के पशु काटे जाते थे, तब याजको को कभी–कभी अनुमति थी कि वे कुछ अंग ले ले, और भेंट चढ़ानेवाला उसके कुछ भाग को खाये, परन्तु चर्बी सदैव ही प्रभु यहोंवा को चढ़ाई जाती थी (लैव्यव्यवस्था 3:16)। चर्बी को पशु का सबसे समृद्ध और सर्वोत्तम भाग माना जाता था और इस कारण वह यहोवा के लिये था। सर्वोत्तम से कमतर कुछ भी परमेश्वर के लिये योग्य नहीं था।

परमेश्वर को सर्वप्रथम रखने की यह बाध्यता जीवन के हर क्षेत्र मे थी, न केवल आराधना के स्थान में परन्तु रसोई घर में भीं। प्रभु के लोगों को निर्देश दिया गया था कि अपने पहिले गूंथे हुये आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ानाः ''अपनी पीढ़ी – पीढ़ी मे अपने पहिले गूंथे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना'' (गिनती 15:21)। आँटे को गूंथना एक बहुत ही साधारण काम करना समझा जाता है, ऐसा कार्य जो निश्चय आत्मिक नहीं है। परन्तु प्रथम गूंथे आटे में से उठाई हुई भेंट यहोवा को देने के द्वारा एक भक्त यहूदी इस बात को अंगीकार करता है कि परमेश्वर को उसके सम्पूर्ण जीवन में प्रथम स्थान प्राप्त है। वह धार्मिक और गैरधार्मिक बातों में भेद करने से भी इंकार करता है। जबकि उसे पता है कि परमेश्वर को गुंथा हुआ आटा नहीं चाहिये वह समझता है कि परमेश्वर को प्रतिदिन की रोटीं देनेवाले के रुप में मान्यता मिलनी चाहिए।

यहोवा ने यह सुनिश्चित किया जब उसने लेवियों को निर्देश दिये – ''जितने दान तुम पाओं, उनमें से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, उसे यहोवा के लिये उठाये हुई भेंट करके पूरी – पूरी देना'' (गिनती 18:19)। मनुष्य जिसकी आराधना करता है, उसी के समान बन

जाता है, इसलिये यह अनिवार्य है कि वह परमेश्वर के प्रति उचित भक्ति भाव रखे। परमेश्वर के बारे में कमतर सोचना विनाशकारी है। जब सृष्टि अपने सृष्टिकर्ता को वह स्थान देती हैं जिसके वह योग्य है, केवल तब वह लोहू और मांस के स्तर से उपर उठकर उस प्रतिष्ठा के स्थान को पाता है जिसके लिये उसे बनाया गया था।

जब हम इस विचार को पुराने नियम में देखते है, तब यह सबक वहां मिलता है जब एलिय्याह एक निराश्रित विधवा के घर सारपात पहुंचता है (देखिये, 1 राजा 17:1–16)। वह स्त्री से पीने को पानी और रोटी मांगता है। वह खेद प्रगट करते हुए कहती है कि मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी मे थोड़ा सा तेल बचा है – केवल इतना कि वह अपने और अपने बेटे के लिये पकाएं और खाएं, इसके पहिले कि भूख से मर जाये।

''मर डर,'' भविष्यवक्ता ने कहा, ''परन्तु पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।'' अब सुनने में यह एक स्वार्थपूर्ण आग्रह लगता है, लगता है ना? यहां लगता है कि भविष्यवक्ता गलत व्यवहार करने का अक्षम्य दोषी है। हमें सदैव यह सिखाया गया है कि स्वयं को परोंसने से पहिले दूसरों को परोसे। यह कहना कि पहिले मुझे परोस – शिष्टाचार के अनुसार अभद्रता है। पर हमें समझना चाहिये कि एलिय्याह परमेश्वर का प्रतिनिधि था। वह वहां परमेश्वर के स्थान में खड़ा था। वह स्वार्थ या अशिष्टता का दोषी नही था। वह कह रहा था, ''देखो, परमेश्वर के जन के रुप में मैं यहां हूँ, मुझे पहिले परोसकर तुम वास्तव में परमेश्वर को प्रथम स्थान दे रहे हो और जब तक तुम ऐसा करते रहोगे तुम्हे जीवन की आवश्यक बातों की कभी कमी नहीं होगी। तुम्हारे आटे का बर्तन और तेल की कुप्पी कभी खाली नहीं होगी।'' और बाद में ठीक यही हुआ।

हमारे जीवनों पर परमेश्वर के प्रथम अधिकार को सुलैमान ने इन जाने – पहिचाने शब्दों से पुनः स्थापित किया है – *''अपनी सम्पत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की सारी पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना''* (नीतिवचन 3:9)। इसका अर्थ है, हर बार, जब हम वेतन में बढ़ोत्तरी पाते है हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि सबसे पहिले प्रभु को उसका भाग मिले। नये नियम में आकर हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु जोर देकर कहते है कि परमेश्वर को हमारे जीवनों में प्रथम स्थान मिलना ही चाहिए *''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएगी''*(मत्ती 6:33)। यही वह सत्य है जो एलिय्याह ने उस विधवा के घर प्रगट किया था: वे लोग जो प्रभु को उनके जीवनों में सर्वोच्च स्थान देते है, उन्हें जीवन की मूल आवश्यकताओं के लिये कभी चिन्ता नही करनी पड़ेगी।

हम प्रभु की प्रार्थना के इतने अधिक अभ्यस्त हो चुके है (मत्ती 6:9–13) कि उसमें दिये क्रम के महत्व पर ध्यान नहीं देते। उसमें हमें सिखाया गया है कि परमेश्वर को प्रथम स्थान पर रखो (हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाये) और उसका हित (तेरा राज्य आये, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी ही)। केवल तब, उसके पहिले नहीं, हमें अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाएं करनी है (आज की रोटी हमें दे)।

जिस प्रकार परमेश्वर – पिता को सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए, उसी प्रकार ईश्वरत्व के शीर्ष के एक सदस्य के रुप में प्रभु यीशु को भी सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए। इसी कारण, हम कुलुसियों 1:18 में पढ़ते हैं – *"कि सभी बातों में वही प्रधान ठहरे"*

उद्धारकर्ता ने इस बात पर जोर दिया कि उसके लोगों का उसके लिये प्रेम इतना अधिक होना चाहिये कि अन्य सभी प्रेम तुलनात्मक रुप में नफरत ठहरे – "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों, और भाइयों और बहिनों, वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। यीशु को हमारे प्रेम में प्रथम में प्रथम स्थान मिलना चाहिए। अब दुःख की बात यह है कि प्रभु को उसके लोगों से सदैव प्रथम और सर्वोत्तम प्रेम नहीं मिलता। मलाकी के दिनों में जब प्रभु को भेंट चढ़ाने के अवसर पर, एक किसान सबसे अच्छे पशुओं को उनका वंश बढ़ाने या बेचने के लिये रख लेता था और प्रभु को निकम्मे पशु देता था। वह कहता कि प्रभु के लिये कुछ भी पर्याप्त रुप में अच्छा है – बाजार से लाभ कमाना प्रथम स्थान रखता था – यही कारण है कि मलाकी ने गरजदार शब्दों मे कहा – "जब तुम अंधे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो, तो क्या यह बुरा नही? जब तुम लंगड़े या रोगीपशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओं, क्या वह तुम से प्रसन्न होगा, या तुम पर अनुग्रह करेगा?" (मलाकी 1:8)।

परन्तु वे मलाकी के दिन थे। आज के विषय में क्या कहा जाये? हम आज प्रभु को सबसे प्रथम और सर्वोच्च कैसे दे सकते है? हम हमारे जीवनों में इस पर व्यवहारिक रुप मे कैसे अमल कर सकते है? हम यह कर सकते है, हमारे अधिकारियों की आज्ञा का पालन करके। यह समझते हुये कि हम प्रभु मसीह की सेवा कर रहे हैं। जितना हम नियमों के लिये कर सकते है, उद्धारकर्ता के लिये उससे अधिक कार्य करने के लिये तैयार रहना चाहिये (कुलु. 3:22–25)। यदि काम के दावे, मसीह के दावों पर प्राथमिकता बनाने लगे तब उनसे यह कहने के लिये तैयार रहना चाहिये – "यहां तक आ, और आगे न बढ़ और तेरी उमडनेवाली लहरें यहीं थम जाये" (अय्यूब 38:11)। हम समाज के लिए जितना करना चाहते है उससे बढकर हमे हमारे उध्दाकर्ता के लिये करने की इच्छा होनी चाहिये।

हम अपने परिवारों में विश्वास योग्यता से पारिवारिक वेदी बनाकर यह कर सकते है जिस में हम बाइबिल पढ़ सकते है और मिलकर प्रार्थना कर सकते है: जी हां, हम संसार के लिये नहीं पर प्रभु के लिये, और नरक के लिये नहीं पर स्वर्ग के लिये बच्चों को पालकर ऐसा कर सकते है।

अपने पुत्रों को महिमामय संदेश के लिये दो,
अपने धन को उनके मार्ग को आगे बढ़ाने के लिये दो
अपनी आत्मा को उनके लिये प्रार्थना में उण्डेलकर जयवंत बनो,
और आप जो भी खर्च करेंगे, यीशु उसका प्रतिफल देंगे।

(मेरी ए. थामसन)

एक मसीही मां ने सोचा कि वह मसीह को प्रथम स्थान दे रही थी, पर जब उसकी बेटी एक दिन बाइबिल स्कूल से आयी और बोली – "मां, परमेश्वर ने मुझे मिशन फील्ड में जाने की बुलाहट दी है," मां ने उत्तर दिया – "मेरे मरने के बाद, ईसाबेल।" एक और मां बड़े जोर शोर से किंचिन में काम

कर रही थी, जबकि बैठक में एक प्रचारक उसके पुत्र से बातें कर रहा था। प्रचारक ने प्रभु के काम में इस नवयुवक के गुणों के उपयोग की अद्‌भुत संभावनाओं पर बातचीत आरंभ की। तभी किचन से एक कर्कश आवाज आई, 'मेरे पुत्र से ऐसीं बाते' मत करो, मैं ने उसके लिये यह सब नहीं सोचा है।''

खुशी की बात सुनकर, स्पर्जन ने अपने पुत्र से कहा – ''बेटे, यदि परमेश्वर ने तुम्हे मिशन फील्ड में बुलाया है, तो मैं तुम्हें राजा बनने की मूर्खता करते हुये नहीं देखना चाहता।''

हम स्थानीय कलीसिया में नियमित रुप में उपस्थित होकर और उत्साहपूर्वक सभाओं में भाग लेकर यह कर सकते है। जार्ज मैलोन एक प्राचीन के बारे में बताते है जिसने राष्ट्रपति का व्हाइट हाऊस में डिनर का निमंत्रण इसलिये स्वीकार नहीं किया, क्योंकि प्राचीन के पद से जुड़ी जिम्मेदारियों के चलते वे शाम का समय देने में असमर्थ थे। जब माइकल फैराड़े ने चुम्बक की प्रकृति और गुणों के संबंध में एक उत्कृष्ट व्याख्या दी, सभा में उपस्थित लोंगों ने उन्हें बंधाई देने का निर्णय किया। परन्तु उसे स्वीकार करने के लिये फैराड़े वहां नहीं थे। वे अपनी कलीसिया की सप्ताह के मध्य होनेवाली सभा में शामिल होने के लिये चुपचाप खिसक लिये थे। उनकी कलीसिया में कभी भी बीस से अधिक सदस्य नहीं थें। हम परमेश्वर को भौतिक वस्तुओं के अपने भण्डारीपन में प्रथम स्थान दे सकते है, हम एक सरल जीवन शैली को अपनाकर, यह कर सकते है ताकि जो भी खर्च बचे वह परमेश्वर की सेवा में दिया जा सके। वह उन सबके साथ जो आत्मिक एवं भौतिक आवश्यकताओं में है, अपनी वस्तुएं बाँटकर यह कर सकते है। संक्षेप में, हम यह परमेश्वर और अनंतकाल के लिये निवेश करके यह कर सकते है।

परन्तु परमेश्वर को प्रथम स्थान देने का सबसे बड़ा तरीका है हमारे जीवनों को परमेश्वर को सौंपना, स्वयं को न केवल उद्धार के लिये, परन्तु सेवा के लिये भी उसे समर्पित करना। जब हम उन सब कामों के बारे में सोचते है जो उसने हमारे लिये किये, इस से कमतर कुछ भी देना (या करना) पर्याप्त नहीं है। मसीहियों के लिये वर्तमान में बुद्धिमानी की बात यह है कि वे अपने जीवनों के सर्वोत्तम को धन कमाने में खर्च करे, विलासिता और आराम में रहें। और सेवानिवृत्ति के बाद के वर्ष प्रभु की सेवा में दे। तब तक बहुत से लोग थककर चूर हो जाते है और जीवन के कुछ वर्ष ही शेष बचते है। उससे बड़ी बुद्धिमानी यह होगी कि जीवन के वसन्तकाल में मसीह को समर्पण करे जबकि बल, प्रेम और उत्साह अपने चरम–शिखर पर है। अभी परमेश्वर के लिये वह सब करना बेहतर होगा उन सबके बदले में जिन्हें थॉमस गिल हमारी निर्बल अभिलाषाएं, हमारी अति निर्धनतम, निम्नस्तर का भाग, हमारी बुझती हुई आग, और हमारे ह्दय की राख कहते है, परमेश्वर हम से सर्वप्रथम और सर्वोत्तम की मांग करते है, वे इन दोनों के योग्य है। केवल एक प्रश्न बच जाता है, ''क्या परमेश्वर को यह मिलेगा – मुझ से?''

अध्याय - 12

20/20 दृष्टि

2 कुरि. 5:9-21

किसी की भी दृष्टि संपूर्ण रुप में सिद्ध नहीं होती पर कुछ की आंखे इतनी कमजोर होती है कि उन्हें चश्में पहिनने पड़ते है। यदि वे मेरी आँखो के समान है, तो उन्हे आंखों के डॉक्टर से नियमित जाँच की आवश्यकता होगी। मै अभी जांच के कक्ष में बैठा हूँ। डॉक्टर आते है, प्रकाश उत्पन्न करते है और कहते है – 'अब, मिस्टर मैक डॉनल्ड' अपनी बांयी ऑख को ढ़ाकिये, और चार्ट की पहिली पंक्ति पढ़िये।'

''कौनसा चार्ट, डॉक्टर,''?

ओह, मामला अब गंभीर है, हमें आपके चश्में का नम्बर बढ़ाना होगा।''

तब वे उठे, और एक काला, दो आंखो वाला एक यंत्र मेरे सामने रख दिया और उसने मुझसे कहा,

दायें छेद में से देखिए। जब मैं देखने लगा, तब उन्होंने एक व्हील को घुमाया जो बहुत से लेंस को नियंत्रित कर रहा था और पुछा अब आप क्या देख रहे है?

''मै बस बाइबल का एक पद सोच रहा था, ''मैं मनुष्यों को पेड़ो के समान चलते हुये देखता हुँ, अर्थांत सबकुछ बेहतर है परन्तु अस्पष्ट दिख रहा है।

तब वह एक को निकालकर दूसरा लेंस लगाते है और पूछते है – क्या यह पहिले वाले से बेहत्तर है?'' धीरे–धीरे चार्ट पर अन्य दूसरी पक्तिंयां भी स्पष्ट दिखने लगती है, और वह नये लेंस की जोडी को लेकर संतुष्ट हो जाता है, मुझे 20/20 दृष्टि प्राप्त होगी।

अब यह भी सत्य है कि किसी के भी पास सिद्ध आत्मिक दृष्टि नहीं होती। जब पाप इस संसार मे आया, उसने मनुष्य की आत्मिक दृष्टि को प्रभावित कर दिया और हम सभी कों सुधारक लेसों की आवश्यकता है। 2 कुरिन्थियों 5:9–21 मे सात सुधारक ऐसे लेंन्स है जिन्हें हमें हर समय पहिनना चाहियें, यदि हम उस तरह से देखना चाहते हैं जिस तरह परमेश्वर उन्हें देखते है।

नरक के तथ्य (5:11 अ)

सबसे पहिले नरक का तथ्य है। पौलुस कहते है – ''इसलिये प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते है .....।'' अब मै समझता हूं कि 'भय' का अर्थ यहां 'आदर सम्मान' और परमेश्वर के प्रति 'यही' वह पवित्र आदर भाव है, उसे अप्रसन्न करने का भय, जिसके कारण प्रेरित बाध्य हुआ कि वह अपनी सेवकाई में अपनी एकनिष्ठा के अनुसार, लोगों को समझायें। परन्तु मैं इस पद पर एक अलग तरीके से विचार करना चाहता हूं, मैं कहना चाहता हूँ कि यह नर्क के आतंक और भयावहता का ज्ञान था जिसने पौलुस को विवश किया कि वह मनुष्यों को मसीह पर भरोसा करने और यातना के उस स्थान से बचने के लिये समझाये। इस लिये हमारे आत्मा के शरीर में अवश्य है कि सुधारकर दिखाने वाले वे लेंस हो जिनके द्वारा हम नरक की जलती ज्वाला को देख सके। यह बात हमें लगातार स्मरण कराएगी कि हमारे उद्धार न पाये हुए रिश्तेदार, मित्रगण, पड़ोसी जन, जी हां, सभी अविश्वासी –जन इस भयावह नियति के निकट खतरे में है। यह बात हमें प्रेरणा देगी कि बिना विलंब किये उद्धार का शुभ संदेश उन सभी को सुनाये जो हमारे संपर्क में आते है सुसमाचार के प्रचार – प्रसार के लिये यह हमें हमारे संसाधनों का उपयोग करने के लिये तैयार करेगा।

नरक एक सत्य है। प्रभु यीशु ने स्वर्ग के विषय में जितना कहा उससे अधिक उसने नरक के बारे में कहा। जिस प्रकार स्वर्ग का होना सुनिश्चित है, नर्क का अस्तित्व भी निश्चित है। वह सभी अविश्वास करने वालों की अनंत नियति है। वह एक स्थान है जिस में यातना का अनुभव किया जा सकता है। नर्क में न ज्योति है न प्रेम है। वहां अनंतकाल तक नैराश्य है। हम जितनी अधिक सच्चाई के साथ उसकी भयावहता से परिचित होंगे उतना ही अधिक हम मसीह पर विश्वास करने के द्वारा वहां से बचने के लिये लोगों से आग्रह करेंगे।

मसीह का प्रेम (5:14-15)

दूसरा लेंस मसीह का प्रेम है – उसके प्रति हमारा प्रेम नहीं, परन्तु हमारे लिये मसीह का प्रेम। यदि हमारे चश्में में यह लेंस है तो हम खून से लथपथ एक क्रूस देखेगें, और क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र को। स्वार्थ और संज्ञान रहित उनके उद्धार के लिये नाश होने, उनके जीवन के लिये मृत्यू वरण करने, उनके लिये सबकुछ बलिदान कर देने की पुकार, हमारे पापों के लिये मरता हुआ देखेंगे, उस कीमत को चुकाते हुये जो हमें चुकानी चाहियें थी। यदि वह केवल मनुष्य होता, तो हम जीवन भर उसके कृतज्ञ बने रहते, परन्तु जब हम यह समझ चुके है कि वह जीवन और महिमा का प्रभु है, सृजनकर्ता और समस्त विश्व का संभालनेवाला, तब हमें कितना अधिक कृतज्ञ होना चाहिये।

ऐसा प्रेम हमें विवश कर देता है। क्रुस पर उसके द्वारा किया गया कार्य एक तर्कपूर्ण कारणवश हम से संबंधित है। यदि वह हमारे लिये मरा, इसका अर्थ है कि हम सब पापों और अपराधों में मृत थे। यदि हम आत्मिक रुप में जीवित और सहीं होते तो उसे यह सब नहीं करना पड़ता। परन्तु बात इससे भी गहिरी है। वह इसलिये नहीं मरा कि हम पापी जीवन में लगातार जीतें रहे परन्तु वह इसलिये मरा कि अब से हम परमेश्वर के लिये जीयें। ''प्रेम इतना अद्भूत इतना स्वर्गिक, मुझ से मेरी आत्मा, मेरा जीवन, मेरा सबकुछ मांगता है''(आइजक वाट्स)। इस निष्कर्ष से बचना असंभव है।

आत्मा का मूल्य और अनंतकालीन अस्तित्व (5:16)

''अतः अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे। यद्यपि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे '' (पद 16)। जब हमने उद्धार पाया, हम ने लोगों को एक भिन्न दृष्टि से देखा। पहिले जब हम देखते थे, तब हमारी

दृष्टि उनके शारीरिक रुपरंग, व्यक्तित्व और धनसंपदा पर होती थी। परन्तु अब दृष्टि बदल चुकी है। अनुग्रह हमें सिखाता है कि उन्हें बहुमूल्य आत्मा के रुप में देखें जिनके लिये मसीह ने प्राण दिये।

हम उन्हें समस्त अनंतकाल में परमेश्वर के मेम्ने की आराधना करने वाले योग्य उपासकों के रुप में देखते है। हम यह समझते है कि इस संसार में अधिक साधारण और अयोग्य व्यक्ति भी सारे चांदी–सोने, प्लेटिनम और हीरे–जवाहरातों से अधिक मूल्यवान है। कलवरी पर, प्रभु यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति की एक कीमत ठहरा दी है – उसके निज जीवन के लोहू का मूल्य। किसी अज्ञात कवि ने लिखा है –

मैं मनुष्यों को पृथ्वी पर उन आत्माओं के रुप में देखता हूं, वे बंदी जिन्हें जय पाना है,
वे गुलाम जिन्हें राजा बनना है, उनकी एक आशा को आश्चर्य के साथ सुनता हूं
वस्तुओं के प्रदर्शन से दुःख भरी संतुष्टि के साथ,
तभी एक अगम्य पुकार जोर लगाकर उभरती है,
मेरे भीतर तुरही की ललकार के समान कंपन उत्पन्न करती है
ओह, इन्हें बचाने, उनके उध्दार के लिये नाश होने,
उनके जीवन के लिये मृत्यु वरन् करने,
उनके लिये सबकुछ बलिदान कर देने की पुकार।

जब हमारे चश्में में ऐसे सुधारकर दिखानेवाले लेंस होगे, तब हम अनुभव करेंगे कि लोग महत्वपूर्ण है। हम अपना जीवन वस्तुओं का संग्रह करने मात्र में नहीं खर्च कर सकते। हमें लोगों के लिये जीवन जीना चाहिये – उनके अनंत कालीन हितलाभ के लिये।

हमारी सृष्टि करने का उद्देश्य (5:17)।

पद 17 मे पौलुस लिखते है, ''इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नयी सृष्टि है।'' यदि हम नयी सृष्टि है, नयी सृष्टि के अंग, तो यह अनिवार्य प्रश्न उठता है, हमारी सृष्टि करने का उद्देश्य क्या है? क्या हम यहां धन कमाने के लिये है? क्या संसार मे अपने लिये नाम कमाने? धन सम्पत्ति का संग्रह करने? बेहतर मकानों और बागीचों में विलासिता का जीवन जीने? सुख का प्याला पीने? छोटी – छोटी बातो का पीछा करने? क्या हमारी सभी योजनायें कब्र पर समाप्त होंगी? क्या हमारी नियति इस से बढ़कर नहीं कि पेड़ पर एक घोंसला बनाये और वह भी कालान्तर में नष्ट हो जाये?

उत्तर है – निश्चय हमारी नियति इस से बढ़कर है, हम पृथ्वी पर परमेश्वर को महिमा देने और प्रभु यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिये है। हम यहां पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति के रुप में है। हम उस परमप्रधान के अद्भूत गुणों को प्रगट करने के लिये बुलाये गये है जिसने हमें अंधकार से उसकी अद्भुत ज्योति में बुलाया है। उसके राजदूत के रुप में हमें पुरुषों और स्त्रियों से आग्रह

करना चाहिए कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर ले। बाकी सभी बातें पथ से भटकाने वाली है, बाकी सभी बातें अप्रासंगिक है।

मसीह की सीधी सरल आज्ञा (5:18)

प्रभु ने हमें मेलमिलाप की सेवकाई सौंपी है। इसका अर्थ है कि उसने हमें स्त्रियों और पुरुषों को यह बताने भेजा है कि वे परमेश्वर के साथ मेंल मिलाप कैसे करे। क्रूस पर यीशु के द्वारा सम्पन्न कार्य ने एक मात्र मार्ग बनाया है, जिसके – द्वारा वे परमेश्वर के साथ सही संबंध बना सकते है। परन्तु उन्हें संदेश को सुनना और ग्रहण करना होगा। उनके सुनने का एक मात्र उपाय है कि हम उन्हें बताये। हम जाकर बताने के लिये जिम्मेवार है।

सेना में जब कोई अधिकारी अपनी इच्छा अभिव्यक्त करता है या कोई आमंत्रण भेजता है, उसके आधीनस्थों से आशा की जाती है कि वे इसे उसकी आज्ञा मानकर पालन करें। जब राजा दाऊद ने बेतलेहेम के कुएं का पानी पीने की इच्छा व्यक्त की, तब उसके लोग आज्ञा मानकर पूरा करने दौड़ पड़े, जबकि वह कुआ शत्रु के अधिकार क्षेत्र में था (2 शमूएल 23:15–17)। हमारे कप्तान ने हमें महान् आदेश दिया है, ''जाओ, सारे जगत में सब प्राणियों कों सुसमाचार का प्रचार करों।'' यह केवल एक निवेदन या सुझाव मात्र नहीं है। यह एक स्पष्ट आज्ञा है। यह आज्ञा विचार करने या चर्चा करने के लिये नहीं, परन्तु आज्ञा पालन के लिये दी गई है। हम में से प्रत्येक का सामना जब उद्धारकर्ता से होगा, तब संभावना है कि वह हम से पूछेगा, '' तुमने महान् आदेश का पालन करने क्या किया?''

उत्तर देने की जिम्मेदारी (5:20)।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं हैं कि मसीह के पास संसार की समस्याओं के हल (उत्तर) है। मनुष्यों के दुखों का मूल कारण पाप है। मसीह को छोड़ किसी और ने पाप का हल प्रभावी रुप में नहीं निकाला। केवल कलवरी पर सम्पन्न उसके कार्य ने मनुष्यों को पाप के दण्ड और सामर्थ से छुटकारा दिया है। मसीह ही उत्तर है। उत्तर मालूम होने के बाद उसे दूसरों को नहीं बताना, एक गंभीर अपराध है। यह ऐसा है, मानों कैंसर की बीमारी का इलाज जानने के बाद उसे बाजार से छुपा कर रखना। या फिर आग से जलते हुए मकान को देखकर अलार्म न बजाना, या फिर उसमें रहनेवालों को बचाने का प्रयास न करना।

एलीशा के दिनों में भुखमारी का शिकार चार कोढ़ी थे, जो अचानक ऐसे स्थान में पहुंचे, जहां भरपूरी के साथ भोजन सामग्री थी। पहिले तो वे किसी बात की परवाह किये बिना अपना पेट भरते रहे। तब उनके विवेक ने उन्हें रोका। वे पास के नगरवासियों से शुभ संदेश छुपा रहे थे। इसलिये वे उठकर नगर में गये और लोगों को बताया कि भोजन की इतनी भरपूरी है कि दुर्भिक्ष (अकाल) का अंत हो सकता है। लोग भीड़ की भीड़ वहां गये और भूखे मरने से बच गये।

एक अर्थ में हम सभी उन कोढ़ियों के समान है जिन्हें आदेश दिया गया है कि दूसरों को भोजन के बारे में बताये। हम ऐसी संभावना का विचार नहीं करना चाहते, कि अनंतकाल में उद्धार न पाए हुये

लोग हम से प्रश्न पूछे, ''तुमने हमें पहले क्यों नहीं बताया? ''मसीह के राजदूत के रुप में, हम अपने पड़ोसियों के लहू के दोषी नहीं ठहर सकते।

मसीह का न्यायासन (5:10)

सुधारकर दिखानेवाले लेंसो में सबसे अंतिम की सहायता से हम अतं में एक न्याय – आसन देखते है। प्रभु यीशु न्यायधीश है। हम में से प्रत्येक उसके सामने कटघरे मे खड़े है। हमारा न्याय हमारे पापों के कारण नहीं हो रहा है, उनका न्याय कलवरी के क्रूस पर हो चुका है और पापों का दाम भी पूरा –पूरा चुका दिया गया है। यह सुनवाई प्रभु की सेवा के मूल्यांकन और प्रतिफल के लिये है। यह राज्य का समारोह है, अपराधियो का न्याय कक्ष नहीं।

सबकुछ जो परमेश्वर की महिमा के लिये किया गया उसकी प्रजा को आशीष देने के लिये, और पापियों के उद्धार के लिये, उन सबका प्रतिफल दिया जायेगा। प्रत्येक कार्य जो स्वार्थ वश किया गया था जिनका उद्देश्य अशुद्ध था, वह धुंए में ओझल हो जायेगा। धीरज के साथ सब कुछ सहते, पवित्र जीवन जीने, विश्वास योग्यता से नेतृत्व करने, आत्माओं को जीतने, परीक्षाओं का प्रतिरोध करने और मसीह के आगमन को प्रिय जानने के लिये विशेष पुरस्कार मिलेंगे।

हमें प्रतिदिन इस सत्य के साथ जीना चाहिये कि मसीह का न्याय – आसन हम पर शीघ्र प्रगट होगा। उस मे आतंक या भय का प्रमाण नहीं होगा, परन्तु वह हमें प्रेरित करेगा कि हम उन पलों को अनतंकाल का आधार बना दे।

उन्हें एक साथ रखो

आत्मिक दृष्टि–दोष को दूर करने और हमें 20/20 की सही आत्मिक दृष्टि पाने के लिये 7 सुधारक लेंस है – नरक का सत्य, मसीह का प्रेम, आत्मा का मूल्य और अनंतकालीन अस्तित्व, हमारी सृष्टि का उद्देश्य, मसीह की सीधी सरल आज्ञायें, उत्तर देने की जिम्मेवारी, और मसीह का न्याय–आसन। इन दृष्टि सुधारक लेंसो को पहिने और आप जीवन कों सही परिप्रेक्ष्य में देख सकेंगे। बिना इनके जीवन में धुंधला पन होगा।

भाग – 2

मसीही चरित्र

अध्याय - 13

यीशु के समान बनने का लक्ष्य रखें

अधिकांश समस्यायें, जिनका हम सामना करते है, उनका उत्तर पवित्रता या मसीह की समानता है। उदाहरण के लिये हमारी समस्याओं में से एक है परमेश्वर की इच्छा कैसे जानना। इस प्रश्न का उत्तर देनेवाली बहुत से पदों का संबंध हमारे चरित्र से है (नीतिवचन 3:5–6, भजन संहिता 25:9)। हम जानना चाहते हैं कि सुसमाचार–प्रचार में प्रभावशाली कैसे बनें। उत्तर पवित्रता में है (मती 4:19)।

यदि हम प्रभावपूर्ण प्रार्थना का जीवन चाहते है, प्रभु कहते है – '' यदि तुम मुझ में बने रहों और मेरे वचन तुम में बने रहें, तो जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगोगे, वह तुम्हारे लिये हो जायेगा'' (यूहन्ना 15:7)। प्रभु के लिये युध्द करनेवाले सैनिक के रुप में हमें सुरक्षा और प्रभावशीलता की आवश्यकता है, कैसे? विश्वासी के हथियारों का वर्णन इफिसियों 6:11–18 में मिलता है। यह मसीही चरित्र है। और मसीही जीवन के सभी पहलुओं के लिये भी यही सत्य है। परमेश्वर *''हमें कैसे करे* 1–10 की सूची नहीं देते, परन्तु वे हमारे व्यक्तिगत जीवन पर जोर देते है। शेष बाते अपने आप स्थान में आ जाती है।

हमें सदैव प्रार्थना करनी चाहिये – '' हे प्रभु, हमें अधिक से अधिक मसीह के समान बनाइये और हमारे *स्वंय* को घटायें।'' कोई मसीहीजन इस तथ्य पर विवाद नहीं करेंगे कि हमें अधिकाधिक प्रभु यीशु के समान बनना चाहिये। यह बात तो तय है। मसीह के समान बनने से अधिक ऊँचा लक्ष्य, और अधिक चाहने योग्य महत्वाकांक्षा और कोई नहीं है। परमेश्वर के महान् उद्देश्यों में से एक उसके लोगों को उसके पुत्र के स्वरुप को समानता में परिवर्तित करना है। इस बात की आवश्यकता नहीं कि इस विषय पर खींचतान की जाये। परमेश्वर का उद्देश्य हमें यीशु के समान बनाना है, यह बात समस्त नये – नियम में सिखाई गई है, और हम अकसर उपदेशों में यह सुनते है।

परन्तु फिर भी प्रश्न उठता है, ''कैसे?'' व्यवहारिक रुप में और दिन –प्रतिदिन के जीवन में हम परमेश्वर के साथ मिलकर कैसे हमारे प्रभु यीशु के स्वरुप की समानता को प्राप्त करने के लिये

कार्य कर सकते है? क्या करना है, यह जान लेना एक बात है, पर उसे कैसे करना यह जानना एक दूसरी बात है।

परमेश्वर के स्वरुप की समानता हमारी देहों के आकार में नहीं देखी जाती, परन्तु हमारे नये बन चुके मन और ह्दय के सौंदर्य में दिखाई देती है। पवित्रता, प्रेम विनम्रता, दीनता, दया और क्षमा – ये 'सब' ईश्वरीय चरित्र बनाते है (पवित्रशास्त्र यूनियन के डेलीनोट)।

पौलुस कहते हैं कि, हम परमेश्वर की ओर देखकर उसकी समानता में बदलते जाते है (2 करि. 3:18)। इसका अर्थ यह है कि हम उसके जीवन का अध्ययन करे जब वह पृथ्वी पर मानव रुप में था, और जब अब कि वह पिता के दाहिने हाथ पर है, तब हम दृढ़ता के साथ उसके पीछे चलने का प्रयास करे, वैसे चले जैसे वह चला था, उसके उदाहरण से मार्गदर्शन प्राप्त करे।

नये – नियम मे दो सुस्पष्ट पदे हैं जिनमें प्रभु यीशु को हमारे लिये अनुसरण करने एक उदाहरण के रुप में रखा गया है – वे हैं – यूहन्ना 13:15 '' क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है तुम भी वैसा ही किया करो'' (उसने अभी –अभी अपने शिष्यों के पॉव धोये)। साथ ही, 1 पतरस 2:21, '' और तुम इसी के लिये बुलाये भी गये हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पदचिन्हों पर चलो।''

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हम कभी भी प्रभु के समान सिद्धता नहीं पा सकते और न उन लक्षणों को दर्शा सकते है जो केवल परमेश्वर में है; परन्तु हम इस बात का उपयोग यथास्थिती बनाए रखने के लिये बहाने के रूप मे नही कर सकते। हमें लक्ष्य की ओर प्रयास करते ही जाना है।

यद्यपि मसीह स्वयं हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, फिर भी जब उसका चरित्र उसके लोगों के जीवन में परिलक्षित होता है हम उसकी अनुकृति कैसे करें इस पर बहुमूल्य सबक सीख सकते हैं। क्या यह सत्य नहीं कि कभी – कभी हम उसके अद्‌भूत गुणों को पढ़ते हैं परन्तु वे हमारी समझ से बहुत दूर होते हैं? परन्तु जब हम किसी विश्वासी से मिलते हैं जो मसीह के समान कुछ गुणों को प्रदर्शित करता है, असाधारण रुप में, तब हम उस सत्य को देहधारी रूप मे देख लेते है। तब वह हमसे बहुत दूर, सैद्धांतिक या अव्यवहारिक नहीं रहता। उदाहरण के लिये, शिष्यता का संपूर्ण विषय हमारे लिये कभी जीवन्त और व्यवहारिक नहीं बन सकता, जब तक कि हम उसे किसी खून से खरीदे चेले के जीवन में न देखे कि वह पवित्रशास्त्र की स्पष्ट आज्ञाओं को पूरा करने कितनी धुन या लगन से जी रहा है।

इस प्रकार, हम केंद्रीय प्रश्नों पर पहुंच जाते हैं। यीशु मसीह कैसे है, और मैं कैसे अधिक से अधिक उनके समान बन सकता हूँ? मैं किस प्रकार ऐसा जीवन जीऊं कि लोग मुझमें मसीह को देख? मैं कैसे उसके चरित्र उसके व्यवहार (आचरण) और वाणी (बातचीत) का अनुसरण करू?

वह पवित्रशास्त्र से भरपूर था – मसीह का मन पवित्रशास्त्र से भरा था। उसने परमेश्वर के वचन को अपने अंतिम अधिकार के रुप में उद्धृत किया। जो पदें उसने कहीं वे सदैव लक्ष्य पर सटीक थी – अर्थांत् उस विशेष अवसर के लिये बिल्कुल सही शब्द (वचन)।

वह मनन करने वाला व्यक्ति था – वह भजन संहिता 1 का 'धन्य पुरुष' है जो प्रभु की व्यवस्था में मगन रहता है, और वह उसमें रात–दिन ध्यान किये रहता है।

वह एक आराधक था – हमारे प्रभु की आराधना का सर्वोच्च कार्य उसके पिता की इच्छा के आज्ञापालन के लिये कलवरी पर उसकी बलिदानी मृत्यु थी।

वह संसार के सदृश न बना – क्या उसने अपने चेलो के बारे में यह नहीं कहा – ''जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे वे भी संसार के नही? (यूहन्ना 17:16)। वह इस संसार का बिल्कुल भी नहीं था।

उसने शरीरिक हथियारों से युद्ध नही किया – जब हमारे प्रभु की पीलातुस के समक्ष सुनवाई हो रही थी, उसने कहा, ''मेरा राज्य इस संसार का नही, यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लडते कि मै यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता 'परन्तु मेरा राज्य यहां का नही' (युहन्ना 18:36)।

नैतिक सिद्धता – प्रभु यीशु ने न केवल बिना पाप जीवन जीया उन्होंने पाप को जाने बिना जीवत जीया और उसमें कोई पाप नही था। वह जगत में परखा तो गया पर उसने भीतर से कभी यह परीक्षा अनुभव नहीं की। उस में ऐसा कुछ न था जो पाप को प्रत्युत्तर देता।

आप दुखी पुरुष का सबकुछ बनना पसंद करेंगे,
बस वह पाप न करे,
यह कि हम मसीह के समान बन जाये
और पहिले के समान न रहें

(जोसेफ स्टेननेट)

वह स्वयं की इच्छा से और पिता –परमेश्वर से अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकता था। यूहन्ना के 5 अध्याय में दो बार उसने कहा कि वह अपने आप से कुछ भी नहीं कर सकता (पद 19,30)। यह कहते हुए वह अपने सर्वशक्तिमान होने का इन्कार नहीं कर रहा था, परन्तु वह अपनी परमेश्वर – पिता के साथ सम्पूर्ण समानता और अपनी इच्छा और पिता की इच्छा में सिद्ध एकता का निश्चय दिला रहा था।

अपनी पुस्तक 'द सिनलेस सेवियर' में जे. बी. वाटसन ने प्रभु यीशु को यह भावभीनी आदरांजली दी है:

> कभी उसने पश्चाताप कीं पीड़ा का अनुभव नहीं किया। उसे कभी गलती करने का विचार नहीं आया, उसे कोई शब्द पुनः याद करने की आवश्यकता नहीं थी .....। उसने कभी किसी वचन या कार्य के लिये पछताना अभिव्यक्त नहीं किया, उसने कभी गलतियां नहीं की, कभी पाप अंगीकार का एक शब्द नहीं कहा, या किसी के द्वारा उसके मार्ग या कार्यो के लिये निर्देश नहीं पाये। वह शांत भाव से प्रतिदिन काम करता रहा और प्रत्येक घण्टे अपना नियुक्त कार्य पूरा करता गया, इस कारण, उसके जीवन में कहीं कोई पहिले से बचा कार्य नहीं था, प्रत्येक शाम उसे निष्कलंक और अश्रमित पाती, उसी शांति के साथ जिससे उसने अपना दिन आरंभ किया था।

एक और प्रशंसक ने कहा था –''मनुष्य के रुप में वह उतना ही निष्कलकं था, जितना एक परमेश्वर के रुप में था, और इस संसार के प्रदूषणों के बीच उतना ही शुद्ध था, जितना वह संसार की उत्पत्ति से पूर्व पिता का आनंद था।

आनंदः– परमेश्वर के पुत्र का आनंद उसके पिता की इच्छा पूरी करना और बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाना था। उस आनंद को ध्यान में रखकर, उसने क्रूस को सह लिया और उसकी लज्जा को तुच्छ जाना। उसका आनंद उन सभी परीक्षाओं और दुखों से अप्रभावी था जो मनुष्यों ने उस पर लाए।

शांतिः– छुटकारा देनेवाले प्रभु का जीवन शांति और विश्राम के लक्षणों से प्रगट था। चाहे जो शत्रु या बुराई उसके मार्ग में आये, वह शांत और अविचलित था। उसको अपनी सृष्टि से मिलनेवाली धमकियां और अपमान उसे विचलित नहीं कर सकी।

धीरजवन्तः– यीशु अपने चेलो के साथ धीरजवन्त बना रहा, ''अविश्वासी और हठीली (निवृत्त) पीढ़ी (लूका 9:41)। वह इस संसार की खोयी हुयी मानवता के प्रति धीरजवन्त रहा – ''नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सबको मनफिराव का अवसर मिलें''(2 पतरस 3:9)। कोई और व्यक्ति होता तो बहुत पहिले मनुष्यों के प्रति आशा रखना छोड़ देता।

दयाः– हम प्रभु यीशु की दया को मनुष्यों के साथ उसके स्नेहमय, सहानुभतिपूर्व व्यवहार में देखते है, उन्हें आशीष देने और आवश्यकता में पड़े व्यक्तियों को राहत देने में उसे बड़ा आनंद मिलता था। दूसरों के प्रति उसकी परवाह के कारण वह जिससें भी वह मिलता उनका प्रिय बन जाता था।

भलाईः– यहां तक कि उसके शत्रुओं ने हमारे प्रभु को 'भला' कहा, उसने बिना पक्षपात किए दया दिखाई। वह ''भलाई करता और सबको जो शैतान के सताये हुये थे, अच्छा करता फिरा''(प्रेरितों के काम 10:38)। उसने स्वयं की नहीं परन्तु दूसरों की चिन्ता की। दया दिखाने में कोई उसके समतुल्य नहीं है। वह दूसरों को धनवान बनाने के लिये स्वयं को कंगाल बनाता गया।

विश्वसनीयताः– वह प्रतिज्ञाओं को पूरा करने, कर्तव्यों को करने और अपने लोगों की निष्ठापूर्वक अविचलन सहित परवाह (देखभाल) करने में विश्वसनीय था। उस पर भरोसा करने में कोई जोखिम नहीं है। उस पर विश्वास करके कोई कभी निराश नहीं हुआ।

सौम्यताः– इस शब्द का उल्लेख हमें उस समय मे ले जाता है जब चेले छोटे बच्चों को यीशु के पास से दूर भगा देना चाहते थे। उसने कहा, ''बालकों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना मत करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है''(मत्ती 19:14)।

तरसः– मसीह को भीड़ पर तरस आया, और उसने बारहों को कटनी के खेत में भेज दिया (मत्ती 9:36)। उसे भीड़ पर तरस आया और उसने 5000 को भोजन कराया (मत्ती 14:14)। एक बार फिर उसने भीड़ पर तरस खाया और 4000 को भोजन कराया (मत्ती 15:32)। उसके द्वारा तरस खाने के कारण दो अंधो को दृष्टि मिली (मत्ती 20:34)। एक कोढ़ी शुद्ध हुआ (मरकुस 1:41)। दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को छुटकारा मिला (मत्ती 5:19)। और एक दुखियारी विधवा का मृत पुत्र जिलाया गया (लूका 7:13)। हम अच्छे चरवाहे के रुप में उसका तरस देखते है (लूका 15:4–7)। नेक सामरी (लूका 10:33)। और उड़ाऊ पुत्र के पिता के रुप में (लूका 15:20)। हम लाजर की कब्र पर उसके तरस के आँसू देखते है (युहन्ना 11:35)। और जैतून पर्वत पर जब वह यरुशलेम के लिये रोया (मत्ती 23:37–39)। हमारें पास तरस खानेवाला उद्धारकर्ता है।

हमें वह तरस कितना अधिक चाहिये। हमें उस तरस के लिये कितनी प्रार्थना करनी चाहियेः

भला हो कि मैं भीड़ को देखूं जैसे मेरा उद्धारकर्ता देखता था,
जब तक मेरी आँखे आँसुओं से डबडबा न जाये।
भला हो कि मैं भटकती भेड़ों को दया के साथ देखूं और प्रभु के प्रेम में उनसे प्रेम करुं।

(अज्ञात)

दीनताः– यीशु मसीह की कोई भी वास्तविक तस्वीर उसे एक मन में दीन और हृदय में विनम्र व्यक्ति के रुप में प्रगट करेंगी। शब्द दीन में टूटेपन का विचार है, यह शब्द एक युवा घोड़े का वर्णन करने उपयोग किया जाता है, जिसने लगाम को स्वीकार कर लिया है और जो धीरे – धीरे आश्वस्त भाव से चलता है, सिर उपर उठाता और नीचे करता और उसकी आँखें सीधे सामने की और देखती है। हमारे दीन प्रभु हमें बुलाते हैं कि हम उनका जुआं अपने उपर ले ले और उनके समान बनना सीखें। इसका अर्थ है बिना किसी शिकायत के उनकी इच्छा को स्वीकार करना। जब विपरीत परिस्थितीयां हो या संकट हो, तब हम यह कह सके – "भले ही ऐसा है – क्योंकि यह आपकी दृष्टि में भला है – मुझे स्वीकार है।

"यीशु पशुओं के बाड़े में जन्म लेने के लिये दीन थे, ऐसा जन्म जिसमें इस संसार की कोई महिमा नहीं थी। वह अपने जीवन में दीन था, उसमें लेशमात्र भी घमण्ड या हठ नहीं था, और नही स्वयं को दूसरो से बेहतर समझने की मानसिकता थी। उसकी विनम्रता का सर्वोच्च उदाहरण था – जब "उसने मनुष्य के रुप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली" (फिलि. 2:8)।

आप हे उद्धारकर्ता, इतने विनम्र और दीन थे,
और मैं कैसा कीड़े सरीखा हूँ,
निर्बल, पापमय और अपवित्र,
कि मैं अपना सिर भी उपर उठाने का साहस नहीं कर सकता?

(एच.एफ लायटे)

वह सेवक थाः– यीशु वास्तव में एक इस्राएली खरीदा गुलाम था, जिसने अपना कान व्दार की चौखट पर रखकर कहा – "मैं अपने स्वामी से प्रेम करता हूँ, मैं स्वतंत्र होकर नहीं जाऊंगा"(निर्गमन 21:5)। उसका संपूर्ण जीवन उसके परमेश्वर और उसके संगी–साथियों की सेवा करने का जीवन था। अद्‌भुत्! विश्व का सृजनहार और संभालनेवाला, अपने महल को छोड़ देता है, जहां अनगितत स्वर्गदूत उसकी सेवा करते थे, और पृथ्वी पर आया कि सेवा करे और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दें। पौलुस ने उसके द्वारा स्वयं को नीचे स्तर पर लाने और सेवक बनने का चित्रमय वर्णन किया है। यद्यपि वह व्यक्तिगत रुप में परमेश्वर के तुल्य था, उसने परमेश्वर के तुल्य होने को किसी भी किमत पर अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। नहीं, उसने स्वयं को खाली किया और स्वर्ग के उन अधिकारों को छोड़कर दास बना। वह कह सका, "परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ" (लूका 22:25–27)। "यीशु मसीह के जीवन में अहं (या स्वार्थ) का कोई एक कार्य भी नहीं था, वह सदैव दूसरों की सेवा में लगा था।"

यह देखकर हम अवाक् रह जाते हैं कि उसने दास के समान तौलिया लिया और झुककर चेलो के पॉव धोने लगा।

हम तेरी दीनता और विनम्रता से चकित है,
और खुशी से तेरे समान बनना चाहते है,
और तुझसे सीखने में प्रभु हमें सारा विश्राम और सुख मिलता है,

यद्यपि तू स्वयं परमेश्वर था और स्वर्ग की सारी महिमा तेरी थी,
तूने दास का स्वरुप धारण किया और सब दुःख सहें।

(जोसेफ स्टेननेट)

वह अब भी कह रहा है जैसा उसने उपरी कोठारी में उस अंतिम रात में कहा था – ''मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो '' (युहन्ना 13:15)। जब हम सेवा करने झुकते है तब यह मसीह की समानता का मान्य चिन्ह है।

सहनशीलताः– हम एक कर्ज में थे जिसे चुकता नहीं कर सकते थे। हम से उस कर्ज को वसूलने के बदले प्रभु ने स्वयं उस कर्ज को अपने उपर ले लिया और पूरा पूरा कर्ज चुकता कर दिया। कितना उद्‌भुत् उद्धारकर्ता है।

क्षमा करनाः– उसके शब्द, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' सदियों से गूंज रहा है। उसकी क्षमा की आत्मा का और कौन–सा प्रमाण चाहिये? यहां ईश–मानव अवर्णनीय यातना के बीच मरने पर था और वह प्रार्थना करता है कि पिता उसके प्राण लेनेवाले दोषियों को क्षमा करे। "तेरे शत्रु भले घृणा कर, तुच्छ जाने, अपमान करे, तेरे मित्र भले अविश्वसनीय साबित हो, परन्तुं क्षमा करने से तू थकेगा नहीं, तेरा ह्दय केवल प्रेम कर सकता है।" (एडवर्ड डेन्नी)

परन्तु यहां एक बात समझना आवश्यक है। भले ही उसने अपने प्राण लेने वालों के लिये क्षमा की प्रार्थना की, इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें बिन मांगे क्षमा मिलेगी। यहूदा क्षमा नहीं किया गया। केवल वे जो पश्चाताप और विश्वास करते हुए उसके पास आये उन्होंने उस प्रार्थना का लाभ पाया। क्षमा पहिले पश्चाताप की मांग करती है। यीशु ने अपने चेलों से कहा –

> ''सचेत रहो, यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा; और यदि पछताएं तो उसे क्षमा कर। यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहें – ''मैं, पछताता हूँ'' तो उसे क्षमा कर'' (लूका 17:3–4)।

ध्यान दे कि पश्चाताप के बाद क्षमा है।

कुछ छोटे–छोटे अपराध जो हमारे विरुद्ध होते है, उन्हें हम आसानी से भूल सकते है। वे इतने महत्वपूर्ण नहीं होते कि उन्हें गंभीरता से लिया जायें। परन्तु यदि कोई गंभीर अपराध या पाप हो, तब बिना पश्चाताप उसे क्षमा कर देना धार्मिकता नहीं है। ऐसा करने पर दोषी व्यक्ति को उस बुराई में बल मिलता है। जब पश्चाताप किया जाता है तब क्षमा करने की कोई सीमा नहीं होनी चाहिये। हमें लाखों–लाखों बार क्षमा किया गया है, हमें तैयार रहना चाहिये कि हम भी कुछ सैकड़ो बार क्षमा करे। कितना सच है कि – ''क्षमा वह खुशबू है जो कुचला हुआ फूल कुचलने वाले के पॉव पर लगा देता है।''

साहसः– मैं यीशु की यरुशलेम और क्रूस लिये अंतिम यात्रा तस्वीर को बहुत पसन्द करता हूं। लूका बताते है – ''वह यरुशलेम की ओर उनके आगे–आगे चला''(लूका 19:18)। उसने हमारे छुटकारे के कार्य को पूरा करने अपना मुख चकमक के समान कर लिया था। विचार है कि चेले उसके पीछे चल रहे थे, दर्शाता है कि वे धीरे–धीरे या अनिच्छापूर्वक चल रहे थे। उन्हें आगे बढ़ने में संकोच हो रहा था।

धार्मिकताः– नैतिक सिद्धता जो प्रभु यीशु में थी, उसका एक तत्व उसकी धार्मिकता है। वह संपूर्ण रीति से धर्मी और खरा है। उसने कभी उस काम की लालसा नहीं की जो बेईमानी, अस्पष्ट या आपत्तिजनक था। उसके निर्णय धार्मिकता के और उसके कार्य भी धार्मिकता के है।

निःस्वार्थ भावनाः– हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता पृथ्वी पर हुए सबसे अधिक निःस्वार्थी मनुष्य थे। उसका सम्पूर्ण जीवन और कार्यकाल स्वयं का इंकार करने, अपने से अधिक दूसरों के हित की चिन्ता प्रदर्शित करने का था। मन की दीनता में उसने दूसरों को अपने आप से बेहतर समझा (फिलि. 2:3)।

चरित्रगत एकरुपताः– संसार का उद्धारकर्ता सदैव एक समान बने रहते थे। उनका व्यक्तिगत आचरण सिद्धरुप में उनकी अलौकिक या महान् शिक्षाओं से मेल खाता था। मनोदशा में मनचाहें बदलाव या अनियंत्रित संवेग उसके लिये अपरिचित थे। जब वह क्रोधी हुआ (मत्ती 23:33) या दुखी हुआ (यूहन्ना 11:35) यह केवल उस अवसर की आवश्यकता के अनुसार था – इस कारण नहीं कि वह अपनी स्वयं की भावनाओं में बह गया था।

एकाग्रचित्तः– यीशु का एक बंधनकारी और छत्रधारी उद्देश्य था; कि वह खोये हुओं को खोजे और उनका उध्दार करे। क्या उसे ने यह नहीं कहा, *"मुझे तो एक बापतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले, तब तक मैं कैसी व्यथा में रहूंगा"* (लूका 12:50)? उस समय वह निश्चय ही गोलगाथा पर अपनी मृत्यु के बापतिस्में की चर्चा कर रहा था, जबकि वह संसार के पापों के लिये मृत्यु सहने जा रहा था।

श्रेणीः– जब हम कहते हैं कि यीशु में एक श्रेणी थी, हमारे कहने का अर्थ है, उसने उन सबसे बढ़कर भव्यता और शालीनता से कार्य किया, जिसकी साधारण तौर पर आशा की जा सकती थी। यद्यपि वह सर्वज्ञानी था और मनुष्यों के मन के विचार पढ़ सकता था उसने कभी मनुष्यों को अनावश्यक रुप में परेशान नहीं किया। उसके लिये सब विशेष थे और सबको सम्मान जनक व्यवहार मिलना अवश्य था।

शिष्टताः– शिष्टता सुन्दरता की निकट रिश्तेदार है, और प्रभु यीशु शिष्ट थे। वह कभी कठोर और अशिष्ट नहीं थे। ऐसी कोई परिस्थिती नही थी जब उसने आपा खो दिया हो। उसे सिद्ध संज्ञान था। उसके किसी शब्द या कार्य ने कभी घबराने और लज्जित करने का कार्य नहीं किया। वह सब अवसरों पर सिद्ध सज्जन व्यक्ति था। यह एक ऐसा चरित्रगुण है जिसका अनुपालन हम सब कर सकते है। लोगों के लिए एक शिष्ट पुरुष का प्रतिरोध करना कठिन होता है। हमारे अनुग्रहकारी कार्य, उचित शब्द, लोगों को उस प्रभु का प्रशंसक बनाते हैं जिसके हम प्रतिनिधि है।

धन के प्रेम से छुटकाराः– निराश्रित और निर्धन, हमारे प्रभु के पास कभी पैसा नहीं था। निश्चय ही उसके पास पैसा था, ऐसा कभी वर्णन नहीं आया है। जब उसे एक आत्मिक सबक सिखाने के लिये एक सिक्के की आवश्यकता थी, उसने पतरस से कहा कि वह उस मछली से निकाले जिसे उसने सबसे पहिले पकड़ा था (मत्ती 17:27)। किसी ने भी उसकी संपत्ति के कारण कभी उससे ईर्ष्या नहीं की। मृत्यु के बाद उसने जो वस्त्र पहिने थे, उन्हें छोड़कर और कुछ संपत्ति नहीं छोड़ी।

आज्ञाकरिताः– बाइबल में उसके बारे में यह लिखा है कि उसे अपने परमेश्वर पिता की आज्ञा (इच्छा) पूरी करने में आनंद मिलता था (पढ़े भजन 40:8, इब्रानियों 10:7)।

आत्माओं के लिये धुनः– एक खोई भेड़ के लिये चरवाहें ने गहिरे जल को पार किया, वीरान जंगलों में खोज की, जंगलो पहाड़ों पर चढ़ा, जब तक कि उसे वह भेड़ नहीं मिल गई जो खो गयी थी (लूका 15:1–7)।

पापियों का मित्रः– यह पदवी उसका अपमान करने दी गयी थी, परन्तु यह सबसे अधिक प्रिय पदवी थी (लूका 7:34)। प्रभु यीशु उन लोगों के साथ समय बिताते थे जो समाज से बहिष्कृत थे और जिन्हें हिन दृष्टि से देखा जाता था। प्रभु नीचे गंदे स्थानों में गये, उनसे मुलाकातें की, और उनके साथ भोजन किया। उसने पापियों से कहा कि उनकी मदद करें। यह सब कुछ उसने मित्र के रुप में किया। वे उसके साथ रहना चाहते थे और उसकी संगति को पसन्द करते थे।

संतुष्टिः– जब उद्धारकर्ता अतिशय अविश्वास करने वालों से मिले उन्होंने स्वयं को परमेश्वर की सर्वोपरि योजना और उद्देश्य का विचार करके संतुष्ट किया। ''हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा'' (मती 11:26)।

धीरज और सहनशीलताः– इब्रानियों का लेखक हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु ने कैसे उसके विरुद्ध पापियों की अति बर्बरता को सहन किया (इब्रा.12:3)। शैतान, दुष्टात्मायें और मनुष्य मिलकर जो बुरे से करा कर सकते थे, वह उसे कलवरी के मार्ग पर जाने से रोक नहीं सका।

धुनः– धुन एक शब्द हैं जो पवित्र शास्त्र में केवल एक बार प्रभु यीशु के जीवन के संबंध में आया है, जब उसने रुपयों का लेनदेन करनेवालों को मंदिर के प्रांगण से बाहर किया था। उस समय दाऊद की भविष्यवाणियों में से एक, जो मसीहा के संबंध में थी, चेलों के सामने पूरी हुई – ''तेरे घर की धुन मुझे खा जायेगी'' (यूहन्ना 2:17)। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर की बातों के लिये एक ज्वलनशील धुन से भस्म हुआ जा रहा था। परन्तु केवल यही एक अवसर नहीं था, उसका सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की इच्छा को वास्तव में पूरा करने और उसका पीछा करने की इच्छा या धुन से ओतप्रोत था। जब यरुशलेम में पीछे रुक जाने के कारण उसे उसके माता–पिता ने डॉटा, जबकि वे सोचते थे कि नासरत लौटते समय मार्ग में उसे उनके साथ ही रहना चाहिये था, उसने कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि मुझे अपने पिता के भवन में रहना अवश्य है?'' (लूका 2:49)।

कृतज्ञता:– यहां पर मत्ती 11:25 यह पद तुरन्त स्मरण आता है। उसने अभी–अभी खुराजीन, बैतसैदा और कफरनहूम के लिये हाय कहा था। उन्होंने इस तत्थ्य के बावजूद, उसका इन्कार कर दिया था, कि उसके सबसे अधिक सामर्थशाली आश्चर्यकर्म इन नगरो में किये गये थे। इस अतिशय अविश्वास के बावजूद, वह परमेश्वर पिता को धन्यवाद देता है, क्योंकि –''उसने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालको पर प्रगट किया है।''

यह हमारे लिये एक सबक है। जब हमारे जीवन में सबकुछ अच्छा नहीं होता, या अत्याधिक दु:खद होता है, तब हमें परिस्थितियों से ऊपर उठना चाहिये और अपने ह्दयों और स्वर्गिय पिता के प्रति कृतज्ञता में ऊँचा उठाना चाहिये।

फैनी क्रासबी ने 3 वर्ष की आयु में एक चिकित्सक की लापरवाही के चलते दृष्टि खो दी थी। वर्षो बाद जब उससे उस घटना के बारे में पूछा गया, उसने कहा,

> "भले ही चिकित्सक ने घोर लापरवाही की थी, यह परमेश्वर की ओर से कोई गलती नहीं थी। मैं निश्चयपूर्वक मानती हूँ कि उसकी इच्छा थी कि मैं भौतिक प्रकाश के बिना अपने दिन बिता दूं ताकि मैं उसकी प्रशंसा को गाने के लिये बेहतर रुप में तैयार हो सकू और दूसरों को भी ऐसा करने प्रेरित कर सकूं। मैंने हजारों भजन नहीं लिखे होते.....।

कक्षा 2 का एक छोटा बालक सुबह–सुबह स्कूल बस से गिर गया, और उसका सिर सड़क से टकराकर चोट ग्रस्त हो गया– उसके सिर के घाव को बंद करने तीन टांके लगे ताकि खून का बहना बंद हो। बीच का अवकाश और भी दुर्भाग्यपूर्ण रहा, वह एक अन्य लड़के से टकरा गया – परिणामतः उसके दो दांत हिल गये और एक ओंठ कट गया। दोपहर के समय, वह गिर गया और उसकी बांह टूट गयी। उसके प्रिंसीपल ने तय किया कि इसके पहिले और कुछ घट जाये, उसे तुरन्त उसके घर छोड़ देना चाहिये। जब वे गांव के रास्ते उस लड़के के घर जा रहे थे, तब प्रिंसपल ने ध्यान दिया कि छोटे लड़कें ने अपने हाथ में कुछ दबाकर रखा है –''तुम्हारे हाथ में क्या है? '' उसने पूछा। लड़के ने उत्तर दिया, ''एक क्वार्टर डॉलर'' लडके ने उत्तर दिया।

''कहॉ मिला?'

''मुझे आज खेल के मैदान में पड़ा मिला'' लड़के ने पूरी बात बताई। तब वह मुस्काया और रोमांचित स्वर में कहने लगा, ''आपको पता है मि. चौपमैन, मुझे पहिले कभी एक क्वार्टर नहीं मिला। आज मेरा लकी दिन है।''

> इस कारण दिन हमारे लिए कैसा है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, पर यह कि हम उसे किस रुप में स्वीकार करते है। कुछ लोग एक टूटी हुई बाग के पीछे खिले फूलों (गुलाबों) को नहीं देख पाते, हरेक दिन की अपनी समस्याएँ है परन्तु विश्वास उन्हें आशीषों में बदल सकता है। प्रत्येक तितली आरंभ में इतनी आकर्षक नहीं लगती – परन्तु एक दिन में कितना भारी परिवर्तन हो जाता है।[17]

हमें अपनी स्मरण शक्ति, भूख, दृष्टि, श्रवणशक्ति, स्वास्थ और मानसिक स्वास्थ के लिये कृतज्ञ होना चाहिये। पृथ्वी पर यीशु को ये विलासिता के साधन उपलब्ध नहीं थे – भीतर स्प्रिंग वाले गद्दे, बहता ठंडा और गर्म पानी, रेफ्रिजरेटर और कार इत्यादि।

वह पुरुषोचित थाः– बहुतेरे आधुनिक कलाकार यीशु को तस्वीर में स्त्रियों के समान व्यक्तित्व वाला और अन्यजातीय सदृश दिखाते हैं। नहीं, वह ऐसा नहीं था, वह मानव का सिद्ध स्वरुप था, यदि पाप संसार में न आता, सभी मनुष्य (पुरुष) उसके समान होते।

वह प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति थाः– इस बारे में सोचिये। परमेश्वर पर निर्भर व्यक्ति के रुप में, उसने प्रार्थनाएं की। सर्वज्ञानी परमेश्वर के रुप में उसने दूसरों की प्रार्थनाओं के उत्तर दिये। उसने प्रार्थना की जब यूहन्ना ने उसे बपतिस्मा दिया (लूका 3:21)। उसने बारहों को चुनने की पूर्वरात्रि में सारी रात प्रार्थनाएं की (लूका 6:12)। उसने भीड़ को चंगा करने के बाद प्रार्थना की (लूका 5:16)। कफरनहूम में चंगाई देने और दुष्टात्माओं को निकालने के बाद (मरकुस 1:35)। लाजर की कब्रपर

(यूहन्ना 11:41–42) उसने प्रार्थना की। 5000 को खिलाने के बाद उसने प्रार्थना में समय बिताया (मत्ती 14:21–23)। जब उसने उन अविश्वासियों का सामना किया जिन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया, जबकि वह उन्हें बचाने आया था, तब उसने प्रार्थना के रुप में सर्वशक्तिमान, संप्रभु की शरण ली (मत्ती 11:25–26)। एक महायाजक के रुप में, उसने प्रार्थना की कि उसके लोग शैतान से बचे रहे, संसार से अलग होकर जीवन जीऐं, कर्तव्य पूरा करने के योग्य बनें और सुरक्षित स्वर्ग में पहुंचाएं जाये (यूहन्ना 17)। उसने पतरस के लिये प्रार्थना की कि उसका विश्वास जाता न रहें (लूका 22:32)। उसने गतसमनी के बाग में प्रार्थना की और स्वयं की इच्छा को उसके पिता की इच्छा के आधीन किया (लूका 22:41–44)। और क्रूस पर उसकी तीन वाणियां भी प्रार्थनाएं थी (लूका 23:31, मत्ती 27:46, लूका 23:46)।

उसने मुंह देखा न्याय नहीं किया पर धार्मिकता से न्याय कियाः– उसने विधवा की दमड़ी के आकार से बाहर उसके विशाल समर्पण को देखा (लूका 21:1–4)। उसने पापिनी स्त्री के पश्चातापी प्रेम और स्वधार्मिकता युक्त फरीसी के भाव शून्य तिरस्कार का भेद समझा (लूका 7:36–48)। वह मार्था की थकाने वाली सेवा से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना कि मरियम की शांत आराधना से प्रभावित हुआ (लूका 10:41–42)। बाहरी तौर पर फरीसी धर्मी जान पडते थे परन्तु भीतर से वे पाखण्ड और अराजकता से पूर्ण थे (मत्ती 23)। वह इस सामान्य प्रवृत्ति से उपर उठा कि यदि कोई व्यक्ति या वस्तु देखने में सुंदर है तो वह अवश्य ही अच्छी होगी। वह कितनी बेहतर रीति से जानता था कि 'हर चमकनेवाली वस्तु सोना नहीं होती।' वह बाहरी रुप रंग से अधिक आतंरिक सौंदर्य, गुणों की परवाह करता था।

हम शमूएल के द्वारा एलिआब के लिये कहे गये प्रभु के वचनों पर यह सोचने पर विवश हो जाते है: "न तो उसके रुप पर

दृष्टि कर, और न उसके कद की उँचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है। क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रुप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर लगी रहती है" (1 शमूएल 16:7)।

वह समय का पाबंद थाः– स्वामी ने कभी समय का अपव्यय नहीं किया। उसके लिए एक पल भी कीमती था। क्या उसने नहीं कहा, "जिसने मुझे भेजा है, मुझे उसके काम दिन हीं दिन में करना है, क्योंकि रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता"? प्रत्येक दिन के काम निश्चित थे। यहां तक कि समय का अंतराल जिसे हम रुकावट समझते है, वह भी उसके लिये परमेश्वर की सुइच्छा का ही भाग था।

यीशु ने सबसे नीचे के स्तर के मनुष्यों से अपनी पहिचान बनाईः– वह सदैव सबसे अंतिम, कमतर और छोटे से छोटे की परवाह करता था। वर्ग – विभेद करना उसें नहीं आता था। कंगाल, निर्बल, तुच्छ और निम्नस्तर के व्यक्तियों के लिये उसका प्रेम विशेष था, अर्थात् वे जो संसार के मानदण्ड से कुछ भी नहीं थे।

उसने सहाः– उसने पापियों की ओर से स्वयं के प्रति अकथ्य आक्रामकता को सहा (इब्रा. 12:3)। उसके मन में पीछे हटने का लेशमात्र विचार भी नहीं आया। यहां सहन करने का अर्थ भाग्य मानकर मजबूरी में परिस्थितियों को स्वीकार करना नहीं, परन्तु अंत समय तक बनी रहनेवाली दृढ़ता है। उद्धारकर्ता की वाणी के बारे में हमें विचार करना चाहिये। हम इस क्षेत्र में उससे क्या सीख सकते है? हम जो शब्द कहते है, उनमें कैसे अधिकाधिक मसीह के समान बन सकते है?

उसकी बातचीत पारदर्शितायुक्त ईमानदार थीः– उस के मुख में कोई धोकबाजी नहीं थी। उसने कभी झूठ नहीं बोला और न सत्य को अलग रंग में दर्शाने का प्रयास किया। उसने एक बार भी कभी बढ़ाचढ़ाकर बातें नहीं की, और वह चाटुकारिता के प्रभाव में कभी नहीं आया।

वह स्पष्टवादी थाः– एक बार उसने एक स्त्री से कहा – ''तू पांच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है, वह भी तेरा पति नहीं है'' (यूहन्नाा 4:18)। एक अन्य अवसर पर उसने एक फरीसी से कहा – ''मै तेरे घर में आया परन्तु तूने मेरे पांव धोने के लिये पानी न दिया.... तू ने मुझे चुमा न दिया, ... तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला'' (लूका 7:44–46)।

उसकी वाणी में अनुग्रह थाः– जब वह नासरत के आराधनालय में बोलने लगा, लोग – ''जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थी उनसे अचंभित हुये'' (लूका 4:22)। तब से आज तक लोग उसे लिखित वचन से बोलते हुये सुनकर अचंभा करते है।

उसने शिकायत नहीं कीः– हमारे प्रभु जानते थे कि शिकायत का अर्थ परमेश्वर – पिता के प्रयोजन की कृपा का अपमान करना होगा। इसका यह अर्थ हुआ कि उसे नहीं पता कि वह क्या कर रहा है। शिकायत करने का अर्थ उसकी त्रुटि बताना या उसके निर्णय को गलत ठहराना है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि जब भी हम शिकायत करने उद्यत हो, बेहतर होगा यदि हम उन विचारों को रोक ले, न कहे, और बेहतर होगा यदि हम उन शब्दों उन विचारों को रोक ले, और उन शब्दों को निगल ले, और इसके बदले हमें कहना चाहिए – ''परमेश्वर का मार्ग सिद्ध है (भजन 18:30)। आखिरकार, हमारे स्वामी सबकुछ अच्छा करते है।

उसकी वाणी उन्नति देनेवाली थीः– कभी –कभी उसने सीधे –सीधे कथन कहे, कभी –कभी उसने प्रश्न पूछे।

> उसने प्रकृति एवं प्रतिदिन की बातों के द्वारा आत्मिक सत्य सिखाये। उसने घास, हवा और वर्षा की बातें की, अंजीर के वृक्ष और खुशहाल मौसम की बातें की, और स्वर्ग और पृथ्वी को एक साथ लाकर परमेश्वर को प्रसन्न किया। उसने फूलों, दाखरस और गेहू की बाते की, पक्षियों और कौवों की बातें की, और उसके साधारण शब्द इतने सार गर्भित थे कि मनुष्यों के हृदय पर अंकित हो गये – खमीर और रोटी, और कपास और वस्त्र, अण्डे, मछली और मोमबत्तियां, आप देखिए कि कैसे वह परिचित संसार की चर्चा अलौकिक रुप मे करता है।
>
> *(लेखक – अज्ञात)*।

उसके शब्दों का मूल्य थाः– उसने उन बातों के बारे में कहा जिनका महत्व था। उसने व्यर्थ में कोई बाते नहीं कहीं – वही कहा जो इस जीवन के लिये सहायक और आनेवाले जीवन के लिये महत्वपूर्ण था। उसने कभी कानाफूसीं नहीं की। उसकी बातचीत उचित थी। उसका मन पूरी तरह

पवित्रशास्त्र के वचनों से भरा था, उसने वे ही वचन कहें जो अवसर के अनुसार सही थे। उदाहरण के लिये – उसने जंगल में शैतान की परीक्षा के दौरान व्यवस्थाविवरण में से तीन उचित वचन कहें।

उसका प्रत्येक उत्तर सिद्ध थाः– उसका चुप रहना अकसर उस की बातचीत से अधिक चातुर्यपूर्ण था (मत्ती 26:62–63, 27:12, मरकुस 15:4–5, लूका 23:9)।

निष्कर्षः

एक अज्ञात लेखकने इन प्रभावपूर्ण विचारों को लिखा है –

> यह सोचकर कितना आनंद आता है कि हम मसीह के उन गुणों को दर्शा सकते है, उन्हें जो प्रभु की खोज कर रहे है। एक अनुकरणीय जीवन शैली के द्वारा चेले अपने प्रभु को दुसरों के लिये और भी अधिक आकर्षक बना सकते है। तीतुस को लिखे पत्र में पौलुस ने उससे आग्रह किया कि वह दासों को शिक्षा दे कि वे उनके स्वामियो को प्रसन्न करे – ''ताकि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाए'' (तीतुस 2:10)। अवश्य है कि लोग सुनने योग्य सत्य न केवल सुनें परन्तु अनुकरणीय जीवनों में भी देते रहे। यहां, इस पद में पौलुस ने किंग जेम्स संस्करण मे adorn शब्द का उपयोग किया है अर्थात् – सब बातों में धर्म शिक्षा की शोभा बढ़ाएं। इस अर्थ में आशय है – बहुमूल्य रत्नों या आभूषणों का इस प्रकार उपयोग करना, या सजाकर रखना कि उनकी सर्वाधिक सुंदरता का प्रदर्शन हो या सबसे अधिक लाभ प्राप्त हो। यह हमारा सौभाग्य है।

हे प्रभु, कैसा अनुग्रह कैसा सौंदर्य तेरे कदमों के नीचे दृष्टव्य है।
कैसा धीरज, कैसा प्रेम, तेरे सम्पूर्ण जीवन और दुःखद मृत्यु में देखा गया,
सदैव तेरे बोझ से भरे ह्दय पर दुःख का बोझ लदा हुआ था,
फिर भी कोई असभ्य, कुड़कुड़ाहट के शब्द तेरे शांत मुख से नही निकले।
तेरे शत्रु भले ही घृणा करे, तुच्छ जाने, अपशब्द कहे, तेरे मित्र अविश्वासनीय सिद्ध हो,
कितुं तब भी क्षमा करने में अथक, तेरा ह्रदय केवल प्रेम कर सकता है।
ओह! तेरे समान प्रेम करनेवाला ह्रदय हमें दे,
हे प्रभु ताकि हमारे साथ जितना भी गलत हो उससे अधिक हम दूसरों के पापों के लिये व्यथित हो।
आप में एक होकर, प्रत्येक दृष्टि में, तेरे भाई, उस सज्जनता और अनुग्रह को देखे,
जो हे प्रभु, तेरे साथ मिल जाने से उत्पन्न होती है

(एडवर्ड डेन्नी)

आँसुओं की इस घाटी में तेरे जीवन जीने का विचार,
पापरहित पीड़ा और धीरजमय अनुग्रह के उन वर्षो के प्रेम की अनावृत कथा
हम उससे प्रेम करते हैं और फिर से उसे खोजना चाहते है

(लेखक– अज्ञात)

हे धन्य नवीनीकरण, अमूल्य दया,
मसीह के डलिडौल और भरपूरी मे उन्नत्ति

(अज्ञात)

हे धीरजवन्त, निष्कलंक!
हमारे हृदय दीनता में प्रशिक्षित होकर आपके जूएं को उठाना
और आपसे सीखना चाहते है,
ताकि हमें वह शांति प्राप्त हो

(सी.ए. बर्नस्टेन)

अध्याय - 14

आप आपके प्रेम के लिये पहिचाने जाये

प्रेम जितना भावना का विषय है, उतना ही इच्छा का विषय भी है। यह एक सोचा समझा कार्य है, जिसे करने का मैंने निश्चय किया है। ''प्रेम एक निर्णय है, जो मेरी इच्छा में बढ़ता है, मै प्रेम करना तय कर सकता हूँ। मैं यह कार्य अभी आरंभ कर सकता हूं – अपने घर पर।''(लेखक अज्ञात)

यह देने मे स्वयं को प्रगट करता है – ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र दे दिय .... (युहन्ना 3:16)। ''परमेश्वर के पुत्र ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया '' (गलतियों 2:20)। ''मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया '' (इफिसियों 5:25)। क्योंकि 'लेने से 'देना' अधिक धन्य है, प्रभु को सदैव यह अधिकार था कि वह 'अधिक धन्य' ठहरे। यह मसीहियों का पहचान चिन्ह है। ''यदि तुम आपस में प्रेम रखोंगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो'' (युहन्ना 13:15)।

यह प्रेम, प्रेम के योग्य और प्रेम के अयोग्य व्यक्ति के लिये भी है। सुंदर के लिये भी है और कुरुप के लिये भी, यह प्रत्येक अशिष्टता का उत्तर दया से देता है। प्रेम के बिना सभी मसीही सेवाएं व्यर्थ है। प्रेम, पवित्रात्मा के दान वरदानों के सबसे अधिक भव्य प्रदर्शन से भी बेहतर है (1 करि. 13:1)। दान वरदानों से अधिक अनुग्रह महत्व पूर्ण है। टकराव की स्थिति में प्रेम कोई निर्णय नहीं लेता जब तक वह उभय पक्षों के विचार सुन नहीं लेता (नीतिवचन 18:13)। प्रेम में दोष लगाने या आलोचना करने की भावना नहीं होती। जब कोई किसी अन्य व्यक्ति को किसी आत्मिक असफलता के कारण दोषी ठहरा रहा था, हैरी आयरन साइड एडीलेड़ प्रॉक्टर की इन पक्तियों को उद्धृत करते:

> दोष मत लगाओ। उसके मन और हृदय की स्थिति को तुम समझ नहीं सकते। तुम्हारी मंद दृष्टि मे जो बड़ा दाग है, संभव है कि परमेश्वर की शुद्ध दृष्टि में वह केवल एक चोट का चिन्हं है जो मैदान में मेहनत करते समय लगी हो। जबकि उसके स्थान में यदि आप होते तो थक जाते और हार मान लेते।

वह केवल परिस्थितिजन्य प्रमाणें के आधार पर भर्त्सना करने से मना करता है। वह दूसरे व्यक्तियों के बारे में नकारात्मक या आलोचनात्मक बातें कहने से मना करता है। प्रेम दृढ़ हो सकता है। वह पाप की भर्त्सना और अनाज्ञाकारिता को दण्डित कर सकता है (पढ़े नीतिवचन 13:24)। इसे कठोर प्रेम कहा जाता है। 1 कुरिस्थियों का अध्याय 13 प्रेम का अध्याय है। उस में पौलुस ने प्रेम का वर्णन ऐसे किया है जैसा यह प्रेम प्रभु यीशु के जीवन में दृष्टिगोचर था और हमें इस प्रेम पर अमल करना चाहिए। प्रमुख विचार जो उस अध्याय में है, वे यह है कि प्रेम स्वयं के स्थान पर दूसरों के बारे मे सोचता है। प्रेम सहन करता है वह अधीर नहीं होता न शीघ्र बुरा मानता है। वह दयावन्त है। वह सदैव उन अवसरों की प्रतीक्षा करता है कि छोटे–छोटे कार्यो के द्वारा कह सके – 'मै परवाह करता हूँ। वह ईर्ष्या नहीं करता, वह दूसरों से प्रतिस्पर्धा या जलन नहीं रखता। एक प्रेमी व्यक्ति यह इच्छा नहीं करता कि वह किसी के समान होता या जो दुसरों के पास है –उसके पास भी होता। वह आत्मप्रशंसा में गर्व से भरकर बढ़ चढ़कर नहीं बोलता। वह घमंड से फूल नहीं जाता। वह मानता है कि ऐसा कुछ नहीं है जो उसने प्राप्त नहीं किया, या उसे दिया नहीं गया है, वह कुछ नहीं कर सकता यदि उसे अधिकार न दिया जाये। वह भद्रता का व्यवहार नहीं करता। वह "अपनी भलाई नहीं चाहता।" इसका अर्थ यह है कि वह अपना अधिकार, यश, सम्पत्ति या पद–प्रतिष्ठा, इत्यादि की मांग नहीं करता।

वह अपस्वार्थी नहीं है। वह उत्तेजित नहीं होता। वह आसानी से फूल नहीं जाता। वह कुछ बुरा नहीं सोचता, जैसे अय्यूब को शांति देने वालों ने किया, वह विश्वासी के दुखों को उसके जीवन में किसी पाप का कारण नही मानता। वह कुकर्म में आनंदित नहीं होता। वह लोगों के साथ अन्याय होते देखकर कभी खुश नहीं होता, भले ही जिनके साथ उचित ही अन्याय हो रहा हो। वह बुरी बातों का हिसाब नहीं रखता (पद 5)। वह सत्य से आनंदित होता है। जब भी सत्य की जीत होती है, वह खुश होता है। भले ही श्रेय किसी को भी जाये। वह सब बाते सह लेता है। इसका अर्थ है, वह स्वयं का और अन्य दूसरों का बोझ भी उठाता है। प्रेम परीक्षाओं, सताओं और दुखों को सहन करता है और कभी हार नहीं मानता।

वह सब बातों की प्रतीति करता है। वह सभी बातों के लिये सर्वोत्तम संभावनाओं का विचार करता है जब तक कि उपलब्ध प्रमाण उन्हें असत्य साबित न कर दे। इसका अर्थ यह नहीं कि प्रेम आसानी से धोका खानेवाला और अनाड़ी होता है। वह सब बातो की आशा रखता है। वह वर्तमान कठिनाईयों और निराशाओं के बावजूद एक अच्छे परिणाम की आशा रखता है। वह कभी टलता नहीं। उसकी सामर्थ और प्रभावशीलता बिना रुके लगातार बनी रहती है। अतं में वह विजयी होता है। और उनके लिये प्रार्थना करता है जो छलपूर्वक उस का उपयोग करते है। जब कोई एक गाल पर मारता है, तब वह दूसरा गाल भी आगे कर देता है।

प्रेम शत्रुओं के लिये भी होता है, जो हम से घृणा करते है। उनसे भी, वह उन्हें आशीष देता है जो उसे शाप देते है। वह मांगने से अधिक देता है, और वापस पाने की इच्छा के बिना देता है। वह प्रेम करने योग्य और अयोग्य दोनो के लिये स्वाभाविक व्यवहार की सीमाओं के बाहर जाता है। उनके लिये भलाई करता है, जो भलाई नहीं करते। ऐसा सब करके वे सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र नहीं बन

जाते परन्तु आप प्रगट करते है कि आप परमेश्वर के पुत्र है। प्रेम दयावन्त है जैसे परमेश्वर दण्ड के योग्य व्यक्ति के लिये भी दण्ड को रोकते है, प्रेम भी वहीं करता है। वह अकृतज्ञ और बुरे के प्रति भी दया करता है। वह दोष लगाने या भर्त्सना करने मे धीर किंतु क्षमा करने में तत्पर होता है। वह अन्य विश्वासियों में यीशु को देखने का प्रयास करता है उनमें भी जो नापसंद करने योग्य हो।

हमारे प्रभु प्रेम करते है। वे प्रेम का देह रूप है। हमें उसके प्रेम का वर्णन करने के लिये एक विस्तृत, संशोधित, बेहतर शब्दावली की आवश्यकता है। हमारी वर्तमान शब्दावली अपर्याप्त है। उसमें पर्याप्त विशेषण नहीं है – सामान्य, तुलनात्मक और उच्चतम। हमारी भाषा अत्याधिक निर्धन है, व्यक्तिगत स्तर पर शब्द लज्जित करते है। हम केवल कुछ दूर तक जा सकते हैं उसके बाद हमें कहना पड़ता है – आधी बात तो बताई ही नहीं गई है। यह विषय सभी मानवीय भाषाओं को थका देता है। आईये, हम एक विचारधारा या प्रमुख–विचार को आरंभ करे जो समाप्त नहीं हो सकती। उसका प्रेम अनंतकालीन है, एकमात्र प्रेम जिसका जन्म नहीं हुआ है। यह सार्वकालिक और अंतहीन है। हमारे मन उस प्रेम को समझने के लिये सताव सहते हैं, यह प्रेम जो कभी समाप्त नहीं होता और बदला चुकाने की भावना नहीं रखता। प्रेम नाप ने योग्य नहीं है। उसकी ऊंचाई, गहिराई, लंबाई और चौड़ाई असीम है। हम कहीं भी ऐसा असीमित विस्तार नहीं पातें। कवियों ने इसकी तुलना विश्व के अतिशय विशाल विस्तार से की है परन्तु लगता है कि शब्द विचार के भार से सदैव दम तोड़ते है।

हमारे प्रति उसका प्रेम किसी कारणवश या किसी प्रेरणावश नहीं है। हमारे प्रभु हमारे भीतर प्रेम करने योग्य या गुणवत्ता के आधार पर ऐसा कुछ नहीं पाते, जो उनके प्रेम को आकर्षित करे। फिर भी उन्होंने हमसे इसी प्रकार प्रेम किया है। उसने यह प्रेम किया क्योंकि वे ऐसे ही है। हमारा दूसरों के प्रति प्रेम अकसर अज्ञानता पर आधारित होता है। हम लोगों से प्रेम करते है क्योंकि हम वास्तव में नहीं जानते कि वे कैसे है। हम उन्हें जितना अधिक जानने लगते, उनकी गलतियों और असफलताओं से परिचित होते जाते है, और तब वे प्रेम के कम योग्य जान पड़ते है। परंतु यीशु ने हम से प्रेम किया जब कि वे जानते थे कि हम क्या कुछ बनेंगे या करेंगे। उनकी सर्वज्ञानता उनके प्रेम को बाधित नहीं करती। परंतु इस संसार में बहुत से लोग है – छः अरब से भी अधिक। क्या संप्रभु परमेश्वर प्रत्येक से व्यक्तिगत रुप में प्रेम कर सकते है?

इतने अधिक लोगों के बीच, क्या वे चिंता कर सकते है?
क्या वे सबके साथ विशेष प्रेम कर सकते है?

हाँ, परमेश्वर के साथ कोई भी अयोग्य नहीं। कोई भी महत्वहीन नहीं। उसका प्रेम इस पृथ्वी के सभी व्यक्तियों के लिये प्रवाहित होता है। उस प्रेम की तुलना नहीं की जा सकती। अधिकतर लोगों ने एक समर्पित मां के प्रेम को जाना है, या फिर निःस्वार्थ या विश्वसनीय पत्नी के प्रेम को जाना है। दाऊद योनातन के प्रेम को जानता था। और यीशु यूहन्ना के प्रेम को जानते थे। परन्तु किसी ने कभी भी ऐसे प्रेम का अनुभव नहीं कियां था जिसकी तुलना ईश्वरीय प्रेम से की जा सके। एक भजन हमें स्मरण दिलाता है – ''किसी ने कभी मेरी परवाह ऐसे नहीं की, जैसी परवाह यीशु ने की।''

रोमियों 8 में, पौलुस ने विश्व की प्रत्येक वस्तु को परखा जो विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है, परन्तु उसके हाथ कुछ न आया। न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न हाकिंम, न सामर्थ, न वर्तमान् और न भविष्य, न ऊंचाई, न गहिराई, और न सृजी गयी कोई वस्तु विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है। यह समझना अद्भूत है कि सर्वज्ञानी परमेश्वर आज आपसे या मुझसे जितना प्रेम करते हैं और वह अभी सर्वाधिक है, उससे अधिक प्रेम वे नहीं कर सकते। उनका प्रेम सम्पूर्ण रुप में अप्रतिबंधित और अनारक्षित है।

लगातार परिवर्तनीय इस संसार में कुछ ऐसा प्राप्त करना आश्वस्त करता है, जो न बदलनेवाला है, अर्थात् मसीह का प्रेम। हमारा प्रेम चक्रो में होता है। यह एक प्रकार का भावनात्मक रोलर कोस्टर है। कितुं प्रभु के साथ ऐसा नहीं है। उसका प्रेम कभी थकता नहीं, न बदलता है। उसका यह प्रेम निशुद्ध है, स्वार्थ, अधर्म, समझोते या अनुचित उद्देश्यों से सर्वथा मुक्त है। यह बेदाग है और अशुद्धि का लेशमात्र भी उसमें नहीं है। उसके अनुग्रह के समान उसका प्रेम निःशुल्क है। इस बात के लिये हम अनंतकालिक रुप में धन्यवादित दे सकते हैं क्योकि हम तो कंगाल, भिक्षुक और दिवालिया पापी है। यदि हमारे पास समस्त संसार की समस्त संम्पति भी होती, तब भी हम उसके ऐसे अमूल्य प्रेम के बदले में बयाना तक नहीं दे पाते। यह प्रेम अद्भुत रुप में निष्पक्ष है। यह प्रेम सूर्य को धर्मियो और अधर्मियों पर एक समान उदय करता है, यह वर्षा को बिना भेदभाव बरसाता है, और संभवतः सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि यह प्रेम बलिदानी प्रेम है। यह कीमत का हिसाब–किताब नहीं रखता। इस प्रेम ने परमेश्वर के पुत्र को कलवरी भेजा कि वह प्रेम का सबसे बड़ा प्रदर्शन करे।

हे प्रभु, तेरा प्रेम मृत्यु के लिये भी तैयार है,
लज्जा और हानि की मृत्यु
ताकि हमारे सब शत्रुओं पर जय पाये,
और बलवन्त पुरुष का बल तोड़ दे

(एच.एल. रॉसियर)।

क्रूस पर हम एक प्रेम देखते है जो मृत्यु से बढ़कर बलवान है जिसे परमेश्वर के क्रोध की विशाल लहरे भी डुबा नहीं सकती। यह विशिष्ट प्रेम ज्ञान की सीमा से परे है और अभिव्यक्ति की सामर्थ के बाहर है। यह अति उच्च और अतुल्य है। यह सभी प्रेम का एवरेस्ट है। हम पृथ्वी पर एक बेहतर शब्दकोष की खोज करे, एक ऐसा विशाल शब्दकोष जो प्रभु के प्रेम का वर्णन कर सके। परन्तु यह प्रयत्न व्यर्थ होगा। जब तक हम स्वर्ग नहीं पहुंच जाते और उस देहधारी प्रेम को देख नहीं लेते, तब तक हमारे प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर के प्रेम का अधिक स्पष्ट दर्शन और अधिक सही बुध्दि के साथ उसकी समझ को नहीं पायेंगे। वह दिन शीघ्र आये, हे धन्य प्रभु – यीशु।

हम बिना प्रेम किये मसीह के समान नहीं बन सकते। हमें आज्ञा मिली है कि हम परमेश्वर को अपने पुरे प्रेम की सामर्थ, भावनाओं की सामर्थ, बुद्धि की सामर्थ, और शरीर की सामर्थ के साथ प्रेम करें। हमे अपने पड़ोसियों से भी उसी तीव्रता से प्रेम करना है जिस तीव्रता से हम स्वयं से प्रेम करते है। पतियों को पत्नियों से और पत्नियों को उनके पतियों से प्रेम करना है। विश्वास का घराना, खोये मनुष्यों का संसार यहां तक कि हमारे शत्रु – वे सब हमारे प्रेम को प्राप्त करे।

हम तब प्रेम करते है जब दूसरो की सेवा मे स्वयं को देते है। हम प्रेम करते है जब हम अपना धन उन्हें देते है जिन्हें वास्तव में उसकी आवश्यकता है। वास्तव में, यूहन्ना हमारी परीक्षा इस बात से करते है कि हम अपने धन का कैसे उपयोग करते है। ''पर जिस किसी के पास संसार की सम्पति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमे परमेश्वर का प्रेम कैसे बना हर सकता है? (1 युहन्ना 3:17)। वह जोर देकर कहता है कि सच्चे प्रेम का अर्थ है, भाइयों के लिये अपना प्राण देना (1 युहन्ना 3:16)। इस से बढ़कर प्रेम किसी का नहीं (युहन्ना 15:13), यह क्रूस का मार्ग है।

हमारे लिये परमेश्वर के प्रेम के बड़े प्रदर्शनों में एक, मां को प्रेम है। एक मसीही मां विमान से टर्की आयी ताकि अपने मरणासन्न पुत्र को एक किड़नी दे। उसने सोचा कि किडनी देने से उसकी स्वयं की मृत्यु हो जायेगी। डॉक्टर ने पूछा, ''क्या आप सचमुच केनन को एक किडनी दान करने के लिये तैयार है? उसका उत्तर था, ''मैं उसे दोनों किडनियां देने के लिये तैयार हूँ।

वह (प्रेम) बहुत से अपराधों को ढ़ांप देता है। इसका अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार उन पापों का प्रायश्चित हो जाता है, परन्तु प्रेम दूसरो की गलतियां और असफलताओं पर दया की चादर ड़ाल देता है।

परन्तु प्रेम कठोर हो सकता है। वह आवश्यकता पड़ने पर ताड़ना करने से पीछ नहीं हटता (पढ़े नीतिवचन 13:24)। जब खाने के लिये बहुत से सेब दिये जाते है तब प्रेम कुचले हुये सेब चुन लेता है ताकि किसी दूसरे को वे सेब न लेना पड़े। प्रेम और क्या – क्या करता है?

- प्रेम उपयोग करने के बाद 'वॉश बेसिन ' और 'टब' साफ करता है।
- प्रेम कम पड़ जाने पर अधिक टायलेट टिशू उपलब्ध करता है।
- प्रेम बत्तियां बुझा देता है, जब कोई उनका उपयोग नहीं करता।
- प्रेम काम पूरा करता है और बिना कहे उसे करता है।
- वह फर्श से कचरा उठाकर अलग करता है।
- वह कचरे का डिब्बा खाली करता है।
- जब वह किसी की कार उधार लेता है गैस और ऑयल भरकर वापस करता है।
- वह मिलने के समय पर मिलता है, लोगो से प्रतीक्षा नहीं करवाता।
- वह खाने की मेज पर दूसरों को खाना देने में मदद करता है।
- वह दूसरों का मजाक नहीं उड़ाता, न चुभनेवाले, तीखे व्यंग कसता है।
- वह सभा के बींच से शोर मचाने वाले शिशु को बाहर लेकर जाता है ताकि वह दूसरो का ध्यान विचलित न करे।
- वह कार्य करता है ताकि प्राप्त धन का दान कर सके (इफि. 4:28)।
- प्रेम जोर से बोलता है ताकि ऊंचा सुननेवाला सुन सके।
- यह क्षमा करता है और मन में द्वेष नहीं रखता।

जॉर्ज वॉशिंगटन कर्वर को एक कॉलेज ने दाखिले से मना कर दिया था क्योंकि वे अश्वेत थे। वर्षो के बाद, जब किसी ने पूछा कि उस कॉलेज का नाम क्या था, उसने उत्तर दिया, ''क्या फर्क पड़ता है।'' जब किसी ने क्लारा बार्टन से पूछा, ''क्या आपको वे बुरी बातें स्मरण नहीं है, जो उस स्त्री ने आपके बारे में कही थी? उसने उत्तर दिया, ''मुझे केवल याद ही नहीं है, पर मुझे पक्के तौर पर याद है कि मैं भूल चुकी हूँ।'' वह दूसरों के पापों को देखकर आनंदित नहीं होता (1 करि. 13:6)।

प्रेम अपने माता – पिता का आदर करता और उनकी आज्ञा मानता है और उनकी वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करता है। वह इस जाल में नहीं फंसता कि बाहरवालों से मीठी – मीठी बातें करे और अपने माता – पिता के साथ अभद्रता करे। प्रेम विचारवान और शिष्ट होता है। वह धन्यवाद के नोट लिखता है, या अन्य तरीको से 'कृतज्ञता' या 'सराहना' अभिव्यक्त करता है। वह उनको उपहार भेजता है जिन्हें लोग अधिकतर भूल जाते है।

क्या आप जानते हैं कि संसार थोंड़े से प्रेम के लिये तरस रहा है?
हर कहीं आप थोड़े से प्रेम को पाने की पुकार का स्वर सुन सकते है।
उस प्रेम के लिय जो गलत को सही बनाता है,
उस प्रेम के लिये जो आनंद का गीत उत्पन्न करता है,
उन्होंने प्रतीक्षा की है, ओह, थोड़े–से उस प्रेम के लिये, कितने लंबे समय से
(लेखक – अज्ञात)।

अध्याय - 15

दूसरों के प्रति तरस रखें

मसीह और तरस एक–साथ चलते है, वे अलग नहीं किये जा सकते। जो दुःखद स्थितियों में है – उनके साथ खड़े होकर, उन्हें प्रोत्साहन और आशा देकर हम मसीह के समान बन सकते है। यीशु ने यही किया है (इब्रानियों 13:5–6)। वह ऐसा मित्र है जो भाइयों से अधिक निकट रहता है (नीतिवचन 18:24)। हम गलती से यह सोचते हैं कि सभी मनुष्य बराबर सृजे गये है, और उन्हें नीचा देखते हैं जो हमारे अनुसार 'बराबर' शब्द की परिभाषा में सटीक नहीं बैठते। सत्य यह है कि सभी एक बराबर नहीं सृजे गये है। कुछ में दूसरों से अधिक बुद्धि है। शारीरिक आकर्षण में भी भिन्नता पाई जाती है और प्रतिभाओं या गुणों में भी अतंर है। कुछ गंभीर कमी–घटी के साथ जन्म लेते है।

यदि मैं तरस खानेवाला व्यक्ति हूँ, तो मैं इन विभिन्नताओं के कारण भेद नहीं करुंगा। मेरा ह्दय उनके लिये चिंता करेगा जिन्हें लोग तुच्छ जानते है। मैं मनुष्यों का मूल्य संसार के अनुसार तय नहीं करुंगा, परन्तु उन्हें बहुमूल्य जानूंगा, कभी न मरनेवाले लोग क्योंकि परमेश्वर का पुत्र उनके लिये मरा। मैं, उन्हें वही मूल्य दूंगा, जो परमेश्वर देते है।

जब एक सुसमाचार प्रचारक ब्रिटेन से वापस लौट रहा था, तब किसी ने उनसे पुछा यू.एस. में किस बात ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया। उसने उत्तर दिया, ''विलियम बोरडेन को देखना, जो एक करोड़पति का पुत्र है, सिटी मिशन में उसका हाथ किसी के कूल्हें पर था।''

फ्रेड इलियट अपनी प्रातः कालीन आराधना को बीच में रोककर खिड़की तक जाते थे और कचरा उठानेवाले को खुशी से अभिवादन करते थे। उनके लिये कोई भी गतिविधी किसी दूसरी गतिविधि से अधिक पवित्र नहीं थी। एक 'समर बाइबिल कांफ्रेंस' में जैक ब्रिट्‌ज़ेन ने एक गंभीर रुप में विकंलांग व्यक्ति के साथ भोजन किया क्योंकि दूसरों ने उसे अलग रखा था, वह अपने भोजन को मुंह में दबाकर नहीं रख पाता था; और कुछ उसे पहिनाई गई समाचार – पत्र की 'बिब' पर अवश्य गिर जाया करता था।

जे. एन. डर्बी ने एक वयोवृद्ध दम्पत्ति के साथ एक मामूली कॉटेज में रहना पसंद किया जबकि उन्हें प्रतिष्ठित लोगों के लिये विशेष आवास दिया गया था। यह तरस खानेवाला चेला वृद्ध व्यक्तियो और अलग–थलग अकेले पड़े हुओं को फोन करता था। वह बीमारों और घायलों से मिलने जाता था या फिर उन्हें 'शुभकामनाओं के संदेश' भेजता था, उन्हें जिन्हें कभी ऐसे कार्ड नहीं मिलते थे। आप भरोसा कर सकते थे कि वह बेरोजागारों को और उन घरों में जहां किसी की मृत्यु हुई हो, भोजन भिजवायेगा। आप उन्हें सामान्य व्यवहार की सीमाएं लांघ कर किसी किशोर से बातें करता हुआ देखते, जो व्हीलचेयर पर था। वह उन लोगों से अतिशीघ्र मित्रता कर लेता था जिन्हें दृष्टिदोष था और वे कुत्ते की सहायता लेकर चलते – फिरते थे। वे उस लड़की से मित्रता कर लेते जिसे डाऊन सिन्ट्रोम का विकार है। वे सब जो विकलांग और उपेक्षित है, अकेले और दुखी है, उनसे प्रेम करते हैं क्योंकि वे जानते है कि वह उनकी परवाह करता है।

पॉल सैण्डबर्ग ने अपने स्वामी का अनुसरण व्यर्थ में नहीं किया था। एक दिन वह कॉफी शॉप गया और एक व्यक्ति फ्रेडी के बाजू में स्टूल पर बैठ गया। पॉल ने विश्वास योग्यता से फ्रेड को साक्षी दी और शीघ्र ही फ्रेड ने नये जन्म के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया। कुछ वर्षो बाद, जब फ्रेड को कैंसर हो गया, पॉल ने उससे नियमित रुप में मुलाकातें की। तब एक स्तरहीन 'नर्सिंग होम' में पॉल ने उन कामों को किया जो कि दाईयों किया करती है। जिस रात फ्रेड की मृत्यु हुई पॉल ने उसे बांहों मे थाम रखा था और उसे पवित्रशास्त्र की पदें सुना रहा था। मैं इसे तरस कहता हूँ।

पश्चिमी मिशीगन में, एक किशोर, केवल पंद्रह वर्ष की आयु मे कैंसर का उपचार कराने लगा – कीमोथेरेपी ने कुछ समय तक तो साथ दिया, परन्तु वह बहुत दुखदायी थी। उसके दुष्परिणाम भी थेः उसके बाल गिरने लगे। उसकी बीमारी की अनिश्चितता के चलते उसे वापस स्कूल जाना पड़ा, उसके सिर पर दाग, और चकत्ते थे, और स्कूल में उसे अनादर झेलना पड़ता था। परन्तु एक दिन वह चकित रह गया कि उसके बहुत से साथी छात्र पूरी तरह गंजे हो गये थे, उन्होंने अपने सिर मुण्ड लिये थे। बुद्धि और समझ के अनुग्रह के साथ इन किशोरों ने एक मार्ग निकाला कि वे अपने मित्र की पीड़ा कम कर सके और उसे सामंजस्य करने में सहायता करे। हमें ऐसे तरस की कितनी आवश्यकता है। हमें यह प्रार्थना करने की कितनी अधिक आवश्यकता हैः

भला हो कि मैं भीड़ को वैसे,देखूं, जैसे मेरा उद्धारकर्ता देखता था,
जब तक कि मेरी ऑखे आंसुओं से डबडबा न जाये,
भला हो कि मैं भटकती भेड़ो को दया के साथ देखूं,
और प्रभु के प्रेम के लिये उनसे प्रेम करुं

(लेखक – अज्ञात)।

अध्याय - 16

पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते जाओ

इफिसियों 5:18

बहुतों के लिये पवित्रात्मा से भरना एक अस्पष्ट और रहस्यमय विषय है। यह लोगों के मन में एक स्पष्ट और निश्चित विचार उत्पन्न नहीं करता। साथ ही यह भी सत्य है कि इस विषय पर बहुत सी गलत शिक्षायें प्रचलित है, आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि पवित्रात्मा के इस कार्य को लेकर मसीही लोग असमंजस में है। सबसे पहिले अवश्य है कि 'आत्मा से भरे जाने' और पवित्रात्मा की अन्य सेवकाईयों के बीच के अतंर को समझा जाये। आत्मा से परिपूर्ण होना इन सबके समान अनुभव नहीं है:

निवास करनाः- इसका अर्थ है कि एकता का तीसरा व्यक्ति अर्थात् पवित्रात्मा प्रत्येक विश्वासी की देह में वास्तव में निवास करता है। हमारी देह पवित्रात्मा का मंदिर है।

बपतिस्माः- बपतिस्मा पवित्रात्मा का वह कार्य है जो व्यक्ति को मसीह की देह में उस पल एक स्थान प्रदान करता है जब वह विश्वास करता है। वह वैश्विक कलीसिया का एक सदस्य बनता है।

मुहरः- छाप या मुहर, स्वामित्व और सुरक्षा का चिहं है। परमेश्वर का आत्मा एक विश्वासी पर छाप लगाता है कि वह प्रभु का है और उसे सुरक्षित करता है।

बयानाः- इसका अर्थ है दाम का कुछ भाग पहिले देना या गारंटी देना। कुछ लोग इसकी तुलना मंगनी के छल्ले से करते है। जिस व्यक्ति के पास आत्मा है, एक दिन वह पूर्ण मीरास अवश्य प्राप्त करेगा।

अभिषेकः- पुराने नियम में राजाओं और याजको को तेल से अभिषेक किया जाता था, यह उनके पदभार ग्रहण का अनुष्ठान था। इस प्रकार, पवित्रात्मा राजकीय याजकत्व में हमारा अभिषेक है। यूहन्ना 2:27 में अभिषेक का एक नया अर्थ दिया गया है। पवित्रात्मा की शिक्षा देनावाली सेवकाई हमें सत्य और असत्य के बीच भेद करने की योग्यता देती है।

पवित्रात्मा की ये सभी सेवकाईयां उसी पल आरंभ होती है जब व्यक्ति उध्दार प्राप्त करता है। वे स्वंय चलित है। उन्हें नये विश्वासियों की ओर से किसी सहयोग की आवश्यकता नहीं है। ऐसी कोई शर्ते नहीं है, जिनका पूरा होना अवश्य है। वे सदा के लिये एक बार के अनुभव है। आत्मा से परिपूर्ण होना भिन्न बात है, वास्तव में नये –नियम में पवित्रात्मा से परिपूर्ण होने के 2 प्रकार बताये गये है।

सर्वप्रथम, किसी विशेष कार्य के लिये परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के अनुसार विश्वासी को आत्मा से परिपूर्ण किया जाता है। जैसा कि हम पढ़ते है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को उसकी मां के गर्भ मे ही पवित्रात्मा से भरा गया था (लूका 1:15ब)। इस प्रकार परमेश्वर ने उसे मसीहा के अग्रधावक के रुप में तैयार किया। संभव है कि यही दर्शाने के लिये प्रेरितों के काम पुस्तक में पवित्रात्मा से परिपूर्ण होने को उपयोग किया गया है। इसी प्रकार, चेलों को भी पवित्रात्मा से भरा गया ताकि वे पेंटीकुस्त के दिन पवित्रात्मा के आगमन के लिये तैयार किये जाये (प्रेरितों के काम 2:4)। पतरस को भरा गया ताकि वह अधिकारियों और लोगों के सामने उन्हें निरुत्तर करने वाला संदेश दे (प्रे. काम 4:8)। पतरस और यूहन्ना को इसलिये भरा गया ताकि वे निडरता के साथ परमेश्वर का वचन बोले (प्रे. काम 4:31)। शाऊल को इसलिये भरा गया कि वह दमिश्क में मसीह का प्रचार करें (प्रे. काम 9:17,22)। बाद मे शाऊल इसलिये भरा गया कि इलीमास टोन्हें का पराभव कर सके (प्रे. काम 13:9)। कम से कम इन में से कुछ आत्मा से भरना' तात्कालिक था, और जिन्हें भरा गया उनके लिये कोई अहर्तायें या शर्ते तय नहीं थी।

तब पवित्रात्मा से भरने का दूसरा एक प्रकार है जिसके लिये कुछ अहर्ताये या शर्ते पूरी करना अवश्य है। हम इसे इफिसियों 5:18 में पाते है, यह वह नही जिसके लिये हम प्रार्थना करते है, यह एक आज्ञा है जिसका पालन करना है। नये नियम की मूल भाषा में यह स्पष्ट है कि इस का अर्थ है ''लगातार परिपूर्ण होते जाओ।'' यह कोई उपलब्धि नहीं है पर निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। यह कोई भावनात्मक अनुभव नही है परन्तु पवित्रता में लगातार बने रहने का जीवन है।

पौलुस ने लिखा, *दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।* परंतु उसने किसी बुरी बात जैसे कि पियक्कड़पन से पवित्रआत्मा से भरे जाने का तुलनात्मक उल्लेख क्यों किया? संभवतः उसने ऐसा इस लिये किया कि इन में कुछ समानताएँ है और कुछ विभिन्नताएँ भी है।

सबसे पहिले समानताओं पर विचार करें, दोनो ही स्थितियों में व्यक्ति बाहरी नियंत्रण में होता है। नशे की अवस्था में वह मदिरा के प्रभाव में होता है जिसे कभी–कभी 'आत्माएं' भी कहा जाता है। पवित्रात्मा से भरने का अर्थ है कि वह पवित्रात्मा के नियंत्रण में है। दोनो ही स्थितियों में आप व्यक्ति के चालचलन के तरिके से यह बता सकते है। पियक्कड़ व्यक्ति अनियंत्रित होकर लडखडाता है। पवित्रात्मा से भरने वाला व्यक्ति पाप और संसार से अलग होकर चलता है। दोनों ही स्थितियों में आप उसके बोलने से पहिचान सकते है। नशे में बातचीत अस्पष्ट बेतुकी और गंदी होती है। विश्वासी के बोलने से मसीह को महिमा और सुनने वालों की उन्नति होती है। तब इन दोनों में दो असमानताएँ है, पियक्कड़पन में आत्मा नियंत्रण खो जाता है, जबकि पवित्र आत्मा से भरे जाने पर ऐसा नही होता। नशे के प्रभाव में पाप के प्रति प्रतिरोध घट जाता है, जबकि पवित्रात्मा से भरे जाने पर प्रतिरोध बढ़ जाता है।

मुझे जेम्स स्टीवर्ट के चुभनेवाले शब्द स्मरण आते है कि, "यदि मदिरा से मतवाले होना पाप है तो पवित्रात्मा से न भरना और भी बड़ा पाप है।" जैसा पहिले कहा जा चुका है, पवित्रात्मा से परिपूर्ण होते रहना पवित्रता का जीवन है। आप इन वृतान्तो में उस की अलग–अलग अभिव्यक्ति पाएंगे।

- यह परमेश्वर के राज्य के नागरिक का चरित्र लक्षण है (मत्ती 5:1–16)।
- यह प्रभु में बने रहने का जीवन है (यूहन्ना 15:1–17)।
- यह प्रेम का जीवन है (1 कुरि. 13)।
- यह एक मसीही का हथियार है (इफिसियों 6:10–20)।
- यह मसीही चरित्र का जीवन है (2 पतरस 1:5–11)।

यहाँ पवित्रात्मा से भरे जाने के संबंध में कुछ आवश्यक बातों का विवरण दिया जा रहा है,

- पाप का अंगीकार और परित्याग करे, जैसे ही आप उसे जान ले (1 यूहन्ना 1:9 नीतिवचन 28:13)।
- स्वयं को पल–पल प्रभु के नियंत्रण में समर्पित करे (रोमियों 12:1–2)।
- स्वयं को परमेश्वर के वचन से संतृप्त करे (यूहन्ना 17:17)। आप पवित्रात्मा की परिपूर्णता नही पा सकते यदि मसीह का वचन आप में भरपूरी से निवास नही करता (कुलु. 3:16)।
- अधिक से अधिक समय प्रार्थना और आराधना में व्यतीत करे (रोमियो 8:26, 2 कुरि 3:18)।
- मसीही सहमागिता से जुड़कर रहे, संसार की उलझने वाली बातों में से बचे (इब्रा 10:25, 2 तिमु 2:4)।
- प्रभु के लिये व्यस्त रहें (सभोपदेशक 9:10)।
- व्यवस्था के विपरीत शरीर की भूख प्यास को जोर दार शब्दों में न कहें (1 कुरि 9:27)। पाप की परीक्षाओं का उत्तर एक मृत व्यक्ति के समान दे (रोमियो 6:11)। परीक्षा की कठिन घड़ी में प्रभु को पुकारे (नीतिवचन 18:10)। किसी भी पाप से बचने के लिये यथा संभव कठोरता से काम ले (मती 18:8)। पाप में गिरने से बेहतर है उस से भागे (2 तीमु 2:22)। वह लड़ता और भाग जाता है, वह अगली बार लड़ने के लिये जीवित बच जाता है।
- अपने विचारों को नियंत्रित रखे (नीतिवचन 23:7, फिलीप्पियों 4:8)।
- स्वयं में नहीं परन्तु मसीह में केंद्रित रहे (यूहन्ना 16:14)।

अब अपने कार्य को करें, यह विश्वास करते हुये कि पवित्रात्मा का आप पर नियंत्रण है। यह कैसा अनुभव होगा पवित्रात्मा से परिपूर्ण होने का? अधिकांश रुप में जीवन सामान्य दिनचर्या के अनुसार सांसारिक कठिन श्रम का जीवन होगा। कभी–कभार पर्वत शिखर आयेंगे, परंन्तु आप ध्यान देकर समझेंगे कि जीवन में सबकुछ अपने आप अपने स्थान पर आ जाता है, और वह सब भी होता है जो सामान्य तौर पर नहीं होता। आपको यह बात पता चलेगी कि प्रभु आप में और आप के द्वारा कार्य कर रहे है, आपका जीवन अलौकिक बातों से चमक उठेगा और जब आप जीवनो को स्पर्श करेंगे,

तब परमेश्वर के लिये कुछ होगा। साथ ही सामर्थ (लूका 24:49, प्रे काम 1:8), निडरता (प्रे. काम 4:13, 29, 31); आनंद (प्रे काम 13:52); स्तुति (लूका 1:67–75, इफि. 5:19–20); और समर्पण (इफि 5:21) भी होगा।

चेतावनी का एक शब्द, वह व्यक्ति जो पवित्रात्मा से परिपूर्ण रहता है, वह अपने बारे में कुछ नही बोलता। पवित्रात्मा की सेवकाई मसीह को उँचा उठाने की है, विश्वासी को महिमा देने की नहीं! आप ने पहिले ही सब पा लिया है, ऐसा कहने या डींगे मारने का अर्थ घमण्ड करना है।

अध्याय -17

नीचें का स्थान ग्रहण करें

घमण्ड करना प्रमुख पाप है। यह पाप स्वर्ग में आरंभ हुआ जब सुंदर लुसिफर ने अपने सृष्टिकर्ता और परमेश्वर को उसके सिंहासन से उतारने की सोची। तो वह घमण्ड से फुलकर वह दोषी ठहरा (1 तीमु. 3:6)। क्रिस्टोफर मार्लो ने इसे – ''घमण्ड और हठ कहा जिस कारण परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से निचे फेंका दिया।'' वह परिणामो को अकेले भुगतना नहीं चाहता था, इसलिये उसने आदम और हव्वा को पाप करने के लिये बहकाया। इस प्रकार घमण्ड मनुष्यों के गुणसुत्र में आया और उसका दुःखद परिणाम है कि हम में से प्रत्येक में इतना घमण्डी है कि बड़े को डुबो दे। जे ओस्वाल्ड सैण्डर्स घमण्ड को स्वयं को महिमा देना कहते हैः ''जैसा सोचना चाहिये, यह स्वयं को उससे बढ़कर मानता है। यह स्वयं को वह आदर देने का हठ करता है जो केवल परमेश्वर का है।''

प्रभु यीशु की कोई भी सच्ची तस्वीर अवश्य ही उसे विनम्र और मन के दीन के रुप में दर्शाती है। यहाँ शब्द 'दीन' का आशय टूटेपन' से है। यह शब्द एक ऐसे घोड़े के लिये उपयोग किया जाता है जिसने लगाम स्विकार कर ली है, और धीरज के साथ धीरे–धीरे चलता है, सिर को उठाने, नीचा करते और उसकी आँखे सीधे सामने देखती है।

हमारे दीन प्रभु हमें बुलाते है कि उनका जूआँ उठा ले और उनके समान बनना सीखें। इसका अर्थ है बिना शिकायत प्रभु की इच्छा को स्वीकार करना। जब विपीरत परिस्थितीयाँ हम पर आती है, तब हम यह कह सकते ह, ''हाँ, हे पिता........क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।''

यीशु पशुओं के बाड़े में जन्म लेकर दीन बने, ऐसा जन्म जिस में इस संसार की कोई महिमा शामिल नही थी। वह अपने जीवन में दीन रहा, उस में घमण्ड और हठ लेशमात्र भी नहीं था, उसमें जरा भी दूसरों से स्वयं को बेहतर समझने की भावना नहीं थी। उसकी विनम्रता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण था, जब उसने ''अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सही ली'' (फिलिसियो 2:8)।

हे उद्धारकर्ता आप कितने दीन और विनम्र है,
और मैं जो कीड़े सरींखा हूँ,
निर्बल, पापी एवं अपवित्र,
क्या मैं अपनी दृष्टि उठाकर देखने का साहस कर सकता हूँ?

(एच. एफ. लायटे)

वह दीन बनकर चरनी में आया और कलवरी के काठ तक गया
उसका विनम्र शिष्य बनने की दृष्टि से मैं कितना घमण्डी और अनाज्ञाकारी हूँ।

(अज्ञात)

हमारे लिये अच्छा है कि हम अपने सही कद को पहिचाने। जब जार्ज वॉशिंगटन एक छोटा काम करते हूए देखे गये तब उनके एक मित्र ने कहा, ''जनरल आप के कद के हिसाब से यह काम काफी छोटा है।'' उन्होने उत्तर दिया, ''नहीं, मेरा कद इतना बड़ा नही है, मैं इस काम के लिये सही हूँ।''

ओह, मैं मसीह से कितना अलग हूँ जिसकी समानता मैं पाना चाहता हूँ,
उसकी उपरिस्थिती में कितना तुच्छ हूँ, तुलना करना ही व्यर्थ है,
उसके विनम्र, दीन और सज्जन व्यवहार को मैं अपना बनाना चाहता हूँ.
ताकि मैं उसकी स्तुती – प्रशंसा दर्शा सकूं और केवल उसके लिये हीं जीवन जिऊँ,

सच्ची दीनता इस में नही कि हम अपने बारे में बहुत बुरा सोचे, पर इस में है कि हम अपने बारे में बिल्कुल न सोचें। मैं इतना बुरा हूँ – कि मैं अपने आप के बारे में सोचने योग्य नही हूँ, मैं चाहता हूँ कि अपने बारे में भूल जाऊँ और परमेश्वर की ओर देखूं जो वास्तव में मेरे सारे विचारों के सर्वथा योग्य है।

(विलियम केली)

आइजक न्यूटन अपने समय की पीढ़ी में सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति थे, और वे मानव जाती के असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। परन्तु न्यूटन ने स्वयं अपने बारे में कहा,

मुझे नही पता कि संसार के समक्ष मेरी छवी कैसे है, परंतु मैं अपनी दृष्टी में समुद्र तट पर खेलनें वाले एक लड़के के समान हूँ, जो कभी–कभी चिकने पत्थरों और अधिक सुंदर सिपियों को पाकर खेल से विकर्षित होता हूँ, जबकि सत्य का महान समुद्र मेरे सामने अनजाना पड़ा है।

कस्टम ऑफिस न्यूयार्क के ऑस्कर विल्डे के इस व्यंग से इसकी तुलना करें, ''मेरे पास मेरी प्रतिभा (ज्ञान) को छोड़ बताने के लिये कुछ नही है।

डी. एल. मुडी के बारे में एफ. बी. मेयर ने कहा, ''मूडी वह मनुष्य है, जिसने स्वयं के बारे में कुछ नहीं सुना, इस में आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने उसे अद्भुत रुप में उपयोग किया।

एक पूर्व केस्विक वक्ता ने कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं जो परमेश्वर नही कर सकते, यदि हम उसकी महिमा से अपने हाथ अलग रखें।'' एक और प्रचारक ने कहा, ''लोग अपकी प्रसंशा करते है तो करे, फर्क नहीं पड़ता, यदि आप उसे स्विकार न करे।''

यह घमण्ड है जो विश्वास का दावा करने वाले बहुतेरे मसीहियों को 'मसीह के अंगीकार से अलग रखता है और उन्हें अनंत नरक में भेजता है। यह घमण्ड है जो मसीहियों के लिये क्षमा याचना करना

इतना कठिण बना देता है जब वे किसी के प्रति अपराध करते है। यह घमण्ड है जो परमेश्वर के लिये उपयोग करना असंभव बना देता है। यह आत्मिक सामर्थ और गवाही का प्रवाह अवरुद्ध कर देता है। दुसरी ओर हम कभी भी इतने तुच्छ नहीं होते कि प्रभु हमारा उपयोग न कर सके।

ज.एन. डरबी ने कहा था – "ओह, कुछ न होने और कुछ पास न होने का आनंद, जीवित मसीह को महिमा में देखने के अतिरिक्त कुछ और न देखने का आनंद और यहाँ पृथ्वी पर उसके हित को छोड़कर, किसी और बात की चिन्ता न करने का आनंद।" घमण्ड की पहिचान गिराने वाले पाप के रुप में करने के बाद, रॉबर्ट चौपमैन ने धन और प्रतिष्ठा को त्यागकर एक गंदी बस्ती में घर ले लिया। उन्होंने चतुरता से कहा, "मेरा घमण्ड अब हावी नहीं होता।"

हमे सकंल्प सहित घमण्ड का सामना करना चाहिये। विलियम लॉ लिखते है, "घमण्ड आपके भितर मर जाये अन्यथा स्वर्ग की कोई बात आपमें जीवित नहीं रह सकती....।" घमण्ड को सिर्फ एक अनुचित आचरण और विनम्रता को केवल एक शालिन गुण मत समझो, एक संपूर्ण नरक है और दूसरा सम्पूर्ण स्वर्ग है।" एक जर्मन सम्राट के सेवक ने कहा, "मैं इंकार नहीं कर सकता कि मेरा स्वामी व्यर्थ था, वह सब बातों में ध्यान का केंद्र बनना चाहता था, यदि वह बच्चे के नामकरण में जाता, वह बच्चा बनना चाहता, यदि किसी विवाह में जाता दूल्हा बनना चाहता और यदि अंतिम संस्कार में जाता तो वह शव बनना चाहता।"

रब्बी सिमियन बेन जोकई ने कहा, "यदि ससांर में दो धर्मी जन है तो वह मैं और मेरा पुत्र और यदि एक है, तो वह मैं ही हूँ।" इसके ठिक विपरीत एफ. बी. मेयर में स्वयं के विषय में कहा –

> "मै केवल एक साधारण मनुष्य हूँ, मेरे पास कोई विशेष वरदान नही है, मैं निपूण वक्ता, विद्वान या गंभीर विचारक नहीं हूँ। यदि मैने मसीह और अपनी पीढ़ी के लिये कुछ किया है तो इसलिये किया है, क्योंकि मैने स्वयं को संपूर्ण रीति पर मसीह यीशु को दे दिया है, और तब वही करने का प्रयास किया है, जो वह चाहता था कि मैं करुं।

मसीहियों की यह अभिलाषा होनी चाहिए:

मुझे छोटा और अज्ञात रहने दो
केवल मसीह द्वारा मुझे प्रेम और सम्मान मिले।

(चार्ल्स वेसली)

हमें प्रयास करना चाहिये कि हम अज्ञात रह कर जीवन गुजारें। वास्तव में हमारे पास घमण्ड करने योग्य कुछ नही है। "महानता का आरंभ दीनता में है; बड़प्पन में बढ़ती का अर्थ है कमतर बनना, और महानता में सिद्धता का अर्थ है कुछ भी नहीं बनना।" डर्बी इस विचार पर दृढ़ थे, उन्होंने कहा, "वास्तविक महानता बिना दिखाई दिये सेवा करने और बिना किसी के जाने काम करने में है।" मेरी फाईलो में एक चित्र है जिस में एक आकर्षक युवा स्त्री अपनी शृंगार मेज पर बैठी है। उसके पीछे एक बढ़े आकार का शीशा उसके रुप–लावण्य को प्रदर्शित कर रहा है। शृंगार की मेज त्वचा के सौंदर्य वर्धक लेप, खुशबुओं और अन्य सौंदर्य बढ़ाने के उस उपकरणों से भरी है, परंतु यदि आप उस तस्वीर को लगा तार देखेगें तो उसका सौंदर्य हल्का होता जाता है और खोपड़ी का आकार दिखाई देने लगता है।

अच्छा है कि हम स्वयं को इन गर्व या घमण्ड की बातो का अंत दिखाने वाली इन बातो का स्मरण कराते रहेः

''जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाये, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।''
(यूहन्ना 3:27)
बिना मेरे तुम कुछ नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:15)।
इसलिये न तो लगाने वाला कुछ है, और न सींचने वाला, परंतु परमेश्वर ही सबकुछ है जो बढ़ाने वाला है। (1 कुरि. 3:7)
तेरे पास क्या है, जो तूने (दूसरे से) नहीं पाया? (1 कुरि. 4:7)
क्या तुम महान बनोगे? यदि हाँ तो दीन बनकर सेवा करो।
क्या तुम उपर जाओगे, तो नीचे जाओ,
परन्तु अधिक दीन बन कर जाओ।
सर्वोच्च (परमेश्वर) भी दीन बन कर गया है।

अध्याय - 18

हे प्रभु, मुझे तोड़ दीजिये

यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है। – भजन 34:18

टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता। – भजन.51:17

परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। – याकूब 4:6

यह कहना सही नहीं होगा कि बाइबल में 'टूटेपन' के संदर्भ पदों की बहुतायत है। लेकिन पर्याप्त संख्या में पद है जो इस विश्वास में अगुवाई करते हैं कि यह मसीही – जीवन का एक महत्व पूर्ण विषय है। आइये हम कुछ पदो का पुनरीक्षण करेः

- आत्मिक – सामर्थ के आवरण से ढ़ाकने से पूर्व याकूब की शारीरीक शक्ति का तोड़ा जाना अवश्य था (उत्पत्ति 32:22–32)।
- मिट्टी के घड़े फोड़ दिये गये ताकि प्रकाश निकले और शत्रु की सेना डर जाये। (न्यायियों 7:18–19)।
- सात रोटी और दो मछलियाँ तोड़ी गयी ताकि भीड़ को भोजन दिया जाये। (मत्ती 14:19)।
- छत को तोड़कर एक लकवे का रोगी को उतारा गया जिसे क्षमा मिली और चंगाई भी मिली (मरकुस 2:1–12)।
- संगमरमर का पात्र तोड़ा गया, इत्र उण्डेला गया, और घर उसकी खुशबू से भर गया (यूहन्ना 12:3–5; मरकूस 14:3)।
- उद्धारकर्ता की देह तोड़ी गई और बड़ी भीड़ ने छुटकारा पाया (1 कुरि. 11:24)।
- जब यीशु कि देह को कांटों, कीलों और भाले से छेदी गयी तब, छुटकारा स्वच्छ निर्मल के समान फूट निकला जो पापियों को शुद्ध करता और उन्हें जीवन देता है।

वैसे ही जब हमारी शारिरीक (मिट्टी की बनी) देहें तोड़ी जाती है, तब दूसरों के लिये आशिषे निकलती है (2 कुरि. 4:7)। ''परमेश्वर अपनी महिमा के लिये उन लोगो और वस्तुओं का उपयोग करते है जो सर्वाधिक सिद्ध रुप में तोड़े जाते है।''

टुटेपन का आरंभ

वास्तविक हृदय–परिवर्तन टूटेपन का एक स्वरुप है। स्वभाव से हम जंगली गदहे के समान है जो सेवा के लिये अनुपयुक्त होते हैं। पवित्रात्मा हमें पाप के बारे में निरुत्तर करता है और पश्चाताप के उस रुझान में लाता है जब तक हम यह नहीं कहते,

नहीं, पर मैं समर्पन करता हूँ,
अब मै और अधिक नही सह सकता,
मैं मृत्यु सहने वाले प्रेम से विवश होकर अभिभूत हूँ
और तुझे हे विजेता, पाना चाहता हँ।

तब यीशु हमें उनका जूआं अपने उपर उठाने आमंत्रित करते हैं (मत्ती 11:29)। जिस प्रकार खेत में जुआं उन पशुओं पर रखा जाता है, जो पहिले तोड़े जा चुके है, वैसे ही यीशु का जूआं भी टूटे हुआ के लिये हैं। परन्तु उस का जुआं प्रेम कुढन उत्पन्न नही करता, वरन् वह प्रेम से ओतप्रोत है। जब प्रभु कहते है: मै दीन हूँ उसका स्पेनिश शब्द *manso* है। यही शब्द *manso* एक घोड़े के लिये प्रयुक्त होता है जिसे तोड़ा गया हो। इस का अर्थ 'समर्पित' या आज्ञाकारी है।

टूटेपन के कुछ तत्व

अंगीकारः वास्तविक टूटापन, परमेश्वर के समक्ष और अन्य किसी के भी समक्ष, जिसके प्रति हमने गलत किया है, अंगीकार करने की सहमति में दिखाई देता है। भजन 32 एवं 51 में दाऊद के अंगीकार कालजयी है, वे दर्शाते हैं कि वास्तविक अंगीकार किसे कहते है। वह वर्ष उसके जीवन का सबसे अधिक बुरा वर्ष था।

1. **अंगीकार तत्परता से होना चाहिये** – वास्तविक अंगीकार सत्य को छुपाता नहीं और उचित समय आने और सबकुछ ठिक होने की प्रतीक्षा नही करता। दाऊद ने एक वर्ष प्रतीक्षा की। बहुत वर्ष पहिले एडिन बर्ग विश्व विद्यालय के क्रिश्चियन प्रोफेसर स्टूअर्ट ब्लैकी अपने छात्रो को पवित्र शास्त्र का मुखाग्र पठन कहते हुये सुन रहे थे। जब एक नवयुवक वाचन करने खड़ा हुआ, उस ने पुस्तक को गलत हाथ में पकड़ा। प्रोफेसर गरज उठे – ''पुस्तक अपने दायें हाथ में लो, और बैठ जावो।'' इस कर्कश डाट सुनने के बाद उस छात्र ने अपनी दाहिनी भुजा को उपर उठा दिया, उसका दाहिना पंजा नही था, और और अन्य छात्र अपने अपने स्थान पर सहमकर सिमट गये। एक क्षण के लिये प्रोफेसर चुप रह गये। लेकिन फिर वे छात्र की और बढ़े, उन्होने उसे अपनी बांह में भरा, और उनके आंसू उनके गालों पर से बहने लगे, उन्हों ने कहा – 'मुझे पता नही था, कृपा करके, मुझे क्षमा करो !'' उनकी इस विनम्र क्षमा याचना ने उस छात्र पर सदा के लिये अमिट प्रमाण छोड़ा।

यह कहानी कुछ समय बाद विश्वासियों की एक बड़ी सभा में बताई गई, सभा के अतं में एक व्यक्ति आगे आया, भीड़ की ओर मुड़ा और उसने अपना दाहिना हाथ उपर उठाया। उस का हाथ कलाई तक ही था, उसने कहा, ''मै ही वह प्रोफेसर ब्लैकी का छात्र था। उन्हों ने मुझे मसीह तक पहुँचाया, परन्तु प्रोफेसर ऐसा कभी नहीं कर पाते, यदि वे सही काम नही करते।''[18]

2. अंगीकार व्यक्तिगत होना चाहिये – मैं, हम नही। ''हे पिता, यदि हमने कुछ गलत किया है,'' यह अंगीकार सही नही है।

3. वास्तविक अंगीकार संपूर्ण और सीधा होता है – सीनेटर डी. अमाटॉ ने जज इटो द्वारा जापानी भाषा के बलघात की नकल करने के लिये उनकी खिल्ली उड़ाई। बाद में उन्होने सार्वजनिक रुप में क्षमा याचना की, ''यह एक दुःखद घटना थी। यह पूरी तरह से गलत था। यह हंसी – मजाक का बेहूदा प्रयास था। जज इटो को तकलीफ पहुंचाने के लिये मै क्षमाप्रार्थी हूँ – मेरी सच्ची क्षमा याचना स्वीकार करे।''

4. यह विषय को स्पष्ट करे – पाप को उसके नाम से पुकारे – कानाफुसी, मन का नियंत्रण खोना। दोनो पक्षो को सुने बिना निर्णय करना, युवायों को आलोचना की याचना से कुछ कहकर दूर कर देना।

5. क्षमा याचना या अंगीकार बिनाशर्त हो – इस प्रकार नहीं – ''यदि मैंने कुछ गलत किया है, तो मुझे क्षमा करे,'' या, यदि आप मुझे क्षमा करे तो मैं भी आपको क्षमा करुंगा।

6. पाप को कमतर बताने की चेष्ठा न करे – ''मेरा व्यवहार अनुचित था'' तब, ''मेरा व्यवहार सही नही था।'' तब, मेरा व्यवहार गलत था।'' कुछ लोग उनके पाप को 'छोटी–सी भूल' या 'आम बात' कहते है।

7. अवश्य है कि अंगीकार के साथ ''पाप के परित्याग' का अभिप्राय भी संलग्न हो। एक व्यक्ति के दोषी विवेक ने उस से इंटरनल रेवेन्यू सर्विस को यह पत्र लिखकर भेजने के लिये विवश किया – उसमे उसने लिखा, ''मैं सो नही सका, क्योंकि पिछले वर्ष आयकर विवरनी भरते समय मैं ने जान बूझकर अपनी आय को लेकर गलत जानकारी दी। मैं 150 डॉलर का एक चेक भेज रहा हूँ – यदि मैं फिर भी नही सो सका, मैं आपको शेष बची राशि का चेक भेज दूँगा।''[19]

जब वृद्ध जोए मृत्यु शैय्या पर थे, उन्हे स्मरण आया कि जिम के साथ उनकी कुछ अनबन थी और वे मामले को सुलझाना चाहते थे। इस लिये उन्हों ने जिम को बुलवाया, बिस्तर के पास बैठकर उस से कहा कि वे अपनी गलती का अंगीकार किये बिना अनंत काल में जाने से डर रहे थे और अंगीकार करके सबकुछ सही करना चाहते थे। सब कुछ ठीक लग रहा था, परन्तु जब जिम वहाँ से जाने लगे – जोए ने कहा, ''परन्तु याद रखना अगर मैं बच गया, तो फिर मेरा अंगीकार मायने नही रखता।''[20]

8. अंगीकार में बहाने बाजी न हो – ''शैतान ने मुझ से यह करवाया, यह तो मेरी पुरानी आदत थी।'' डॉ. आयरन साइड ने अपनी यह कहानी सुनाई–

> मुझे स्मरण है, जब मैं युवा प्रचारक था, कुछ समय पहिले ही मेरा विवाह हुआ था। मैं सोचता था कि एक प्रचारक को भावावेश में कुछ कह देने का अधिकार होता है। मैने बहुत से प्रचार कों को

ऐसा करते देखा था, और मुझे लगता था कि इस प्रकार की बातें करना प्रचारक के योग्य व्यवहार था। एक बार मुझे सबक सीखने मिला, कभी कभी यह सबक सीखने के लिये आपके पास एक पत्नी होनी चाहिये! उन दिनों मैं सैन फ्रैंसिस्को में प्रचार कर रहा था और मेरा पूरा दिन व्यस्त था, मैं सुबह जल्दी जाग गया और 9:00 बजे सुबह एक सभा में प्रचार किया, फिर 11:00 बजे मसीहियो की एक सभा में 'प्रभु–भोज की आराधना में प्रचार किया, फिर दोपहर की एक सभा, और एक और सभा, एक सड़क पर प्रचार सभा और तब एक भावन में प्रचार, कुल मिलाकर 5 बार में ने प्रचार किया। घर वापस लौटते समय, मैं अपने आप में खोया था। मै स्ट्रीटकार के एक कोने में दुगका हुआ था और भावावेश के प्रभाव में था मेरी पत्नी ने मुझ से कुछ कहा: मुझे स्मरण नही कि क्या कहा था, और मैंने उसे रुखा सा उत्तर दिया, जैसा अक्सर हम सब पति लोग अपनी पत्नी को देते है।

उसने पलट कर मुझ से कहा – ''ये क्या बात हुई, तुम मुझ से इस प्रकार क्यों बाते कर रहे हो, जबकि तुम सभा (चर्च) से आ रहे हो। तुम मंच पर खड़े होते हो और बड़े पवित्र बनते हो, तुम्हे लगता है तुम्हारे मुँह में मक्खन घुल रहा है, और अब घर जाते समय तुम ऐसी बातें करते हो। मैं ने ऐसा कुछ नही किया है कि तुम ऐसा करो, मैंने तो एक सरल प्रश्न पूछा था, तुम्हारी मंडली तुम्हारे बारे में अब क्या सोचगी।''

मैं तुरन्त ही चित हो गया और दीन हो कर बोला – ''प्रिये, मुझे खेद है, मेरा अभिप्राय तुम्हें दुःख पहूँचाने का नही था, पर तुम्हें पता है कि मैं कितना थका हुआ हूँ। मैने पाँच बार प्रचार किया है और मैं भाववेश में था।'' मेरी पत्नी ने कहा ''ठिक है, मैने भी तुम्हें 5 बार सुना है मैं भी उतनी थकी हूँ जितने कि तुम थके हो, यदि मैं उचित व्यवहार कर सकती हूँ तो तुम भी अवश्य कर सकते हो।'' मुझे क्षमा माँगनी पड़ी, मैने उस समय सीखा कि आचरण को बहाना बनाकर 'भाववेश' मे नही कहना चाहिए था।[21]

9. **हमे आत्मरक्षा का प्रयास नहीं करना चाहिए** – राष्ट्रपती क्लिंटन ने अपने पाप का अंगीकार किया, ''हां, मैं गलत था,'' परंतु अगली सांस में यह भी कह दिया, ''हम उसके बचाव के उपाय करेंगे।''

10. **जिसने पाप का खुलासा किया है, उस पर आक्रमण नहीं करना चाहिये।** श्रीमती क्लिंटन ने अपने पती का बचाव किया, ''हाँ, वह अनुचित था, परंतु जांच भी दाएं पक्ष के षडयंत्र का परिणाम थी। जिस प्रकार जार्ज व्हाईटफील्ड ने किया, उस प्रकार स्थिती का सामना करना कहीं बेहतर है – ''उन की सेवकाई में एक समय उन्हें एक निंदात्मक पत्र मिला, जिस में उन पर गलत कामों के आरोप लगाये गये थे। उनका उत्तर संक्षिप्त और शालीन था: ''मैं आपके पत्र के लिए हृदय से आभारी हूँ, आपने जो लिखा है और मेरे अन्य शत्रु गण मुझ पर जो आरोप लगाते है, मैं अपने बारे में उनसे भी अधिक बुरी बाते जानता हूँ। मसीह में सप्रेम जार्ज व्हाइट फील्ड।''[22]

अंगीकार में टुटेपन के उदाहरण

प्रेरित पौलुस ने महायाजक कों 'चूना पूती हूई कब्र' कहा, उसका यह कहना गलत था, पर जब उसे फटकारा गया, उसने कहा, ''हे भाइयों, मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है, क्योंकि लिखा है, अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कहो'' (प्रेरितो काम 23:3–5)।

एक रात सभा का समापन करते हुये डॉ. डॉनल्ड ग्रे बार्नहाउस ने कहा, ''जबकि हम अंतिम भजन गाने वाले है, सभी स्वार्थी लोग एक कदम आगे बड़कर भीड़ में से निकल जाये, और जो स्वार्थी नही है वे अपने–अपने स्थान में कुछ देर बाद आर्शिवचन कहे जाने तक रुके रहे।'' उन्होने जैसे ही गाना आरंभ किया, सामने की ओर आये लोगों ने बाहर जाना आरंभ कर दिया। डॉ. बार्न हाऊस को कुछ देर में अपनी गलती का अहसास हुआ कि भले ही उन्होंने आत्मा में होकर प्रचार किया, उनकी अंतिम टिप्पनी शरीर के अनुसार थी। उन्होंने तुरन्त प्रभु से प्रार्थना की कि बिना सोचे समझ उन से हुई कठोरता को क्षमा करे। तब उन्होंने पद के अंत मे आर्गन वादक को रुकने का संकेत दिया और श्रोताओं से क्षमा याचना की, उन्हे आशा थी कि उन में से कुछ लोग बाहर जा चुके थे वे लोग उनकी क्षमा याचना को व्यक्त करेंगे।[23]

जब चर्च ऑफ इंग्लैण्ड ने पास्टर बनने का प्रशिक्षण ले रहे उस देश के वासियों को शिक्षा देने के लिये कैनन बिल बटलर को रवान्डा भेजा तो उन्होने लिबरल थीओलॉजी पढना आरंभ किया, संदेश के बीज बोये और नकारात्मक एवं अर्थहीन बाते सिखाने लगे। जब उन्हें पता चला कि 'नया जन्म पाये हुये लोगों का एक समुह प्रतिदिन प्रातः 4 बजे से प्रार्थना करता है, और वे उनके लिये भी प्रार्थना कर रहे थे, वे क्रोध से सुलग उठे। एक दिन पहिले से तय करके उन्होंने उसके अगुवे को सीधा करने की सोची, उसे बुलाया और अपने सभी बड़े–बड़े तर्क उस पर छोड़ दिये। उस अंगुवे ने बड़ी शालीनता पूर्वक सुना और बस इतना कहा – "परन्तु आप को वास्तव में सहायता की आवश्यकता है।" परमेश्वर बिल के जीवन में काम करने लगा था। उसने महसूस किया कि जो वह सिखा रहा था, गलत था। जब वह बिशप के पास गया और उसे बताया कि अब वह सही काम नही कर सकता तब बिशप ने अपने सिर को दोनों हातो से पकडा और कहा, ''ओह, बिल, अब तुम कभी बिशप नहीं बन सकते।'' बिल ने कहां – ''प्रभु की स्तुति हो !''

तब उसने महसूस किया कि उसे रवान्डा से क्षमा याचना करनी चाहिये। चर्च ऑफ इंग्लैण्ड के याजक वर्ग व्यक्ति के लिये यह कितना लज्जास्पद था ! वह कार में बैठा और उसके रास्ते भर तैयारी की कि वह वहाँ क्या कहेगा। जब वहाँ अगुवे ने दरवाजा खोला और बिल बटलर को देखा, उसने कहा – ''हाल्लेलुयाह!''

तब नया जन्म पाये हुओं ने बिल को उनकी 4:00 बजे भोर की आराधना में आमंत्रित किया। उसके पास बहाने और बहाने थे। और उन्होंने कहा अच्छा, क्या आप एक सप्ताह में आने का प्रयास करेंगे।'' और बिल आये और गंभिरतापूर्वक उनके साथ जुड़ गये। जब अधिकारियों को पता चला उन्होंने बिल का ट्रांसफर दूसरे स्कूल में कर दिया और 7:00 बजे सुबह से पहिले सभा करने पर पाबंदी लगा दी। अगुवो ने महसूस किया कि उन्हे परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिये। परिणाम यह हुआ कि स्नातक होने से कुछ पहिले ही वे स्कुल से निकाल दिये गये। बाद में उन्होंने बिल से संपर्क किया और कहा कि उसे बिशप के पास जाना चाहिये और प्रतिकार एवं गलत दृष्टिकोण के लिये क्षमा मांगनी चाहिये।

एक दिन डॉ. एलेक्जेन्डर व्हाईट की मण्डली का एक सदस्य उनके कार्यालय यह समाचार लेकर आया कि नगर में आये एक प्रचारक ने सार्वजनिक रुप में कहा कि डॉ. व्हायटे की सेवकाई का एक सहयोगी मसीही नहीं है। डॉ. व्हायटे क्रोध और अपमान से झुलस गये कि कैसे कोई प्रभु के एक विश्वास योग्य सेवक पर ऐसा आरोप लगा सकता है। उन्होने कुछ चुनिंदा शब्दों में अपना क्रोध उस व्यक्ति के लिये व्यक्त किया, जो इस पाप का दोषी था। "इतना ही पर्याप्त नहीं है।" उस व्यक्ति ने आगे बताया, "उसने यह भी कहा कि आप भी सच्चे विश्वासी नही है।"

यह सुनकर डॉ. व्हायटे हतप्रभ रह गये, फिर बोले, "कृपया आप अब इस कार्यालय से जाये ताकि मैं अकेले रहकर प्रभु के सामने अपने हृदय की जाँच कर सकू।" यही सही टूटापन है!

फेस्टो किंवेनगेर ने यह स्वीकार किया कि वे श्वेत लोगों को पसंद नही करते थे और उन अंग्रेजो को भी जो उनकक देश पर राज्य कर रहे थे। प्रभु ने उनसे कहा कि वे एक अंग्रेज मिशनरी के पास जाये और सुलह करे। "वे तुम्हारे भाई है श्वेत और अंग्रेज और अन्य सभी" वे पचास मील साईकल चलाकर गये और उनसे क्षमा मांगी। "मैने आपने भाई को देखा, वहाँ एक व्यक्ति मेरे सामने खड़ा था जिससे प्रभु प्रेम करते और हम ने मिलकर उद्भूत समय बिताया। मैं ने उन्हे ठेठ अफ्रिकी तरीके से नमस्कार किया, उन्हे गले से लगाया उसे समझ नहीं कि क्या हुआ था। और हम वहाँ खड़े रहे और मैं ने उस से क्षमा मांगी। हम वहाँ खड़े रहे हमारे छुटकारा देने वाले प्रभु की उपस्थिति में हम दोनो के हृदय की धड़कने एक संगति में आ गई। अब न अंग्रेज, और न अफ्रिकी रहे बस नया जन्म पाये विश्वासी, परमेश्वर के पुत्र के द्वारा छुटकारा प्राप्त। हम ने बातें की गीत गाये, तब हम दूसरे से विदा हुये। 33 वर्ष बीत चुके है और मैं अब भी उस से बहुत प्रेम करता हूँ। "जब प्रेम रक्त रंजित नही होता वह आशीष देना बंद कर देता।"

क्या होता है, जब हम अंगीकार करने से इन्कार कर देते है

1. परमेश्वर के साथ हमारी सहमागिता टूट जाती है। परमेश्वर तब भी हमारा पिता होता है। पर उस के सहभागीता मे विचलन उत्पन्न होता है।
2. सभी विश्वासियों के साथ सहभागिता टूट जाती है।
3. हम परमेश्वर के उद्धार के आनंद को खो देते है।
4. हम अपनी सामर्थ को खो देते है।
5. हम प्रभावशाली गवाही खो देते है। हमारे होंठ सिल जाते है। हम यीशु के कारण उद्धार मे बने तो रहते है परन्तु हम पृथ्वी पर उसकी सेवा के लिये अयोग्य ठहर जाते है।
6. यदि पाप सार्वजनिक प्रकृति का है, तो हम प्रभु यीशु के नाम को लज्जीत करते हैं और उद्धारकर्ता के शत्रुओं को ईशनिंदा का अवसर देते हैं।
7. हम झुठ में जीते है। हमारी बातचीत के सच पर हमारे कार्य के कारण सन्देह होता है, और यह बड़ी–बड़ी बातें पर निम्न स्तर का आचरण है। हम मलाई की बाते करते है पर दूध का जीवन जीते है – जिसमें मलाई न हो।

8. हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास अपनी पहूँच खो देते है।
9. हमारे काम जल जाएंगे तो भी हमारी आत्माएँ बच जायेंगी। जहाँ तक प्रभु की सेवा करने का प्रश्न है।
10. हम अपने जीवन रुपी जहाज को क्षतिग्रस्त करने का जोखिम लेते है, विश्वास से पिछे हटने वाले का एक अकेला निर्णय उसे जीवन भर लिये दर किनार करके रख सकता है।
11. हम पृथ्वी पर अपना शारीरिक जीवन खो सकते है।
12. हम मसीह के न्याय – आसन के समक्ष अपना प्रतिफल खो सकते हैं।
13. हम दोष भावना के भयानक संज्ञान के साथ जीते है।

अपनी पुस्तक "फिनिशिंग स्ट्रांग" में स्टीव फैरार लिखते है –

> हम में से कुछ ने अपने आप को अतीत से ऐसे बांध रखा है जैसे सर्कस में हाथियों को जंजीरो से खूटे से बांधकर रखा जाता है। यह शत्रु की प्राथमिक चालों और प्रमुख रणनीतियों में से एक है कि मसीहियो को पराजित करे और बल पूर्वक अपनी दौड़ पूरी करने से रोके। शत्रु क्या कर सकता है? वह हमारी याददाश्त के दुख भरे हिस्सो को खोदता है, वह हमारे अतीत की बातें हमें वापस स्मरण करता है। संभव है कि वह पहिले का कोई बड़ा पाप हो, और हम अब भी शोकित होते और गंभिरतापूर्वक पछताते हैं। जी हाँ, हमें क्षमा किया जा चुका है, जी हाँ, हम यीशु मसीह के हैं, परन्तु वह असफलता बार–बार हमारे विचारो में आकर काले धुंध के समान छा जाती है, जब भी हम आगे बढ़ना चाहते है और प्रभु के लिये कुछ महत्वपूर्ण करना चाहते है। हम उस हाथी के समान है जो जंजीरो से बांधकर रखा जाता है। वह खूंटा इतना शक्तिशाली नही होता है कि इतने विशाल काय बड़े हाथी को रोक सके। उस हाथी में इतनी शक्ति और बल होता है कि वह खूंटे को भूमि में से उखाड़ फेंके जैसे वह दात खोदने की काड़ी हो। फिर भी हाथी अपनी स्मृतियों के कारण उस खूंटे से बंधा रहता है, और हम में से बहुत से भी यही करते हैं। हो सकता है वह कोई यौन–अनैतिकता का कार्य हो, या नौकरी पाने के लिये बोला गया झूठा, या क्रूरता, या उपेक्षा, या शपथ लेकर तोंड़ देना, या परमेश्वर से संकल्प करके नहीं' करना, वह चाहे जो भी हो शत्रु बार–बार उस पाप को हमारे सामने ला देता है। शत्रु उसके द्वारा हमें सक्रिय होने से रोकता और निष्क्रीय बनाता है। नहीं, शैतान आपका उद्धार नहीं छीन सकता, परन्तु वह आपसे आपका आनंद छीन सकता है। उसे केवल इतना करना है कि पुराने दिनों के एक पाप को सामने लाकर रख दे।[24]

दोष भावना की जंजीरो के बारे में फैराज ने रॉबर्ट हेफलर को उद्घृत करके लिखा है–

> एक छोटा बालक था, वह अपने दादा–दादी से मुलाकात करने उनके खेत पर गया। उसे खेलने के लिये एक गुलेल दी गई की कि वह जंगल में उसे चलाये और खेले। उसने जंगल में अभ्यास किया परन्तु वह कभी निशाने पर वार नही कर पाया। थोड़ा निराशा से भर वह रात का भोजन के लिये गया। जब वह लौट रहा था, उसने दादी मां की पालतू बत्तख देखी और बस भावावेश में उसने गुलेल चलाकर बत्तख के सिर पर चोट की और बत्तख मर गई। उसे सदमा लगा और वह शोकित हुआ, थरथराकर उसने बत्तख को लकड़ियों के ढेर मे छुपा दिया – लेकिन

> उसकी बहिन ने उसे देख लिया। सैली ने सबकुछ देखा पर कुछ नहीं कहा, उस दिन दोपहर के भोजन के बाद दादी माँ ने कहा "सैली, आओ, हम मिलकर बर्तन साफ करे" परन्तु सैली ने कहा, "दादी माँ, जॉनी ने मुझे कहा कि आज वह रसोई घर में आप की मदत करेगा, कहा था ना जॉनी? और तब उसने उसके कान में फुसफुसाकर कहा – बत्तख याद है ना? इस कारण, जॉनी ने बर्तन साफ किये।
>
> बाद में दादी जी ने बच्चो से पूछा कि क्या वे मछली पकड़ने जायेंगें? दादी ने कहा – "मुझे खेद है मैं सैली की मदत रात का खाना बनाने के लिये करना चाहती हूँ" पर सैली मुस्कराई और बोली – ठिक है, यह सही है क्योंकि जॉनी ने मुझे बताया कि वह मदत करना चाहता है, और उसने फिर फुसफसाकर कहा – बत्तख याद है ना?" सैली मछली पकड़ने चली गई और जॉनी घर पर रुका।
>
> कुछ दिनों बाद जॉनी अपना और सैली दोनो का काम करते करते उकता गया और उसकी सहन शक्ति जवाब देने लगी। वह दादी माँ के पास गया और उसने सच बता दिया कि बतख उसने मार दी है। दादी माँ ने घुटने टेके और उसे गले से लगाकर बोलीः "प्रिय बेटे, मुझे पता है, मै खिड़की पर थी और मैनें सब कुछ देखा था। क्योंकि मैं तुमसे प्रेंम करती हूँ, मैने तुम्हें क्षमा भी कर दिया था। परन्तु मुझे यह सोच सोच कर आश्चर्य हो रहा था कि सैली कितने लंबे समय से तुम्हें उस बात के लिये गुलाम बना रही थी।"[25]

जब भी हम पाप करते हैं, प्रभु देखते है, परन्तु वे प्रतिक्षा करते है कि हमें कितना समय लगेगा कि हम दोष भावना का शिकार होकर पाप का गुलाम बनना बंद करे और अपने पाप का अंगीकार करे। अंगीकार का घेरा भी पाप के घेरे जितना ही बड़ा होना चाहिए।

एक प्राचिन ने मुझे लिखाः

> कल एक प्रार्थना की सभा मे एक बहन अनादर के साथ एक दूसरी बहन के विषय मे बातें करने लगी, जबकि दूसरी बहिन वहाँ नही थी। मैंने उन्हें प्रोत्साहित किया कि उन्हे ये बातें सीधे उस दूसरी बहिन से करनी चाहिये। परन्तु मैंने सब के सामने बिना प्रेम यह बात कही। वह बहिन रोने लगी और बाहर निकल गई। अब मेरी बारी थी कि लोग मुझे समझाये। दूसरों ने कहा कि मुझे इतनी कठोरता के साथ सबके सामने उस बहिन से ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए थी। लज्जित होकर मैं वहाँ गया जहाँ वह थी और उस से कहा कि मुझे क्षमा करें। फिर उसी सभा में, मैं तब तक प्रार्थना नहीं कर सका जब तक कि मै नें सबके सामने प्रभु से अपने पाप का अंगीकार नहीं कर लिया। इस प्रकार की कोई बात मेरे साथ पहिले कभी नही हुई थी। आधे घण्टे के बाद मै और वह पूर्णरीति से मेलमिलाप कर चुके के और हमारे संबंध पुर्नस्थापित हो गये।

संत समान एफ. बी. मेयर बताते है कि कैसे वे एक कलीसिया के अधिकारी पर एक रविवार की रात अपना आपा खो बैठे जबकि ठिक 15 मिनट बाद उन्हें वहाँ प्रचार करना था। इसके पहिले कि वे मंच पर जाते, उनके कुछ सहयोगी उनके साथ प्रार्थना करने आ रहे थे। वे जानते थे कि वे सहभागिता से टूट चुके है और जब तक मामला सही न किया जाये, वे प्रचार नही कर सकते थे। इसलिये उन्होंने उस व्यक्ति को बुलाया और क्रोधपूर्वक बाते करने के लिये क्षमा मांगी। वह व्यक्ति प्रसन्न होने के बदले

और व्यंग हो गया, परन्तु उससे फर्क नहीं पडता था। मैं ने वही किया जो सही था और मेरा आत्मा परमेश्वर के साथ पुनः एक हो गया। परमेश्वर ने मुझे अंगीकार के स्थान में पहुँचाया।

संबंधों में सुधार

नये–नियम में उद्धार पानेवाले पापियो में जक्कय एक बड़ा उदाहरण है जिसने अतीत की गलतियों को सुधारा (लुका 10:8)। अवश्य है कि यह काम सदैव प्रभु के नाम में किया जाये, ताकि उसे महिमा मिले। डब्ल्यू. पी. निकलसन वर्षो पहिले उत्तरी आयारलैण्ड के जोशीले और गैर परंपरा वादी प्रचारक थे। एक बार उन्होंने ऐसी सामर्थ से प्रचार किया कि सैकोड़ो ने उद्धार पाया। उनके नये–नये प्राप्त उद्धार ने उन्हें विवश किया कि वे अतीत में चुराये गये उपकरणो को वापिस करे। वास्तव में, वापस किये गये उपकरणों की संख्या इतनी अधिक थी कि उस मशीनरी शॉप में उपकरणों के लिये एक अलग भंडारगृह बनवाना पड़ा। अंत में कम्पनी को एक सार्वजनिक सूचना देनी पड़ी कि अब और उपकरण वापस न किये जाये। उन्हे रखने के लिये स्थान उपलब्ध नही है। कुछ प्रकरणों में पुर्नगठन के बाद भरपाई करना असंभव है। सबसे उत्तम कार्य जो मसीही कर सकते है वह है पापों का अंगीकार करे और शेष प्रभु पर छोड़ दे।

क्षमा करना

टूटेपन में केवल क्षमा मांगना ही शामिल नही है पर जब कोई हम से क्षमा याचना करता है उसे क्षमा भी करना है। कोरी टेन बुम इस का एक उत्कृष्ट उदाहरण देती है: द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ती के बाद जर्मनी में कलीसियाई सभा में क्षमा करने के विषय पर प्रचार कर रही थी, उन्होने श्रोताओं में एक व्यक्ति को देखा जो युद्धबंदी शिविर के सबसे क्रूरतम गार्डस में से था, जहाँ उनकी बहन की मृत्यु हुई थी और स्वयं उन्होंने भी ऐसा अपमान और पीड़ा सही थी जो शब्दों मे वर्णन नहीं की जा सकती। सभा के अंत में वह व्यक्ति उनसे मिला और बोला, मै अब मसीही हूँ। परमेश्वर ने मुझे क्षमा कर दिया है, क्या आप भी करेगी? तब कोरी को पुरानी बातों की यादें ताजा हो गई। उन्हें बड़ी तकलीफ हुई। पर उन्होने जेब से हाथ निकाला और अंत में अनुग्रह विजयी हुआ। उन्होने पश्चाताप कर चुके उस सुरक्षा रक्षक से हाथ मिलाया। उसने कहा "मैं आपको अपने पूरे हृदय से क्षमा करती हूँ, भाई!

क्षमा करने में एक निश्चित क्रम है।

1. सबसे पहिले, जब आपके साथ बुरा बर्ताव होता है, आप को अपने हृदय से क्षमा करना चाहिये (इफि. 4:32)। ऐसा करके आपके कांधे से बोझ उतर जाता है परन्तु इस समय आप आपके अपराधी को नहीं बताते कि आपने उसे क्षमा कर दिया है।
2. यदि वह पश्चाताप करता है आप को उसे मौखिक रुप में क्षमा कर देना चाहिये, और असंख्य बार (लूका 17:4)। उससे कहे कि आपने उसे क्षमा कर दिया। उसने क्या किया उस पर विचार न करे, वह सुनना चाहेगा कि आपने उसे क्षमा किया और ऐसा कहा भी है।

परमेश्वर क्षमा न करने वाली आत्मा से घृणा करता है। जे एन. डर्बी और जार्ज म्यूलर के बीच एक गंभीर दरार आ गयी थी और उनका मनमुटाव वर्षो तक चला। अंत मे डर्बी उस अनाथाश्रम में गया, जिसका प्रबंधन म्यूलर करते थे और बातचीत करने का समय मांगा। दरवाजे पर जो महिला थी, उसने कहा, मि. म्यूलर उपर है और वह उसे बुलवाती है। जब म्यूलर नीचे आये, डर्बी से बोले, मेरे पास केवल 10 मिनिट का खाली समय है। अभी ..... तुमने पूरे मामले में इतनी दुष्टता की है कि संबंधों को सुधारने से पहिले बहुत–सी बातों पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है।"[27] डर्बी उठे और चले गये। म्यूलर के द्वारा कठोरता से कही गयी वे बातें पुर्नमिलाप की सभी आशाओं पर पानी फेर गई। वह उन दोनों की इस पृथ्वी पर अंतिम मुलाकात थी।

कलिसिया के आरंभ के दिनों में एक व्यक्ति को उसके विश्वास के कारण मृत्युदंण्ड दिया गया। जबकि सैनिक उसे उसकी कठोरी से निकालकर सजा के लिये ले जा रहे थे, एक मसीही जिसने उसके विरुद्ध कुछ गलत किया था, उस मरने वाले के पावों पर गिर गया और उस से क्षमा मांगने लगा, किन्तु वह कैदी उसे ठुकराकर आगे बढ़ गया और उसे जीवित जला दिया गया। उस व्यक्ति का नाम मसीही शहीदों में कभी शामिल नही किया गया। "यदि मैं अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ और प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।" (1कुरि.13:3)

बिना प्रतिकार गलत व्यवहार सहन करना

आपने कभी ध्यान दिया कि प्रभु ने कभी प्रतिकार नहीं किया (1 पतरस 2:23)? हम जो मरणहार पापी मनुष्य है प्रतिकार करना सर्वाधिक स्वाभाविक बात है। हम जैसे को तैसा लौटाना चाहते है। परन्तु अनुग्रह हमे बल देता है कि हम बिना प्रतिकार किये या बदले देने की भावना रखे उस बुरे व्यवहार को स्वीकार करे (1 पतरस 2:19–20)।

बुराई के बदले भलाई करना

विश्वासियों की बुलाहट है कि प्रत्येक 'बुरे काम' का बदला 'भलाई' से दे (रोमियों 12:17, 20–21)। एक भारतीय व्यक्ति मुंबई की सड़को पर अपने हाथी को तेजी से आगे बढ़ाने के प्रयास में था। वह एक तेज नुकीले अंकुश का उपयोग कर रहा था। अचानक उसके हाथ से अकुंश नीचे गिरा और बडी झन झनाहट की आवाज आयी। हाथी पिछे घुमा, उसने अंकुश को सूंड से पकड़ा और वापस अपने महावत को सौंप दिया। संसार यह देखकर भौंचक रह जाता है, जब कोई व्यक्ति ऐसे 'टुटेपन' के व्यवहार का प्रदर्शन करता है।

स्वयं से बढ़कर दूसरो का सम्मान करना

टुटेपन का प्रमाण तब मिलता है जब हम दूसरो को स्वयं से बढ़कर मानते हैं (फिलि. 2:3)। इसका यह अर्थ नही कि उनके चरित्र हम से अधिक बेहतर है। हम उन्हें बेहतर मानते है जब उनके हितों को अपने हितों से अधिक प्राथमिकता देते है। जब अब्राहम और लूत मिस्र से बेथेल को आये तब उन दोनो के पशुओं के लिये पर्याप्त चराई नही थी। इसलिये अब्राहम ने लूत से कहा कि अपने लिये चराई

चुन ले और वह (अब्राहम) बचे हुये भाग में भेड़–बकरियाँ चराएगा (उत्पति 13:1–13)। उसने लूत को अपने से अधिक सम्मान दिया।

जब किसी व्यक्ति ने छोटी–मोटी बातों को लेकर एच. ए. आयरन साइड से उलझने का प्रयास किया, वे कहते, ''अच्छा, भाई जब हम स्वर्ग में जायेंगे, हम दोनो में अगर कोई गलत होगा, तो सभवतः मैं।'' वे सदैव दूसरे व्यक्ति को अपने से पहिले स्थान देते। प्रभु के कुछ सेवक मंच से लगे एक कमरे में रुके थे कि नियत किये गये समय पर मंच पर जाये। उन में से एक असाधारण रुप में प्रिय और आदरनीय था, जब वह कमरे से निकला, लोग उसके लिये जोर से हर्ष ध्वनि करने लगे, वह फुर्ती से वापस कमरे में चला गया ताकि लगे कि हर्ष ध्वनि अन्य दूसरों के लिये है, वह नही चाहता था कि अन्य सेवको को लगे कि लोग उन्हे कम पसंद करते है।

अविलम्ब आज्ञाकारिता

टूटापन उस व्यक्ति में दिखाई देता है जो परमेश्वर की इच्छा को अविलम्ब स्वीकार करता और आज्ञा पालन करता है (भजनसंहिता 32:9) और यह सबक योना ने कठिन तरीके से या दुख उठाकर सीखा। जिस गद्ही के बच्चे पर चढ़कर यीशु यरुशलेम गये, वह उस टूटेपन की तस्वीर है जिसे परमेश्वर उपयोग कर सकते है (लूका 19:29–35)। जब हम ईश्वरीय कुम्हार के हाथो में मिट्टी के समान है, वे हमें अपनी इच्छा के अनुसार ढ़ालकर, बना सकता है।

सार्वजनिक अभिमत के लिये मृत

हमें एक ऐसे स्थान में आना चाहिए जहाँ हम सार्वजनिक प्रशंसा और निंदा, दोनो के प्रति मृत हों। जब डबल्यू. पी. निकलसन युवा प्रचारक थे उन्होंनो 'साल्वेशन आर्मी' के लिये सेवा करने का प्रस्ताव भेजा 'उस समय जो अधिकारी थे, उन्होने उन्हें सैण्डविज बोर्ड भेजा जिस पर यह लिखा थाः ''सार्वजनिक अभिमत के लिये मृत।'' वे कहते है उस दिन उन्होंने एक बड़ा सबक सीखा। उन्हे मनुष्यों से डरना नही था क्योंकि वे परमेश्वर का इतना अधिक भय मानते थे।

संकट के समय अपनी शांति बनाये रखना

एक टुटा व्यक्ति जीवन के संकटों में अविचलन और एकाग्रता का प्रदर्शन करता है। विलम्ब, रुकावटें, यांत्रीकीय रुकावटे, दुर्घटनाएँ, दिनचर्या के परिवर्तन, और निराशाएँ सभी उसके लिये परमेश्वर की योजना का अंग होते है, उनकें व्यवहार में अनियंत्रण, अफरा–तफरी, भावो द्वेग, या असमानता नहीं होती। विचार यह है कि वे अधीरता के बदले अविलम्ब शांति के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। चक्के का पचंर हो जाना एक छदमवेशी आशीष भी हो सकती है (पढ़े, रोमियो 8:28)। यहाँ कुछ सुझाव दिये गये है कि रुकावटों के साथ कैसा व्यवहार करे।

सबसे पहला सुझाव 'रीडर्स डाइजेस्ट' से है –

> जब आप कठिनईयों से निराश या कुपित हो जाये, तो स्मरण करे कि उनका बार–बार आना आप के जीवन के मूल्य की ओर संकेत करता है। वे ही लोग दूसरो की आवश्यकताओं के लिये

> बोझ पाते हैं जो स्वयं सहायता और बल से भरपूर होते है। नापसंद आनेवाली हमारे मार्ग की रुकावटें हमारी आवश्यकता (अनिवार्यता) का प्रमाण है। कोई व्यक्ति इसलिये अत्याधिक भर्त्सना पाता है, और इस खतरे से सचेत रहने की आवश्यता है कि वह इतना आत्मनिर्भर और सहायता न करने वाला है कि कोई कभी उसे नहीं रोकता और (वह या) हम असहज रुप में अकेले छाड़ दिये जाते है।

दूसरा सहायक सुझाव बताता है कि कैसे एक व्यस्त वृध्द जन ने इस समस्या पर विजय प्राप्त की:

> उसने साक्षी दी, ''कुछ समय पहिले तक, मै सदैव रुकावटो से लिपटा रहता था, और यह वास्तव में मेरी स्वार्थ की भावना थी। लोग मेरे पास आते और कहते कि, ''मेरे पास दो घण्टे का समय था, मैंने सोचा कि आपके पास जाऊं और मिलूं।'' मुझे सुनकर दुःख होता। तब प्रभु ने मुझे सिखाया कि परमेश्वर ही लोगों को हमारे मार्ग में भेजते है। उन्होंने फिलिप्पुस को इथियोपियाई खोज के पास भेजा, उसने बरनवास को तरसुस के शाऊल की खोज में भेजा। यही बात यहाँ भी सत्य है। पमेश्वर लोगो को हमारे जीवनो में भेजता है। इस कारण जब कोई आता है, मैं कहता हूँ, ''अवश्य ही प्रभु ने आपको यहाँ भेजा है, आईये हम पता करे कि उसने आप को क्यों भेजा, आईये, हम इस विषय पर प्रार्थना करे।'' इससे दो बातें होती है, यह साक्षात्कार को एक दूसरे स्तर पर ले जाता है। क्योंकि अब परमेश्वर के बिच में है; साथ ही बातचीत की अवधि कम हो जाती है। यदि व्यक्ति जानता है कि आप कारण की खोज में है कि आप वहाँ क्यो आये, और यदि परमेश्वर की ओर से उसका कोई विशेष कारण नहीं होता, वह शीघ्र ही अधिक हरियाली की खोज में आपको छोड़कर चला जाता है। इसलिये रुकावटो को परमेश्वर की ओर से मानकर ग्रहण करें। तब वे आपकी दिनचर्या के अनुसार है, क्योंकि परमेश्वर आपकी दिनचर्या को एक नया रुप दे रहे थे ताकि वह उसके अनुसार बन जाये। सजग मसीहियों के लिये रुकावटे केवल ईश्वर की ओर से भेजे गये अवसर है।

बंधक–गुलाम के समान जीवन जीना (लूका 17:7–10)

रॉय हसन अपनी पुस्तक 'द कलवरी रोड' में वर्णन करते है कि बंधक गुलाम को अपनी सेवा के लिये उचित अभिवृति रखनी चाहिय। उसे तैयार रहना चाहिए कि उसे एक काम पर दूसरा काम दिया जायेगा, बिना उस पर अधिक सोच विचार किये, और जब वह उसे करे तो धन्यवाद सुनने की आशा न रखक। सबकुछ करके वह दूसरे को स्वार्थी न ठहराए, सब कुछ करने के बाद घमण्ड करने या स्वयं की सराहना करने का कोई स्थान नहीं है, वरन् हमें यह अंगीकार करना चाहिए कि हम लाभदायी सेवक नही है। अर्थात् अपने आप में हम परमेश्वर और मनुष्यो के लिये वास्तविक लाभ के योग्य नही है। स्वार्थ को पराजित करने का पांचवा और अंतिम कदम है दीनता और विनम्रता में कार्य करना और यह मानना कि हमने कुछ भी सराहनीय नही किया है, और जो किया, वह हमारा कर्तव्य था।

टूटेपन का अर्थ क्या नहीं है

टूटा हुआ मनुष्य एक मिश्रण, रीढ़विहीत जैसे जेलीफिश, अशक्त आद्यक्षर, और अपने आस पास किसी पर भी अप्रभावशील व्यक्ति नही होता। इसके विपरीत टूटे हुये व्यक्ति सबसे अधिक प्रभाव डालने

वाले होते है। दीनता का अर्थ निर्बलता नही है, यह नियंत्रण के आधीन सामर्थ है। दीन व्यक्ति वह है जो परमेश्वर की इच्छा को बिना प्रतिकार किये स्वीकार करता है, वह अपनी आंतरिक शक्ति के कारण सज्जन और कोमल बन सकता है, और परमेश्वर के सिद्ध नियंत्रण के आधीन रहता है। टूट. पन का अर्थ यह नहीं कि वह कभी क्रोध नही करता। यीशु मंदिर के प्रांगण मे रुपयों का लेन देन करने वालो से क्रोधित हुआ था। अवश्य है कि हम अपने लिये मेम्नें और परमेश्वर के कार्य के लिये सिंह बनें।

टूटे-पन के कदम

प्रश्न है कि "मैं कैसे वास्तव में टूटा हुआ व्यक्ति बनूं?" उत्तर मे 4 कदम है:

1. प्रार्थना करे – "हे प्रभु मुझे तोड़े और प्रार्थना का वास्तविक अभिप्राय यही हो।"
2. अपने अतीत की बारीकी से छानबीन करे कि कही कुछ गलत तो नहीं जिसे सही नहीं किया गया है, दया रहित शब्द, या शारीरिकता में होकर कहे गये शब्द इत्यादि तो नही है।
3. सर्वप्रथम परमेश्वर के सामने अंगीकार करे, तब उस व्यक्ति के सामने अंगीकार करे, जिसके साथ हमने गलत किया था।
4. अपने विनम्र करने वाले अनुभव को अन्य दूसरों को बतायें। अविश्वास योग्य रहे पतियों और पत्नियो को एक दूसरे से क्षमा मांगनी चाहिए।

एक प्राचिन जिसने किसी दूसरी स्त्री के लिये अपनी पत्नी को छोड़ दिया था, उसने क्षमा मांगने के लिये यह पत्र लिखा:

बीस वर्ष के विद्रोही जीवन को जीने के बाद जिसका मुझे अत्याधिक खेद है, मैं परमेश्वर के पास लौट आया और पाप एवं लज्जा के उन वर्षो के लिये उनसे क्षमा मांगी। परमेश्वर ने उनकी दया और प्रेम में उन्हें वापस उनकी और उनके पुत्र, यीशु मसीह की संगति में ले लिया। अब मैं उस शांति और चंगाई के आनंद का अनुभव कर रहा हूँ जो मैं ने पिछले कितने वर्षो में अनुभव नही किया था। प्रभु के नाम की स्तुति हो! भजन 32 और भजन 51 में दाऊद के वचनो का अब मेरे लिये नया अर्थ था और उनमें एक नया आनंद मिल रहा था। भजन 51 के शब्दों में, "उसने अपने किये हुये उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दिया है।" मै उसके अनुग्रह को समझा नही सकता ! मैं आप से और मसीह से और मसीह में बहुतेरे भाईयो और बहिनो से उस लज्जा और चोट के लिये क्षमा मांगना चाहता हूँ जो मरे कारण मिली थी। मैं अपने पाप के कारण दुःखी हूं और चाहता हूँ कि किसी प्रकार वे विस्मृत हो जाये, परन्तु मैं यह नही कर सकता, और मै समझता हूं कि वे उन बर्बाद वर्षो की स्मृतियाँ मुझे आनेवाले अनेक वर्षो तक साताती रहेगी। मुझे पता है कि आप में से बहुत से लोग मेरे लिये प्रार्थना करते रहे है, और फिलिप्पियो 1:18 व 19 को दूसरे शब्दो में कहूं तो – "मैं जानता हूँ कि तुम्हारी विनती के द्वारा और पवित्रात्मा की ओर से प्राप्त सहायता के द्व ारा, मैं अब स्वतंत्र हूं।" मैं ने अपने परिवार के सभी लोगों को पत्र लिखकर उनसे क्षमा मांगी है, और उनके साथ मिलकर प्रार्थनाओं में परमेश्वर के प्राप्त उत्तरों के कारण आनंद मना रहा हूं। प्रार्थनाओं में इन दिनों मैं एक मसीही सहभागिता में भाग ले रहा हूं और एक साप्ताहिक बाइबल

> अध्ययन की कक्षा में जा रहा हूं। मुझे मसीही सहभागिता और संगति की आवश्यकता का अनुभव होता है और में इन अवसरों के लिये धन्यवादित हूं।

विचार किजीये, यदि व्यापारिक क्षेत्रो में लोग टूटेपन पर अमल करने लगें तो क्या होगा। एक मसीही नियोक्ता ने अपने कर्मचारियों को इस प्रकार लिखा:

> मैंने अपनी लगभग संपूर्ण उर्जायें और प्राथमिकतायें अपने व्यापार को बढ़ाने में और व्यक्तिगत सुखों को पाने में लगा दी। व्यवहारिक रुप में मैं कभी बाइबिल नहीं पढ़ता था। विचार और कार्यों मे मेरे पाप वास्तव में बहुत बुरे है। परमेश्वर के काम के लिये जो 10 प्रतिशत मै देता हूं, वह त्याग पूर्वक देने के संबंध में एक मजाक के समान है। मैं एक बॉस के रुप में बहुत ज्यादती और आलोचना करने वाला व्यक्ति हूं। अकसर पति के रुप मे मैं बोलचाल में कर्कश, निर्दय और प्रेमरहित हूं। बच्चे के रुप में मैं बिना चूके प्रत्येक रविवार को चर्च जाता हूं जैसा मैं बचपन से करता आया हूं। जब लोग मेरी प्रशंसा करते है, आप समझ सकते हैं कि मैं स्वयं को पाखंडी जैसा महसूस करता हूँ। यही कारण है कि मैं लज्जा के साथ यह बताने के लिये विवश हूं कि एक मसीही व्यक्ति के रुप में मैं कितना बुरा उदाहरण हूं।

प्रभु को छोड़ किसी कि स्तुति प्रशंसा न करें। यह पत्र 150 लाख लोगों को भेजा गया जो उसकी सूचीपत्र में थे।

पूर्णकालिक मसीही कार्यतकर्ता टुटेपन को अमल में लायें

आफ्रिका के एक मिशनरी बॉब यंग की उनके कुछ साथी कार्यकर्ताओं के साथ अनबन हो गई, तब वे और उनकी पत्नी अपने बच्चों को पढ़ाने अमरीका लौट आये। बाद में उन्होंने वापस आफ्रिका आने के लिये प्रभु की अगुवाई महसूस की परन्तु उसकी पत्नी ने सुझाव दिया कि वापस जाने से पहिले वे दूसरे मिशनरियों को पत्र लिखकर क्षमा याचना करे कि उन्होंने धर्मशिक्षा संबंधित मतभेद ठीक तरह नहीं सुलझाये थे। उसने वास्तविक क्षमा याचना का पत्र लिखा। मिशनरियों ने उत्तर दिया, ''हम इस प्रकार के व्यक्ति के साथ काम करना चाहते है'' मिशनरी दम्पत्ति वापस आफ्रिका गये और पहिले जो भाषा सीखी थी, उसमें अधिक प्रवीणता पाई, और वे जहाँ भी गये, आशीषों का अनुभव पाया। ओस्वाल्ड सैण्डर्स ने अभी अपना संदेश पूरा किया ही था कि एक सेवक (डिकन) ने उठकर कहा कि क्या वह कुछ कह सकता है:

> ''आज की शाम, परमेश्वर मुझ से बात कर रहे थे,'' उसने कहा, ''आप में से अधिकतर लोग मुझे जानते हैं, और मैं एक अंगीकार करना चाहता हूं। जब मैं आपके बिच उपस्थित रहता हूं, मैं सदा हँसमुख, प्रसन्नचित्त और मौज मस्ती के मूड में रहता हूं परन्तु घर पर मैं ऐसा नहीं रहता हूं। मैं सड़क पर स्वर्गदूत और घर में शैतान बन जाता हूं। मेरा स्वभाव उग्र है, और मेरी पत्नी एवं बच्चो ने मेरे कारण बुरा समय देखा है। मैं ने परमेश्वर से क्षमा याचना की है और कहा है कि व्यक्तिगत जीवन मे भी मुझे ऐसा बनाये कि सार्वजनिक जीवन के समान व्यवहार करुं।''

सोचकर देखिये, यदि सभी गलत बातें सही कर दी जाये, हमारी सभाओं में क्या होगा, जहाँ आवश्यकता है, वहाँ क्षमा याचना की जाये यदि मन में रखी बातें दूर कर की जाये। बच्चे मां के पर्स से चोरी करने

के लिये माता–पिता से क्षमा याचना करे, झूठ बोलने, आज्ञा न मानने के लिये, और माता–पिता की पीठ पिछे बुराई करने के लिये, मातापिता भी कभी बच्चे से क्षमा मांगे, अन्याय करने के लिये, आवश्यकता से अधिक ताड़ना करने, और स्वयं एक बुरा उदाहरण बनने के लिये, और क्रोध में अनापशनाप कहने के लिये; तब एक नया आनंद, सामर्थ, और प्रभावशीलता आयेगी। एक भारी बोझ कंधो पर से उठ जायेगा। जैसे पहिले कभी नही थे, बेहतर संबध अस्तित्व में आयेगें।

अध्याय - 19

स्वयं को पवित्र रखें

सुचना - इस अध्याय में यौन संबधी मसलों पर खुलकर चर्चा की गई है। यह अध्याय केवल वें ही लोग पढें जो इन मसलों के साथ संघर्षरत् है।

मसीही सेवक के राजमार्ग में उन शवों की भरमार है जो यौन संबंधी अपराधों के कारण बर्बाद हो चुके थे। उन्होंने दौड़ का आरंभ बड़े आत्मविश्वास और उत्साह के साथ किया था परन्तु बाद में वे वर्जित सुख की कल्पनाएँ करने लगे और अंत में उनके सामने आत्मसमर्पण कर बैठे।

डॉ. हावर्ड हेन्ड्रिक्स ने 246 ऐसे मनुष्यों गिनती की जिन्होंने पूर्णकालिक सेवकाई आरंभ की, और दो वर्षो के भीतर नैतिक रुप में असफल सिद्ध हुए। उनमें से लगभग 250 व्यक्ति 24 महीनों के भीतर ही निकाल दिये गए। इसका अर्थ है, लगभग 10 प्रतिमाह, जो अवैध यौन संबंधो के कारण मार्ग से भटक गए। डॉ. पॉल बेक ने अनुमान लगाया कि 30 वर्ष में मसीही कार्य का आरंभ करनेवालो में से लगभग दसवाँ भाग ही 65 वर्ष की आयु में भी प्रचार कर रहा था। दस में से नौ असफल होते है। ''वे नैतिक रुप में पराजित होते है, वे निराशा का शिकार बनते है, वे लिबरल थियोलॉजी से भटकाए जाते है, और धन कमाने की अभिलाषा से ग्रस्त हो जाते है।''[32]

जब तक हम स्वर्ग न पहूंच जाये, हम में से कोई भी गिरनें से सुरक्षित नहीं है। यौन अभिलाषा परमेश्वर की ओर से वरदान है, उसका उद्देश्य सन्तानोत्पती, सुख और शुद्धता है। ये केवल वैवाहिक संबंधों में ही उपायोग के लिये है। ध्यान पूर्वक उन सिद्धांतो को पढ़े जो पौलुस ने 1 कुरि. 6:12–20 में दिये है, विशेषकर शब्द 'देह' और 'देहों' पर ध्यान दे, जो 8 बार दोहराये गये हैं।

पद 12 – परमेश्वर के दान – वरदान हमें या किसी दूसरे को नुकसान पहुँचाने या गुलाम बनाने के लिये नहीं दिये गये है।

पद 13 – भोजन की भूख और यौन भूख में अन्तर है। भोजन और पेट दोनों नाश कर दिये जायेंगे। वे तात्कालिक है। देह अनंतकालिक है देह प्रभु के लिये है, न कि यौन–अनैतिकता के लिये। प्रभु देह के लिये है। वह देह की भलाई, और पवित्रता में रुचि रखते है।

पद 14 – परमेश्वर इस तथ्य के द्वारा देह में रुचि प्रगट करते है कि जिस प्रकार उन्होंने प्रभु यीशु को जिलाया, उसी प्रकार वे देह (हमें) भी जिलाएँगे।

पद 15 – हमारी देह मसीह के अंग है। मसीही के एक अंग को लेकर उसे वेश्या से जोड़ने या विवाह के बाहर किसी भी व्यक्ति से जोड़कर अशुद्ध करने के बारे में सोचकर दिखाये।

पद 16–17 – वेश्या के साथ यौने संबंध एक शारीरिक एकता है। प्रभु के साथ एकता सभी संबंधों से अधिक गहिरा संबंध है – यह दो आत्माओं का संबंध है। एक विश्वासी मसीह में और मसीह विश्वासी में निवास करता है।

पद 18 – व्यभिचार या यौन–अनैनिकता को कमतर मत बनाइये। हमें उस से दूर भागना है। यह देह के विरुद्ध सबसे अधिक बद्तर पाप है। इसके दुष्परिणाम देह में आते है।

पद 19 – हमारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है। वह वास्तव में उस में निवास करता है वह परमेश्वर के द्वारा हमें दिया गया है। हमारी

देह हमारी नहीं है, कि हम जो चाहे वह करे।

पद 20 – हम दाम देकर खरीदे गये है, मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा, हमें अपनी देह और आत्मा के द्वारा उसकी महिमा करनी चाहिये जो उनका स्वामी है।

यौन संबंध की अभिलाषा मान्य रुप में मनुष्य की देह में सबसे अधिक प्रबलतम अभिलाषा है। इसके कारण अविवाहित पुरुष और कुछ विवाहित पुरुष भी स्वयं में सुख प्राप्त करने के कुछ तरीके जैसे कि हस्तमैथुन अपनाते है। यह यौन तृप्ति प्राप्त करने और समागम के बिना स्खलन पाने का एक स्वतः निर्मित तरीका है। यह सत्य है कि लगभग सभी स्वस्थ एवं युवा किशोर एवं युवक कभी न कभी हस्तमैथुन अवश्य करते है। इस व्यवहार के संबंध में पवित्र शास्त्र की शिक्षा क्या है?[33]

अजीब लगता है, परन्तु बाइबल विशेष रुप में इस विषय पर कुछ नहीं कहती। उत्पत्ती 3:1–11 में दी गई ओनान की कहानी को अकसर हस्तमैथुन के विरुद्ध परमेश्वर की अप्रसन्नता के रुप में दर्शाया जाता है। जब ओनान के भाई की मृत्यु हुई, उन दिनों में प्रचलित विवाह की व्यवस्था के अनुसार अपने भाई की विधवा से विवाह किया, अर्थात् उसकी भाभी से, ताकि उसके मृत भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। यह जानकर कि उत्पन्न संतान उसकी नहीं कहलायेगी, ओनान ने जानबुझकर वीर्य को भूमि पर गिरा दिया और संतान उत्पन्न करना न चाहा। इस अनाज्ञाकारिता के कारण प्रभु ने उसे मार दिया। लेकिन यहाँ कारण हस्तमैथुन नहीं था, परन्तु अनाज्ञाकारिता थी। उसका पाप यौन पाप नहीं परन्तु स्वार्थ था।

अब जबकि पवित्र शास्त्र में इस आचरण को लेकर सीधे तौर पर कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है, अन्य पदों में निहित निर्देशों को विवेकशील विश्वासी संदर्भ के रुप में ले सकते है। यहां निम्ननिखित कुछ संदर्भ है:

इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो। और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो, तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के वरन् अनुग्रह के आधीन हो (रोमियो 6:12–14)।

यहाँ इस बात पर जोर दिया गया है कि हम अपनी देह के अंगों का उपयोग उस प्रकार न करे जिससे प्रभु को अनादर मिलता है, परन्तु धार्मिकता के हथियार के रुप में करें। इस जीवन में हमारा वास्तविक उद्देश्य यौन संतुष्टि का नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करने का है।

क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो। 1 कुरिंथ 6:19–20

त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति पवित्र आत्मा, वास्तव में प्रत्येक विश्वासीजन की देह में निवास करता है। यह जानकर कि वह हम में सर्वदा उपस्थित है, हर समय हमें सचेत रहना चाहिये कि हम ऐसे किसी भी काम में प्रवृत न हो जो अनुचित है।

पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है, वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को। 1 कुरि 7:4

यहाँ मूल विचार यह है कि पति–पत्नी में से कोई भी समागम के लिये मना न करे, जबकि दूसरा व्यक्ति चाहता है कि समागम करे। परन्तु उससे भी अधिक यह तथ्य विचारणीय है कि व्यक्ति का उस की अपनी देह पर अधिकार नहीं है, इस कारण स्वयं की संतुष्टि के किसी भी तरीके को सही नहीं ठहराया जा सकता।

"सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।" 2 कुरि 7:1 हस्तमैथुन देह और मन दोनों को अशुद्ध करता है, और अवश्य है कि हम स्वयं को इससे शद्ध रखें।

और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। 1 थिस्स, 4:4 में प्रयुक्त शब्द (vessel) (हिंदी में अनुवाद 'पत्नी' है) का अभिप्राय अपनी स्वंय की देह से है। इस प्रकार, इस पद का अर्थ है कि हमें उसका उपयोग केवल पवित्र और आदरणीय उद्देश्यों के लिये करना है।

जवानी की अभिलाषाओं से भागय और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल–मिलाप का पीछा कर। 2 तिमुथी 2:22। हे प्रियों मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जान कर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। 1 पतरस 2:11

जबकि ऐसी अभिलाषा युवाओं से जुड़ी है, फिर भी वे केवल युवाओं तक ही सीमित नहीं होती। बाइबल कहती है, इनसे भाग और अधिक आदरयोग्य लक्ष्यों का पीछा कर। अकसर यह कार्य अशुद्ध

कल्पनाओं और कामुक विचारों से उपजता है, मत्ती 5:27–28 के अनुसार इन से बचाना चाहिये। वहाँ यीशु ने कहा कि 'पाप का विचार' भी 'पाप के काम' के समतुल्य है। पाप मन में उत्पन्न होता है। यदि हम पर्याप्त लंबे समय तक उस पर विचार करेंगे तो अन्ततः वह कार्य कर बैठेंगें। हमें स्वयं को सकारात्मक एवं शुद्ध रुप में सोचने के लिये अनुशासित करना होगा, "जो–जो बातें शुद्ध है उन पर ध्यान लगाया करे" (फिलि. 4:8)।

जैसा पहिले कहा गया पवित्र शास्त्र की सामान्य शिक्षा है कि यौन संबंधो का समुचित उपयोग केवल विवाह के सम्बंधो में ही है। चूंकि हस्तमैथुन इस शर्त को पूरा नहीं करता, यह परमेश्वर द्वारा प्रदत्त क्षमताओं का दुरुपयोग है। किसी ने कहा कि 'स्वयं से सुख लेने' का प्रमुख नुकसान स्वाभिमान, स्व–अनुशासन, और कठोर निर्णय लेने की क्षमता एवं सामान्य स्वास्थ्य के विचार का अनादर करने में है। अकसर यह आदत या क्रिया, अशुद्धता और अत्याधिक दोष भावना उत्पन्न करती है, और जहाँ तक मसीही सेवा का प्रश्न है, व्यक्ति को पंगु बनाती है।

ये सब कहने के बाद भी अवश्य है कि हम इस विषय के प्रति संतुलन रखे, हम मानते है कि हस्तमैथुन की आदत के प्रति बहुत बढ़ाचढ़ाकर बाते की' गीय है। यहाँ तक कि कलीसियाई अगुवो ने गंभीर चेतावनियाँ जारी कर दी है, कि ऐसा करने पर नपुंसकता पागलपन और स्नायुविकार इत्यादि हो सकते है। ये सभी कथन समुचित या सक्षम चिकित्सकीय प्रमाणों के प्रकाश में सही साबित नहीं होते।

एक नवयुवक विश्वासी के लिये यह सबसे कठिनतम युद्धों में से एक है। उसके सबसे प्रबलतम संकल्प असफल (धराशाही) हो जाते हैं। उसकी सबसे आवश्यक प्रार्थनाएँ लगाता है अनुत्तरित रह गयी है। यह संघर्ष व्यर्थ लगता है और बिना रुके जारी रहता है। परन्तु फिर भी हमें यह नहीं कहना चाहिये कि जय कि आशा नहीं है। यह कहने का अर्थ है कि पवित्र आत्मा हमें जयवन्त करने योग्य सामर्थशाली नहीं है। निश्चय ही हमारे स्वयं के भितर जय पाने की सामर्थ नहीं है, पर उसमें है। जब भी हम असफल होते है, हमें स्मरण रखना चाहिये कि अंगीकार करने और इसका परित्याग करने के द्वारा हमारे लिये क्षमा और शुद्धीकरण है (1 यूहन्ना 1:9; नीतिवचन 28:13)। हम जितना अधिक पवित्र शास्त्र के पद स्मरण करेंगे और परमेश्वर के शुद्ध वचन पर मनन करेंगे, उतना अधिक हम इस क्षेत्र में जय का अनुभव करेंग। क्रमिक रुप में यह आदत कमतर होती जायेगी। नीचे इस पाप से छुटकारे के कुछ मार्ग सुझाव के रुप में दिये गये है:

- प्रतिदिन अपनी देह को 'जीवित बलिदान' के रुप में प्रभु को चढ़ाये (रोमियो 12:1–2)।
- परमेश्वर के वचन में पर्याप्त समय व्यतीत करे, "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है कि तेरे विरूद्ध पाप न करुं"

(भजन संहिता 119:11)।

- समय और असमय प्रार्थना करे, प्रार्थन के कुछ सुझाव नीचे दिये गये हैं:
  – मुझे पाप से बचाए।
  – यौन पापों में गिरने के द्वारा मैं कभी प्रभु यीशु के नाम को अनादर न पहूँचाऊं।
  – पाप के पतन से बेहतर है आप मुझे घर (स्वर्ग) बुला ले।

– भला हो कि पाप करने की परीक्षा और पाप के लिये अवसर को एक साथ न मिले।

– मुझे ऐसा करने से रोक, भले ही मैं ऐसा करना चाहूं।

- उच्चादर्शो का अभ्यास करें और शारीरिक कामनाओं को उन मार्गो पर मोड़ दे जो नैतिक, रीति संबंध या आत्मिक रुप से अधिक उँचे है। आप प्रभु के लिये व्यस्त रहते हुये यह कर सकते है। बहुत अधिक निद्रा लाभदायक नहीं है। बेहतर होगा कि स्वयं को मार देने तक परिश्रम करें। तब प्रार्थना करके पुनर्जीवित रहें। परीक्षा का समय आता है जब हम आवश्यकता से अधिक खाते है, और अधिक सोते है। राजा दाऊद ने उच्चादर्शी का अभ्यास नहीं किया। उसे युद्ध के मैदान में होना चाहिये था, पर वह नहीं गया और शरीर की अभिलाषा में फंस गया (पढें 2 शमुएल 11:1–27)।

1 कुरि. 9:27 में पौलुस ने प्रतिरोधात्मक तरीके बताये हैं कि वह कैसे जय पाता था। "परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।" दूसरे शब्दों में, उसने अधिक भोजन, विश्राम और विश्रांती के द्वारा अपनी देह को अधिक दुलार नहीं दिया। वह दिन भर परमेश्वर के कार्य में व्यस्त रहता कि पापमय गति–विधियों से बचा रहे, और रात में इतना थक जाता कि कामुक कल्पनाएं करने से पहिले सो जाता, जब वह बिस्तर पर जाता उसे अतिशीघ्र नींद आ जाती।

- अपने विचारों पर नियंत्रण करे, सावधानी बरते कि आप किन बातों में रुची ले रहे है। टेलिविजन कार्यक्रम, अश्लील यौन चलचित्र, पुस्तकें और पत्रिकाएँ जो यौन अपराधों या पापों को महिमामण्डित करते है, वे अकसर नैतिक असफलताओं का कारण बनते हैं।
- मसीह में व्यस्त रहे (2 कुरि. 3:18)।
- तीव्र उत्तेजना की परीक्षा की घड़ी में प्रभु को प्रार्थना में पुकारे (नीति 10:10)।

भाग - 3

मसीही जीवन

अध्याय - 20

सम्पूर्ण समर्पण

सभी मसिही जन इस बात पर सहमति रखते है कि कलवरी के क्रूसपर प्रभु यीशु के प्रायश्चित के कार्य का इतना बड़ा महत्व और मूल्य है कि उसके सभी अनुयायियों को उसके प्रति समर्पित होना चाहिये। समर्पण की आवश्यकता पर कोई प्रश्न नही; पर यह पूर्व निर्धारित निष्कर्ष है और सामान्य रुप में स्वीकार्य है। परन्तु दो अनुत्तरित प्रश्न हैः हम किस सीमा तक समर्पण करे? और प्रतिदिन के जीवन में यह कैसे होगा? आदर्श रुप में हमें संपूर्ण रुप में समर्पित होना चाहिये। हमारी आत्मा, प्राण, और देह के संपूर्ण बलिदान से कमतर कोई भी प्रत्युत्तर उसके बलिदान के प्रति हमारा समुचित प्रत्युत्तर नहीं है। हमारे बहुत से भजनों में यह बड़ी निपुणता में अभिव्यक्त किया गया है, ''उसका प्रेम इतना अद्भूत, इतना अलौकिक, मेरे हृदय, मेरे जीवन, मेरे सबकुछ की मांग करता है। मैं किस प्रकार उसे अपना सर्वोत्तम न दूं और पूरी तरह उसके लिये जीवन जीने से कमतर कुछ करुं, जबकि उसने मेरे लिये सबकुछ किया है? यीशु ने अपना सब कुछ दिया है, मै, कैसे कमतर बलिदान करुं?''

परन्तु फिर भी यह वैध प्रश्न उठता है कि क्या कोई विश्वासी कभी भी उद्धारकर्ता के प्रति पूरी तरह समर्पित होता है। यहाँ तक प्रेरित पौलुस ने भी माना है कि वह पा चुका या सिद्ध हो चुका, नहीं कह सकता (फिलि. 3:12)। जब हम अपने पापों, असफलताओं या स्वार्थ और अन्य मिश्रित भावो पर विचार करते है, हम यह घोषणा करने में संकोच करते है कि प्रभु के लिये हमारा समर्पण जैसा होना चाहिये, वैसा ही है। परन्तु फिर भी इस बात के कारण हम सर्वोत्तम की ओर बढ़ते रहने से रुके नहीं, भले ही हम वहाँ नही पहुँचे है। हम अपने लक्ष्य की ओर लगातार बढ़ सकते है। भले ही हम वर्तमान अनुभव के रुप में ''यीशु को मैं सबकुछ देता'' न गा सके, परन्तु हम अपने हृदय की कामना के रुप मे इसे अवश्य गा सकते है।

इस प्रकार, ये बाते समर्पण के सम्पूर्ण विषय को पवित्र शास्त्र के विस्तार में देखन–समझने की ओर प्रेरित करती है। समर्पण क्या है? समर्पण या प्रतिबद्धता का अर्थ है – अपना जीवन प्रभु को देना

ताकि वे जो चाहे हमसे करें। यह एक सोचा समझा गया कार्य है, जिस के द्वारा व्यक्ति अपने आप के बदले मसीह को चुनता है। यह प्रभु और सुसमाचार के लिये अपने जीवन का त्याग करना है, यह प्रभु को हमारे हृदय और मन का समर्पण और प्रेम देना है:

चाहे बीमारी हो या स्वास्थ्य,
कंगाली हो या धन संम्पत्ती
घर में रहे या विदेश में,
चाहे अविवाहित हो या विवाहित।
चाहे प्रसिद्ध हो या अनजान,
चाहे जीवन थोड़ा हो या लंबा,
मुझे लीजिये, जैसा मैं हूँ हे प्रभु,
और पूरी तरह अपना बना लो
मेरे हृदय को अपना राजमहल
और राज सिंहासन बना लो

(लेखक अज्ञात)

कुछ शब्द समर्पण के शब्द कोष में नही है: ''अभी नहीं प्रभु – पहिले मुझे.... अभी नहीं, परन्तु बाद में।''

समर्पण की तार्किकता

यीशु मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण करने के वजनदार कारण है:

1. परमेश्वर की दया की यह मांग है – ''यह उस प्रेम का अपमान लगता है जिसने अपना सबकुछ हमारे लिये दिया, कि हम कहे, हम प्रेम करते है और रुक कर गणना करे कि क्या सबकुछ उसे दे जबकि हमारा सबकुछ मात्र दो दमड़ी है। स्वर्ग, पृथ्वी, अनंतकाल और वह स्वयं उसका है, जो उसने दिया। बेहतर होगा उससे प्रेम न करे, गुनगुना होने से ठंडा होना अधिक बेहतर है (लेडी पॉवर स्कॉर्ट)।

''उद्धार के लिये परमेश्वर को अनंतकालीन आत्मा समर्पित करने और उसके बाद नैतिक जीवन में बने रहने में ईमानदारी का अभाव है। हमे नरक से बचाने और स्वर्ग ले जाने के लिये उसपर भरोसा करते है, परन्तु यहां पृथ्वी पर और अभी, अपने जीवन का नियंत्रण उसे सौंपने में संकोच करते है।'' (आर. ए. लेडलॉ)

2. परमेश्वर का पुत्र मेरे बदले मे मरा, इसका एक मात्र तर्कपूर्ण प्रत्युत्तर हमारी एकमात्र तर्क पूर्ण सेवा है, और यह सबसे अधिक विवेकपूर्ण और कर्तयुक्त है जो हम परमेश्वर की दया का विचार करके कर सकते है। यदि वह मेरे लिये मरा, तो कम से कम मै यह कर सकता हूँ – कि अपना जीवन उसके लिये दे दूँ। ''यदि यीशु मसीह परमेश्वर है और वह मेरे लिये मरा तब उसके लिये मेरा कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नही है।'' (सी.टी. स्टड)

''मसीह के क्रूस का आपके लिये कभी कोई अर्थ नही होगा यदि वह आपका जीवन न ले ले और आपके जीवन की कोई सबसे महत्वपूर्ण वस्तु न बन जाये।'' (हेरोल्ड सेंट जॉन)

3. यह परमेश्वर के मार्गदर्शन को जानने का निश्चित मार्ग है (रोमियों 12:2)।
4. कृतज्ञता यह मांग करती है।
5. हम अपने नही है। एक बड़ी कीमत देकर प्रभु यीशु ने हमें कलवरी के क्रूस पर खरीदा है। हम परमेश्वर के है। यदि हम अपना जीवन अपने मनमाने तरीके से उपयोग करे तो हम चोर ठहरेंग।

> मुझे यह पता है कि यीशु ने मेरे लिये प्राण दिये, पर मै यह कभी नही समझा कि यदि वह मेरे लिये मरा, तो मैं मेरा न रहा। छुटकारे का अर्थ है, वापस खरीद लेना, इसलिये यदि मैं उस का हूँ, तो या तो मैं चोर बनू और अपने पास वह रखूं जो मेरा नही, या फिर मै सबकुछ परमेश्वर के लिये त्याग दूं। जब मै यह समझ गया कि यीशु मेरे लिये मरा, तब उसके लिये सबकुछ त्याग देना कठिन न रहा (सी.टी. स्टड)।

एक गाँव के चर्च में ऑर्गन बजाने वाले ने दोबारा एक अतिथि को चर्च में आर्गन बजाने की अनुमती नहीं दी। अंत मे वह मान गया और उस अजनबी ने ऑर्गन बजाया। ऐसा लगा मानों समूचा चर्च स्वर्ग के संगीत से भर गया।

ऑर्गन बजाने वाले ने पूछा, ''आप कौन है?''

शालीनतापूर्वक अजनबी ने उत्तर दिया – ''मेरा नाम मेन्डेल सॉन है।'',

''क्या'' ! उसने लज्जा से भरकर कहा, क्या मैंने आपको अपने ऑर्गन बजाने से मना किया था?[34] हमें परमेश्वर को श्रेय देना चाहिये कि उसे पता है हमारे ऑर्गन को हम से बेहतर कैसे बजाये!

6. यीशु प्रभु है। यदि वह प्रभु है, उसे सब बातों पर अधिकार है – ''मसीह इसलिये मरा और जी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों दोनों का प्रभु हो।'' (रोमियों 14:9)
7. हमारे लिये सर्वोत्तम क्या है, वह हमसे अधिक बेहतर जानता है। वे उन विकल्पों को जानते है जिनके विषय में हम अज्ञानी है।
8. यह हमारे जीवनों का अपव्यय होने से बचाता है, छोटी–छोटी अमहत्व पूर्ण बातों मे उलझने से रोकता है। यह हमें ऐसे व्यक्ति बनने से बचाता है जिसका काम परेड वाले दिन में फुग्गे बेचना है और जिस दिन पूर्ण सूर्य ग्रहण हो उस दिन 'काले चश्मे' बेचना है या फिर टाइटैनिक के दिन डेक पर कुर्सियां फिर से जमाना, या जलते हुए मकान की दीवारों पर टंगी तस्वीरों को सीधा करना है।

एक दिन ऍपल कंप्यूटर के प्रमुख, स्टीव जॉब्स, जॉन से बातचीत कर रहे थे जो पेप्सी कोला के अध्यय थे। उन्हें लगा कि स्कली अपनी योग्यताओं को कंप्यूटर उद्योग में अधिक बेहतर उपयोग कर सकते हैं। जॉब्स ने स्कली से कहॉ, ''तुम कब मीठा पानी बेचना बंद कर रहे हो, और कुछ ऐसा करो कि संसार बदल जाये?'' स्कली ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली। यीशु के पुनरुत्थान के बाद, पतरस ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली। यीशु के पुनरुत्थान के बाद, पतरस ने अन्य चेलो से कहा, ''मैं मछली

पकड़ने जा रहा हूं" (यूहन्ना 21:3)। अविश्वसनीय! वह जिसके पास संसार के छुटकारे का संदेश था, वही पतरस पछली पकड़ने जा रहा था।

9. मसीह का प्रेम हमें विवश (constrain) कर देता है (2 कुरि. 5:14–15)। डेविड लिविंगस्टन ने कहा – "वह हमें विवश (compel) करता है।"
10. मसीह हमें मूल्यो का नया संज्ञान देते है कि महत्व पूर्ण क्या है।

> एक बार कोई व्यक्ति मसीह की आँखों मे देख ले और जीवन के मार्गो के लिये उसके चुम्बकत्व का अनुमव कर ले, वह कभी उन गैरधार्मिक विचारों, आदर्शों और मानदण्डो से संतुष्ट नही होगा, जो मसीह के आने से पहिले उसे पर्याप्त लगते थे। मसीह ने उसे अन्य सब बातों से अलग कर दिया है या रिक्त कर दिया है। मूल्यों के पुराने मानदण्ड अब बुझी लकड़ियाँ, राख और धूल बन गये है। उसके लिये प्रभु का धन्यवाद हो।[35]

अपनी पुस्तक 'बिबलिकल प्रीचिंग' में अर्नेस्ट कैम्पबेल को उद्घृत करते हुए हैडन रॉबिन्सन ने लिखा है:

> एक दिन मै ल्योनार्ड वुल्फ का उनके जीवन कें प्रति आँकलन सुनकर दंग रह गया – उसने कहाँ "मैं साफ तौर पर देखता हूँ, कि मै ने व्यवहारिक रुप में कुछ भी प्राप्त नहीं किया है। आज का संसार और मनुष्यों के निर्माण का इतिहास पिछले 5–७ वर्षो में वही का वही रहता मानो मैने समितियों में बैठकर, लिखने और स्मारक लिखने के बदले पिंग–पांग खेला है। इस कारण मुझे एक लज्जित करने वाला अंगीकार करना है कि मैने लंबे जीवन काल में 1,50,000 से 2,00,000 घंटो में सिद्ध रुप में अनुपयोगी कार्य किया है।"[36]

उस विश्वासी के लिये क्रूस का इतना अधिक महत्व है, जो उसे समझता है कि क्रूस उसके लिये सबकुछ है या कुछ भी नही। मसीह को अपना जीवन समर्पित न करना, उसके मुंह के सामने जम्हांईयां लेने के समान है। यह उससे यह कहने के समान है, "आपने ऐसे कुछ नहीं किया है कि मैं आप को मेरे जीवन पर नियंत्रण करने का हक दे दूं।"

समर्पण के उदाहरणः

मसीह (यशायाह ६; इब्रा. 10:7) – हमारे प्रभु को उसके पिता के कामों को करने की धुन थी। उसकी एक मात्र विशुद्ध अभिलाषा उहें प्रसन्न करना था।

अब्राहम (उत्पति 22:1–19) – इस व्यक्ति में परमेश्वर की आज्ञा को मानने का अविचल निश्चय था। भले ही उसका अर्थ उसके सबसे अधिक प्रिय धन अपने इकलौते पुत्र, इसहाक का बलिदान करना हों।

होमबलि (लैव्य. 1:13ब) होमबलि का प्रमुख लक्षण यह था कि इसे परमेश्वर के लिये पूर्णरुप में लाना (भस्म होना) था। यह बलि चढ़ाने वाले की अभिलाषा को अभिव्यक्त करती है कि वह पूर्ण रूप में परमेश्वर के लिये जीयेगा।

इब्री खरीदा गुलाम (निर्गमन 21:2–6; व्यवस्थाविवरण 15:11–18) – जब एक यहूदी खरीद गुलाम स्वतंत्र होने योग्य बन जाता था, तब वह सदा के लिये (जीवन भर) अपने स्वामी का गुलाम बनकर रहना चुन सकता था।

रूत (रूत 1:16–17) इस अन्यजाति स्त्री ने अपनी प्रतिबद्धता प्रगट कीः

> रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग या छोड़कर लौट जा, क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी, जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी, तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा। जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊं, तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे।

ऐस्तर (ऐस्तर 4:16) एक समय जबकि उसके जाति यहूदियो के विलुप्त होने का खतरा आया, इस रानी ने अपना जीवन दाँव पर लगा दिया कि उन्हे बचाने का निवेदन करे और कहा, "मै राजा के पास भीतर जाऊंगी और यदि नाश हो गई तो हो गई।

शद्रक, मेशेक, और ओबेदनगो (दानिय्येल 3:17–18) परमेश्वर के प्रति उनकी निष्ठा (स्वामी भक्ति) के कारण उन्होंने विश्वास के साथ समझौता करने के बदले में आग के भट्टे में जाने का साहस किया। उन्होंने उस समय के जगत के अधिपति से कहाः

> हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है, वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे

थ०मस क्रेन्मर और उनका हाथ जिसने विश्वास के खण्डन पर हस्ताक्षर किये। निर्बलता के एक क्षण में बिशम क्रेन्मर ने अपने विश्वास के खण्डन–पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये, पर उन्होंने पुनः विचार किया। इसके पहिले कि वे जीवित जलाए जाते, उन्होंने अपना हाथ आग में आगे कर दिया जिसने विश्वास के खण्डन पत्र पर हस्ताक्षर कि थे और कहा, "हे अयोग्य हाथ, तेरा नाश हो।" वे चाहते थे कि उनका हाथ आग मे जलने वाला उनका प्रथम अंग हो।

ज०न नेलसन डर्बी – अविचलित समर्पन और सेवा के उत्पादकता से परिपूर्ण जीवन के दौरान डर्बी सदा आर्थिक अभाव में रहे। एक दिन वे एक ससते इटैलियन बोर्डिंग हाऊस मे बैठे थे और वे यह गाने लगे, "हे यीशु, मैंने अपना क्रूस उठाया है, सबकुछ त्याग कर, तेरे पीछे चलने के लिये" और यह सत्य था।

सी. एच. स्पर्जन – प्रचारकों के राजकुमार ने लिखाः

> उस दिन जब मैं ने अपने आप को उद्धारकर्ता को समर्पित किया, मैं ने उसे अपनी देह, अपना मन, और अपनी आत्मा दी। मैंने वह सब दे दिया जो मेरे पास था और वह सब भी जो भविष्य में और अनंतकाल में मेरे पास होगा। मैं ने अपनी सारी सामर्थ, अधिकार, ज्ञानेद्रियों की क्षमता, मेरी आँख, मेरे कान, मेरे प्रत्येक अंग, मेरी भावनायें, मेरे निर्यण, मेरा पुरुषत्व, और सब कुछ जो मुझ में हो सकता है।

ए. टी. पियर्सन ने उनके बारे में कहा, "उसके पास जितनी बुद्धि थी और परमेश्वर ने उसे जितने भी अवसर दिये, उसने उनमे अधिक से अधिक उपयोग किया।"

विलियम बोर्डेन – इस धनी व्यक्ति ने अपना समर्पन इस प्रकार व्यक्त किया – "हे प्रभु यीशु, जहाँ तक मेरे जीवन का प्रश्न है, मैं सारे अधिकार त्यागता हूँ, मैं अपने ह्रदय के सिंहासन पर आपको बैठाता हूँ, मुझे बदले, शुद्ध करे, और उपयोग करे, जैसा आप पसंद करें। मैं आपकी पवित्रता को संम्पूर्ण अधिकार देता हूँ। मैं आप को धन्यवाद देता हूँ।"

बेट्टी स्टैम – बेट्टी का अभिप्राय स्पष्ट था जब उसने अपनी बाइबल के प्रथम पृष्ठ पर लिखाः

> "हे प्रभु, मैं अपने सभी उद्देश्य और योजनाएँ त्याग देती हूँ, मेरी सभी अभिलाषाएँ आशाएँ महत्वाकांक्षाएँ, और अपने जीवन कि लिये आपकी इच्छा को स्वीकार करती हूँ. मैं स्वयं को समर्पित करती हूँ, पूर्णरीति से आपको ताकि सदैव आपकी रहूँ। मैं अपने सारे मित्रों और प्रेम करने वालों को आपके अधिकार में सौंप देती हूँ। वे सब लोग जिनसे मै प्रेम करती हूँ, मेरे ह्रदय में उनका स्थान दूसरा होगा। मेरे जीवन मे हर कीमत पर आप अपनी समग्र इच्छा को पूर्ण करें, अभी और सदा सर्वदा – जीना मेरे लिये मसीह है।

जार्ज म्यूलर – जब आर्थर टी. पियर्सन ने जार्ज म्यूलर से पूछा, "आपके महान कार्यो और उन अद्भुत कार्यो का रहस्य क्या है, जिन्हें परमेश्वर ने आपके द्वारा सम्पन्न किया है?" म्यूलर ने एक क्षण सोचा, तब आपना सिर नीचे झुकाया, नीचे और नीचे, इतने नीचे कि वह लगभग उनके घुटनों के बीच आ गया था। वे एक दो–पल चुप रहे फिर बोले, "बहुत वर्षो पहिले मेरे जीवन में एक दिन आया, जब जार्ज म्यूलर मर गया एक नवयुवक होने के नाते मुझ में बहुत–सी बड़ी–बड़ी महत्वकांक्षाएँ थी पर एक दिन आया, जब मैं उन सबके लिये मर गया और मैं ने कहा, "हे प्रभु यीशु, अब इसके आगे मेरी नही परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो" और उस दिन से परमेश्वर ने मुझ में और मेरे द्वारा कार्य करना आरंभ कर दिया।"

जनरल बूथ – साल्वेशन आर्मी के संस्थापक ने कहा, "जब मैं सत्रह वर्ष का लड़का था, मैंने तय कर लिया था कि जो कुछ विलियम बूथ का था, वह सब परमेश्वर को मिलना चाहिये।"

बिशप टेयलर स्मिथ – वे प्रत्येक सुबह अपने बिस्तर के पास घुटने टेककर प्रार्थना किया करते थे, "हे प्रभु यीशु, यह बिस्तर आपकी वेदी है और मै आपके लिये जीवित बलिदान हूँ।"

हमारे समर्पण मे क्या बाधक है

1. **परमेश्वर की इच्छा का भय – वह क्या मांग लेगाः** सबसे पहिली बात जो लोगों के मन में उभरती है, वह है मिशन–फिल्ड। सांप, बिच्छू, मकड़ियाँ, कीट, घुटन भरी गर्मी और आर्द्रता इत्यादि। परन्तु परमेश्वर के पास लोगों के लिये विविध इच्छाएँ है, और उसकी इच्छा सदैव भली, ग्रहण योग्य और सिद्ध होती है। अनंत प्रेम और बुद्धि (ज्ञान) का परमेश्वर अपने लोगों के लिये सब से उत्तम बातें चाहता हैं।

एक युवा स्त्री ने ग्राहम स्क्रॉगी से कहा, "मै मसीह को अपना प्रभु बनाने से डरती हूँ कि वह मुझ से पता नहीं क्या मांग लेगा।" डॉ. स्क्रॉगी ने बुद्धिमानी पूर्वक याफा (joppaa) में पतरस की कहानी पर चर्चा की, प्रभु ने पतरस से कहा – "उठ मार और खा।" तीन बार पतरस ने उत्तर दिया, "नही प्रभु।" स्क्रॉगी ने कोमलता से कहा – "आप भी कह सकती है – नही, और आप कह सकती है – "हे प्रभु," परन्तु आप "नहीं प्रभु" नही कह सकती। मैं अपनी बाइबल और कलम आपके पास छोड़कर

जा रही हूँ। आप भीतर जाइये और 'नही' या 'प्रभु' शब्द पर क्रास लगा दें। आप भीतर जाइये और 'नही' या 'प्रभु' में शब्द पर क्रास लगा दें। वह स्त्री चुपचाप रोती हुये वापस लौटी, उसके कंधो पर से झांककर उसने देखा कि उस स्त्री ने 'नही' शब्द को काट दिया था। वह कह रही थी, "वह प्रभु है, वह प्रभु है" – पवित्र आज्ञाकारिता में यही होता है।[37]

वह अनमने ढंग से काम करने वालो को नही खींचता उसे स्वैच्छिक कार्यकर्ता चाहिये। वह हम में इच्छा और कार्य दोनों के करने का प्रभाव डालता है (फिलि. 2:13)।

2. **परमेश्वर क्या लेगा इसका भय** – इस डर का कोई आधार नही है। हमारे परमेश्वर 'लेने' के लिये नहीं परन्तु 'देने' के लिये आये है और उससे बढ़कर उनकी इच्छा भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध है। उसकी इच्छा से डरने का अर्थ है, आशीष पाने से डरना।

3. **परमेश्वर के इन्कार का डर** – हम डरते है कि कही उसकी इच्छा में हमें विवाह करने से वंचित न होना पड़े (यह संभव नही है क्योंकि अधिकतर मनष्य जाति के लिये यह परमेश्वर की इच्छा है। यदि वह चाहता है कि आप अविवाहित रहें तो वह आपको अनुग्रह देगा और आप सीख लेंगे कि आपके लिये गलत व्यक्ति से विवाह करने से बेहतर है – अविवाहित रहना) हम डरते है कि उसकी इच्छा के कारण कहीं हम आकर्षक नौकरी (व्यवसाय) से वंचित न हो जाये, शहर के बाहरी इलाके मे अच्छा घर, संताने और दो कारे न मिले? क्या सेवानिवृत्ति के बाद का समय देना ठिक नहीं होगा?

उन्हें एक बर्बाद जीवन का बचा–खुचा नहीं चाहिये। उन्हें सर्वोत्तम चाहिये।
हे प्रभु, अपने सामर्थ की भरपूरी के दिनो मे मैं आपके लिये बलवन्त बनूंगा।
आनंद की प्रत्येक वस्तु के साथ चलते हुये, मैं आपके लिये अपने गीत गाउँगा।
मैं संसार को अपना ह्रदय नहीं दूँगा और उसके बाद आपके प्रेम का दावा करुंगा।
मै संसार के सुखो के पीछे धुन और जोश के पंखो पर सवार होकर नही उड़ूंगा,
न थकान के साथ स्वर्गीय पर्वत पर धीरे–धीरे परिश्रम करुंगा।
आप के लिये अपनी निर्बल अभिलाषाएं निम्नतर और सबसे बुरा भाग नही दुंगा,
और न ही आपके लिये अपनी बुझती हुई आग और ह्रदय की राख दुंगा।
ओह! मुझे मेरे स्वर्गिय दिनों मे चुन लीजिये, जो मेरे आनंद के वर्षो में आपका भाग हो,
क्योंकि आप मेरी सर्वोत्तम की महिमा और ह्रदय की भरपूरी है।

(थॉमस एच. गिल)

4. **स्वतंत्रता छिन जाने का भय** – संभव है उसकी इच्छा हस्तक्षेप करे और हम वह न कर सके या अपने तरीके से न कर सके, जो हम चाहते है। इसका अर्थ है जीवन क सर्वोत्तम भाग संसार को देना, उन हाथो में जो मसीह के लोहू से दागदार है।

5. **अनजानी बातों का भय** – जग अब्राहम प्रभु की आज्ञा मानकर अपने घर से निकल पड़ा, तब उसने सीखा कि अंधकार मे परमेश्वर के साथ चलना अकेले प्रकाश में चलने से बेहतर है। हमारी अपनी आँखे (दृष्टि) पर भरोसा करने से परमेश्वर की दृष्टि पर भरोसा करना बेहतर है।

6. **सुरक्षा खो जाने का डर** – हम डरते है कि हमारे सहयोग के दृश्य–साधन खो जायेंगे और हमें दूसरों के द्वारा सहयोग (कल्याण) की बातों पर निर्भर होना पड़ेगा। हम कब सीखेंगे कि

परमेश्वर ही हमारी एक मात्र सुरक्षा है, और यदि हम उसे प्रथम स्थान दे, हमें जीवन की आवश्यक बातों की कभी कमी नही होगी।

7. **कठिनाईयों का भय** – सुविधाये नही रहेगी। हम सोचते है कि पूर्ण समर्पण का अर्थ है सुविधाये खो देना। हम 'असुविधाओं में पड़ेगे' हमे टॉयलेट नही मिलेंगे, हम प्रति दिन एक बार स्नान नही कर सकेंगे। हमे पुराने और दिये गये वस्त्र पहिनने पड़ेगें और साल्वेशन आर्मी के आरंभ के दिनों के फर्निचर और काम में लाये जा चुके सामान उपयोग करने पड़ेगे। ये सभी भय हास्यास्पद है।

8. **अयोग्यता का डर** – लोग कहते हैं, "हम इतने दान–वरदान से भरे नही है कि परमेश्वर हमे उपयोग करें। मैं 'कुछ नहीं हूँ और मेरे पास कोई 'विशेष प्रतिभाएँ (गुण)' नही है।" ये लोग भुल जाते हैं कि परमेश्वर मूर्ख, निर्बल, नीच, और तुच्छ गिने जाने वाले विश्वाससियो का उपयोग करना पसंद करते है (1 कुरि. 1:26–28)। यदि वे इन सभी पदवियों में से एक के भी योग्य है, परमेश्वर उन्हे उपयोग कर सकते है। तब जब भी परमेश्वर के लिये कुछ किया जायेगा, परमेश्वर को महिमा मिलेगी।

9. **पद–प्रतिष्ठा की हानि का भय** – हम स्वयं को मसीही सेवा के संदर्भ में बहुत बड़ा मानते है। सेवा का अर्थ है सामाजिक स्तर पर नीचे आना। यह विचार सड़े गले, बदबुदार घमण्ड के सिवा कुछ नही है। नीचे दी गई बातों पर विचार करें। हम उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ सकते है और जन शिखर पर आकर खड़े होते है, तब पाते हैं कि सीढ़ी गलत दीवार पर रखी थीं। हम परमेश्वर के सर्वोत्तम के बदले मे उस से निम्नतम कुछ चुन सकते है। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण के जीवन के बिना और कौन से विकल्प है?

- छोटी–मोटी, महत्वहीन बातों में समर्पित जीवन,
- आत्मा का उद्धार और जीवन का विनाश,
- स्वर्ग में खाली हाथों के साथ प्रवेश

कॉर्नेसियुस प्लान्टिंगा जूनिअर ने इस दशा का वर्णन करते हुये कहा – "अभी आप 'कुछ नही' के लिये काम कर रहें है – दुकानों (बडे बाजार) में घूमते, समय काटते, छोटी–छोटी बातें करते, टेलिविजन कार्यक्रम देखते हुये – और अन्त में आप वहाँ पहुँच जाते है जहाँ आप अपने निज परिवार से अधिक इन काल्पनिक पात्रों के बारे में जानते हैं।

दोषपूर्ण समर्पण (Defective Commitment)

नये – नियम में दोषपूर्ण समर्पण के कम से कम 3 स्पष्ट उदाहरण हैं –

1. हनन्याह और सफीरा (प्रे. काम 5:11) उन्होंने सबकुछ देने की बात की परन्तु अपने लिये एक भाग बचाकर रख लिया।
2. पतरस के तीन इंकार (मत्ती 16:22; यूहन्ना 13:6, 8; प्रेरितो के काम 10:13–14) इस प्रेरित ने कहा – "ऐसा नही, प्रभु।" आप कह सकते है "ऐसा नही।" और आप कह सकते है, "प्रभु" परन्तु आप यह नही कह सकते, "ऐसा नही प्रभु।"

3. वह व्यक्ति जिसने कहा, ''पहिले मुझे......'' (लूका 9:57–62)। तीन पुरुषों ने कहा कि वे मसीह के पीछे चलाना चाहते है – परन्तु उन्होने अपनी 'रुची के काम' पहिले करने चाहे।

संम्पूर्ण समर्पण (Full Surrender)

यह संकट का समय है। कभी न कभी यह पहिला अवसर आता है जब हम हमारे जीवनों को पूर्ण समर्पण के साथ वेदी पर रखते हैं। उस समय बड़ा संघर्ष हो सकता है। ''वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थन करने लगा, और उसका पसीना मानो खुन की बड़ी–बड़ी बूंदो के समान भूमि पर गिर रहा था।''

''आप का जो भी है, सब उसे दो, आधा–अधुरा नहीं, टुकडो में नहीं, कुछ बचाकर न रखें, उपहार का कुछ भाग न रख छोड़े और न यह दिखाने कि जो भाग आपने दिया वही पूरा भाग है। जीवन की एक प्रभावी एकता और सरलता है जो अविचलित रुप मे परमेश्वर से प्रेम करती और संपूर्ण हृदय से उसकी सेवा करती है। ऐसा जीवन आसानी से उसके प्रथम प्रेम से भटकाया (बहकाया) नहीं जा सकता।'' (अज्ञात)

''प्रतिभाओं और संभावनाओं से युक्त नव – युवाओं के लिये सबकुछ उद्धारकर्ता के कदमों पर रख देना यथा–योग्य (उपयुक्त) है।'' (लेखक – अज्ञात)। संभव है आवश्यक लगने वाला कोई भावनात्मक अनुभव न मिले। कोई प्रकाश, घंटी की आवाज आपके स्नायु तंत्र में कोई सिहरन इत्यादि न हो। परन्तु आपको अनुभव अवश्य होगा कि आपने किस प्रेम को खो दिया है। डेविड लिविंगस्टोन ने कहा था, ''दुःख कि बात है कि मेरे पास देने के लिये और कुछ नहीं है।''

हमारे बलिदान तुच्छ है जिनकी समझ उपर से दी गई है,
हम वह बलिदान करते है जिसे रख नही सकते,
हमने जिस से प्रेम करना बंद कर दिया।

आइजक वॉट ने लिखा –

ऐसा न हो प्रभु, कि मैं मेरे परमेश्वर मसीह की मृत्यु को छोड़ और किसी बात का घमण्ड करुं;
मुझे आकर्षित करने वाली सभी व्यर्थ वस्तुएँ मैं मसीह के लोहू को बलिदान करता हूं।

होमर ग्रीम्स से पूछे जाने पर उन्हों ने यह उत्तर दिया –

हे स्वामी, मैं आपको क्या दूं? आप जो मेरे लिये मरे,
क्या सबकुछ जो मेरा है, उससे कमतर कुछ दूं,
या मैं सबकुछ आप को दूं? हे यीशु मेरे उद्धारकर्ता और प्रभु,
आपने मेरे लिये सबकुछ दिया, केवल एक भाग नहीं,
और न आधा हृदय, मैं आपको सबकुछ देता हूं।

चारलोट इलियट नें इसे इस प्रकार से कहा है –

जैसा मैं हूं, आपके अनजाने प्रेम ने सब रुकावटें दूर कर दी,
अब आपका होने के लिये हां, केवल आपका,
हे परमेश्वर के मेम्ने, मैं आता हूं, मैं आता हूं।

इ.एच.स्विंसटीड ने उत्तर दिया – 'हाँ'

हे यीशु, मेरे प्रभु और स्वामी, अलौकिक प्रेम ने जीता,
अब से मैं उत्तर दुंगा आपकी समय इच्छा के लिये –
हाँ, शैतान के बंधन से छूटकर अब मैं सदा सर्वदा तेरा हूं,
अब से तेरे सभी उद्देश्य मुझ मे पूरे हों।

सेसिल जे. एलेन ने अपने सम्पूर्ण समर्पन के विषय में इन शब्दों में कहा –

उसके हाथ, पांव और ह्रदय, तीनों कलवरी पर मेरे लिये छेदे गये,
और अब, यहाँ अभी मैं उसे अपने हाथ, पाँव और ह्रदय बलिदान के रुप में चढ़ाया हूं।

बैक्स्टर ने भी लिखा –

प्रिय क्रूस, मैं तेरे निवेदन सुनता हूँ –
मैं उन्हे अस्वीकार नहीं कर सकता,
मेरा ह्रदय जीता गया है, मेरा सबकुछ ले लीजिये
कि आपके प्रेम का अपमान न हो।

फ्रांसेस हैवरगल ने सदा के लिये स्वयं को मसीह के लिये दे दिया –

मेरा प्रेम स्वीकार करे हे मेरे परमेश्वर
आपके पाँवो पर में प्रेम का धन अर्पित करती हूं,
मुझे ले ले और मैं सदा सर्वदा,
केवल आपकी और पूरी तरह आपकी ही रहूंगी।

एक अन्य कविता मे फ्रांसेस की यह अभिव्यक्ति भी है –

संपूर्ण एवं समर्पण में मैं स्वयं को पूरी तरह से आपकी और केवल आपकी,
सदा के लिये होना समर्पित करती हूं। ओह!
परमेश्वर के पुत्र, जो मुझको प्रेम करता है,
मैं केवल तेरी रहूंगी, और मैं और जो कुछ मेरा है अब से आपका है।

थॉमस ओ. चिसहाल्स भी अपने जीवन को केवल यीशु को समर्पित करते हुये कहते है –

हे यीशु, प्रभु और स्वामी, मैं स्वयं को आप को देता हूं,
क्योंकि तू ने प्रायश्चित के अपने कार्य में स्वयं को मेरे लिये दे दिया था।
मेरा कोई और स्वामी नही। मेरा ह्रदय सदैव आपका सिंहासन रहे,
मैं आपको अपना जीवन दे रहा हूं। आज के बाद,
हे मसीह, मैं केवल आपके लिये जीऊंगा।

वेट्टी डास वैन्ड के तर्क ने उसे विवश किया कि वह यह लिखे –

अंततः वह मेरे लिये मर गया, अंततः वह मेरे लिये मर गया,
मैं कैसे उसे अपने सर्वोत्तम से कुछ कमतर दूं,
उसने जो किया उसके बाद मैं कैसे उसके लिये पूर्ण समर्पित होकर न जीऊं।

आईजक वॉट ने कलवरी के प्रेम के लिये संपूर्ण समर्पण को ही एकमात्र उचित प्रत्युत्तर के रुप में देखा –

जब उसका प्रिय क्रूस उभरतां है, मैं अपने शर्मीले चेहरे को छुपा लेता हूं।
मेरा हृदय कृतज्ञता में घुल जाता है, और मेरी आंखें आँसुओं में पिघल जाती है,
परन्तु शोक की बंदूे प्रेम का कर्ज चुका नही सकती, जो मेरे उपर है,
हे प्रिय यीशु, मैं आपको देता हूं – वह सबकुछ जो मैं दे सकता हूं।

एक अंतिम उद्धरण एविस बी. क्रिश्चियन सेन की और से –

केवल एक जीवन है, देने के लिये – हे प्रभु, मेरी प्रार्थना है,
ले ले, मैं तुझ से कुछ बचाकर न रखूं आपकी आज्ञा अब मैं मानता हूं
तुने आपने आप का सब कुछ सेंत मेंत मेरे लिये दिया है।
इस जीवन पर हक रखें कि यह आपके लिये उपयोग में आये,
मेरे उद्धारकर्ता, हर क्षण आपके लिये है।

ये सभी कवि हेनरी बॉस्क की इस बात से सहमति रखते है जब उन्होंने लिखा, ''अपने भविष्य की योजना स्वयं बनाने के बदले परमेश्वर का दिशा निर्देश की खोजे, क्योंकि उसकी इच्छा उसके असीम प्रेम और बुद्धि पर आधारित है। आप यह निश्चित तौर पर मान सकते है कि आपके सबसे बड़े आनंद और उपलब्धि या भरपूरी के सबसे बड़े अनुभव इस बात में मिलते है कि परमेश्वर आपसे क्या चाहते है कि आप करे।''

संपूर्ण समर्पण केवल जोखिम ही नहीं है यह एक बार का अनुभव नही पर एक प्रक्रिया है। हमें अपने समर्पण में प्रतिदिन नया होते जाना चाहिये और तब जो भी काम हमें मिलता है, उसे करने में लग जायें। हम स्वंय को काम से थका देते है, तब प्रार्थन में पुनः जीवन प्राप्त करते है। परमेश्वर हमे मार्गदर्शन देते है जब हम कार्य करते हैं। वे सभी कुछ पहिले से नहीं बता देते, किंतु धीरे–धीरे खुलासा होता जाता है। हमे परमेश्वर के वचन की निकटता में बने रहना चाहिये। मसिह के प्रति समर्पण का अर्थ है, बायबल को प्रमुख स्थान देना। मैं 'लिखित वचन' के प्रति समर्पित हुए बिना, 'जीवित वचन' के प्रति समर्पित नही हो सकता, और वचन के साथ प्रतीदिन समय व्यतीत करना, इस समर्पण को दर्शाता है। हम जो पढते है, परमेश्वर के वचन को पढने, कंठस्थ करने एंव अमल करने के द्वारा भी यह समर्पण दिखायी देता है। परमेश्वर का वचन हमारे हृदय मे होगा; हम उसे हमारी सन्तानो को सिखायेंगे; जब हम घर पर होंगे, उस पर चर्चा करेंगे, जब मार्ग मे चलेंगे, तब उसकी बातें करेंगे और जब लेटेंगे, जब उठेंगे; उन्हे अपने हाथों पर (कार्यो मे½ चिह्न के रूप मे बांधेंगे और अपनी ऑखों के सामने (अभिलाषाओं में) रखेंगे; उन्हे अपनी घर की चौखटों पर लिखेंगे और फाटकों पर लिखकर लगायेंगे (पढें व्यवस्थाविवरण 6:6–9)। दुसरे शब्दों मे, बायबल हमारे जीवन के समस्त पहलुओं को प्रभावित करेगी।

हमारे वर्तमान व्यस्त समय मे सामाजिक जीवन की बाध्यताओं पुरा करने से बचने, टी.व्ही. गाइड और रीमोट कंट्रोल को दुर करने और स्वयं को परमेश्वर के वचन के व्यवस्थित एंव क्रमवार अध्ययन

में लगाने के लिये बहुत अधिक अनुशासन की आवश्यकता है; परंतु यदि हम हमारा सर्वश्रेष्ठ सर्वोच्च परमेश्वर को देना चाहते है तो यह उस किमत का भाग है जो हमे चुकाना है।

हमे प्रार्थना मे अधिक समय व्यतिथ करने की अवश्यकता है। एक समर्पित चेला प्रार्थना करने वाला व्यक्ति होता है। प्रतिबध्दता मे संचार शामिल है और संचार का अर्थ उस व्यक्ति के साथ समय बिताना है जिससे हम प्रेम करते है। उध्दारकर्ता को प्रथम स्थान नही मिला है यदि मै उससे कभी–कभार थोडे समय के लिये, उतावली मे एका एक संपर्क करता हूं। दुसरी ओर, मै जितना अधिक उससे प्रेम करता हूं, उतना अधिक उसके अनुग्रह के सिंहासन के पास उससे संगती करना चाहता हूं। इस आम प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नही है – "मुझे प्रार्थना मे कितना समय व्यतिथ करना चाहिये?" यह हमारे काम, दिनचर्या, घर कि जिम्मेदारियाँ, प्रार्थना की सूचि की लम्बाई, और प्रार्थना के उस बोझ पर निर्भर करता है जो प्रभु हमारे ह्रदयों में देते है। नियमित रूप में प्रार्थना में समय देने के अतिरिक्त हम बिना पूर्व तैयारी तत्काल प्रार्थना का अभ्यास भी कर सकते है, यहाँ तक कि अनिद्रा भी प्रार्थना में उपयोग में आ सकती है।

मै चाहता हूं कि मेरा जीवन मेरी अपनी बातों से इतना खाली रहे
कि मेरे प्रिय प्रभु आयें और अपनी मर्जी के अनुसार
उसे सजायें और मेरे ह्रदय को अपना घर बना लें।
अब चूंकि मै जानता हूं इसके लिए क्या आवश्यक है,
प्रत्येक प्रातः जबकि सबकुछ शांत होता है,
मै उस गुप्त कक्षा में चला जता हूं....
और उसके पास अपने इच्छा का समर्पण कर देता हूं।
वे सदैव अनुग्रह के साथ उसे स्वीकार करते हैं,
और मुझे वे अपनी इच्छा सौंप देते है
तब मै दिन के लिए और किसी भी काम को करने के लिए तैयार हो जाता हूं,
और यह वही तरिका है जिसके द्वारा मेरे प्रभु
मेरी अभिरुचियाँ और बुराइयों पर नियंत्रण करते है,
क्योंकि हम भोर को मिलते है
और इच्छाओं कि अदला–बदली करते है।

(एनी ग्रेनिस)

हेराल्ड विल्डिश ने अपनी बायबल के मुख्या पृष्ठ पर यह लिखकर (चिपका) रखा था –

जिस प्रकार अपने पाप का समस्त भार मसीह के पूर्ण किये कार्य पर डाल देते हैं और विश्राम करते है उसी प्रकार, अपने जीवन और सेवा का सम्पूर्ण बोझ उसपर डाल दो और पवित्रात्मा के वर्तमान में हो रहे आंतरीक कार्य में विश्राम करो। अपने आप को पवित्रात्मा को सौंप दो कि वह दिन–प्रतिदिन प्रातःकाल से आपकी अगुआई करे, प्रशंसा स्तुती करते रहें, उसे आपका और आपके दिन का प्रबंधन करने दो। आनंद्पुर्वक दिनभर उसपर निर्भर रहने और उसकी आज्ञा पर अमल करने, उससे मार्गदर्शन पाने कि आशा करने, और आप में और आपके साथ अपनी इच्छा पूरी करने में उस पर निर्भर रहने कि आदत का संवर्धन करें। भावनओं से दूर हटकर उसके कामो

> को सत्य जानकर उन पर निर्भर रहें। हम हमारे जीवन के शासक के रूप में केवल पवित्रात्मा पर विश्वास करें और उसका आज्ञापालन करें और स्वंय प्रयास करने या प्रबंधन करने के बोझ को न उठाएँ। तब हम में पवित्रात्मा का फल प्रकट होगा, जैसा वह चाहता है कि परमेश्वर की महिमा हो।

जब आप अपने जीवन का नियंत्रण प्रभु को सौंपते है, तब जीवन कैसा होगा? आप देखेंगे कि जीवन कि गति बदल जाती है। जीवन अलौकिक बातों से चमक उठता है। परिस्थितियों में एक अदभुत साम्य आ जाता है। आप महसूस करेंगे कि आप परमेश्वर कि इच्छा के बिच में रहने कि लत में है, और आप कहीं और जाना (रहना) नहीं चाहेंगे या कुछ और करना नहीं चाहेंगे। आप पवित्रात्मा के प्रति संवेदनशील हो जायेंगे। आप मानेंगे कि परमेश्वर आपमें और आपके द्वारा कार्य कर रहें है और जब आप अन्य दुसरे जीवनों को स्पर्श करते है, उनमें परमेश्वर के लिए कुछ होगा परन्तु जो होगा वह आपको घमंडी नहीं बनता। यदा–कदा पर्वत–शिखर जैसे अनुभव आते है पर अधिकांश जीवनचर्या जैसे सामान्य और कभी–कभी बोझिल (नीरस) भी होता है। परमेश्वर कि योजना चरणबद्ध रूप में (एक के बाद एक) प्रकट होती है।

समर्पण कि चुनौती

वेस्टमिन्स्टर विहार (मठ) में एक राजा के राज्याभिषेक का वर्णन करते हुए जॉन स्टोट ने कहा कि सबसे अधिक भावुक क्षण राज्याभिषेक से पाहिले था, इसके पहिले कि राज मुकुट भावी राजा के सर पर रखा जाये। कैंटबरी के आर्चबिशप की चारों दिशाओं में यह घोषणा करते थे – 'महाशयों, मै आपके समक्ष राज्य के निर्विवाद राजा को प्रस्तुत करता हूं, क्या आप उसे अपनी निष्ठा समर्पित करेंगे? और जब चारों ओर से बड़ी सकारात्मक गर्जना सुनाई दी, राजमुकुट को उठाकर भावी राजा के सर पर रखा जाता था। ''सज्जनों और देवियों, मैं आपके समक्ष प्रभु यीशु को प्रस्तुत करता हूं जो निःसंदेह प्रभु है और उद्धारकर्ता है – क्या आप उसे अपनी निष्ठा समर्पित करने और जीवन को उसे सौपनें तैयार है?''

प्रत्येक स्त्री और पुरुष के पास आनेवाले मसीह कि बुलाहट में एक संज्ञान है। यदि हम किसी कारणवश उसका अनुसरण करने से मना करते है उसे दुसरे व्यक्ति मिल जायेंगे – वे जो हमारे जैसे ही है, या हमसे बेहतर है, परन्तु हमें सेवा करने के लिए मसीह से बेहतर कोई कभी नहीं मिलेगा।

> बेन लिप्पेन, नॉर्थ कैरोलिना के एक सम्मेलन में एक नवयुवती सेवकाई कि अपनी बुलाहट के बारे में अपनी गवाही दे रही थी। सन्देश के दौरान उसने एक काले कागज का टुकड़ा पकड़ा था, और वह कह रही थी कि उसमें उसके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा लिखी हुई है। उस कागज पर कुछ भी नहीं लिखा था, केवल निचे उसके हस्ताक्षर थे। तब उसने कहा, "मैंने परमेश्वर की इच्छा को बीना जाने स्वीकार कर लिया है, और मैने यह प्रभु पर छोड़ दिया है कि वह उसे विस्तार से लिखें। वह एक सच्ची शिष्या थी और वह सुरक्षित स्थान में थी। इस प्रकार कि समर्पण युक्त इच्छा के साथ पवित्रात्मा उसकी मानसिक प्रक्रियाओं को मार्गदर्शन दे सकेगा, जबकि की वह जीवन के मार्ग में आगे बढती है।[38]

थ्योडोर मोनोड़ ने उसके अपने जीवन में प्रकट हुए सम्पूर्ण समर्पण के मार्ग को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है –

ओह, वह कैसे बुरे दुःख और लज्जा का समय था,
जब मैंने उद्धारकर्ता कि दया से भरे मनुहार व्यर्थ किया, और सगर्व उत्तर दिया –
"सब कुछ मेरा और आपका कुछ नहीं" –
फिर भी उसने मुझे खोज लिया, मैंने उसे देखा,
उस शापित काठ पर रक्तरंजित,
उसे प्रार्थना करते सूना, "हे पिता, उन्हें क्षमा कर",
और मेरे स्वार्थी ह्रदय से कहा, "कुछ–कुछ मेरा और कुछ आपका"
दिन–ब–दिन उसकी कोमल करुणा, चंगाई, सहायता, पूर्ण और सेंतमेंत,
मनोहर एंव – और धीरजवन्त, मुझे झुकाती गयी,
और तब मैंने फुफुसाकर कहा, "कम–कम मेरा और अधिक आपका"
सबसे ऊँचे स्वर्ग से ऊँचा, और सबसे गहिरे समुन्दर से गहिरा आपका प्रेम,
हे प्रभु, अंन्ततः जीत गया, मैंने कहा, "मेरा कुछ नहीं सब कुछ आपका।"

अध्याय - 21

आप निश्चय जान सकते है

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि किसी को शिष्य बनाने का प्रयास करने से पाहिले व्यक्ति को अपने स्वंय के उद्धार का निश्चय होना चाहिए और उद्धार कैसे मिलता है, यह समझने के योग्य होना चाहिए। परमेश्वर चाहतें है की उनके लोग उद्धार का आनंद उठाये, परन्तु आप उसका आनंद नहीं उठा सकते यदि आप नहीं जानते आपका उद्धार हुआ है, और आप न ही बायबल सम्मत तरीके से दूसरों को इसका निश्चय करा सकते है। पौलुस जनता था कि उसका उद्धार हुआ था (2 तीमुथियुस 1:11), इफिसुस के विश्वासी भी यह जानते थे (इफिसियों 2:8), यूहन्ना और पतरस भी यह जानते थे (1 यूहन्ना 3:2, 1 पतरस 3:5), हमें भी यह जनना चाहीये। आईये हम मुद्दे की बात करें – उद्धार का निश्चय सबसे पहिले परमेश्वर के वचन से आता है। उदाहरण के लिये हम यूहन्ना 5:24 में पढ़ते है कि – यदि आप उसका वचन सुनते है और उसके भेजनेवाले पर विश्वास करते हैं, तो आपको अनन्त जीवन मिल गया है। आपका न्याय नहीं होगा। आप मृत्यु से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुके है।

यहाँ बोलनेवाला कौन है?

प्रभु यीशु (पद 19)

क्या वह झूठ बोल सकता है?

नहीं

क्या वह धोका दे सकता है?

नहीं

क्या उसे धोका हो सकता है?

नहीं

यदि उसने कहा है, क्या यह सत्य है?

हाँ

"ठीक है", उसने कहा, "जो मेरा वचन सुनता है।" इसका अर्थ 'कानों से सुनने' से बढकर है। इसका अर्थ 'सुनना और प्रत्युतर' देना है। इसका अर्थ है सुनना और विश्वास करना। इसलिये आप स्वयं से प्रश्न करें, क्या मैंने यीशु को प्रभु जानकर विश्वास किया है, क्या मै सबसे उत्तम तरीके से जनता हूं, कैसे? आपका उत्तर है – "हाँ"

यीशु ने और क्या कहा?

उसने कहा कि मुझे उसके भेजनेवाले पर विश्वास करना चाहिए।

यीशु को किसने भेजा?

परमेश्वर पिता ने उसे (यीशु को) भेजा।

उसने यीशु को क्यों भेजा?

उसने यीशु को मेरे पापों का दण्ड चुकाने के लिए भेजा।

क्या आप इस बात पर विश्वास करते है?

हाँ

यीशु ने आगे और क्या कहा?

उसने कहा – (विश्वास करनेवाले के पास) अनन्त–जीवन है।

क्या आपके पास अनन्त जीवन है?

यहाँ पर कुछ लोग कहेंगे – नहीं!

आप क्यों 'नहीं' कहते है?

क्योंकि मुझे कुछ 'भिन्न अनुभूत' नहीं होती।

फिर से पढ़ें, क्या उसने कहा, आपको अनन्त जीवन कि अनुभूति होगी?

नहीं

उसने क्या कहा?

उसने कहा, "अनन्त जीवन उसका है।"

क्या आपके पास अनन्त जीवन है?

हाँ

आप कैसे जानते है?

क्योंकि बायबल में यीशु ने ऐसा कहा है।

यह अत्यंत आसन है – सुनना – विश्वास करना – और पाना। परमेश्वर कहते है कि हम अपने उद्धार को विश्व की सबसे अधिक निश्चित वस्तु, परमेश्वर के वचन पर आधारित करें। उद्धार का निश्चय भावनाओं के द्वारा नहीं आता। मॉरमॉन चर्च के सदस्य कहते है – "मै जानता हूं यह सत्य है, क्योंकि मेरे भीतर एक आग है।" परन्तु ऐसी भावनाऐं भरोसे के योग्य नहीं है। भावनाए चंचल और परिवर्तनशील होती है और शैतान से नियंत्रित भी हो सकती है।

क्रूस पर टंगे डाकू (चोर) से पूछिए – **क्या तुमने उद्धार पाया?**

हां

क्या तुम्हे अनुभुति होती है कि तुम्हारा उद्धार हो चुका है?

नहीं, मुझे तो केवल दर्द हो रहा है।

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा उद्धार हो गया है?

हां

तुम कैसे जानते हो?

क्योंकि मैने सुना कि प्रभु ने मुझसे कहा, "तू आज ही मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा।"

उसे उसके उद्धार का निश्चय यीशु के मौखिक कहे गए वचनों के द्वारा मिला। आज हमें यह निश्चय लिखित वचन के द्वारा मिलता है। किसी अज्ञात लेखक ने लिखा है,

"परमेश्वर आत्मा से यह नहीं कहता कि वह कहे –
हे परमेश्वर, धन्यवाद, मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।"
परन्तु यह कि अपनी आखें यीशु और उसके वचन पर फेरें।

जब एक परिचित ने मार्टिन ल्युथर से पूछा – कि क्या उन्हें महसूस होता है की उनके पाप क्षमा हुए है। उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, परन्तु मुझे उसका निश्चय है क्योंकि स्वर्ग में एक परमेश्वर है।"

भावनाएं आती है, जाती है, और भावनाएं धोका देती है।
मेरा आधार परमेश्वर का वचन है, और कुछ विश्वास करने के योग्य नहीं है।
भले ही कुछ मीठे आश्वासन सुनने की लालसा से मेरा सम्पूर्ण ह्रदय दोष भावना का अनुभव करे,
कोई है जो मेरे ह्रदय से बढकर है, उसके वचन टल नहीं सकते,
मै उसके अपरिवर्तनशील वचनों पर भरोस रखूंगा, जब तक प्राण आत्मा से अलग न हो,
क्योंकि सभी वस्तुएं यद्यपि जाती रहेंगी, उसका वचन सदा–सर्वदा स्थिर रहेगा।

यहाँ डॉ. आयरन साईड थे, जिन्होंने कहा – "मेरा उद्धार हुआ है। यह मै इसलिए नहीं जनता क्योंकि मै खुश हूं, परन्तु मै खुश हूं क्योंकि मै जनता हूं कि मेरा उद्धार हुआ है।" संदर्भ बायबल (Reference Bible) के लिए प्रसिद्ध डॉ. सी. आय. स्कोफिल्ड ने काहा – "धर्मी ठहराया जाना विश्वासी के स्नायु तंत्र में नहीं परन्तु परमेश्वर के मन में होता है।" परमेश्वर हमें धर्मी मानता है जब हम विश्वास करते

है। आवश्यक नहीं कि हम इसे महसूस करें परन्तु हम इसे इसलिये जानते है, क्योंकी बायबल ऐसा कहती है।

"सेफ्टी, सर्टन्टी और एन्जोयमेंट" के लेखक जोर्ज कटिंग हमारी सहायता करते हुए कहते है, "यह रक्त है जो हमें सुरक्षा देता है – और यह वचन है जो हमें निश्चयता देता है।" जॉन वेसली ने लिखा है –

"शरीर और भावनाएं परिवर्तनशील होती है
वे कभी आपके उद्धारकर्ता नहीं हो सकते!
मसीह में आप यह सीखें, भावनाएं तब कुछ भी कहें,
यीशु तब भी आप का उद्धारकर्ता है।

इसाहक ने भरोसा किया कि वह रोएदार एसाव के हाथों को महसूस कर रहा था, परन्तु वे हाथ याकूब के थे। उसने धोखा खाया।

हम ने पहिले कहा कि निश्चय परमेश्वर के वचन से आता है – किन्तु केवल यही एक मार्ग नहीं है। जैसे–जैसे व्यक्ति मसीह में बढ़ता जाता है, उसका निश्चय (आश्वासन) बहुत–सी बातों के द्वारा प्रमाणित होता है। उसे पता होता है कि परमेश्वर उसके भीतर परिवर्तन ला रहें हैं –

- उसमें प्रभु कि आज्ञा पालन करने कि इच्छा होती है (1 युहाना 2:3–6, 17)।
- उसका जीवन धार्मिकता से पूर्ण होता है (1 यूहन्ना 2:29)।
- वह शुद्धता, भलाई और सत्य के प्रति भूख–प्यास रखता है (गलातियों 5:22–24)।
- वह भाईयों से प्रेम करता है (1 यूहन्ना 3:11, 14)।
- प्रार्थना उसके लिए स्वाभाव बन जाती है (गलातियों 4:6)।
- वह परमेश्वर के वचन से प्रेम करता है (1 पतरस 2:2)।
- वह पाप से घृणा करता है (भजन. 97:10)।
- उसमें दूसरों के साथ अपने विश्वास को बटने कि ललक होती है (प्रेरितों के काम 4:20)।
- उसे परीक्षाओं और विरोध का संज्ञान होता है (1 कुरिन्थियों 10:13, 1 यूहन्ना 3:13)।
- वह धीरज के साथ सब कुछ सहता है (इब्रानियों 10:36, 12:5–11)।
- उसे भले कामों कि धुन रहती है (तीतुस 2:14, याकूब 2:14–26)।

क्या किसी व्यक्ति के लिए यह पूर्वानुमान है कि उसका उद्धार हो चुका है? यदि उद्धार कामों से मिलता, तो यह पूर्वानुमान हो सकता था, उस दिशा में उद्धार या तो 'कमाया' जाता या तो उस पर 'हक बताया' जाता। परन्तु उद्धार एक निःशुल्क उपहार है। उस उपहार को विश्वास में ग्रहण करने के लिए मानवीय गुण या प्रवीणता (अर्हता) की आवश्यकता नहीं है, और यह डिंग मरने का अवसर नहीं प्रदान करता। परमेश्वर को वास्तविक झूठा ठहराने में पूर्वानुमान है (1 यूहन्ना 5:10)। परमेश्वर कहते है – "वह जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है" (1 यूहन्ना 5:12)। इस पद पर विश्वास न करने का अर्थ यह कहना है कि परमेश्वर सच नहीं बोल रहें है।

यहाँ कोई प्रश्न कर सकता है, "परन्तु मै कैसे जानु कि मैने सही रूप में विश्वास किया है?" उत्तर आसन है। यदि आप अनंतकालीन उद्धार कि एक मात्र आशा के रूप में प्रभु यीशु पर भरोसा कर रहें है, तब आपने सही रूप में विश्वास किया है, और आपका उद्धार वैसा ही हुआ है, जैसा उद्धार परमेश्वर कर सकते हैं। दूसरी समस्या! मै उस दिन और घड़ी को नहीं जनता, जब पहिली बार मैंने मसीह पर भरोसा किया था। यह संभव है।

कुछ लोग ठीक सही समय बता सकते है जब उन्होंने प्रभु यीशु को ग्रहण किया था। दुसरे (जिनमें मै भी हूं) वह ठीक समय नहीं जानते। इस समय यह जानना अधिक महत्वपूर्ण है कि यीशु कलवरी पर आपके पापों के लिए मरे और आप उसे निज प्रभु और उद्धारकर्ता जानकर भरोसा कर रहें है। परमेश्वर वह ठीक समय जानते है जब अपने सबसे पहिले आगे बढकर मसीह के वस्त्र के छोर को छुआ था, परन्तु आप नहीं जानते और जानना चाहतें है, तो आज, अभी यह कार्य क्यों नहीं करते?

एक संवेदनशील आत्मा पूछती है, "यदि मैंने उद्धार पाया है, तो क्या मेरे विचार यही रहेंगे जो अभी है, क्या मै वही कहूंगा जो कहता हूं, और वही करूंगा जो करता हूं?" उद्धार पा लेने के बाद भी हमारा पुराना मनुष्यत्व (स्वाभाव) हम में रहता है। उसमें सुधार या संशोधन नहीं होता। हमारे भीतर प्रत्येक पाप का बीज है। परन्तु हममे पवित्र आत्मा का निवास भी है। वह हमें आंतरिक पापों के विषय में पाहिले से अधिक जागृकता और समझ देता है। यद्यपि हम सब प्रकार का पाप करने में सक्षम होतें हैं हमें उन्हें न करने कि सामर्थ मिलती है। हम निष्पाप नहीं हो जाते, पर हम पाप करना कम कर देते है। शैतान अक्सर हमारे उद्धार को लेकर हमारे मन में संदेह के बीज बोता है। ऐसे समय में उपाय है कि हम 'परमेश्वर के वचन को' उधृत करें, जैसे कि ने यीशु जंगल में अपनी परीक्षा के दौरान किया था।

एक अंतिम प्रश्नः मैंने मसीह पर भरोसा किया है, पर मेरे पास पवित्र आत्मा कि साक्षी नहीं हैं। क्या मेरे पास पवित्र आत्मा कि साक्षी नहीं होनी चाहिए? जी हां, होनी चाहिए, परन्तु आप क्या सोचते है कि पवित्र आत्मा कि साक्षी क्या है? यदि आप सोचते है कि वह कोई रहस्यमय अनुभव या अनुभूति है, जो सारे बदन में दौड़ती है – घंटियों जैसी आवाजें, प्रकाश कि चमक, स्नायुतंत्र में झुनझुनी जैसा कुछ, तब मै आपकी समस्या को समझ सकता हूं। परन्तु आत्मा कि साक्षी भावनात्मक नहीं है, वह परमेश्वर के वचन के द्वारा साक्षी देता है।

1 यूहन्ना 5:13 से मै यह बात समझना कहता हूं – "मैंने तुम्हे जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" इस पद को वाक्यांश के आधार पर समझो – "ये बातें" यहाँ यूहन्ना का अभिप्राय प्रमुख रूप से उसकी पहिली पत्री से है।

"मैंने तुम्हे लिखा है।" यहाँ "मैने" प्रेरित यूहन्ना है। परन्तु वास्तविक अर्थ में लेखक परमेश्वर है, क्योंकि यह उसकी प्रेरणा से लिखित वचन है। जब हम पढ़तें है कि, "मैंने तुम्हे यह बातें इसलिए लिखी है..." आप समझ सकते है कि परमेश्वर बायबल के लेखक होने के संदर्भ में कह रहें हैं।

"तुम्हे जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो।" जब हम यह पढतें तब हम स्वंय से प्रश्न करते है, "क्या मैंने परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास किया है?" उत्तर है – "हाँ, मै अनन्त जीवन के लिए पूरी तौर पर केवल मसीह के गुणों पर भरोसा कर रहा हूं।"

"तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" यह भावनाओं का प्रश्न नहीं है – यहाँ यह नहीं लिखा है "कि तुम महसूस कर सको।" अनन्त जीवन को पा लेना ऐसा है जिसे आप जान सकते हैं। क्योंकि अपने विश्वास किया है, पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन के आधार पर आपको साक्षी देता है कि, आपके पास अनन्त जीवन है। दुसरे शब्दों में, परमेश्वर के त्रुटिरहित वचन अर्थात बायबल के माध्यम से साक्षी देता है।

अध्याय - 22

अनंतकालीन उद्धार

यदि आपका शिष्य उद्धार पा चुका है, तो उसे जानना चाहिए कि उसने सदा के लिए उद्धार पा लिया है। पर यह उसे बायबल से साबित करने में सक्षम भी होना चाहिए। सबसे पाहिले, बायबल में इस विषय पर सकारात्मक कथन है, उदाहरण के लिए यूहन्ना 10:27–29 पढ़ें –

> "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती है, मै उन्हें जानता हूं और वे मेरे पिछे–पीछे चलती है और मै उन्हें अनन्त जीवन देता हूं। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छिन नहीं सकता। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है और कोई उन्हें पिता के हाथ से छिन नहीं सकता।"

यीशु ने कहा कि मेरी कोई भेड कभी नष्ट नहीं होगी। यदि वे नष्ट होती है तो यीशु ने जो कहा है वह सत्य नहीं है। उस दशा में वह हमारा परमेश्वर नहीं और हमारा विश्वास व्यर्थ है। अन्य बहुत से संदर्भ पदें है जो कहतें है कि हमारा उद्धार अनंतकालीन है।

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। – यूहन्ना 3:16
> जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है। – यूहन्ना 3:36
> यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा। – यूहन्ना 4: 13–14

> मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। – यूहन्ना 5:24

मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। – यूहन्ना 6:47

और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने। – यूहन्ना 17:3

अन्य तरीके भी है जिनके द्वारा हम जान सकते है कि हम कभी नाश नहीं होंगे। जिस क्षण हमने उद्धार पाया, हमने पवित्र आत्मा की छाप पायी (इफिसियों 1:13ब)। पवित्र आत्मा वह मुहर है। वह हम पर स्वामित्व का चिन्ह या प्रतिज्ञा और सुरक्षा की छाप है। वह छुटकारे के दिन अर्थात जब तक हम स्वर्ग न पहुंचे हम पर छाप है (इफिसियों 4:30)।

पवित्र आत्मा हमारी उद्धार कि गारंटी के रूप में दिया गया है, वह हमारी मीरास का बयाना है (इफिसियों 1:14)। पवित्र आत्मा "उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा कि स्तुति हो।" इसका अर्थ है जिस प्रकार हमारे पास पवित्र आत्मा है, एक दिन पूरी मीरास भी होगी, जिसमें महिमामय देह शामिल है।

यहां हमारी अनंतकालीन सुरक्षा का एक और प्रमाण है। हम 'मसीह में' है, परमेश्वर हमें 'मसीह में' देखतें हैं और स्वीकार करतें हैं, इसलिए नहीं की 'हम क्या है' या 'कुछ है,' परन्तु इस लिए कि हम 'उस में' है। हमें दोषी ठहराने के लिए परमेश्वर को मसीह में कुछ पाप या अपूर्णता खोजनी होगी और यह स्पष्ट रूप में असंभव है। हम मसीह कि देह के अंग भी है (1 कुरिन्थियों 12:13)। यह बात तर्क संगत और स्वीकार्य नहीं है कि मसीह अनंतकाल का समय स्वर्ग में कुछ अंगों के बिना व्यतीथ करेंगे।

परन्तु अब हमें इस प्रश्न का उत्तर देना होगा – "जब मसीही पाप करता है तब क्या होता है? क्या उसका उद्धार खो नहीं जाता है?" इसका उत्तर पाने के लिए निचे दिए गए तथ्यों पर विचार करें:

जब हम उद्धार पातें है, हमें हमारे सभी पापों के लिए अनंतकालीन क्षमा प्राप्त होती है – अतीत – वर्तामान और भविष्य के सभी पापों के लिए। जब मसीह हमारे लिए मरा वे सब भविष्य के पाप थे, परमेश्वर उन्हें फिर स्मरण न करेगा। उससे नया सम्बंध बना, हम यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर कि संतान बनें, कोई भी यह सम्बंध तोड़ नहीं सकता। आप के जो शारीरिक संतान पृथ्वी पर है, आप सदा के लिए उनके पिता रहेंगे, ये सम्बंध समाप्त नहीं हो सकते और यही बात स्वर्गीय पिता के सम्बंध में भी सच है।

जब हम पाप करते हैं, परमेश्वर से हमारी सहभागिता टूट जाती है, हमारे सम्बंध नहीं टूटते। सम्बंध एक अटूट शृंखला है जबकि सहभागिता एक कच्चा धागा है। जब तक हम पश्तताप करके वापस नहीं आते, तब तक खुशहाल परीवार कि हमारी भावना अनुपस्थित रहती है। इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करे, हम हमारे पापों के लिए अनंतकालीन क्षमा प्राप्त करते है, जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते है और यह एकबार में हर बार के लिए दी गयी क्षमा है। हम हमारे पापों कि क्षमा, विश्वासी के रूप में तब पातें है जब हम उनका अंगीकार कर उन्हें त्याग देते है (1 यूहन्ना 1:9)। यह बात मसीही जीवन में लगातार होती रहती है। यूहन्ना 13:10 में यीशु की शिक्षा है कि 'नए जन्म का एक स्नान' है, पर धोने का काम बहुत बार होता है।

कभी–कभार पाप करना और पाप की आदत में अंतर है। हम सभी पाप करते है (1 यूहन्ना 1:8, 10, 2:2ब)। परन्तु हम आदत से पाप नहीं करते। हम पापरहित नहीं है पर कम पाप करते है। पाप एक पापी के जीवन पर राज्य करता है (1 यूहन्ना 3:4–6)। इस वृतान्त में, यीशु ने अपूर्ण वर्तमान काल का उपयोग किया है – इसे इस प्रकार पढ़ें, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है। जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप करते हुए नहीं रहता। जो कोई पाप करता है, उस ने उसे न देख है और न ही उसे जाना है। जो धर्म के काम करता है, वही उसके समान धर्मी है, जो कोई पाप करता रहता है, वह शैतान की ओर से है क्योंकि शैतान आरंभ ही से पाप करता आया है। जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह आदतन पाप करता हुआ नहीं रहता।

बायबल में विभेद दिए गए है, यदि आप उन्हें सही रूप में पहिचाने, तो यह विश्वास नहीं करेंगे कि एक विश्वासी खो भी सकता है। एक सच्चे विश्वासी और पाखंडी विश्वासी में अंतर है। एक व्यक्ति कह भी सकता है कि वह मसीही (क्रिश्चियन) है, भले ही उसने नया जन्मा कभी नहीं पाया। गेंहूँ और जंगली बीज के दृष्टांत में (मत्ती 13:24–30), गेंहूँ एक वास्तविक विश्वासी कि तस्वीर है जबकि जंगली बीज स्पष्ट रूप से पाखण्डी विश्वासी है। जंगली बीज भी गेंहूँ के सामान दिखते है, पर उनमें यही एक समानता है।

पाप मे गिरनेवाले विश्वासी और धर्मत्याग करनेवाले व्यक्ति के बिच अंतर है। पाप मे गिरनेवाला विश्वासी परमेश्वर की संतान है जो प्रभु की सहभागिता से बाहर (दूर) है। धर्म का परित्याग करनेवाला व्यक्ति एक बार विश्वास का अंगीकार कर चुका है परन्तु उसने बाद में मसीही विश्वास को पूरी तरह से त्याग दिया है। पतरस विश्वास से पीछे हटा था, परन्तु यहूदा धर्म का परित्याग कर चुका था। चार वृतांत जो धर्म का परित्याग करनेवालों का वर्णन करते है, वे है – इब्रानियों 6:4–8, 10:26–31, और 1 यूहन्ना 2:18–28, 5:16।

सुधार या संशोधन और नए जन्म में अंतर है। दो वृतांत जो सुधार का वर्णन करते है, वे है, मत्ती 12:43–45, और 2 पतरस 2:18–22। हमें उद्धार कि जड़ और फल में अंतर करते समय सावधान रहना चाहिए, विश्वास जड़ है, हम मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार पाते है, भले काम फल है।

बहुत से लोग वृतान्त में अनिश्चयकारी शब्द "यदि" के उपयोग के कारण विचलित हो उठते है –

> "जब हम उसके साथ दुःख उठाये, तो उसके साथ महिमा भी पाएँगे" (रोमियों 8:17)।

> हे भाइयों, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो, नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। – 1 कुरिं. 15:1–2;

> और उस ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है, न छोड़ो। – कुलुस्सि. 1:21, 23

इस सभी 'जब' (If) के उपयोग के द्वारा दर्शाया जाता है की सच्चे विश्वासी कैसे होते है, न की उनका 'नया जन्म' कैसे हुआ था। परन्तु क्या याकूब नहीं कहता कि हम कार्यों से धर्मी ठहरते है? जी हां, वह ऐसा कहता है (याकूब 2:24)। परन्तु उसके कहने का अभिप्राय 'विश्वास' के बदले कार्य' नहीं, और न ही "विश्वास और कार्य" है। वे इस बात पर जोर देते रहें है कि हम उस विश्वास के द्वारा उद्धार पाते है, जो भले कामो को उत्पन्न करता है। विश्वास अदृश्य है। कार्य उसे प्रगट करते है। अब्राहम का भला काम यह था कि वह अपने पुत्र का बलिदान करने को तैयार था। राहाब का भला काम यह था कि वह अपने नगर से विश्वासघात करने तैयार थी। उनके भले काम केवल इस अर्थ में बहुमूल्य थे कि उन्होंने उस वास्तविक विश्वास को दर्शाया जो पाहिले ही वहां था। बिना विश्वास उनके 'भले काम' नहीं होते।

तब हमें यह भी देखना चाहिए की वृतान्त में चर्चा उद्धार की है या सेवा की। 1 कुरिन्थियों 9:27 में पौलुस सेवा के विषय में कह रहे थे:

"परन्तु मै अपनी देह को मारता–कूटता और वश में लेता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मै आप ही किसी रीती से निकम्मा ठहरूं।"

उसे उद्धार खोने का भय नहीं था, परन्तु उसका डर प्रभु के सेवक के रूप में निकम्मा (अयोग्य) ठहरने से था। वह नहीं कहता था कि उसे दरकिनार कर दिया जाए।

हमें उध्दार पाने और फल लाने के बिच के अंतर को समझना होगा। यूहन्ना ने यूहन्ना 15:1–8 में 'फलवंत होने' के विषय में कहा है, पद 8 को पढ़ते समय सावधान रहें! वहां यह नहीं कहा गया है कि परमेश्वर में बने न रहनेवाले मसीही को बाहर फेंक देते है और आग में झोंक देते हैं। वहां लिखा है लोग (They), अर्थात संसार के लोग ऐसा करते है। इस संसार के पास एक मसीही के लिए जो (प्रभु में) जीवित नहीं है या उसके जीवन में बना हुआ नहीं है, तिरस्कार या अनादर के सिवा कुछ नहीं है। वे ऐसे व्यक्ति कि साक्ष को लेकर उसे आग में झोक देते है।

उद्धार और शिष्यता के बिच के अंतर को समझे। एक शिष्य परमेश्वर के राज्य में सेवा करने में अनुपयुक्त या अयोग्य ठहर सकता है (लुका 9:62) पर फिर भी मसिह के सद्‌गुणों के कारण स्वर्ग जाने के योग्य ठहर सकता है। निचे दिए गए वृतान्त उद्धार के मार्ग से नहीं परन्तु शिष्यता से सम्बंधित है: लुका 9:23; 14:26, 33, यूहन्ना 12:25।

गलातियों 6:8 में पौलुस लिखते है: "क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के हाथ विनाश कि कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिए बोता है, आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन कि कटनी काटेगा।" क्या इस में यह शिक्षा मिलती है कि एक मसीही अपना उद्धार खो सकता है? बिलकुल भी नहीं! यहाँ अनन्त जीवन का अभिप्राय भरपूरी के जीवन से है। भविष्य में अनन्त जीवन के आनंद के विभिन्न स्तर होंगे, प्रत्येक व्यक्ति खुशहाल होगा परन्तु कुछ में स्वर्ग के आनंद को पाने की अधिक योग्यता होगी और कुछ में कम। धन के सम्बंध में विश्वासयोग्य भंडारी का दृष्टांत उस योग्यता के निर्धारण का एक तरिका है।

अनन्त सुरक्षा के विषय पर चर्चा करते समय सबसे पाहिले आवश्यक है कि हम स्पष्ट कथनों को एकत्रित करें जिनमें कहा गया है कि विश्वासी में एक जीवन है जो अनंतकालीन है और वह नाश नहीं हो सकता। बहुत से अन्य वृतान्त भी है जिनमे अनन्त सुरक्षा कि चर्चा है परन्तु वे बहुत अधिक शब्दों में वर्णन नहीं करते। अंत में यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि हम विरोधाभासी पदों को उनके संदर्भ में देखें। क्या ये सब पद उद्धार के बारे में है या फिर अन्य किसी विषय पर है? अंत में, हमें अपनी धर्मशिक्षा मानवीय अनुभवों पर आधारित नहीं करनी चाहिए ("मै एक व्यक्ति को जनता हूं......")।

परमेश्वर का वचन हमारा आधार (अधिकार/मान्यता) है। इस विषय पर अधिक गहराई से अध्ययन करने के लिए एक शिष्य को इसी लेखक की पुस्तक "वन्स इन क्राइस्ट, इन क्राइस्ट फॉरएवर" का अध्ययन करना चाहिए।

अध्याय - 23

बप्तिस्मा लो

किसी अन्य व्यक्ति को शिष्यता में लाते समय आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह बपतिस्मे का अर्थ समझता है और उसने स्वंय बप्तिस्मा लिया है। अवश्य है कि आप निचे दिए गए प्रश्नों और उत्तरों के द्वारा कदम–ब–कदम उसकी अगुवाई करें।

बप्तिस्मा क्या है ?

मसीही बप्तिस्मा एक समारोह (विधि) है जिसमें एक नया विश्वासी सार्वजानिक घोषणा करता है कि वह प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलेगा। वह अपने पुराने जीवन के तौर तरीकों का त्याग कर देता है। प्रतिक रूप में वह साक्षी दे रहा है कि वह मसीह के साथ मर गया, मसीह के साथ दफन हुआ, और जी उठा, ताकि नए जीवन किसी चाल चले।

बपतिस्मा यीशु को प्रभु के रूप मे भक्ती की प्रतिज्ञा है। प्रतिक रूप में यह पुराने मनुष्यत्व का दफनाया जाना है। यह मसीह के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन जीने की प्रतिबद्धता है।

बपतिस्मा किसे लेना चाहिए ?

हर व्यक्ति जो मसीह पर विश्वास करने के द्वारा 'नया–जन्म' पाने का दावा करता है, उसे बप्तिस्मा लेना चाहिए। यह विधि इस बात की गारंटी नहीं है कि वह व्यक्ति वास्तव में उद्धार पा चुका है। उद्धार का निश्चय बाद में उसके बदले हुए जीवन और चालचल के प्रमाणों से होगा। बपतिस्मे का आधार व्यक्ति का अंगीकार है कि उसने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा किया है।

यह कब होना चाहिए ?

नए नियम के दिनों में कलीसिया में तुरंत ही बपतिस्मा देने का चलन था, जैसे ही व्यक्ति पश्तताप करता और उद्धारकर्ता पर विश्वास करता, उसे बपतिस्मा दे दिया जाता था। उसके कुछ समय प्रतीक्षा नहीं की जाती थी।

बपतिस्मा किसके द्वारा देना चाहिए ?

महान आदेश (मत्ती 28:19) में यीशु ने अपने चेलों को बपतिस्मा देने की आज्ञा दी, जो मसिह को स्वीकार करते है। कही भी यह संकेत नहीं है कि केवल 'मनुष्यों द्वारा याजकीय पदों पर नियुक्त व्यक्ति' कलीसिया के विधीयों को संपन्न कर सकता है।

यह कैसे दिया जाये ?

आरंभिक कलीसिया पानी में डुबोकर (Immersion) बपतिस्मा देती थी, अर्थात कुछ क्षण के लिये व्यक्ति पानी में पूरी तरह डुबोकर तुरंत बाहर निकाल लिया जाता था। बाद के वर्षों में कुछ कलीसियाओं ने 'पानी छिड़कने', 'पानी लगाने' और सिरपर पानी उंडेलने की विधियाँ स्विकार कर ली। यूहन्ना भी एनोन में बपतिस्मा देता था क्योंकि वहां जल अधिक था (यूहन्ना 3:23)। जब फिलिप्पुस ने इथियोपियाई खोजे को बपतिस्मा दिया, तब वे जल में उतरे, फिलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में गए और बाहर आए (प्रेरितों के काम 8:33–39)। पानी में डुबोकर बपतिस्मा लेना ही बपतिस्मे की सही तस्वीर है, यह पुराने मनुष्यत्व को कब्र में दफनाये जाने और मसीह में नये–मनुष्यत्व में जी उठने को दर्शाता है (रोमियों 6:4)। केवल डूब का बपतिस्मा ही मसीह के साथ उसकी मृत्यु कि समानता में सहभागी हो जाने के सत्य को प्रतिक रूप में दर्शाता है (रोमियों 6:5)।

क्या शिशुओं को भी बपतिस्मा देना चाहिए ?

पवित्र शास्त्र में खोजने पर शिशु के बपतिस्मे का कोई संदर्भ नहीं मिलता। बायबल इस विषय पर मौन है। कुछ कलीसियाओं में बपतिस्मे की विधि द्वारा शिशुओं को कलीसिया का सदस्य बनाया जाता है और स्वर्ग के राज्य का वारिस भी। बायबल से असम्मत यह शिक्षा न केवल सच्चे सुसमाचार का इन्कार है परन्तु बचपन में बपतिस्मा पाए हुओं के बाद का जीवन बचपन के 'बपतिस्मे' को गलत साबित करता है।

क्या बपतिस्मा लेना आवश्यक है ?

यह उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है। नए नियम में 150 बार से अधिक उद्धार को उनके लिए निःशुल्क उपहार बताया गया है जो प्रभु यीशु के व्यक्ति और कार्यों पर भरोसा करते है। यदि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक था, तो यीशु ने कभी क्यों नहीं बपतिस्मा दिया (यूहन्ना 4:1–2)? संत पौलुस क्यों आनंद करता है कि उसने बहुत कम लोगों को बपतिस्मे दिए (1 कुरिं. 1:14–16)? वह डाकू जो क्रूस पर यीशु के साथ चढ़ा, बिना बपतिस्मा लिए स्वर्ग में कैसे गया (लुका 23:43)? यदि मसीह ने हमारे उद्धार के कार्य को पूरा किया है (यूहन्ना 19:30) तो उस पूर्ण कार्य में बपतिस्मे को जोड़ना क्यों आवश्यक है? जब कुरनेलियुस के घराने ने विश्वास किया, उन्होंने पवित्र आत्मा पाया और इस प्रकार उन्हें उद्धार मिला। इस अनुभव के बाद उन्होंने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम 10:44)।

परन्तु आज्ञापालन करने कि दृष्टी से बप्तिस्मा लेना आवश्यक है। मत्ती के सुसमाचार में यह आज्ञा दी गई है, प्रेरितों के काम के पुस्तक में इस पर अमल किया गया है, और रोमियों 6 में इसकी व्याख्या की गयी है। यह मसीही कलीसिया को दी गयी दो विधियों में से एक है (दूसरी प्रभु भोज है)

और इस कारण महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति बिना बपतिस्मा स्वर्ग जा सकता है, पर वह सम्पूर्ण अनंतकाल में बिना बपतिस्मे के रहेगा। हम पृथ्वी पर रहते हुए, मसीह के ह्रदय के खुशी के लिए यह कर सकते है, जब की हम स्वर्ग में बपतिस्मा नहीं ले पाएंगे।

बपतिस्मे को अनिवार्य बताने के लिए बायबल के कुछ संदर्भ पदों का अक्सर उपयोग किया जाता है, उनका क्या महत्व है?

युहन्ना 3:5, "यीशु ने उत्तर दिया, मै तुझ से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

यहाँ बपतिस्मे का वर्णन नहीं है। जल यहाँ परमेश्वर का वचन और पवित्र आत्मा का प्रतिक है, पर बपतिस्मे का नहीं। यहूदियों में अन्यजाती यहूदी बनने पर धर्म परिवर्तन का बपतिस्मा नहीं था। परन्तु यीशु निकुदेमुस से इस बारे में नहीं कह रहे थे, क्योंकि निकुदेमुस दुसरे धर्म से नहीं था, वह न केवल जन्म से यहूदी था, पर यहूदियों का सरदार भी था। यीशु निकुदेमुस से मसीही बपतिस्मे की बात नहीं कर रहे थे क्योकि मसीही कलीसिया पेंतिकुस्त के बाद अस्तिव में आयी।

तीतुस 3:5: ''परंतु उसने अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया।'' यहां बपतिस्में का उल्लेख नहीं हैं। ''नए जन्म ...... के स्नान'' का अर्थ है वह शुद्धता जो नए जन्म से उत्पन्न होती है।

मरकुस 16:16: ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परंतु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।'' यहां बपतिस्मा उद्धार का माध्यम नहीं बल्कि वह सम्भावित सार्वजनिक अंगीकार है जो उद्धार के बाद किया जाता है। इस वचन का अंतिम आधा भाग दिखाता है कि केवल विश्वास ही उद्धार का माध्यम है।

प्रेरितों के काम 2:38, मे पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बप्तिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" यह बात इस्राएलियों से कही गयी थी (प्रेरितों के काम 2:22), वह जाति जो परमेश्वर के पुत्र कि मृत्यु की विशेष रूप से दोषी थी (प्रेरितों के काम 2:23)। बपतिस्मे के द्वारा विश्वास करने वाले स्वंय को यीशु मसीह के हत्या के दोषी यहूदियों (देश/जाति) अलग किया। उन्होंने अपने आप को उस टेढ़ी जाति से बचाया (प्रेरितों के काम 2:40)। केवल उसके बाद ही प्रभु उन पर पवित्र आत्मा भेजने वाले थे।

यही बात प्रेरितों के काम 2:16 पर भी लागू होती है। मसीही के रूप में बपतिस्मा लेकर तर्सुस के शाउल ने मसीह के हत्या से जुड़े पाप को धो दिया और वह उसकी प्रजा को सताने के पाप से मुक्त हुआ। केवल यहूदियों से कहा गया था कि वे उस पाप से छुटने के लिए बपतिस्मा ले। प्रेरितों के काम 2:38 यह अर्थ भी हो सकता है – "बपतिस्मा लो क्योंकि तुम्हारे पश्चाताप करने के फलस्वरूप तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए हैं।" जब आप किसी विज्ञापन/पोस्टर को पढ़ते है – "अपराधी चाहिए (wanted for murder) तब उसका यह अर्थ नहीं कि हत्या करने के लिए अपराधी की आवश्यकता है, परन्तु अपराधी चाहिए क्योंकि उसने हत्या की है। पद 38 में आया शब्द 'के लिए' का अर्थ ' के कारण' (Because of) भी हो सकता है।

1 पतरस 3:21 "यह पूर्व संकेत बपतिस्मा का है, जिसका अर्थ शरीर की बन्दगी दूर करना नहीं, परंतु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के अधीन होना है। अब जो बपतिस्मा तुम्हें यीशु मसीह के पुनरूत्थान द्वारा बचाता है।" नुह और उसके परिवार का छुटकारा हमारे उद्धार की तस्वीर है। इन बातो पर ध्यान दें: जहाज मसीह की तस्वीर है – जलप्रलय परमेश्वर के न्याय का प्रतिक है। परमेश्वर के न्याय (दण्ड) से बचने के लिए जहाज ही एकमात्र मार्ग (विकल्प) था। जहाज का पानी में बतिस्मा हुआ, वे सब जो जहाज के भीतर थे, जहाज के बपतिस्मे के कारण जीवित बच गए। वे जो जल में थे, उनका सर्वनाश हो गया।

अब इसके विपरीत प्रकार से सोचे। मसीह परमेश्वर के न्याय (दण्ड) से बचने का एकमात्र मार्ग है। वह ईश्वरीय क्रोध के जल (जलप्रलय) में डूबा (बतिस्मा लिया)। उसने अपनी मृत्यु को बपतिस्मे से जोड़ा। "मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है और जब तक वह न हो ले तब तक मै कैसी व्यथा में रहूंगा" (लुका 12:50, साथ ही पढ़ें भजन 42:7, और मत्ती 20:22)।

वे जो मसीह में है अर्थात जो उसपर विश्वास कारते है, वे उद्धार पा चुके है। वे जो शाब्दिक रूप में जलप्रलय के जल में बपतिस्मा पाए थे वे नाश हुए। इस का कारण इस वृतान्त के द्वारा 'बपतिस्मे से उद्धार की शिक्षा नहीं दी जा सकती। हमने उद्धार पाया, अपने बपतिस्मे के द्वारा नहीं पर कलवरी पर मसीह के मृत्यु के बपतिस्मे के द्वारा पाया है।

इन पदों के सदर्भ में जिनका उपयोग 'बपतिस्मे के द्वारा उद्धार' देने की शिक्षा देने में किया जाता है, बार–बार यह कहने की आवश्यकता है कि 'कुछ थोडे पद' उन बहुसंख्य पदों के विपरीत शिक्षा नहीं देते है कि उद्धार केवल विश्वास से, और केवल विश्वास से है।

स्पर्जन सही थे जब उन्होंने लिखा:

> आप एक व्यक्ति को अनंतकालीन बारिश में पकड़कर रख सकते है, पर उसे 'मसीह का अंग' नहीं बना सकते। या फिर आप उसे अटलांटिक सागर में घसीटें और यदि वह जल में डूबने के बाद भी जीवित बाच जाए, वह एक बिंदु बराबर भी बेहतर नहीं होगा। द्वार बपतिस्मा नहीं पर मसीह है। यदि आप मसीह पर विश्वास करते है जो परमेश्वर के उद्धार का महान मार्ग है, तो आपके पास प्रमाण है कि उसने आपको संसार कि नींव रखे जाने से पूर्व चुन किया था – और आपका यह विश्वास आपको वह सब देता है जिसकी प्रतिज्ञा मसीह ने अपने वचन में विश्वासियों से की है।

अध्याय - 24

प्रभु - भोज

लुका 22:7-20, 1 कुरिन्थियों 11:13-34

जिस रात प्रभु यीशु पकडवाये गए, उस रात उन्होंने एक विधि की स्थापना की, जिसे बाद में 'प्रभु भोज' कहा जाने लगा। यह एक सभा थी जिसे करने का उद्धेश्य लोगों को उसकी मृत्यु का लगातार स्मरण कराना था। रोटी और दाख के रस में सहभागी होने के द्वारा वे स्मरण करते थे कि परमेश्वर के पुत्र ने उनके लिए अपनी देह दी और उनके छुटकारे के लिए अपना लहू बहाया था। यह उद्धारकर्ता के स्पष्ट अनुग्रह पर किया जानेवाला आज्ञाकारिता का कार्य है –"मेरे स्मरण के लिए यही किया करो" (1 कुरिन्थियों 11:25)। और यह उसे प्रसन्न करने का एक तरीका भी है जो हमें इस जीवन में ही प्राप्त है।

जब हम उसे स्मरण करने के लिए एकसाथ एकत्रित होते हैं हम मत्ती 18:20 का दावा करते है कि वह हमारे बिच में वहां उपस्थित है। हमारे लिए यह संभवतः सबसे बड़े सौभाग्य है। हम विश्वास करने के द्वारा उसकी उपस्थिति को पाते है। वेरनन शिल्फ ने अपनी पुस्तक 'अवर ग्रेट एडवेंचर इन फेथ' में इसे अच्छी तरह स्पष्ट किया हैः

> प्रभु के दिन – रविवार की एक सुबह, जब मसीही लोग प्रभु के स्मरण के लिए एक साथ एकत्रित हुए, मेरी परदादी ने सर उठाकर खिड़की से बाहर देखा और वह कुछ दूर पर बने खलिहान को देखकर घबरा गई, उसमें आग लगी थी और लपटें छत को छु रही थी। उन्होंने अपने पति को हीलाया और उत्तेजित स्वर में उनके कान में फुसफुसाकर कहा – "जॉन हमारा खलिहान जल रहा है" बिना सीर उठाये, उन्होंने फुसफुसाकर पत्नी को उत्तर दिया – "हुश! अभी हम परमेश्वर कि उपस्थिति में है।"[39]

प्रभु का स्मरण करना, अनिवार्य रूप में आराधना, धन्यवाद और स्तुति प्रशंसा में ले जाता है। ऐसे समय एक व्यक्ति अपनी सर्वोच्च नियति अर्थात परमेश्वर की अराधना में स्वंय को पाता है। वह परमेश्वर के आराधकों की चाह संतुष्ट करता है (युहन्ना 4:23) और स्वंय को उस शुद्ध किये गए कोढ़ी के समान

नहीं बनाता जो शुद्ध होने के बाद वापस धन्यवाद देने के लिए नहीं आया (लुका 17:22–19)। बायबल हमें यह निर्देश नहीं देती कि हमें प्रभु भोज कितनी बार मनाना चाहिए। यीशु ने कहा था – "जब कभी" (1 कुरिन्थियों 11:26)। चेले प्रत्येक प्रभु के दिन (रविवार) प्रभु भोज लेते थे (प्रेरितों के काम 20:7)। हम उनके उदाहरण का अनुसरण करके दर्शा सकते है कि हम उससे कितना प्रेम रखते है। इसे बार–बार करने में कोई खतरा नहीं है। कलवरी अनवरत सराहना और उपासना के कारण प्रदान करती है।

विश्वासयोग्यता के साथ प्रभू भोज में भाग लेने से विश्वासी के जीवन पर पवित्रता लाने वाला प्रभाव पड़ता है। वह प्रभु भोज में भाग लेने से पहिले अपने सभी ज्ञात पापों का अंगीकार करता है और उन्हें त्याग देता है (1 कुरिन्थियों 11:27–32)। दाखरस और रोटी की सहभागिता के द्वारा आराधकों को एन चित्रमय स्मारक मिलता है कि उद्धारकर्ता ने उसके पापों का क्या मूल्य चुकाया था, और यह सोचकर उसे पाप में आगे बढने या फिर से करने से स्वंय को रोकने की बड़ी शक्ति मिलती है। इसके साथ यह तथ्य भी है कि हम जिसकी आराधना करते है उसके सामान बनते है। हम जितना अधिक उसपर दृष्टी करते है प्रभु की आत्मा के द्वारा हम उतना ही अधिक उसके समानता (स्वरुप) में बदलते जाते है (2 कुरिन्थियों 3:18)।

हमारा प्रभु के साथ अनुबंध समय होता है और जब हम नहीं जाते, वे प्रतीक्षा करते है। हम यह लुका 7:45–46 से समझते है, यदि उसे फरीसी का चुम्बन नहीं मिला, और उसकी ओर से सुगन्धित इत्र से उसके पाँव नहीं धोये गए, जिसकी उसे आशा थी तो अवश्य है कि वह उस प्रेम को चाहता है जो हम उसे 'प्रभु–भोज में दे सकते थे, पर हमने नहीं दिया।

अध्याय - 25

अब मार्गदर्शन के विषय में

सबसे महत्व पूर्ण बात है कि व्यक्ति अपने आत्मिक जीवन की दशा में परमेश्वर के मार्गदर्शन को समझे। ध्यान दें!

> यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चला कर.........उत्पत्ति 24:27
>
> वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा। – भजन 25:9
>
> सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। – नीतिवचन 3:5–6
>
> इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। – रोमियों 12:1–2

ये वचन अलग–अलग तरीकों से कह रहें है कि हमें सुनने के लिए निकट रहना चाहिए। यह वह चेला था जो यीशु की छाती सर पर रखता था, जिसे परमेश्वर ने मसीह यीशु का प्रकाशन दिया। वे जो मसीह में बने रहते है, उनपर वह अपने मन और इच्छा की बातों को प्रगट करता है। हम सबके जीवनों के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है, हमें योजना बनाने कि आवश्यकता नहीं है। हमें बस इतना करना है कि उस योजना को खोज लें कि वह क्या है, तब उस पर अमल करें। इसलिए यहाँ कुछ महत्व पूर्ण चरण दिए है:

1. पूरी इमानदारी के साथ परमेश्वर की योजना जानने की अभिलाषा करें। आत्मिक गहराई में न जाने वालों या सरसरी तौर सलग्न होंने वालों को वह अपनी योजना नहीं बताता जिनकी रुचियाँ केवल सतही होती है।

2. यह मानिये की आप नहीं जानते कि किस मार्ग पर चले – "हे यहोवा, मै जान गया हूं कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है और उसके डग उसके अधीन नहीं है" (यिर्मयाह 10:23)। जैसा की हम नीतिवचन 3:5 में देख चुके है, हमें अपनी समझ का सहारा नहीं लेना है।

3. सभी बातों के लिए प्रभु पर पूरा भरोसा रखें। उसने अपनी इच्छा प्रगट करने की प्रतिज्ञा दी है; अब विश्वास करें कि वह ऐसा करेंगे। "तुम में कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अंधियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखें और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रखें" (यशायाह 50:10)। आप अपने लिए जो सोच सकते है, परमेश्वर के पास आप के लिए उससे भी बेहतर है। उसे वे विकल्प पता है जिन की आप कभी कल्पना भी नहीं कर सकते।

4. बिना किसी शर्त आप उसे समर्पण करें (रोमियों 12:1–2)। इसका अर्थ है, अपनी कोई इच्छा न रखना, और पूरी रीती से उसके प्रति स्वंय का समर्पण करना। जैसा कि किसी ने कहा है, "कोई शर्त नहीं, पीछे हटना नहीं, कोई पछतावा नहीं।" ऐसा करने पर आप प्रभु के लिये स्वंय को उपलब्ध बनाते है।

5. जैसे ही आपको जीवन में किसी पाप का पता चले, उसका अंगीकार करें (1 युहन्ना 1:9)। यह आपको शुद्ध (पवित्र) रखेगा। यदि आप उपलब्ध और शुद्ध है, तो यह परमेश्वर की जिम्मेदारी है कि वह आप पर अपनी इच्छा प्रगट करे।

6. उसकी इच्छा का प्रकाशन मिलने के लिए लगातार प्रार्थना करें – "हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल" (भजनसंहिता 27:11)। बड़े–बड़े मामलों में, मै प्रभु से मांगता हूं कि वह दो या तीन गवाहों के मुख से अपने मार्गदर्शन को प्रमाणित करें (मत्ती 18:16)। यदि वह अपनी इच्छा के प्रति दो या तीन स्पष्ट प्रमाण देता है, तब मै उसे अवश्य करता हूं।

7. परमेश्वर के वचन में अधिक समय व्यतीत करते हुए स्वंय को इस दशा में रखे कि आपको यह प्रकाशन प्राप्त हो। "तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे पथ के लिए उजियाला है" (भजनसंहिता 119:105)।

8. अलग संभावनाएं होने पर दोनों संभवनाओं या प्रत्येक संभवनाओं के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें। मुझे जितनी अधिक जानकार होगी, परमेश्वर को मुझे मार्गदर्शन देना, उतना ही अधिक आसान होगा। एक कागज पर 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' दोनों बातें लिख लें। कभी–कभी इससे ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिलती है।

9. भक्त प्राचीनों और अन्य विश्वासियों से परामर्श ले जिनके आत्मिक–निर्णयों का आप सन्मान करते है। उनसे परामर्श न लें जो आपसे वही कहेंगे जो आप सुनना चाहते है।

10. अपने लिए स्वंय 'परामर्श' या 'मार्गदर्शन' तैयार करने की परीक्षाओं में न पड़ें।

> "देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्नि बाणों को कमर में बांधते हो। तुम सब अपनी आग में जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्नि बाणों के बिच आप ही चलो – तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम संताप में पड़े रहोगे" (यशायाह 50:11)।

11. प्रतीक्षा करने तैयार रहें। यह प्रक्रिया का अक्सर सबसे अधिक काठीण चरण है। प्रतिक्षा करें, जब तक की मार्गदर्शन एकदम स्पष्ट न हों, इतना स्पष्ट कि उसे सकारात्मक रूप में मना करना अनाज्ञाकारिता ठहरे। यदि आप धीरज खो बैठे, तो स्मरण करें कि यीशु ने नसरत में 30 साल बिताए थे। "जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा" (यशायाह 28:16)। परमेश्वर कभी जल्दी में नहीं होते, यदि आप उस पर भरोसा कर रहे है तो आपको भी जल्दबाजी (अधीरता) नहीं करनी चाहिए। सी. आय. स्कोफिल्ड ने कहा था – "विश्वास इस आश्वासन या निश्चय पर आधारित होता है कि परमेश्वर इतनी जोर से अवश्य बोलते है कि प्रतीक्षा करने वाली उनकी संतान उन्हें सुन सके। हमारा काम है कि जब तक पूर्ण निश्चय न हों, हम धीरज के साथ चुप चाप प्रतीक्षा करे।"

यदि आप मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना कर रहें है और कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता, परमेश्वर का मार्गदर्शन आपके लिए यह है कि आप जहां है, वही रहे। आगे बढ़ने में अन्धकार का अर्थ ठहरे रहने में प्रकाश है। स्मरण करें, निर्गमन 40:36 धुएँ का स्तंभ (बादल) मार्गदर्शन करता था, जब वह चलता था, तभी लोग चलते थे। आप भी तब ही चलें। मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करते हुए, स्वंय को परमेश्वर के लिए व्यस्त रखें। "जो काम तुझे मिले उसे अपनी पूरी शक्ति भर करना" (सभोपदेशक 9:10)। "हमारे कर्तव्यों को पूरा करना हमारा कर्तव्य है। यह सरल तथ्य जीवन के बड़े भाग को संचालित करता है, जिसके लिए अलग से मार्गदर्शन खोजने की आवश्यकता नहीं है" (जे. ओस्वाल्ड सैंडर्स)। अब हम एक कदम आगे चले और इस प्रश्न का उत्तर खोजें, परमेश्वर कैसे मार्गदर्शन देते है?

1. वे बायबल से मार्गदर्शन देते है। पवित्र शास्त्र में उनकी सामान्य इच्छा दी गयी है। वे कभी ऐसे मार्ग से अगुवाई नहीं करेंगे जो वचन के विपरीत हो। परन्तु अक्सर वे एक विशेष वृतान्त या संदर्भ पदों के द्वारा बातें करतें है। जब आप वचन पढेंगे, एक पद उभर कर आएगी, मानो परमेश्वर आपसे मौखिक रूप से बातचीत कर रहें है। यह किसी दुसरे को स्पष्ट रुप में समझ नहीं आयेगा, परन्तु आपके लिए यह परमेश्वर की इच्छा होगी।

2. परमेश्वर दूसरों की सलाह के द्वारा भी मार्गदर्शन देते है। "सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि अनंतकाल में बुद्धिमान ठहरे" (नीतिवचन 19:20)। सामान्य रूप में सबसे उत्तम परामर्श आत्मिक रूप से उन्नत संतो से प्राप्त होता है, परन्तु इस संभवना को नकार न दें कि एक उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति भी मार्गदर्शन कि आपकी खोज से अनजान, पाहिले से सोचे बिना भी उस बात का बिल्कुल सही उत्तर दे सकता है, जिसे लेकर हम परेशांन है।

यहाँ मै आपको चेतावनी देता हूं कि जब परमेश्वर की बुलाहट आती है, अक्सर निराशाजनक बातें सुनने में आती है। जब परमेश्वर ने क्रिकेट के महारथी सी. टी. को स्टड बुलाहट दी, उनके कुछ मित्रों ने आलोचना कि, "तुम पागल हो, क्रिकेट छोड़कर मिशनरी बनोगे, क्या तुम रुक नहि सकते जब तक की तुम्हारा क्रिकेट खेलने का समय पूरा नहीं हो जाता? क्या तुम क्रिकेटर के रूप में परमेश्वर के लिए अधिक बेहतर रूप में नहीं कर सकते? तुम क्यों मिशनरी बनकर ऐसे स्थान में जाना चाहते हो, जहां उन्होंने कभी क्रिकेट के बारे में नहीं सूना? यदि परमेश्वर सचमुच तुमसे बातें कर रहे है तो आप ऐसे वास्तविकता को मूर्खतापूर्ण जानेंगे।

3. पमेश्वर कभी–कभी परिस्थितियों के साम्य द्वारा भी बातें करते हैं – समय पर किसी पत्र की प्राप्ति या टेलीफोन पर किसी से बातचीत इत्यादि।

4. परमेश्वर पवित्र आत्मा कि व्यक्तिगत साक्षी के द्वारा भी बातें करते हैं, वे आपकी बुद्धि, भावनाएं और आपकी इच्छा में भी प्रभाव डाल सकते है कि आप आश्वस्त होकर जान ले कि आप परमेश्वर की इच्छा जानते है। हमें अधिक सावधान होना चाहिए जब मार्गदर्शन व्यक्तिगत हो, परन्तु तथ्य यह है, परमेश्वर हमारे विचारों और इच्छाओं में फेरबदल करके, हमारे ह्रदय पर बोझ डालकर हमसे बात कर सकते है और करते भी हैं – "क्योकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सु–इच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातें करने का प्रभाव डाला है" (फिलिप्पियों 2:13)। किसी ने कहा है – "जब शान्ति का कबूतर (पवित्रात्मा) ह्रदय से उड़ चुका हो, तब कार्य करना मुर्खता है।

5. प्रभु रुकावटों के द्वारा भी मार्गदर्शन करते हैं। ध्यान दें!

> "वे फ्रुगिया और गलतिया के प्रदेशों से होकर गए, क्योंकि पवित्रात्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया था। उन्होंने मुसिया के निकट पहुचकर बितुनिया जाना चाहा परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया" (प्रेरितों के काम 16:7)।

यह किस प्रकार की अगुवाई थी? यह मार्गदर्शन प्रतिबन्ध के द्वारा था। यह बंद दरवाजों कि सेवकाई थी। प्रेरितों के पास वह सन्देश आया जिसे फ्रेंड्स (Quakers) मन में रूकावट का सन्देश कहते है। उसके मन पर प्रतिबन्ध आया अर्थात विचारों में, और उसे आगे बढ़ने की स्वतंत्रता नहीं मिली। उसने महसूस किया की उसके उद्देश्य को गुप्त रूप में एक अजेय बाधा के द्वारा रोका गया है। कुछ विशेष दिशाओं में उसने आत्मिक स्वतंत्रता का अनुभव नहीं किया और इस कारण उसने मना की मार्ग अवरुद्ध था। "परमेश्वर का स्वर्गदूत मार्ग में रूकावट बनकर खड़ा था।" मेरा विचार है कि इस बात पर जोर देने की अत्यधिक आवश्यकता है, परमेश्वर कभी–कभी नकारात्मक बातों के द्वारा हमें अगुवाई देते हैं। 'बंद दरवाजा' इसकी इच्छा का संकेत है। हम आगे जाना कहते है परन्तु आत्मा जाने नहीं देता।[40]

6. और अंत में वह मसीह के उदहारण के द्वारा हमारी अगुवाई कर सकता है। प्रभु यीशु क्या करते? "परमेश्वर हमें कभी उस मार्ग में अगुवाई नहीं करेंगे जिसमे मसीह की शिक्षा और चरित्र (स्वभाव) मेल नहीं खाते" (जे. ओ. सैंडर्स)।

कुछ लोग गिदोंन के सामान मैदान में ऊन रखने का – दृढतापूर्वक विरोध करते है (न्यायियों 6:37–40)। इसका अर्थ है, हम परमेश्वर का मार्गदर्शन मांगते है, यह कहकर कि कुछ शर्तें हमने तय

की है, उन्हें पूरा करे या ना करें। हम व्यावहारिक रूप में निश्चय पाना कहते है और इस कारण सदैव मैदान में ऊन रखने का जोखिम उठाते है। यदि कोई परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित है और पूरी इमानदारी से उसे पूरा करना चाहता है, मै नहीं चाहता कि हम परमेश्वर की सीमाएं बांधें। वह हमारी निर्बलताओं को समझ सकता है, और उन्हें सहन कर सकता है। उसने मेरे लिए ऐसा किया भी है।

एक पुराने प्रचारक अक्सर युवाओं को परामर्श देते हुए कहते थे – 'बलिदान पर पानी डालो' – वे एलिय्याह के दिनों का स्मरण करते हुए कहते थे, जब एलिय्याह प्रार्थना में 'स्वर्ग से आग' मांगने वाला था। ऐसा करने से पाहिले उसने लोगों को कहा कि चार घड़े भरकर बलिदान और लकड़ी पर ऊँडेल दो। उसे दो बार और तीसरी बार भी करने की आज्ञा दी। एलीयाह नहीं चाहता था कि संयोगवंश वहाँ आग लगे। उसने ऐसी स्थिति उत्पन्न कि जब आग गिरी तब यह दिखाया कि वह आग केवल परमेश्वर यहोवा का संपन्न कार्य था। इसी प्रकार, मार्गदर्शन प्राप्ति के उद्देश्य से हमें ऐसी स्थितियां उत्पन्न करनी चाहिए कि मार्गदर्शन केवल परमेश्वर के वचन से हो।

कभी–कभी मार्गदर्शन सुस्पष्ट होता है, कभी–कभी उतना स्पष्ट नहीं होता। परमेश्वर एकबार में एक कदम की अगुवाई देते है, वे हमें सम्पूर्ण तस्वीर नहीं दिखाते। परन्तु मै इस पर विश्वास करता हूं। कोई भी जो परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने के लिए इमानदारी से खोज करता है, वह कभी निराश (असफल) नहीं होता, उसे मार्गदर्शन मिलता है। परमेश्वर की इच्छा भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध है। वह ऐसी नहीं है, जैसा कुछ लोग सोचते हैं – खतरनाक, नापसंद करने योग्य और ऐसी जिसे हम करना नहीं चाहते।

अध्याय - 26

अपनी बाइबल को जाने

> हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। – 2 तिमुथियुस 3:16–17

इस पुस्तक बाइबल की अद्‌भुत बातो पर विचार करे। कल्पना करे! यह परमेश्वर का वचन है। पृथ्वी पर हमारा सबसे अधिक बेशकीमती धन पवित्र–बाइबल। हमें वैसे स्त्री पुरुष होना चाहिये जिन्हें इस पर दृढ़ विश्वास हो। आज बाइबल के बारे में निर्विवाद और मानने योग्य बातें करनेवाले बहुत से लोग है (जो स्वयं उन सत्यों को नहीं मानते)। कलीसियाओं में ऐसे भी लोग है जो दो मुंही बातें करने में दक्ष है। वे बाइबल के अधिकार पर चर्चा करने से संकोच नहीं करते परन्तु वे यह नहीं कहते कि बाइबल परमेश्वर की श्वास या प्रेरणा से लिखा गया 'परमेश्वर का वचन है। अवश्य है कि हम ऐसे स्त्री –पुरुष हो, जो

दृढ़ता पूर्वक विश्वास करे, जो जानते हो कि हम पवित्र शास्त्र के बारे में क्या विश्वास करते है और जो उसकी रक्षा के लिये खड़े होने के लिए हो और उन पर भरोसा किया जा सके।

बाइबल पृथ्वी की उन कुछ वस्तुओं में से एक है जो स्वर्ग में भी होगी। क्या यह अद्‌भुत नहीं है? *हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।* (भजन 119:89) *आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।* (मत्ती 24:35)। यहां यह पुस्तक, अनंतकाल की पाठ्य पुस्तक है। कैसी चुनौती है। इस पुस्तक में हमारे पास सत्य है। यीशु ने कहा – ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। कभी–कभी मैं सोचता हूं कि हम इसे इतना अधिक सुनते है कि हम पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्वर्गदूतों को चकित कर देने के लिए पर्याप्त है! बाइबल, परमेश्वर का सत्य है।

भजन संहिता 119 का लेखक सोच सकता था और परमेश्वर के वचन के बारे में 176 अच्छी – अच्छी बातें कह सकता था। आप और मैं कितना अच्छी बातें सोच सकते है? यह एक चुनौती है, है

ना? भजन कार लिखता चला जाता है, एक बात को दोहराए बिना, और बताता है कि परमेश्वर के बेश किमती वचन का उसके लिये क्या अर्थ है।

भला हो कि हम समर्पित पुरुष और स्त्रियां हो। आइये, हम पवित्र शास्त्र की प्रेरणा के प्रति समर्पित हो –"समस्त पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया।" समस्त पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की श्वास है। जब लोग लिखने बैठे, उन्होनें वही लिखा जिसकी प्रेरणा उन्हें पवित्रात्मा ने दी। हम उसकी सम्पूर्ण तकनीक नहीं समझते, हमारे लिये उसे समझना आवश्यक भी नहीं है। इतना जान लेना ही पर्याप्त है कि बाइबल न केवल अधिकार युक्त है, वरन् वह परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गयी है।

हमें न केवल पवित्रशास्त्र की सामान्य प्रेरणा की आवधारणा के प्रति समर्पित होना चाहिये, परन्तु पवित्रशास्त्र की मौखिक प्रेरणा की अवधारणा के भी प्रति समर्पित होना चाहिये। 1 करिन्थियो अध्याय 2 खोले, इस अध्याय में प्रेरित पौलुस हमें तीन बातें बताते है। वे हमें प्रकाशन देते है (पद10)। तब वे प्रेरणा के विषय पर आते है (पद 13 अ)। अंत में वे प्रकाश की बात करते है (पद 13 ब)। कृपया पद 13 पर ध्यान दे, प्रेरणा के विषय पर बातें करते हुये पौलुस, आपके और मेरे बारे में नहीं, परन्तु स्वयं अपने बारे में और प्रथम शताब्दी के सब अन्य प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के बारे में कह रहे है जिन्होने हमें नया नियम दिया। "जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नही, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में....।"

अब आपको 'परन्तु' (but) और 'जिसे' (which) के बीच एक शब्द रखना होगा। और वह शब्द कौन सा है? वह शब्द (बहुवचनी) है, अब आप इस पद को पुनः पढ़े – जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई बातों (शब्दों मे) सुनाते है।" इसका अभिप्राय है कि पवित्रशास्त्र के प्रत्येक शब्द प्रेरणा द्वारा लिखे गये है। बाइबल मौखिक रुप में भी प्रेरित है। परमेश्वर ने यशायाह से यह नहीं कहा, "यशायाह, यह सामान्य रुपरेखा है और जैसा तुम ठीक समझो वैसे शब्द लिख लो।" यशायाह ने बैठकर वहीं शब्द लिखे, जो परमेश्वर ने उसे पवित्रात्मा के द्वारा दिये – वे शब्द जिसको पवित्रात्मा सिखाता है।

तब पौलुस ने प्रकाश की चर्चा की है – "आत्मिक–बातों को आत्मिक बातों से मिला–मिलाकर।" मानना होगा कि यह एक कठिन वाक्यांश है। मेरी भावना है कि इसका अर्थ है – "आत्मिक सत्यों को आत्मा द्वारा दिये शब्दों में बताना।" यह दर्शाता है कि उसने हमें सत्य कैसे बताया। उसने आत्मिक धर्म शिक्षा को प्रेरणाप्राप्त शब्दों के द्वारा सिखाया।

भला हो कि हम पवित्रशास्त्र की मौखिक प्रेरणा की अवधारणा के प्रति समर्पित हो। साथ ही हम पवित्रशास्त्र की सम्पूर्ण प्रेरणा की अवधारणा को भी मानें। यह पुस्तक (बाइबल) उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक प्रेरणा द्वारा रचित है। प्रभु यीशु ने कहा कि यह प्रेरणा केवल शब्दों तक सीमित नहीं है – परन्तु मात्रा और बिंदुओ तक है। यहां 'मात्रा' का अभिप्राय 'शब्द' या अक्षर से नहीं था, पर अक्षर लिखने के तरीके (हाथ के हिलाने) से था।

प्रेरणा का विस्तार संज्ञा शब्द के एकवचन और बहुवचन में भी है। गलतियों 3:16 में पौलुस ने 'वंश' (एकवचन) और 'वंशो' (बहुवचन) के बीच का भेद स्पष्ट किया है – "अतः प्रतिज्ञाएं अब्राहम को

और उसके वंश को दी गई, वह यह नहीं कहता कि वंशों को, जैसे बहुतो के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में "तेरे वंश को," और वह मसीह है।"

अवश्य है कि हम न केवल पवित्र शास्त्र के प्रेरणा द्वारा लिखे जाने की अवधारणा के प्रति समर्पित हो, परन्तु इस तथ्य के प्रति भी कि बाइबल परमेश्वर की ओर से मनुष्यों को दिया गया 'अंतिम प्रकाशन' या संपूर्ण प्रकाशन है। यहूदा ने अपनी पत्री के पद 3 में कहा है, "उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौपा गया है" एक बार में सदा के लिये। उसमें कुछ भी जोड़ा नहीं जा सकता।

हमें बाइबल की पर्याप्तता के प्रति भी समर्पित होना चाहिये। पतरस ने 2 पतरस 1:3 में हमे यह स्मरण दिलाया है – " उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सबकुछ जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है, हमें उसी की पहिचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है।" इस अभिव्यक्ति पर ध्यान दे, "सबकुछ जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है।"

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का वचन पर्याप्त है – परमेश्वर का वचन और मॉरमन की पुस्तक नहीं। यह नहीं कि – परमेश्वर का वचन और विज्ञान एवं स्वास्थ, साथ में पवित्रशास्त्र की कुंजी। न कि 'वचन' और अनुभव, न कि बाइबल और विश्वासियों की बाइबल टीका, न कि बाइबल और मनोविज्ञान या दार्शनिकता या ऐसी अन्य कोई वस्तु। बाइबल स्वयं में पर्याप्त है, और मुझे 2 तीमु. 3:17 मे लिखा बहुत प्रिय है,"ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने।" वहां शब्द सिद्ध का वास्तव में अर्थ पर्याप्त है। यह अद्‌भुत है ना? इसका अर्थ है, वह व्यक्ति जो परमेश्वर का वचन पढ़ता, अध्ययन करता, मनन करता और उसे कंठस्थ करता, उस पर अमल करता है वह एक पर्याप्त व्यक्ति बन जाता है।

तब हमें परमेश्वर के वचन की त्रुटिहीनता की अवधारणा के प्रति भी समर्पित होना चाहिए। यूहन्ना 8:31–32 मे प्रभु यीशु ने कहा....*यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।* विज्ञान की कोई भी सच्ची खोज कभी भी पवित्रशास्त्र को वास्तविक व्याख्या के विपरीत नहीं होगी। उनके लिये ऐसा करना असंभव होगा क्योंकि परमेश्वर ही दोनों पुस्तकों का लेखक है। वह बायबल का लेखक है, और वो ही विज्ञान का भी लेखक है। आज हम लोगों को इस विषय पर वादविवाद करते हुये सुनते है। लोग यह भी कहते हैं कि बाइबल में त्रुटियां है। अमरीका की एक तथाकथित सुसमाचार प्रचारकीय सेमिनरी के एक शिक्षक ने कहा, "हम जानते हैं कि बाइबल में त्रुटियां है। यीशु ने कहा कि राई का दाना सब बीजो में सबसे छोटा होता है। हम जानते हैं कि राई का दाना सबसे छोटा बीज नहीं है, इस कारण, बाइबल में त्रुटि है।" यह वास्तव में दयनीय सोच है कि सेमिनरी का एक प्रोफसर इस प्रकार का निष्कर्ष निकाले, जैसे कि प्रभु यीशु राई के दाने पर वैज्ञानिक व्याख्यान दे रहे थे जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं था। मैं उन लोगों को देखता हूं जो बाजार से गुजरते है और दुकानों मे बेचने के लिये रखे विभिन्न मसालों पर नजर डालते है, या एक स्त्री जो घर में किचन केबिनेट खोलकर मसालों को खोजती है, उन सबकी दृष्टि में राई का दाना सबसे छोटा बीज है। आपने देखा, जब उसने यह कहा तब उसका अर्थ यह नहीं हुआ कि

बाइबल में त्रुटि है, न यह कि यीशु गलती कर सकते है। आइये, हम परमेश्वर के वचन के त्रुटिरहित होने की अवधारणा के विषय में दृढ़ – विश्वास रखे।

वर्षो पहिले, मैंने बी. एच. कैरोल का यह उद्धरण पढ़ा और मै चहक उठा। मै तब से इसके बारे में सोचता आया हूं। उसने कहा, "जब मैं लड़का था, मुझे बाइबल में एक हजार परस्परविरोधी बाते मिलती थी, मैंने उनपर चिहं बना दिये। तब मेरे पास आज की अपेक्षा एक हजार अधिक विरोधाभासी कथन थे। अब मेरे पास बाइबल में कुछ आधी दर्जन बातें हैं जिन्हें मैं संतोषजनक रुप में स्वयं को समझा नहीं सकता, परन्तु मैंने हजार में 994 बातें ऐसी देखी हैं जो तत्वतः अलग है पर एक दूसरे को समझाती है और संगत रखती है, मानों दो तार एक सुर में बजते है।" और उसने कहा "मैं यह सोचने लगा हूं कि अगर मुझे थोड़ा और संज्ञान होता, मैं बाकी छह को भी समझ लेता" यही बात है। यही सत्य है। भला हो कि हम परमेश्वर के वचन के त्रुटिरहित होने की अवधारणा के प्रति समर्पित रहे।

आइये हम परमेश्वर के वचन को पढने के प्रति समर्पित रहें। यह अति–आवश्यक है। जो परमेश्वर का वचन पढ़ते है, उन पर एक विशेष आशीष की आज्ञा दी गई है। यह विशेष रुप में प्रकाशितवाक्य के लिये कहा गया है कितुं समस्त बाइबल के लिये भी यह उतना ही सत्य है। *धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इस में लिखी हुई बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट आया है।* (प्रकाशितवाक्य 1:3)

बाइबल को केवल पढ़ना पर्याप्त नहीं है। अवश्य है कि हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन के लिये समर्पित हो। मुझे स्मरण है, जब मैं युवा था, मुझे लगता था स्वर्ग पहुंचने से पहिले मुझे सब बातों का ज्ञान नहीं होगा। मैं सदैव सोचता था कि महिमा के देश में जाकर मैं सर्वज्ञानी बन जाऊंगा, तो अभी से बाइबल का अध्ययन क्यों करुं? परन्तु तब मैंने इफिसियो 2:7 पढा, "आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाये।" परमेश्वर दिखायेंगे, और मैंने सोचा, यदि परमेश्वर दिखाएंगे, तो मुझे सीखना चाहिए। मैंने सोचा, यदि मैं सीखनोला हूं तो स्वर्ग एक स्कुल होगा, परमेश्वर शिक्षक होंगे, और बाइबल पाठ्यक्रम होगी, और सीखने का कालखण्ड अनंतकाल होगा। तब तक मैं सोचता था कि जीवन में व्यापार (काम) ही प्रमुख बात है, इसलिये मैंने व्यापार के बारे में सीखा और बैंक का कर्मचारी बन गया। परन्तु तब मैंने सोचा, हऽऽऽऽऽम। और 30 वर्ष की आयु में यह बात मुझे समझ में आयी, मैंने सोचा, यह अनंत काल की पुस्तक है और एक दिन मैं (विश्वास के) पितामहों के साथ बैठूंगा–परमेश्वर के (पिता के) राज्य में, अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ। *बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।* (मत्ती 8:11)। और हम बातचीत करेंगे। परन्तु मैं कितनी बुद्धिमत्ता के साथ बातचीत कर पाऊंगा? विशेषकर यदि मुझे ओबद्याह और सपन्याह के निकट बैठने का अवसर मिलेगा। क्या आप विश्वास करेंगे कि इस सोचे ने मुझे यत्नुपूर्वक बाइबल के अध्ययन को आरंभ करने का बल दिया? मैंने सोचा अच्छा, यह एक भारी काम है, मैक डॉनल्ड, कुल 66 पुस्तकें है। मैंने सोचा, ठीक है, मुझे पता है, एक बड़ा काम छोटे–छोटे कमों को जोडकर बनता है। मैं एक बड़ा काम नहीं कर सकता परन्तु छोटे–छोटे बहुत से काम कर सकता हूं। मैंने व्यवस्थित रुप में एक – एक पद लेकर अध्ययन आरंभ किया। कुछ दिनों तक मुझसे 5 से अधिक पदों का अध्ययन नही

हुआ – मुझे सब बाते पढ़ने समझते 30 वर्ष लग गये। मैंने एक–एक पद पढ़ा, प्रश्न किये कि परमेश्वर उनमे क्या कह रहे है? मैं कठिन वृतांतों में भी पहुंचा जिनके लिये परमेश्वर के महान और भक्तजनों ने अलग – अलग व्याख्याएं दी है। मैंने उन व्याख्याओं पर विचार किया। कौन सी व्याख्या सर्वश्रेष्ठ है? कौनसी व्याख्या शेष बाइबल के साथ संदर्भ के अनुसार सटीक बैठती है?

जी हां, यह अनंतकाल का पाठ्यक्रम है। आप मानते हैं कि अनंतकाल में सभी लोग खुश होंगे, मुझे पतां है, परन्तु कुछ लोग दूसरों से अधिक खुश होंगे। प्रत्येक का प्याला भरा होगा कितुं कुछ के पास अन्य दूसरों से अधिक बड़े प्याले होंगे। सभी प्रभु यीशु का आनंद लेंगे, परन्तु कुछ के पास दूसरों की अपेक्षा अधिक आनंद पाने की क्षमता होगी, और उनकी यह क्षमता यहां दूसरों की अपेक्षा इस पृथ्वी पर इस आधार पर तय होगी कि हम परमेश्वर के वचन के साथ क्या करते है। हम सब स्वर्ग में आनंद उठायेंगे, परन्तु आनंद उठाने की वह क्षमता यहां पृथ्वी पर तय होगी कि कौन स्वर्ग की महिमा का कितना आनंद प्राप्त करेगा, और उसका आधार है कि हम आज और अभी परमेश्वर के वचन के साथ क्या करते है। जब मैंने यह समझा, मैं संसार के स्टॉक और अन्य लाभों की जानकारी प्राप्त करने के फेर से बाहर निकल गया, और अधिक लाभांश पाने के तौर तरीकों पर ध्यान देने लगा। मुझे आशा है कि यह बात आपको भी चुनौती देगी।

मै जानता हूं कि आपमें से कुछ लोग क्या सोच रहे है। टेली–विजन पर बेसबॉल का प्रसारण या वृत्तचित्र बाइबल के अध्ययन से कहीं अधिक रुचिकर है, परन्तु यह अधिक रुचिकर है यदि आप उसे शरीर की आंखो से देखते है। यदि आप उसे विश्वास की आँखो से देखे, बाइबल अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप उस पुस्तक के साथ क्या करते है इसके परिणाम अनंतकाल के लिये महत्वपूर्ण है। अपने विश्वास के चश्में को पहिने, विश्वास की आंखो से देखे, और आप यह समझ जाएंगे कि केवल अनंतकालीन बातें ही वास्तव में महत्वपूर्ण है। फुटबॉल के खेल का परिणाम या स्कोर आप शीघ्र भुला देगे।

एक सुयोग्य लक्ष्य है परमेश्वर के वचन का यत्नशील छात्र बनना, अपनी भाषा की बाइबल में सिद्धहस्त बनना, और यदि आप प्रतिदिन केवल कुछ पदे ही अध्ययन करे जब उन्हें एकत्रित करेंगे, आप स्वयं की प्रगति देखकर चकित रह जाएंगे। बाइबल अध्ययन के बहुत से साधन है उनका उपयोग करे।

बाइबल का अध्ययन करते समय जहां भी संभव हो, अभिप्राय को शाब्दिक रुप में ले। हम बाइबल के शाब्दिक भावार्थ में विश्वास करते है। इसी कारण हम क्लेश काल से पूर्ण कलीसिया के उठाये जाने पर विश्वास करते है। यही कारण है कि हम सहस्त्र वर्षीय राज्य से पूर्व मसीह के वापस आने पर विश्वास करते है, क्योंकि यदि पहिली बात का अर्थ संज्ञान देता है आपको दूसरी बात सोचने की आवश्यकता नहीं है। यह बाइबल के भावार्थ जानने का प्रथम नियम है। और उन कठिन वृतान्तों को मत समझाइये जिन्हें आप पसंद नहीं करते। यह परीक्षा है। नये नियम में यीशु द्वारा कहे गये बहुत से कठोर शब्द है, और यदि आप उन तक पहुंचे, जबर्दस्त परीक्षा आती है कि आप उन्हें सुलझाने या उनकी व्याख्या करने का प्रयत्न करे। उदाहरण के लिये – ''संस्कृति के तर्क।'' ''ठीक है, वे केवल उन दिनों की संस्कृति से संबंधित थे।'' आप अकसर ऐसी बातें सुनते है।

मूडी चर्च के एरविन लुटजर ने लिखा – ''हम इस युग के चलन (आत्मा) में इतने रचे बसे है, जैसे कि गिरगिट, कि हम ने आधुनिक संसार के रंग से रंग मिलाने के लिए रंग बदल लिये है।'' जब समलैंगिक अधिकारो के लिये अवलोनकर्त्ता तर्क देते है कि समलैंगिकता केवल एक वैकल्पिक यौन प्राथमिकता है, हम देखते है कि कुछ सुसमाचार प्रचारक उसके पक्ष में पुस्तकें लिख देते है। वे कहते है कि बाइबल वास्तव में समलैगिकता की भर्त्सना नहीं करती। जब स्त्रीवादी समानता की अपनी मागों को लेकर दवाव बनातें है, कुछ प्रचारक नये –नियम का पुनः अध्ययन करके पता लगाते हैं कि पौलुस ने जो कहा उसका वह अर्थ नहीं था। उससे भी अधिक बुरी या डरावनी बात है कि एक सुसमाचार – प्रचारक ने निष्कर्ष निकाला कि स्त्री वाद के विषय पर पौलुस सरासर गलत था।

इस कारण हम पवित्र शास्त्र को उसी दिशा में स्वीकार कर लेते है, जिस भी दिशा में हवा बह रही हो। हम अपनी संस्कृति में इतने खो जाते है कि हमारे पास कहने के लिए कुछ नहीं बचता। प्रासंगिक होने की अपनी धुन में, हम हमारी भविष्यवाणी की आवाज खो चुके है। हर बार जब हम धर्मशिक्षा में समझौता करते है, मसीहत के शत्रुओं को बल मिलता है। यहां एक उदाहरण है कि सांस्कृतिक तर्क कहां तक जा सकते है। न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी के इपिस्कोपल बिशप जॉन स्वांग ने एक लेख में लिखा है – ''यीशु के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण, और साथ ही समलैंगिकता की भर्त्सना करने वाले पुराने नियम के प्रसिद्ध वृतान्तों को शाब्दिक रुप में नहीं लिया जा सकता, अवश्य है कि उन्हें उस काल के संदर्भ में रखकर समझा जाये जिसमें उन्हें लिखा गया था।'' बाइबल सभी युगों और सभी संस्कृतियों के विषय में कहती है। *हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है* (भजन 119:86)। ''संस्कृति के तर्क'' की हवा में न बहे। परम्पराओं के तर्क की दिशा में न बहे। हमने कभी उस प्रकार नहीं किया है।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर थे, उन्हें अवसर मिले कि वे इसप्रकार की सोच की भर्त्सना करे। एक यहूदी पिता है और वह निराश्रित है। वह अपने एक पुत्र के पास जाता है जो कालान्तर में बहुत धनी, व्यापार में अधिक सफल हो चुका है, उसके पास बहुत धन आ गया है और वह कहता है, ''हे पुत्र, हमने तुम्हे पालपोस कर बडा किया और अब हम जीवन के अतं में है, हमारे पास कुछ नहीं है।'' यहूदी लोगों में तब एक परम्परां थी कि उस पुत्र को केवल 'कोरबान' कहना था और वह अपने पिता के सभी दायित्वों से छूट जाता। 'कोरबन' का अर्थ है – आपको लाभ पहुंचाने वाली हर एक बात (धन) मैंने मंदिर में समर्पित कर दी है।'' इसका अर्थ यह नही कि उन्हो ने सचमुच मंदिर में धन दिया था, परन्तु ऐसा कहना उन मनुष्यों में एक परम्परा थी – एक मौखिक सूत्र।

तब एक 'गैर–शाब्दिक' तर्क है। लोग कहते हैं कि यीशु का शाब्दिक रुप में यह अर्थ नहीं था, *इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता*– (लूका 14:33)। उसका शाब्दिक रुप मे यह अर्थ नहीं हो सकता। उसे पता है कि मुझे जीना है, क्या उसें नहीं पता? एक युवक ने स्पर्जन से एक बार ऐसा कहा था जो उसे मसीह के दावों का स्मरण करा रहे थे। उसने कहा, ठीक है, मुझे जीना भी तो है, क्या नहीं जीना? और स्पर्जन ने कहा, ''मैं यह नहीं

मानता, हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी है।" बस यही करना है। हमें परमेश्वर की बात माननी है, भले ही वह हमारे मानव स्वभाव के विरुद्ध हो।

अपवाद बनने के तर्क की हवा में मत बहो। मैं यह बार–बार सुनता हूं, लोग ऐसा कहते हैं – "मैं जानता हूं कि बाइबल क्या कहती है, परन्तु मेरे प्रकरण में प्रभु चाहते है कि यह अपवाद रहे।" क्या आपने कभी ऐसी बात सुनी है? हम इस प्रकार की बातें करके परमेश्वर की आज्ञाओं को निष्प्रभावी बनाते है। परमेश्वर ऐसे पुरुषो और स्त्रियोंकी खोज में है, वे जवान पुरुष और स्त्रियां जो उसका वचन सुनकर थरथर कांपेगे। वह, इसी बात की खोज में है, वे लोग जो परमेश्वर के वचन के सामने अपनी बुद्धि को महत्व नहीं देगे। पुरुष जो परमेश्वर के वचन से प्रेम करते है, स्त्रियां जो परमेश्वर के वचन से प्रेम करती हैं। वे लोग जिनका यह दृष्टिकोण है, "यदि परमेश्वर कहते है, मैं उसे मानूंगा।"

मैं आपको एक नवयुवक के बारे में बताना चाहता हूं जो वर्षो पहिले इम्माउस का छात्र था। वह स्वयं को इम्माउस से निकला हुआ बताता था (बिना कोर्स पूरा किये)। मेरी कामना है कि ऐसे छात्र और भी अधिक हो, जो उसके समान हो। उसका एक सरल, सीधा विश्वास था। जब उसने उद्धार नही पाया था वह अति संकोची था, वह लोगों से बात नहीं कर पाता था। फयटेबिले एन.सी. में उद्धार पाने के बाद वह परमेश्वर के लिये बड़ा शक्तिशाली बन गया। और उसकी मनोवृत्ति ऐसी थी कि जब वह परमेश्वर के वचन की बात करता, वह कहता, "मुझे परवाह नहीं है कि कोई यह कर रहा है या नहीं, यदि प्रभु ऐसा कहते हैं तो मैं वही करुंगा।" मैं उस जवान के साथ फ्रांस में था, वह घर–घर जाता था, वह फर्राटें दार फ्रेंच बोलता था। आज वह जर्मनी मे सार्वजनिक सभाओं में प्रचार करता है। उसने बहुत सी भारतीय बोलियां सीखी है, वह पोलिश और कुछ रुसी भाषा भी बोलता है। उसने यह सब कैसे किया? यह उसकी महान बुध्दि के कारण नहीं था। पर यह उसकी अभिवृत्ति थी। "मैं वह करुंग जो परमेश्वर का वचन करने के लिये कहे।" और तब 'बुद्धि' और 'सामान्य ज्ञान' के तर्क है। यीशु ने कहाः

> "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकठ्ठा न करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते है, और जहां चोर सेंध लगाते और चुरातें है। अपने लिये स्वर्ग में धन इकठ्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और काई बिगाड़ते है, और जहां चोर न सेध लगाते और न चुराते है" (मत्ती 6:19–20)।

अच्छा, आप को 'सामान्य ज्ञान' का उपयोग करना चाहिये, है ना? आपको बुरे दिनों के लिये व्यवस्था करनी चाहिये, करनी चाहिये कि नहीं? आप देखिय, यह सामान्य ज्ञान के उपयोग की बात है। पर ऐसा कुछ है जो सामान्य–ज्ञान से बेहतर है – और वह है ईश्वरीय प्रकाशन। यदि हम सामान्य–ज्ञान के अनुसार चलते तो परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार कभी हमारे पास नहीं होता। मैं आपसे कहता हूं कि परमेश्वर का सत्य सामान्य ज्ञान और बुद्धिमानी से अधिक बढ़कर है। और जब प्रभु ने कहा कि अपने लिये पृथ्वी पर धन इकठ्ठा न करो तब उसके कहने अभिप्राय शब्दशः वही था।

मुझे स्मरण है, जब जार्ज वर्वर ने उद्धार पाया और डेल रॉटन उन्हें शिष्यता में प्रवीण कर रहे थे। डेल जब बाइबल के कठिन वृतान्त पाते तो पूछते – "जार्ज, तुम्हारे लिये इनका क्या अर्थ है? जार्ज उत्तर देते – "या तो बाइबल जो कहती है वही अर्थ है, अन्यथा हमें उसे फेक देना चाहिये।" परमेश्वर

ने उसकी अभिवृत्ति का सम्मान किया। उन दो छात्रो ने उन नियमों पर अमल करना आरंभ किया, और उसके प्रभाव समस्त संसार में अनुभव किये गये।

मैं रेय लेन्ट्जश के साथ बेल्जियम के एक छोटें नगर में प्रार्थना करने का समय स्मरण करता हूं। मैं स्मरण करता हूं कि वे कह रहे थे – ''सामान्य–ज्ञान चूहा मारने का जहर है।'' वह गलत कम और सही अधिक थे। जब पवित्र शास्त्र के भावार्थ निकालने का प्रश्न हो, सामान्य –ज्ञान से आगे चले। परमेश्वर का वचन ईश्वरीय प्रकाशन है।

और तब 'किसी को चोट न लगें' जैसा तर्क है। आप वह नहीं करना चाहेंगे, यदि उससे किसी को चोट पहुंचती है, है ना? मित्रो, एक मसीही के रुप में आप जो भी करते है वह किसी न किसी को चोट पहुंचाता है। सुसमाचार 'चोट देनेवाला' है, है ना? सुसमाचार मनुष्य को खड़े रहने की भूमि नहीं देता, वह उसके पाँवो के ठीक नीचे की भूमि काट देता है, वह उससे कहता है कि वह अभागा पापी है। वह उससे कहता है कि वे सर्वोत्तम बाते, जो आप उसके बारे में कह सकते है, वे सब मैले चीथड़ो के समान है, और जो सबसे बुरी बात आप उसके बारे में कह सकते है, वह यह है कि उसने अपने परमेश्वर की हत्या की है। आप मुझसे ''किसी को चोट न लगे'' के तर्क की बात न करे। यदि बाइबल कहती है, तो हमें करना है। और हम रुक नहीं सकते, चाहे वह लोगों को चोट पहुंचाये या न पहुंचाये।

मुझे स्मरण है मुझे शिकागो में एक अंतिम यात्रा में बोलने के लिये कहा गया था। उस कार्यक्रम की संचालिका ने मुझसे कहा, ''देखिये, मेरी एक बहिन ने एक यहूदी से विवाह किया है, और मेरे एक भाई ने रोमन कॅथोलिक से, और हम लूथरन है, मैं चाहती हूं कि आप ऐसा कुछ न कहे, जिससे किसी को चोट पहुंचे'' मैंने कहा, ''ठीक है, पर बेहतर होगा आप संदेश देने किसी और से कहे।''

''नही, नही, नही, हम चाहते है कि आप ही प्रचार करे।''

''अच्छा होगा कि आप किसी और से प्रचार करने कहे, यदि आप को किसी को चोट लगने का भय है।'' हमने प्रचार किया। हमने सुसमाचार का प्रचार किया। मैं नहीं कह सकता कि किसी को चोट नहीं पहुंची।

साथ ही प्रकाशन के कालखण्डों से संबंधित अति कालवादी तर्क है। मैं यहां रुकना चाहता हूं और यह कहना चाहता हूं कि मैं प्रकाशन के कालखण्ड़ो पर विश्वास करनेवाला व्यक्ति हूं। मैं यदि इन कालखण्ड़ो को न समझूं तो बाइबल नहीं समझ सकता। यदि मैं प्रकाशन के कालखण्ड़ों को न समझूं तो बाइबल नहीं समझ सकता। यदि मैं प्रकाशन के कालखण्डो की अवधारणा को नहीं मानता तो अब भी पशु–बलि चढ़ा रहा होता। मेरा सोचना है कि बहुत से लोग जो 'प्रकाशन के कालखण्ड़ों' की अवधारणा के विरुद्ध लड़ते है वे वास्तव में कालवादी है। उनके पास एक बाइबल है जो प्रकाशन के दो कालखण्ड़ो में विभाजित है – पुराना और नया–नियम। परन्तु अति–कालवादी भी है, जो आपसे 'पहाड़ी उपदेश' चुरा लेते है, आप से सुसमाचारों को चुरा लेते है, और जेल से लिखी पत्रियों को छोड़ शेष सबकुछ चुरा लेते है। मैं यह सब नहीं चाहता। मैं परमेश्वर के संपूर्ण वचन से मधु निकालना चाहता हूं, क्या आप भी ऐसा नहीं चाहते? अपने 'प्रकाशन के काल' के विश्वास में बने रहिये, कितुं अति कालवाद से बचकर रहें।

तब 'मित्रता की अवधारणा' का तर्क है। ई. जे. करनैल ने ''द केस फॉर ऑर्थोडॉक्सी'' नाम पुस्तक लिखी थी। वास्तव में यह आधारभूत मसीहत भर प्रथम पंक्ति का आक्रमण था। आप पुस्तक के नाम 'द केस ऑफ ऑर्थोडॉक्सी' से कभी अनुमान नहीं लगा सकते। करनैल ने लिखा है, ''संभव है कि आदम ने उद्‌विकास की शृंखला में किसी पूर्व वानर से देह प्राप्त की हो, इस प्रकार, उत्पत्ति की पुस्तक गैर – ऐतिहासिक और गैर–वैज्ञानिक हो सकती है।'' यह पुस्तक पवित्रशास्त्र के आधारभूत सत्य और त्रुटिहीनता के विरुद्ध तर्क करती है।

ग्रेस सेमिनरी, इंडियाना के तत्कालीन अध्यक्ष, जॉन व्हिटकोम्ब जब करनैल की पुस्तक की आलोचना कर रहे थे, जार्ज एल्डेन लैड ने उत्तर दिया, '' ठीक है, परन्तु आप उसे व्यक्तिगत रुप में नहीं जानते, जैसा मैं उसे जानता हूं – वे बड़े अनुग्रहमय शालीन व्यक्ति है, एक भक्त पुरुष है।''

मैं पूछता हूं – ''इस बात का पुस्तक से क्या लेना–देना है? वह पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के विरूध्द तर्क कर रहा है। बहुत से आंतकवादी, आधुनिकतावादी और उदारवादी लोग भी शालीन लोग है। उनका नाम और प्रतिष्ठा है कि वे वैसे ही है। परन्तु इस बात से मसले पर कोई प्रभाण नहीं पड़ता।'' इन बातों के कारण मैं एक बढ़ई की दुकान के बारे में सोचता हूं जिसके सामने एक साइन बोर्ड में लिखा है – ''यहां सब प्रकार की तोड़मरोड़ और तोड़फोड़ की जाती है।''

जब हमारे परिवार में कुछ होता है, किसी सदस्य को स्थानीय कलीसिया द्वारा अनुशासित करने की आवश्यकता होती है, तब आश्चर्य होता है कि लोग दोषी को बचाने के लिये पवित्रशास्त्र के वचनों में कितनी तोड़मरोड़ करते है। अभी भी रक्त पानी से अधिक गाढ़ा है। हम पवित्रशास्त्र की पदे लेकर उनमें तोड़मरोड़ या हेरफेर करते है यदि वे हमारे परिवार के किसी सदस्य को दोषी ठहराती है। परमेश्वर का वचन सब पर लागू होता है, केवल उन पर नहीं जो हमारे है। परमेश्वर का वचन सब पर लागू होता है, केवल उन पर नहीं जो हमारे परिवार के नहीं है।

साथ ही 'विज्ञान' या विद्वानों की सम्मति' का तर्क दिया जाता है। एक जवान ने कुछ समय पहिले मुझ से कहा, ''मुझे बाइबल को विज्ञान के अनुसार समझने में कठिनाई होती है।'' उसके कहने का अभिप्राय था कि विज्ञान सहीं है – और बाइबल को विज्ञान के अनुसार होना चाहिये। वह ऐसा क्यों कहता है? कभी – कभी बुद्धिजीवियों और विद्वानों की यही अभिलाषा होती है। परमेश्वर के वचन के उपयोग में यह अवधारणा प्राणघात हो सकती है।

और तब एक और तर्क है, 'परमेश्वर बहुत भला है।' परमेश्वर इतना अधिक भला है कि वह अनंतकाल के लिये नरक में नहीं रखेगा। आजकल, सुसमाचार प्रचारकीय जगत में इस पर बल दिया जा रहा है – दुष्टों को अनंतकाल के लिये दण्ड दिये जाने से इन्कार किया जा रहा है। पर बाइबल इसकी शिक्षा देती है। बाइबल में लिखा है, ''उनकी पीड़ा का धुंआ युगानुयुग उठता रहेगा' (प्रकाशित वाक्य 14:11)। लिखा है, ''जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती'' (मरकुस 9:44)। फिर भी लोग कहते हैं कि परमेश्वर इतना अधिक भला है कि वह अनंतकाल तक नरक में नहीं रखेगा। वे भूल जाते है कि परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये नरक नहीं बनाया। वे भूल जाते है कि परमेश्वर ने मानव –देह धारणकर मृत्यु सही ताकि मनुष्य को नरक से बचा ले। वे यह नहीं समझ पातें कि परमेश्वर

छोटे से छोटा बहाना ढूंढ़ता है कि मनुष्य का उद्धार करे और उसे घर (स्वर्ग) ले आये। यदि मनुष्य केवल पश्वाताप करे और प्रभु यीशु मसीह को निज उद्धारकर्त्ता मानकर स्वीकार करे, उसे कभी भी नरक नहीं जाना पड़ेगा।

हमें न केवल परमेश्वर के वचन के अध्ययन के लिये समर्पित होने की आवश्यकता है पर उसे कंठस्थ करने के लिये भी समर्पित होना चाहिये।

''जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।
मैने तेरे वचन को अपने ह्दय में रख छोड़ा है कि तेरे विरुद्ध पाप न करुं
(भजन संहिता 119:9, 11)।

हम पवित्रशास्त्र की पदों को कंठस्थ करते है ताकि जीवन के महत्वपूर्ण पलों मे पवित्रात्मा उनमें से कुछ हमारे स्मरण में ला सके। परमेश्वर का वचन आत्मा (पवित्रात्मा) की तलवार है। यहां परमेश्वर के वचन का अर्थ है उस विशेष अवसर के लिये सर्वथा उचित पद, परन्तु पवित्रात्मा यह नहीं कर सकता यदि हमारे ह्दयों में परमेश्वर का वचन एकत्रित नहीं है। हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिये भी समर्पित होना चाहिये। मुझे आशंका है कि मनन करने की कला गुम होती जा रही है। हम इतने अधिक व्यस्त है। परन्तु परमेश्वर ने कभी हम से ऐसा कठोर या व्यस्त करनेवाला परिश्रम करने के लिये नहीं कहा कि हमें उसके चरणों पर बैठने का समय ही न मिले। मनन करने की धीरजवन्त अभिवृत्ति को वह अकसर सर्वाधिक रुप में पूर्ण सेवा मानता है। आप पूछेंगे –''आप कैसे मनन करते है?

आप पवित्रशास्त्र की एक पद ले, और जैसे गाय जुगाली करती है आप उसे बार –बार सोचे। एक उदाहरण दूं – मेरे बिस्तर के सामनेवाली दीवार पर यह वचन है – ''वध किया मेम्ना ही सामर्थ और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है'' (प्रकाशित वाक्य 5:12)। यह पद मुझे विचलित करती है। प्रभु यीशु मसीह जिसके पास सब कुछ पहिले से है, कैसे कुछ और ग्रहण कर सकते है? ''वध किया मेम्ना ही सामर्थ और धन ..... '' उसके पास सभी सामर्थ है, वह कैसे और सामर्थ ग्रहण कर सकता है? और तब आगे कहा गया है – ''धन''। हजारों पहाड़ों के पशु उसी के है, में समझ नहीं पाता कि वह और अधिक कैसे पा सकता है। अभी जो उसका है वही सारा धन है। और तब ज्ञान और शक्ति, और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है।'' तब मेरे मन में एक बात आती है। वह मेरी सामर्थ (प्रतिभा) को स्वीकार कर सकता है, वह मेरे धन (सांसारिक धन) को स्वीकार कर सकता है, वह मेरी बुद्धि (मेरी सर्वोत्तम बौद्धिक क्षमताये) स्वीकार कर सकता है, वह मेरी सर्वोत्तम शारीरिक शक्ति को स्वीकार कर सकता है, मेरी सर्वोच्च स्तुति और प्रशंसा को स्वीकार कर सकता है। संक्षेप मे, वह स्वीकार कर सकता है, जो मै हूं और जो मुझ में है। वह मेरे सम्पूर्ण के योग्य है। मैं उसके पास आकर उसके धन्य कदमों पर अपना सबकुछ रख सकता हूं। अब इस पद ने एक नया अर्थ धारण कर लिया है। मैं यह नहीं कर रहा हूं कि यही सही व्याख्या है, पर यह वह है जो मैं समझता हूं जब मैं बिस्तर पर लेटता हूं और उस पद पर मनन करता हूं। भला हो कि हम परमेश्वर के वचन पर मनन करने समर्पित हो।

परमेश्वर के वचन पर अमल करने के लिये समर्पित बने। मैंने पहिले ही, जर्मनी में मेरे मित्र लैरी स्मिथ के बारे में बातचीत की थी जिसे परमेश्वर के वचन पर अमल करने की बड़ी अभिलाषा थी। आज्ञाकरिता आत्मिक ज्ञान का अंग है। विचार कीजिये, आज्ञाकारिता आत्मिकज्ञान का अंग है। क्या आप बाइबल के बारे में और अधिक जानना चाहते है? आप जो जानते हैं उस पर अमल करे। परमेश्वर आप को और देंगे, यह इसी प्रकार काम करता है। यह विचार करना रुचिकर है कि आप एक निश्चित स्तर पर पहुंच सकते है और तब रुकावट आ सकती है। कुछ ऐसी बात होगी जिसे आप मानना नहीं चाहते और तब आप उसी स्तर पर रुक सकते है या उससे भी नीचे गिर सकते है। "क्योंकि जिस के पास है, उस को दिया जाएगा, परन्तु जिस के पास नहीं है उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा" मरकुस 4:25। आईये हम परमेश्वर के वचन का पालन करने स्वयं को समर्पित करें।

मैं उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो – यशायाह 66:2। "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" – युहन्ना 8:31–32

आईये हम परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने और प्रचार करने स्वयं को समर्पित करें: "तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा" – 2 तिमुथी 4:2।

यह नहीं कहा गया है कि मनोविज्ञान का प्रचार करो, यह नहीं कहा गया है कि दर्शनशास्त्र या दार्शनिकता का प्रचार करो। यह नहीं कहा गया है कि स्व–मूल्यांकन का प्रचार करो। यह नहीं कहा गया है कि स्वास्थ और समृद्धि का प्रचार करो। कहा गया है कि वचन का प्रचार करो। यह परमेश्वर का वचन है जिसमें सामर्थ है। पवित्रशास्त्र का एक अकेला पद हजारों तर्को से अधिक मूल्यवान है। भला हो कि यह संदेश आपके कानों में गूंजता रहे – वचन का प्रचार कर। तब पृथ्वी के इतिहास में वह समय कभी नहीं आयेगा जब परमेश्वर के तरीके परमेश्वर के वचन का प्रचार नहीं करेंगे।

हमें सभी बातों को परमेश्वर के वचन के आधार पर परखने के लिये समर्पित होना चाहिये मुझे कुछ समय पहिले एक युवा की ओर से एक पत्र मिला जिसमें उसने पूछा था, "यह बात कहने के लिये पवित्रशास्त्रीय आधार क्या है? "मै कहता हूं, " उस जवान के लिये प्रभु की स्तुति हो" वह बिरिया वासी है (प्रे. काम 17:30)। वह पवित्रशास्त्रीय आधार की खोज में था, जानना चाहता था। हमें ऐसे और लोगों की आवश्यकता है। *व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी* – यशायाह 8:20। मैंने उसकी अभिवृत्ति की सराहना करते हुये उसे पत्र लिखा। सबसे बड़ी जाँच इस बात में है, "बाइबल क्या कहती है?" हम मे से बहुत से लोग इस प्रश्न के साथ बड़े हुए है – "वचन में क्या लिखा है?" सब बातों की जाँचे परमेश्वर के वचन के द्वारा करे।

यदि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है तो हमारे पास कुछ नहीं है। हम अपने – अपने बस्ते बंद करके घर जा सकते है, परन्तु बाइबल परमेश्वर का वचन है। हमारे लिये बाइबल परमेश्वर का वचन है जिसमें उसने हमसे वह सब कह दिया है जिसकी हमें जीवन और भक्ति के लिये आवश्यकता

है। यदि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है तो मसीह भी जी नहीं उठा, और सुसमाचार भी भरोसेमंद नहीं है। परन्तु बाइबल परमेश्वर का वचन है।

ब्रिटिश राजा के राज्याभिषेक के समय बाइबल उसके हाथ में दी जाती है और कहा जाता है –

> ''हम आपको यह पुस्तक देते है, संसार की सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु – बुद्धि इसमें है, राजकीय नियम इसमें है। ये परमेश्वर की ओर से दी गयी जीवित भविष्यवाणियां (मार्गदर्शन) है।

मैं आप से कहता हूं – ''मैं आपको यह पुस्तक देता हूं – संसार की सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु. बुद्धि इसमें है, राजकीय नियम इसमें है। ये परमेश्वर की ओर से जीवित मार्गदर्शन है।'' मैं तुम्हे आदेश देता हूं, प्रत्येक जो इस पुस्तक को पढ़ता है, परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित हो। परमेश्वर के वचन पर दृढ विश्वास रखे। पीछे हटने और इंकार करने की परीक्षा आने पर परमेश्वर के वचन के लिये दृढ़ता से सामना करे।

अध्याय - 27

ग्रहण योग्य ठहरने के लिये अध्ययन करें

प्रत्येक विश्वासी को बाइबल का छात्र होना चाहिये। मसीही जन सोचते है कि पवित्र शास्त्र का गंभीरता पूर्वक अध्ययन करना केवल पास्टर या सेवक का काम है। यह बहुत बड़ी गलती है। परमेश्वर की प्रत्येक सन्तान को यत्नपूर्वक वचन को अपने मन में रखना चाहिये।

दूसरी गलती यह सोचना है कि बाइबल के अध्ययन के लिये सेमिनरी जाकर प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। गलत! चार्ल्स हैडन स्पर्जन ने कभी औपचारिक बाइबल प्रशिक्षण नहीं लिया, न ही जी. कैम्पवेल मॉरगन और न हैरी ए. आयरन साइड ने बाइबल प्रशिक्षण पाया था।

> वे सब परमेश्वर के वचन के समर्पित छात्र थे, उन्होंने घंटो अध्ययन करके, मनन और प्रार्थना करके गहिरे सत्यों को सीखा था। जीवन की भरपूरी की ओर पहिला कदम आत्मिक बुद्धिमानी है, अर्थात् परमेश्वर का वचन जानकर परमेश्वर की इच्छा में बढ़ना।[41]

एक निश्चित समय और स्थान नियुक्त करे, जहां आप बिना रुकावट और विचलन अध्ययन कर सके। बहुत से मसीहीजन भोर का समय अध्ययन के लिये सर्वोत्तम पाते है। हर बार जब आप अध्ययन करते है, यह आपकी इस आदत को बल देता है। जब भी आप भूल जाते है, आपकी आदत निर्बल होती जाती है। आप स्वयं को अनुशासित कर सकते है कि आप खाली समय का उपयोग करे और जहां छूटा था वहां से आगे अध्ययन करे। प्रोत्साहन या प्रेरणा अत्याधिक महत्वपूर्ण है। बाइबल के अध्ययन में सबसे बड़ी लाभदायक बात यह है कि यह परमेश्वर का वचन है। इसमे आप परमेश्वर को बोलते हुए सुनते है। जब आप इस समझ के साथ रहते है तब अध्ययन करना काम नही पर आनंद बन जाता है।

सण्डे स्कुल की कक्षा या बाइबल अध्ययन की कक्षा में पढ़ाने के लिये तैयारी करना भी प्रेरणास्पद होता है। जब आप जानते है कि आप को एक वृतान्त समझाना है या उस वृत्तांत पर प्रश्नों के उत्तर

देने है, तब आपको एक व्यवहारिक प्रेरणा का लाभ मिलता है। यदि आपको कक्षा में परमेश्वर का वचन सिखाने का सौभाग्य मिले, आप स्वयं को धन्य समझें।

एक और अनुभव है जो वचन की ओर आकर्षित करता है वह है उद्धार न पाये हुओं को गवाही देना, विशेषकर किसी संप्रदाय विशेष के लोगों को गवाही देना। अकसर वे ऐसे – ऐसे तर्क करते है जिनके उत्तर हम नहीं दे सकते। हम घबरा जाते है और घर जाकर बाइबल का अध्ययन करते है लब तक की हम उन्हे दृढतापुर्वक उत्तर देने मे समर्थ नही बनते। उस अर्थ में संप्रदायवादी हमारे मित्र है। वे मसीही जन जो गवाही देते है वचन के ज्ञान में शीघ्रता से बढते है। आपको यह नहीं सोचना चाहिये कि बाइबल अध्ययन करना आसान होगा। गहिरे में खोदने, खोजने, तुलना करने और अनुसंधान करने के लिये तैयार रहे। प्रार्थना के साथ आरंभ करे। पवित्रात्मा से निवेदन करे कि अध्ययन करते समय आपसे बातचीत करे। उसे कहे कि वह परमेश्वर के वचन की अद्भुत बातें आपको दिखाये (भजन. 119:18)। उसे शिक्षक मानकर स्वयं को समर्पित करे।

तब आप निश्चित करे कि बाइबल की किस पुस्तक का आप अध्ययन करेंगे। यह आंशिक रुप में इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप मसीही जीवन में कहां है – आप एक नये विश्वासी है या आप को पहिले से पवित्रशास्त्र की कुछ जानकारी है। एक बार में बहुत अधिक करने का प्रयत्न न करे, कुछेक पदें लेना ही बेहतर होगा, उनमें से कुछ समझ प्राप्त करे, एक अध्याय पूरा पढ़ने और शीघ्रता से भूल जाने से यह बेहतर है। सामान्य रुप में कहे तो एक अध्याय वास्तव में अधिक है।

उस वृतान्त को बार –बार पढ़े, इतना कि वह मन में बैठ जाये। बाइबल के शब्दों को निकटता से जानना – पहिचानना अमूल्य है। उन प्रश्नों को लिख ले जिन्हें आप नहीं समझते। जब लोग मुझसे पूछते है कि मैं बाइबल – अध्ययन कैसे करता हूं, मैं कहता हूं – '' मैं प्रश्न पूछता हूं'' इसका अर्थ यह नहीं कि मैं वचन के सत्य (सत्यों) पर प्रश्न करता हूं पर यह कि मैं स्वयं से प्रश्न करता हूं – ''इस बात का अर्थ क्या है?'' वॉल्टर–ए–हेनश्चिेन ने अपनी पुस्तक ''डिसाइपल्स आर मेड नॉट बॉर्न'' में लिखा है –

> यहां क्या लिखा है, जो मैं नहीं समझता? उन सभी प्रश्नो, समस्याओं को लिख ले जो आपको उस वृतान्त से मिलते है। जब मैने पहिली बार बाइबल – अध्ययन आरंभ किया था तब मैं सोचता था कि प्रश्न जितने कम होंगे, मैं वृतान्त को उतना अधिक समझुंगा। पवित्रशास्त्र का अधिक अध्ययन करने पर मैंने अनुभव किया कि इसका उल्टा ही सच है। मैं वृतान्त के अध्ययन में जितनी गहिराई से जाता हूं, उतने अधिक प्रश्न उठते है – अर्थांत मुझे अनुभव होता है कि अध्याय में मै बहुत सी बाते नही समझता हूं।[42]

प्रत्येक पद के संदर्भ मे आप अपनी व्याख्या (टीका) स्वयं लिखे। आपने उसका अर्थ नही समझा है यदि आप उसकी सरल और समझ में आने योग्य शब्दों में व्याख्या नहीं कर सकते। इस लक्ष्य को पाने कठोर परिश्रम करे। रसेल एल. ऑकॉफ नाम एक शिक्षक ने लिखा

> ''मेरे पास एक मेधावी छात्र था अब वह ख्याति प्राप्त प्रोफेसर है, उसने एक अत्याधिक तकनीक पूर्ण शोध प्रबंध लिखा। मैंने उससे कहा कि मुझे एक मामूली व्यापार प्रबंधक समझकर क्या वह अपने शोध प्रबंध को संक्षेप में समझा सकता है? वह श्यामपटल के पास गया और गणित के

> सूत्रों और चिन्हों से लिखने लगा। मैंने उसे रोका और स्मरण दिलाया कि मैं एक मामूली प्रबंधक हूं, एक गणितज्ञ नहीं। काफी देर सोचने के बाद उसने कहा, '' मुझे समझ में नहीं आता कि मैंने जो किया है, उसे गैर तकनीकी भाषा में कैसे समझाऊं।''[43]

जब तक लोग साधारण हिन्दी में अपने मन की बात अभिव्यक्त नहीं कर सकते, वे नहीं जानते कि वे क्या कह रहे है। विश्वसनीय टीकाओं, बाइबल के शब्दकोष, विश्वकोष, बाइबल के प्रतिष्ठित संस्करणो, शब्द परिवर्तन करके व्याख्या करना, शब्द – अध्ययन की पुस्तकों और अन्य संदर्भ पुस्तको के व्दारा सहायता प्राप्त करे। मैं ऐसी लाभप्रद सहायता लेता हूं, जो जहां भी उपलब्ध होती है।

आप अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की खोज में रहें। ''कुछ के उत्तर बाइबल अध्ययन के दौरान मिलेगें, और कुछ के उत्तर तब मिलेंगे जब आप दुसरों से बातचीत करेंगे, और कुछ के संतोषजनक उत्तर आपको कभी नही मिलेंगे।''[44]

कभी–कभी दैनिक जीवन की घटनाएं पवित्रशास्त्र की बातों पर प्रकाश डालती है। ध्यान केंद्र शिबिरों में विश्वासियो को बाइबल के खजाने मिल जाते है जिन्हें शेष लोग खो देते है। आपके अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो को अन्य दूसरो को बताने के अवसरों का लाभ उठाये। ऐसा करने से आशीषों का विस्तार होता है और आप छोटी–छोटी बातों या अमहत्वपूर्ण बातों के संसार से बाहर निकलते है।

अध्याय - 28

सदैव प्रार्थना करें

एक व्यक्ति सर्वज्ञानी परमेश्वर से अधिक निकटता प्राप्त नहीं करता जब तक कि वह प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना नहीं करता। वास्तव में, मनुष्य कभी सर्वसामर्थी नहीं होगा, स्वर्ग में भी नहीं। परन्तु जब वह उद्धारकर्त्ता के नाम से प्रार्थना करता है, तब मानों स्वयं प्रभु यीशु अपने परमेश्वर – पिता से निवेदन करते है। उस अर्थ में, जो व्यक्ति प्रार्थना करता है – उसके हाथों में अत्याधिक सामर्थ होती है। प्रार्थना स्थितियो को बदलती है। एक वृद्ध अंग्रेज बिशप ने कहा था, ''जब मैं प्रार्थना करता हूं – स्थितियां बदलती है, जब प्रार्थना नहीं करता तब कुछ नहीं बदलता।''

भला हो यदि मसीहीजन इस बात को जान लेते। वे इस संसार में सामर्थ को संतुलित करते है। देखने में वे असहाय अल्पमत लगते है, परन्तु परमेश्वर के साथ मिलकर वे देश – देशों की नियति को प्रभावित करते है। नीचे दी बातों पर विचार करें:

> प्रार्थना ने समुन्दरों में विभाजन किये, नदियों के बहाव बदल दिये, चकमक की चट्टानों से जल की धाराएं बहाई, अग्नि की ज्वाला को बुझाया, सिंहों के मुंह बंद किये, विषैले सर्पो और विष को नाकाम किया, दुष्टों के विरुद्ध सितारों को युद्ध करने भेजा, चंद्रमा की परिक्रमा रोक दी, सूर्य की तीव्र गति को रोक दिया, लोहे के फाटकों को खोल दिया, अनंतकाल से आत्माओं को वापस बुलाया, बलवन्त को उतरने की आज्ञा दी, प्रार्थना मे मनुष्य की उफनती धुन पर रोक लगाई और उसके मार्ग बदले, और गर्वीले, दुस्साहसी और बडबोंले अनईश्वर वादियों की विशाल सेनाओं को नष्ट किया। प्रार्थना ने एक व्यक्ति को समुद्र के तल से बाहर निकाला और एक दूसरे व्यक्ति को अग्निमय रथ में बैठकर स्वर्ग पहुंचाया। प्रार्थना ने क्या नहीं किया?[45]

सर्वोत्तम प्रार्थना एक आंतरिक, बलशाली आवश्यकता के कारण आती है। जब हमारे जीवनों में सबकुछ शांत और स्थिर है, हमें प्रार्थना की आवश्यकता महसूस नहीं होती। परन्तु जब हम स्वयं को टूटने के कगार पर पाते है, चट्टानो के बीच और एक कठिन स्थिति में और कही से सहायता न मिले, तब हम

प्रार्थनाओं के आँधी तुफान से स्वर्ग के दरवाजों को हिला देते है। ''यह सरगर्म प्रार्थनाएं है जो अपना मार्ग बनाकर परमेश्वर के सिंहासन तक पहुंचती है।''

> ठंडी प्रार्थनाएं ऐसे तीर है जो नुकीले नहीं है, ऐसी तलवारे है जिनमें धार नहीं है, ऐसे परिंदे है जिनके पंख नहीं है, वे चुभते नहीं, काटते नहीं, और स्वर्ग तक उड़कर नहीं जाते। ठंडी प्रार्थनायें स्वर्ग तक जाते – जाते रूक जाती है। (थॉमस ब्रुक्स)

> यह प्रार्थनाओं का गणित नहीं है, अर्थात् – उनकी संख्या, और न प्रार्थनाओं की भाषा का कौशल, न हमारी प्रार्थनाओं का आकार कि वे कितनी लंबी है, और न उनका संगीत कि वे कितनी कर्णप्रिय है, और न प्रार्थना करने का तरीका कि वे कितनी क्रमबद्ध है, और न हमारी प्रार्थनाओं का धर्मविज्ञान कि वे धर्मशिक्षा के अनुसार कितनी सटीक है – जिसकी परमेश्वर परवाह करते है। आत्मा में सरगर्मी के कारण बहुत कुछ संभव है। (बिशप हॉल)

इस पर विचार करे, यदि परमेश्वर कभी कुछ करते है तो प्रार्थनाओं के उत्तर मै ही करते है। स्वर्जन इस बात से सहमत है कि

> ''प्रार्थना दया की अग्रधावक है। आप पवित्र इतिहास में खोज कर ले आप पायेंगे कि शायद ही कभी पृथ्वी पर बड़ी दया के काम हुये हैं जिनके लिये निवेदन या प्रार्थनाएं नहीं किये गये। प्रार्थनाएं सदैव ही आशीषों की भूमिका रही है।''

कोई आपत्ति कर सकता है, ''प्रियजनों का उद्धार कैसे होगा? हम उनके लिये प्रार्थना करते है पर वे उद्धार नहीं पाते।'' मैं मानता हूं कि जब मैं किसी उद्धार न पाए हुए के लिये प्रार्थना करता हूं, परमेश्वर किसी न किसी रीति उससे बातचीत करते है। संभव है कोई उन्हें सुसमाचार का परचा दें, या प्रभु के बारे में बाते करे, संभव है वह रेडियों या टेलीविजन पर क्रिश्चियन कार्यक्रम सुनें या देखे, या परमेश्वर रहस्यमय तरीके से उसके विवेक में हलचल उत्पन्न करे। परमेश्वर बात करते है, पर वह लोगों को उनकी इच्छा के बिना उद्धार नहीं करते। अपनी संप्रभुता में उसने निर्णय लिया कि सभी मनुष्यों को इस विषय में अपनी इच्छानुसार निर्णय लेने दें। वह स्वर्ग को ऐसे लोगों से नहीं भरेगा जो वहां रहना नहीं चाहते। परमेश्वर का कार्य किसी और तरीके से बढ़कर प्रार्थना के द्वारा संपन्न होता है।

हम आर.ए. मैथ्यूस की उत्कृष्ट टीका इस विषय पर पढ़े।

> परमेश्वर के किसी भी कार्य में प्रार्थना धारदार हथियार है। यह पूरक आत्मिक रॉकेट नहीं है जो कुछ भली बातों या प्रयासों को उपर भेजे। प्रार्थना किसी भी आत्मिक सेवकाई में एक कार्य और कार्य की शक्ति है। अवश्य है कि यह केंद्रीय बल हो। किसी मिशन या कलीसिया का आत्मिक इतिहास प्रार्थना के जीवन में लिखा जाता है। सामूहिक जीवन की अभिव्यक्ति का मापन सांख्यकीय आंकड़ों में नही परन्तु प्रार्थना की गहराई से होता है। प्रचार, शिक्षण, सेवा, लक्ष्य प्राप्ति, नयी बातों को ग्रहण करने, इक्कीसवी सदी की तकनीक, समय–प्रबंधन और प्रशासकीय प्रविणताओं पर सेंमिनार सभी अच्छे है, परन्तु परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में तब ही प्रभावशाली और उत्पादक है, जब वे प्रार्थना के आधीन है।[47]

प्रार्थना हमारे लिये आनंद की बात होनी चाहिये, प्रेरित पौलुस के लिये यह आनंद थी। फिलिप्पियों 1:4 में उसने कहा था – "तुम सबके लिये बिनती करता हूं तो सदा आनंद के साथ बिनती करता हूं।" डॉनल्ड इंग्लिश के अनुसार यह प्रार्थना की प्रमुख अभिवृत्ति नहीं हैः

> प्रार्थना पर लिखी कितनी पाठ्य – पुस्तकों से यह कितना भिन्न है – कि प्रार्थना कर्तव्य है, अनुशासन है, दिनचर्या या रीति–रिवाज है। पौलुस कहते है – " मुझे क्षमा करे, मुझे तो इसमे आनंद मिलता है।" प्रार्थना में आनंद करने में क्या गलत है? मैं जानता हूं कुछेक अवसरो पर अवश्य है कि यह एक अनुशासन, एक दिनचर्या हो, परन्तु क्या प्रार्थना करते समय हम आत्मा की उष्मा का आनंद न ले, जो हमें इस गतिविधि में आंनदित करते है?

प्रार्थना व्यक्ति को उन ऊंचाईयो पर लेकर जाती है, जहां तर्क निर्बल हो जाते है। यह अकसर असंभव के जगत में कार्य करती है और उसे संपन्न कर दिखाती है।

प्रार्थना सबसे काले बादलों को दूर कर देती है,
वह उस सीढ़ी पर चढ़ती है जो याकूब ने देखी थी,
विश्वास और प्रेम का अभ्यास कराती है,
स्वर्ग से प्रत्येक आशीष को लेकर आती है,
प्रार्थना पर प्रतिबंध लगने पर हम लड़ना बंद कर देते है,
प्रार्थना मसीही युद्ध के हथियारो में निखार लाती है,
और जब सबसे अधिक निर्बलतम मसीही अपने घुटनों पर प्रार्थना करते है,
शैतान उन्हें देखकर कांपता है

(डबल्यू. एम. कॉवपर)

किसी ने कहा है, "मैं अपने प्रभाव का मूल्यांकन, उन लोगों की संख्या से करता हूं जिनके लिये मैं प्रार्थना करता हूं और जो मेरे लिये प्रार्थना करते है।" पुत्र के द्वारा प्रार्थना पिता के पास पहुंचती है (इफि. 2:18); प्रकाशित वाक्य 8:1–4 में, प्रभु यीशु मसीह को सोने का धूपदान लिये स्वर्गदूत के रुप में दिखाया गया है। जब हमारी प्रार्थनाएं उस तक पहुंचती है, वह उनमें धूप भरता है और सोने की वेदी पर सिंहासन के सामने चढ़ाता है। धूप, उसके व्यक्तित्व और कार्यो का सुगंध है। जब हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर तक पहुंचती है, सभी अशुद्धताएं दूर कर दी जाती है और प्रार्थनाएं सम्पूर्ण रुप में सिद्ध होती है।

प्रार्थना का महत्व सेवा से अधिक है। "परमेश्वर परिश्रम से बढ़कर प्रार्थना और संचार को महत्व देता है। स्वर्गीय दूल्हा एक पत्नी से प्रेम प्रस्ताव कर रहा है, किसी नौकर को काम पर नहीं रख रहा है।" (लेखक – अज्ञात)

हम अपनी प्रार्थनाओं के बडेपन से परमेश्वर को सम्मान देते है। एक भिखारी ने सिकंदर महान से अपने लिये 'खेत', मांगा ताकी बेटी के लिये दहेज और बेटे के लिये शिक्षा का प्रबंध्द हो सके। जब उसे यह दिया गया उसके अधिकारियों ने इसे अनुचित ठहराया। सिकंदर ने कहा, "मैं सोने के सिक्के मांगने वालों से उब चुका हूं। इस बेबाक भिखारी ने मुझें राजा जैसा मान दिया है, उसने मेरे कद के अनुसार मांगा है।" हमें भी बड़ी बातें मांगनी चाहिये –

तुम एक राजा के सामने जा रहे हो
बड़ी–बड़ी याचिकाएं लेकर जाओं,
क्योकि उसका प्रेम और सामर्थ इतना विशाल है
कि आप कभी बहुत अधिक नहीं मांग सकते

(जॉन न्यूटन)

अकसर हम अपनी प्रार्थनाओं मे तुच्छ या महत्वहीन मांग करते है जैसा कि इस कविता में बताया गया है:

यदि आप तब होते, जब मसीह इस पृथ्वी पर थे,
और आप उस दयावन्त उद्धारकर्त्ता से मिलते,
मान लो कि आप पुर्णतः अंधे होते,
तब आप उससे क्या मांगते?
बच्चे ने सोचा और तब उत्तर दिया
''मैं निःसंदेह मांगता प्रभु से एक कुत्ता,
चेन से बंधा, जो प्रतिदिन मुझे मार्ग दिखाता।''
कितनी बार हमारी विश्वास रहित प्रार्थनाएं भी यही मांगती है।
हम लज्जा के साथ स्वीकार करते हैं
कि हमने केवल एक कुत्ता और चेन मांगी
जबकि हमें 'आंखो की दृष्टि' मिल सकती थी।

(एम. कैली)

जब हम स्वर्ग जायेंगे तब हमे एहसास होगा कि हमे और अधिक प्रार्थनायें करनी चाहिये थी।

अध्याय - 29

यीशु के साथ आपका प्रतिदिन का जीवन

प्रतिदिन एकांत समय एक निश्चित समय है जब एक विश्वासी प्रभु के साथ बातचीत करता है, यह बातचीत बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के द्वारा होती है। वह पवित्रशास्त्र से परमेश्वर से आवश्यक 'रोटी' का भोजन पाता है और सामर्थी परमेश्वर के सामने श्रोता बनकर बातचीत करता है जिसप्रकार एक मित्र दूसरे मित्र से बातचीत करता है। अकसर यह समय भोर का होता है, सुबह का सबसे प्रथम कार्य, क्योंकि यह समय दिन का सर्वोत्तम भाग माना जाता है और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर का है। परन्तु यदि किसी कारणवश भोर का समय देना संभव न हो, हमें कर्मकांड़ी नहीं बनना चाहिये, कि शेष दिन दोष भावना के साथ गुजारे। ऐसा कोई नियम नहीं है कि आप दिन के अन्य भागों में यह एकांत समय नहीं रख सकते। एकांत समय रखने का कोई सर्वोत्तम तरीका नहीं है। प्रत्येक को तय करना होगा कि उसके लिये कौन सा तरीका सबसे उत्तम है। किंतु नीचे दिये सुझावों से सहायता ली जा सकती है –

जैसा सभी आदतो में सच है जब भी आप उसे करते है, वह आदत बलवन्त होती है, जब भी आप नहीं कर पाते, वह आदत निर्बल होती है। सबसे बेहतर होगा कि हम एक नियत समय और स्थान चुन ले, जहां तक संभव हो, उसमें कोई व्यवधान, या ध्यान भंग करनेवाली बातें न हो यदि आपका संचार किसी बात से भंग हो, जिसे आपको करना है, उसे कागज के एक टुकडे पर लिख ले, और तब पुनः वचन के मनन में लग जाये।

प्रार्थना करके आरंभ करे, प्रभु से कहे कि वे वचन के द्वारा आपसे बातचीत करे, चाहे उसमें समर्पण या भक्ति हो, निर्देश, राहत, सुधार या मार्गदर्शन हो। बाइबल अध्ययन में एक छोटें भाग तक ही सीमित रहे। बेहतर होगा कि 5 पदें पढ़े और उनमें से कुछ प्राप्त करे, यह पूरा अध्याय पढ़ने और भूल जाने से बेहतर है। अकसर विश्वासी बहुत कुछ करने का प्रयास करते है, और फिर निराश होते और अध्ययन छोड़ देते है।

उस दिन का नियम भाग पढ़ने के बाद स्वयं से नीचे दिये गये प्रश्न पूछे –

- क्या वृतान्त में प्रभु यीशु के बारे में कुछ है?
- क्या मेरे लिये अमल करने हेतु कोई आज्ञा है?
- क्या अंगीकार करने के लिये कोई पाप है, या कुछ जिसकी अनदेखी की जानी चाहिये? क्या दावा करने के लिये कोई प्रतिज्ञा है?
- क्या इस वचन या वृतान्त मे कोई समस्या है जिसे मै नहीं समझता, और जिसका उत्तर मुझे खोजना चाहिए? (अंगीकार! मैं यदि कुछ नहीं समझ पाता तो मेरे लिये उसमें आनंद करना कठिन हो जाता है।)
- क्या ऐसा कुछ है जिसके लिये स्तुति और आराधना की जा सकती है? क्या ऐसी कोई बात है जो मुझे प्रार्थना करना स्मरण कराती है?
- क्या कोई वचन है जो मुझे कंठस्थ करना है?
- क्या इसमें कोई आत्मिक आशीष है जिसके लिये मुझे धन्यवादित होना चाहिए?

कुछ लोगों के लिये उनके विचारों को एक 'नोटबुक' में लिख लेना सहायक सिद्ध होता है। जब आप उस वृतान्त को सावधानीपूर्वक पढ़ ले, अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने या पद के संदर्भ में नया प्रकाश पाने किसी अच्छी टीका का सहारा लेने में संकोच न करे। एकांत समय के संदर्भ में और भी तरीके है ... एक है ... डेली लाइट ऑन द डेली पाथ ' का उपयोग करना।

बैगस्टर परिवार जिसने इसे संकलित किया, उन्होंने लिखा,

> यह पुस्तक बाइबल के चुने हुये वृतांतो को लेकर बनाई गई है, वर्ष के प्रत्येक दिन पढ़ने के पद है – एक सुबह के लिये, और एक शाम के लिये। प्रत्येक पृष्ठ पर उपर एक शीर्षक पद है जो प्रमुख विचार को दर्शाता है। तब पवित्रशास्त्र के अन्य भागों से परमेश्वर के बेशकीमती वचन चुनकर रखे गये है ताकि उस पद को और भी अधिक प्रकाश दे। आश्चर्यजनक रुप में जिन वृतान्तों का चुनाव किया गया है – वे सब पदे मसीहियों के जीवन की परीक्षा जैसी स्थितियों में एक दम सटीक बैठती है। समस्त संसार में सैकडो – हजारों लोग दूर दराज के इलाकों में भी, प्रतिदिन उस पृष्ठ को पढ़ते है और उसके संदेश से राहत और सहायता पाते है।

प्रत्येक पद को शामिल करने से पहिले बैगस्टर परिवार ने बड़ी गंभीरता से प्रार्थना की।

एक और उत्कृष्ट दैनिक मनन की पुस्तक है जो सी.एच. स्पर्जन द्वारा लिखित है – ''मॉनिंग एण्ड इवनिंग रीडिंग।'' बाइबल की अलग – अलग पदों पर उनकी टिप्पणियां निर्देशात्मक और रुचिकर है, कभी – कभी हंसाती भी है। वे उन सत्यों को प्रगट करते हैं जो संभवतः हम नहीं देख पाते यदि हम पर जिम्मेवारी सौंप दी जाये। अन्य पुस्तके, पुस्तिकाएं और कैलेण्डर भी है जिनमें प्रतिदिन के पाठ है। वे नौसिखियों के लिये सहायक और परिपक्व संतो के लिए आनंददायी है। कुछ सुझाव देते हैं कि आप पूरी बाइबल एक वर्ष में पढ़ ले।

यह सुनिश्चित करे कि एकांत समय के समापन पर आप प्रार्थना अवश्य करेंगे, प्रभु को धन्यवाद देंगे कि उसने क्या सिखाया है और उसे उन पर अमल करने की सामर्थ देने का निवेदन भी करेंगे।

दिन के समय पर वे सबक आपके मन में गहिरे बैठ जाते है, और दूसरों को आपके साथ आशीषें बांटने का अवसर देते है (मलाकी 3:16)। स्टीफन ओलफोर्ड ने परमेश्वर के साथ मनन चिंतन के समय के बारे में कहा है कि ''यह समय स्थिर, आत्मिकता, प्रभावशीलता और प्रेम के जीवन के लिये परम आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।'' इस बारे में अवश्य विचार करे।

अध्याय - 30

आराधक बनें

हमारे अस्तित्व का सही कारण है – हम परमेश्वर की आराधना करने सृजे गये थे। पिता ऐसे आराधकों को खोजता है जो आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे। इसका अर्थ है कि यह आराधना कुछ अनुष्ठानों को करने और पहिले से तैयार प्रार्थनाओं को दोहराने का मसला नहीं है। परन्तु यह आत्मा का विषय है, अर्थात् आत्मा के द्वारा प्रेरित और आत्मा की सामर्थ से सम्पन्न, और यह सत्य के साथ, अर्थात् ईमानदारी से और हृदय की सच्चाई के साथ हो।

आराधना का अर्थ है प्रभु के व्यक्तित्व और कामों के कारण उसकी स्तुति प्रशंसा करना। वह क्या है और उसने क्या किया है, उसके प्रति उसे आदर देना। उसमें सराहना और धन्यवाद शामिल हो सकता है। यह त्रिएक परमेश्वर के प्रति एक प्रेम गीत है, वास्तविक आराधना में अहं अनुपस्थित होता है और तब ही आता है जब हम हमारे प्रति उसकी देखभाल और सुरक्षा के प्रति आभार अभिव्यक्त करते है।

बाइबल में प्रथम आराधना का वर्णन तब आता है जब अब्राहम अपने एकलौते पुत्र इसहाक को होमबलि के रुप में परमेश्वर को चढ़ाने गया (उत्पति 22:5)। आराधना का प्रमुख कार्य, नये नियम के अनुसार हमारी देहों को परमेश्वर के लिये जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान के रुप में चढ़ाना है (रोमियों 12:1–2)। यहां देह का अभिप्राय आत्मा, प्राण और देह तीनों से है – वह सब जिसके कारण हमारा व्यक्तित्व है।

प्रचार करना आराधना करना नहीं है। प्रचार सुनने वालों के हृदय में आराधना करने की प्रेरणा दे सकता है , परन्तु प्रचार श्रोताओं तक संदेश पहुंचाना है। गवाही देना भी आराधना करना नहीं है, यद्यपि ऐसा करना आराधना के लिये उत्तेजित कर सकता है। आराधना परमेश्वर से सीधे बात करना है। बाइबल में आराधना परमेश्वर –पिता और परमेश्वर –पुत्र के लिये है, परन्तु कुछ कारणोंवश, जिन्हें बताया नहीं गया है, आराधना कभी पवित्रात्मा के लिये नहीं बताई गई है। बाइबल के आलोचक इसे परमेश्वर का स्वार्थ कह सकते है कि केवल वे ही आराधना चाहते है। वे सह नहीं समझते कि आराधना

में हमारी भलाई है, परमेश्वर की नहीं, हम उसके समान बनते जाते है, जिसकी हम आराधना करते है (2 कुरि. 3:18):

> परन्तु जब हम सबके उघाडे चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण मे, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश – अंश करके बदलते जाते है।

हम कैसे आराधना के भाव में आये ?

भजन संहिता में आराधना पर बहुत सामग्री दी गई है। परमेश्वर के गुण या चरित्र की विशेषताएं एक पसन्दीदा विचार है, साथ ही इतिहास और भविष्यवाणियों में परमेश्वर की देखभाल भी प्रमुख विचार है। परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को भेंट में देना, जैसा कि अब्राहम द्वारा इस को बलि चढ़ाने की तस्वीर में हैं – उस पर विचार करना, हमारे ह्दयों को परमेश्वर की प्रशंसा स्तुति में ऊपर उठाता है। उद्धारकर्त्ता का जीवन और कार्य अनवरत सराहना उत्त्पन्न करते है– उसका देहधारण, पृथ्वी पर सिद्धता का जीवन, उसका प्रायश्चित के रुप में बलिदान, उसका पुनरुत्थान, उसका स्वर्गारोहण और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उसकी वर्तमान सेवकाई, उसका द्वितीय आगमन, और उससे निकलकर हम तक प्रवाहित होने वाली आशीषे इत्यादि आराधाना के कारण है।

दाऊद और भजनों के अन्य लेखक सभी आराधक थे। परमेश्वर के बारे में उनके विचार महान थे। परमेश्वर की सृष्टि के अद्‌भुत आश्चर्य उन्हें आत्मिक गीतोंके उन्माद से भरते थे। जब वे परमेश्वर की महानता, भलाई और करुणा पर विचार करते, उनके मनों में स्तुति के भावं भर जाते। वे उसे सृष्टि का संभालनेवाला और नियंत्रण करने वाला मानकर विचार करते और वे हतप्रद रह जाते।

भजन संहिता के अंतिम भजनों का लेखक इतना अभिभूत था कि उसने समस्त सृष्टि, जीवित और अजीवित, सभी को प्रभु की स्तुति, प्रशंसा के गति गाने का आहवान किया। सभी लोग, क्या बड़े, क्या छोटे, वृद्ध और जवान, राजा और हाकिम, जी हां, स्वर्गदूत भी, सभी जिनमें पशु, पक्षी और रेंगनवाले सभी प्राणी सम्मिलित है उन्हें मिलकर एक विश्व व्यापी गायन समुह बनना चाहिये। वह सभी वाद्ययंत्रो के उपयोग की बात करता है – वीणा, तुरही, झांझ, बांसुरी, डफ–तबले और अन्य वाद्ययंत्रो का समवेत स्वर उठे। उसका स्तुति – प्रशंसा का विचार इतना अद्‌भुत है कि वह सूर्य, चंद्रमा और तारों को भी गीत गाने कहता है। आकाश, पृथ्वी, समुद्र, पर्वत, पहाड और जल धाराएं चुप न रहे, आग, हिम, बर्फ और तूफानी हवाएं भी अपना – अपना भाग पूरा करे। उसका विषय इतना श्वांसरोधी है कि प्रभु – परमेश्वर समस्त आराधना के योग्य है।

कितुं इन भजन लेखको के पास बाइबल नहीं थी। वे नहीं जानते थे कि परमेश्वर का पुत्र कैसे आयेगा, पृथ्वी पर गौशाले में देह बनकर जन्म लेगा और उसे पशुओं की चरनी में रखा जायेगा वे नहीं जानते थे कि मजूसी उसे देखने के लिये आयेंगे। उनका परमेश्वर जिसने कुछ समय के लिये मनुष्य बनने का अनुबंध किया और यह अनुबंध बुद्धि से परे था। और उन्हें यह पता नहीं था कि गौशाले की चरनी में वह लेटा है जिसने 'तारों भरे आकाश' की रचना की है। उनकी आंखो से यह सत्य छिपा था कि चरनी में रखा गया बालक ''अनंतकाल का वचन है – जिसने 'कुछ नही' की कोख से विभिन्न

संसारो को वचन कहकर अस्तित्व प्रदान किया, और उस नन्हें असहाय शिशु की छोटी–छोटी बांहे, उस परमेश्वर के हाथ है जिसने विश्व की नीवं रखी।"[48]

वे नहीं जानते थे कि समस्त विश्व की सरंचना करने और निर्माण करनेवाला एक दिन बढ़ई के वस्त्र पहिनकर, नासरत नाम नगर मे रहेगा। या फिर अपने ही हाथो से सृजित अपने संसार में वह अजनबियों के समान भटकता फिरेगा। वे इस विचार से अवाक रह जाते कि परमेश्वर के पास अपना सिर धरने की जगह भी नहीं है, या फिर वह कभी–कभी खुले आसमान के नीचे सोयेगा जबकि उसके चेले अपने – अपने घर चले जायेंगे। क्या उन्होंने सचमुच यह समझा था कि परमेश्वर वास्तव में पृथ्वी पर आयेंगे, बीमारों को चंगा करेगे, अंधो को

दृष्टिदान करेंगे, विकलांगो के अंगो को पुनः स्थापित करेंगे, दुष्टात्माओं को निकालेंगे, और मृतकों को जिला उठायेंगे? और उसकी दया के कामों के बावजूद उसका अपमान ठ्ठा किया जायेगा और नगर के बाहर निकाल दिया जायेगा?

उनके लिये यह अविश्वसनीय रहा होगा कि वह जो सबका न्याय करनेवाला है, उसे उसके अपने ही एक चेले के विश्वास घात का शिकार होना पड़ेगा, उसे बंदी बनाया जायेगा और दण्ड के लिये सुनवाई होगी। सिविल अधिकारी उसे निर्दोष पाएंगे, परंतु उसे इतने कोड़े मारे जाएंगे कि उसकी पीठ 'हल चलाये गये खेत' के समान होगी और उसका स्वरुप मनुष्यों का सा नहीं जान पड़ेगा।

भजनकार उस विस्तार में नहीं जानते थे जैसा कि हम अब जानते है। एक स्थान जिसे कलवरी कहते है, लोग अपने परमेश्वर को वहां काठ के क्रुस पर कीलों से ठोंक देगे। वह सब पुराने–नियम के उन कवियों के लिये कल्पना से बाहर था। वे अविश्वास में सिर हिलाते और सोच नहीं पाते कि परमेश्वर की महिमा की चमक, उसके परमेश्वरत्व की अभिव्यक्त समानता, विश्व का रचनेवाला और उसे संभालनेवाला यहां क्रुस पर मनुष्यों के पापों का दाम चुका रहा होगा, उन्हें शुद्ध कर हा होगा (इब्रानियो 1:1–3)। निर्बल प्राणी उसे जो उच्च है और महिमा से भरपूर है, लज्जा के काठ पर ऊंचा उठायेंगे। सबसे ऊंचा स्वर्ग भी जिसे धारण करने में असमर्थ है, वह कीलों से ठोका गया। यह अमर परमेश्वर था जो क्रुस पर मर रहा था।

कल्पना करके देखिए कि छुटकारा पाये हुओं की गायन–मण्डली ने कैसे स्वर्गीय स्वर और संगती के गीत गाये होते, यदि वे चार्ल्स वेसली के शब्दों में यह गीत गा सकते –

उद्‌भुत प्रेम! यह किस तरह संभव है
कि आप हे मेरे परमेश्वर मेरे लिये मृत्यु का वहन करे?

या फिर आइजक वॉट्स के भजनों में, जिसमें कहा गया है –

"हे प्रभु, ऐसा न हो कि मैं अपने परमेश्वर,
यीशु मसीह की मृत्यु को छोड और किसी बात की बड़ाई करुं।

उन्होंने शीशे में से धुंधला–सा देखा। कभी–कभी उन्हें झलक सी मिली कि भविष्य में क्या होगा, परन्तु सम्पूर्ण प्रकाशन उनके लिये नहीं था कि वे उसे जाते। विचार यह है, यदि वे उस सीमित ज्ञान के द्वारा जो उनके पास था प्रभु के लिये स्तुति – प्रशंसा, आराधना, सराहना और धन्यवाद का ऐसा बड़ा

नाद प्रस्तुत कर सकते है तो हम जो कलवरी के बारे में जानते है और उसे भी जिसने उस पर प्राण दिये, हमें कितना बढ़कर उसका गुणगान करना चाहिये।

एक बार जब हम उस सत्य को जान लेते है कि हमारे परमेश्वर ने हमारे लिये क्या–क्या किया है, वह बलिदान जो उसने हमारा उद्धार करने के लिये दिया है, हम स्वतःस्फुर्त बलपूर्वक आराधना करनेवाले बन जाते है। किसी को आवश्यकता नहीं होगी कि प्रभु की स्तुति के लिये हमें लुभाये या उत्साहित करे। हमारी जीभें स्वतः लेखक की कलम बन जायेगी। हमारे जीवन स्वयं परमेश्वर की स्तुति के अंतहीन भजन बन जायेगे। चाल्से वेसली के शब्दों में, "हम अपने हृदयों को कृतज्ञता में खो देंगे और हमारी आंखे आसुंओ में पिघल जायेगी।" हम उस उद्भुत आश्चर्य प्रेम और प्रशंसा में गुम हो जायेंगे, और उसके प्रेम की रहस्यमय गहराईयों में डूब जायेगे।" भजनकार के समान हम समस्त सृष्टि को आहवान करेंगे कि वे परम–प्रधान की महिमा गाने में हमारे साथ सम्मिलित हो जिसने हमें अंधकार में से उसकी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।

मेरे लिये, और कोई बात मुझे आराधक नहीं बनाती जितना कि यह तथ्य कि कलवरी के क्रुसपर मेरे लिये प्राण देनावाला मेरा सृजनहार और विश्व का संभालने वाला परमेश्वर है। रविवार की सुबह प्रभु–भोज के लिये तैयारी करते समय मैं शनिवार की शाम का समय अपने एकांत समय को बाइबल के साथ और भजनों की पुस्तके के साथ बिताना पसंद करता हूं। पुराने भजनों में से बहुत से भजन कलवरी के सौदर्य को अभिव्यक्त करते है और चकित कर देते है, यदि मैं स्वयं प्रयास करुं तो उससे अधिक इन भजनों से मुझे प्रार्थना का भाव प्राप्त होता है। तब सुसमाचार प्रचार और सेवा दोनों आराधना का विस्तार बन जाते है।

अध्याय - 31

मसीह की मण्डली से प्रेम करो[49]

मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्य जातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं, और सब पर यह बात प्रकाशित करुं कि उस भेद का प्रबंध क्या है, जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का विविध प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है, प्रगट किया जाये। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह में की थी (इफिसियों 3:8–11)।

परमेश्वर के वचन में और विचारो में मण्डली अतिशय महत्वपूर्ण है। मैं इसबारे में कुछ बातों का उल्लेख करना चाहता हूं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि पृथ्वी पर यही एक मात्र विश्वासियों का समाज है जिसे सदा बना रहने की प्रतिज्ञा प्राप्त है। यीशु ने कहा, ''मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' यह किसी अन्य समूह के लिये वैध या मान्य नहीं है।

मण्डली का महत्व इस बात से प्रगट है कि उसे नये–नियम में अति उच्च स्थान दिया गया है। मैं सोचता हूं कि इस विषय का महत्व आकलित करने में हम विचार करे कि नये –नियम का कितना बड़ा भाग इसके विषय में दिया गया है, और उस आधार पर हमारी सोच सही है कि मण्डली का अत्याधिक महत्व है। पवित्रशास्त्र का बहुत बड़ा भाग 'मण्डली ' के बारे में चर्चा करता है।

इफिसियों 1:19–23 में पौलुस ने लिखा है –

''और उस की सामर्थ हम में जो विश्वास करते है, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी और सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभूता, के और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जायेगा, बैठाया।

और सबकुछ उसके पांवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सबकुछ पूर्ण करता है।''

उसकी देह उसकी परिपूर्णता कैसी है, वह जो सब में सबकुछ पूर्ण करता है? मैं अपने हाथ में 3/5 का एक कार्ड पकडे हूं, अब मैं उसे चीरकर दो माग करता हूं – एक भाग प्रभु यीशु मसीह को दर्शाता है, और दूसरा भाग मसीह की देह या कलीसिया को दर्शाता है। अब मैं पुनः दोनो को एक साथ मिलाकर रखता हूं – एक अर्थ में कलीसिया मसीह की पूरक है, यह ऐसा है मानों मसीह अपनी कलीसिया के बिना स्वयं को पूर्ण अनुभव नहीं करते जो उनकी देह है। और उनकी यह देह इस संसार में उन्हें अभिव्यक्त करने का साधन है। जब मैं इस प्रकार विचार करता हूं तब महसूस करता हूं कि कलीसिया महत्वपूर्ण है। मण्डली महत्वपूर्ण है और अवश्य है कि हम इस बारे में दृढ़ – विश्वास रखें। हमें इस बात का विचार करके उत्साही होना चाहिये, खेद प्राथी नहीं। मुझे लगता है जब इस विषय पर बात आती है, हम मे से कुछ हिचकिचाने लगते है, हम इस सत्य को जानने की कोशिश करने से डरते है।

कलीसिया को स्वर्गदूतों के लिये सीखने का साधन कहा गया है। हम इफिसियों 3:10 में पढ़ते है –

''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है, प्रगट किया जाये।''

स्वर्गदूतो के बारे में सोचिये, या कम से कम उन स्वर्गीय प्राणियों के बारे में, जो पृथ्वी पर झांकते और देखते रहते है कि परमेश्वर ने कलीसिया में क्या किया (या, क्या कर रहे है)। उसने यहूदियों और अन्यजातियों को लिया – विश्वास करनेवाले यहूदियों और विश्वास करनेवाले अन्यजातियों को एक साथ मिला दिया। अलग – अलग प्रकार के व्यक्तितत्व, सभी प्रकार की झुर्रिया और मस्से, और बाकी बातें भी, और उन्हें आपस में मिलाकर उनको एक नया मनुष्य बनाया।

इंग्लैण्ड में केस्विक सम्मेलन में बोलते हुये जॉनाथन लैम्ब ने यह उद्धरण पढ़ा –

मसीह ने मृत्यु सही ताकि सभी प्रकार के मनुष्य परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करे, और एक दूसरे के साथ भी। मसीहत की विलक्षणता यह है कि उसने उन लोगों में सहमागिता संभव की, जो अन्यथा कभी एक दूसरे को सहन नहीं करते, एक दुसरे के साथ आनंदित होने की बात तो दूर है। मसीह के कारण संभ्रान्त परिवारों और समाजो के लोग, देशांतरण करके आये, खेतिहर मजदूरो के साथ मेल जोल रखते है और अधेड परम्परावादी विद्रोहीयों और मुक्त यौनाचार करनेवालो के साथ विलाप करते है – अश्वेत, भारतीय, यहूदी और श्वेत एक साथ मिलकर सरगर्मी से प्रार्थना करते है, और प्रबंधक एवं मजदूर मिलकर एक दूसरे की समस्यायें सुनते है। वर्ग, व्यापार, नस्लवाद, शिक्षा, राजनीति, पीढ़ियों के अतंर, और लाखों परस्पर टकरानेवाले हितों में विभाजित इस संसार में केवल मसीह ही सामंजस्य न रखनेवालो के बीच सांमजस्य ला सकते है।[50]

कुछ वर्ष पहिले यह बात मुझे बड़ी गहिराई से समझ में आयी, जब मैं हाइफा में था। वहां एक मण्डली है जिसमें विश्वासी यहूदी और अरब मिलकर रोटी तोड़ते है। हम जो परमेश्वर के वचन में पढ़ते है,

वहां उसका अति सुंदर प्रस्तुतिकरण देखने मिलता है। स्वर्गीय प्राणी नीचे पृथ्वी पर देखते है और परमेश्वर की बुद्धि पर आश्चर्य करते है।

पौलुस ने मण्डली का सत्य बताते हुये उसे पवित्र शास्त्रीय प्रकाशन का शिरोमणि पत्थर बताया। कुलुस्सियों 1:25 में वह लिखता है –''जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबंध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया।''

अंग्रेजी बायबल मे इसका आशय है – परमेश्वर का वचन तुम्हारे लिये पूरा करुं। परमेश्वर का वचन पूरा करने का क्या अर्थ है? वास्तव में कलुस्सियों की पुस्तक नये – नियम में जोड़ी जानेवाली अंतिम पुस्तक नहीं थी, और फिर भी, जहां–तक नयी और महत्वपूर्ण धर्मशिक्षओं का प्रश्न है, कलुस्सियों की पत्री आत्मिक प्रकाशन में शिरोमणि है, विशेषकर कलीसिया संबंधित प्रकाशन के विषय पर।

1 तीमु. 3:15 में हम पढ़ते है कि मण्डली पृथ्वी पर वह निकाय या इकाई है, जिसे परमेश्वर ने विश्वास के विकास और विस्तार के लिये चुना है – ''यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिये।'' बाइबल के दिनों में खंभे का उपयोग अकसर समाचारों और घोषणाओं को दर्शाने के लिये किया जाता था। कलीसिया सत्य की घोषणा करने के लिये खंभा है। परमेश्वर मण्डली से प्रेम करते है। यह रहस्य परमेश्वर के मन में अनतंकाल से छुपा था, और ठीक समय पर, वह एक नया समाज बनानेवाला था, जिसकी बुलाहट और नियती स्वर्गीय हो। और वह अपने पुत्र को पृथ्वी पर भेजने वाला था कि एक बहुत बड़ी कीमत चुकाकर अपनी दुल्हिन की खोज करे।

मैंने यह रुचिकर बात 'च्वाइस ग्लीनिंग कैलेण्डर' में कुछ समय पहिले पायी –

> यदि हम यह बात समझ सके कि हमारे प्रभु यीशु के लिये इस संसार में सबसे अधिक प्रिय उनकी कलीसिया है, तो हम बाहरी और सतही गतिविधियों और बातों में कम समय व्यतीत करेंगे। हमारे प्रयांसो की दिशा स्थानीय कलीसिया को बनाने की होगी जिसमें हम सहभागिता करते हैं और हमारा प्रेम उसकी देह के सभी सदस्यों तक पहुंचेगा। तब हम उसकी परवाह करेंगे जिसे प्रभु संसार में सबसे अधिक प्रेम करते है।

परमेश्वर मण्डली से प्रेम करते है। मसिह मण्डली से प्रेम करते है। पौलुस मण्डली से प्रेम करते है। वे इफिसियों 3:8 में लिखते है–

> मुझ पर जो पवित्रलोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं, और सब पर यह बात प्रकाशित करुं कि उस भेद का प्रबंध क्या है जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था, जिसने सभी वस्तुएं यीशु मसीह के द्वारा सृजी।

अब, कुछ नये विश्वासियों के लिये यह बात पवित्र शब्दों का एक उलझाव जैसा है, पर मैं इसे सरल करके बताना चाहता हूं – उन पदों में प्रेरित पौलुस कह रहे है कि उनकी दो प्रकार की सेवकाईयां है। क्या आप यह समझ रहे? वे दो सेवकाईयां कौन–सी है? सबसे पहिले, ''मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं।'' परन्तु वह वहां रुकता नहीं, वह कहता है, परन्तु वह वहां रुकता

नहीं, वह कहता है, ''और सब पर यह बात प्रकाशित करुं कि उस भेद का प्रबंध क्या है।'' अर्थात – कलीसिया। और मैं यह नहीं कह सकता कि उसे इनमें से एक बात दूसरी से अधिक प्रिय थी। उसने इन दोनों को संतुलन में रखा था।

कभी – कभी मैं सोचता हूं कि हम सुसमाचार – प्रचार के कार्य के प्रति अधिक उत्साहित रहते है और स्थनीय कलीसिया के प्रति कम कितुं पौलुस ने ऐसा नहीं किया। पौलुस की बड़ी अभिलाषा सुसमाचार का प्रचार करने की थी कि लोग उद्धार पायें और वे स्थानीय कलीसिया की सहमागिता में लाये जाये, और वे प्रभु की बातों में बढ़े ताकि वे फलदायी मसीही बने। यह एक महान दर्शन है, है ना? और मैं आपको चुनौती देता हूं – आप इस दोहरी सेवकाई में कहां पर है? – हो सकता है कि आप सरगर्मी से आत्माओं को जीतने में लगे है। मैं इस बात के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ – यह अद्‌भुत है – परन्तु यहीं पर न रुके। महान प्रेरित पौलुस के समान आप भी दोहरी सेवकाई को करे।

परमेश्वर मण्डली से प्रेम करते है। मसीह मण्डली से प्रेम करते है। पौलुस मण्डली से प्रेम करते थे। क्या मैं अपना उल्लसित स्वर मिलाकर कह सकता हूं –'' मैं भी मण्डली से प्रेम करता हूं''? वह मेरी मां है – मै उसका कर्जदार हूं – एक प्रकार से सोचे तो मैं सब बातों के लिये उसका कर्जदार हूं, अर्थात स्थानीय मण्डली का। यही वह मण्डली है जिसमें मैंने सुसमाचार का प्रचार सुना। यही वह मण्डली है जहां मैं परमेश्वर के पवित्रात्मा की निरुत्तर करनेवाली सामर्थ के प्रभाव में आया। यही वह मण्डली है जहां मुझे परमेश्वर का वचन सिखाया गया। बाहर से यह देखने में अति विलक्षण नहीं थी, यह बहुत नाटकीय नहीं थी। यहां मसीहीजन सभा करते, बाइबल के उत्तरवादी पाठ पढ़ते और एक – एक करके पुस्तकों का अध्ययन करते थे। सबसे पहिला उत्तरवादी पाठ मुझे स्मरण है जब मैं लड़का था, यशायाह की पुस्तक से था। कल्पना करे! गहिरी बाते! यही मेरी पृष्ठभूमि थी, यही मेरा प्रशिक्षण था। आज मै उसके लिये परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। मैं मण्डली से प्रेम करता हूं – मैं सचमुच प्रेम करता हूं। मैं उसके बारे में उत्साहित हूं।

मैं आपके साथ कुछ बातों के सत्यों पर चर्चा करना चाहता हूं, मण्डली के विषय में कुछ सत्यों पर, जो पवित्र शास्त्र में दिये गये है। मैं कहता हूं कि मण्डली के पृथक – पृथक लक्षण (भेद) नहीं होने चाहिये। क्या आपको आघात पहुंचा? ठीक, मण्डली में भेद नहीं होने चाहिए। देखिये, वहां सत्य परमेश्वर के सभी लोगों के लिये है, है ना? वह सब सत्य बाइबल में है। एक बात जो भेदकारी है, वह यह है कि कुछ लोग उस पर अमल करते है और कुछ नहीं करते। परन्तु नियम परमेश्वर के सभी लोगों के विश्वास करने और अमल करने के लिये है।

एक देह

प्रथम नियम जो मुझे प्रिय है, कि केवल एक देह है। मुझे इफि. 4:4 प्रिय है, ''एक ही देह है, और एक ही आत्मा जैसे तुम्हें जो बुलाएं गये थे, अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है।'' यह कलीसियायी संप्रदायवाद की मृत्यु की सूचना देनेवाला घण्टा है। मैं संप्रदायवादी शीर्षकों और नामों से घृणा करता हूं, उन्हें तुच्छ जानता हूं, और नफरत करता हूं। यह कहने का शालीन और धूर्ततापूर्ण तरीका है, कि मैं उन्हें पसंद नहीं करता। मुझे वे नाम पसंद नहीं

है – 'प्लेमाउथ ब्रदरन'। 'ब्रदरन' शब्द विश्वव्यापी है जबकि 'प्ले माऊथ' स्थानीय शब्द है। यह मुझे 'रोमन –कैथोलिक 'शब्द का स्मरण कराता है – 'कैथोलिक' अर्थात् विश्वव्यापी, और रोमन का अर्थ जो विश्वव्यापी नहीं है अर्थात् रोम का। मुझे नाम पसंद नहीं – यहां तक कि मुझे 'क्रिश्चियन ब्रदरन' नाम भी पसंद नहीं है, क्योंकि परमेश्वर के सब लोग मसीही भाई (बहन) है और मुझे ऐसा कुछ भी पसंद नहीं जो मुझे मसीह की देह के सदस्यों से अलग करता है।

जब एच. ए. आयरन साइड से पूछा गया कि वे किस कलीसिया से है, उन्होंने भजनसंहिता 119:63 के शब्दों में उत्तर दिया, ''जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते है, उनका मैं संगी हूं।'' क्या यह मनोहर नहीं है? यह सही कलीसिया है जिससे संबंध रखना चाहिए। यदि कोई आकर आपसे कहे कि आप किस कलीसियाई संप्रदाय से है? तो उत्तर केवल इतना दे, ''मै उसी कलिसिया से हूं जहां पौलुस सदस्य था।'' और यह सुनकर वह बाइबल का अध्ययन करनेवाला बनेगा। उसे परमेश्वर के वचन मे खोजना होगा कि पौलुस कौन–सी कलीसिया से था। उसकी आंखे खुल जायेगी। यह वास्तव में एक महिमायुक्त सत्य है। यह पृथ्वी पर एक देह है जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करनेवाले सभी सच्चे विश्वासियों से मिलकर बनी है।

परन्तु लोग अलग –अलग खण्ड चाहते है, चाहते है न? यदि आप प्रश्न करनेवालों को असहज करना चाहते है, जब वे आपसे पूछे –

''आप क्या है'' आप उत्तर दे – ''मैं एक मसीही हूं।''

''निसंदेह हम सब मसीही है, आप और क्या है?

''मैं यीशु मसीह का चेला हूं।''

मुझे पता है कि आप प्रभु यीशु के चेले है पर आप किस कलीसिया से है?

''मैं उस कलीसिया से हूं जो उसकी देह है।''

वे तब तक खुश नहीं हो सकते जब तक कि वे आपको कलीसिया के किसी खण्ड में न रख दे। उनके समक्ष समर्पण न करे।

मसीह सिर है और सब बातों का केंद्र है।

मसीह कलीसिया का सिर है –''क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है।'' क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है'' (इफिसिया 5:23)। कोई मनुष्य कलीसिया का सिर नहीं है चाहे वह पोप हो, आर्च बिशप हो या अध्यक्ष हो, यहां तक कि प्राचीन भी कलीसियां के सिर नहीं है। मसीह कलीसिया का सिर है और केवल वही है।

मसीह न केवल कलीसिया का सर है, वह उसके लोगों की सब बातों का केंद्र भी है। यह अद्‌भुत सत्य है। मैं चाहता हूं कि यह बात आज अधिक उचित रुप में समझी जाये। जब हम एक साथ मिलते है, हम किसी मनुष्य से नहीं मिलते, हम किसी संप्रदाय के अर्थ में कलीसिया से नहीं मिलते। हम मसीह से मिलते है। मसीह सब बातों का केंद्र है, और हम वहां जाते हैं क्योंकि विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु वहां है। हम विश्वास से यह मानते है, क्योंकि उसने कहा, '' जहां दो या तीन मेरे नाम से

इकठ्ठे होते है, मैं उनके बीच में उपस्थित होता हूं।'' आप कहेंगे – मैं उसे नहीं देखता, मुझे उसकी उपस्थिति का भान नहीं होता, ठीक है। कभी – कभी आप सभाओं में जाते है, और मैं आपसे कहता हूं कि स्वर्ग इतना नीचे उतरकर आता है कि याजक परमेश्वर की महिमा के कारण सेवकाई नहीं कर पाते, और वैसे अवसरों पर मै वहां रहना चाहता हूं, क्या आप नहीं चाहते? मसीह उसके लोगों के लिये सब बातों का केंद्र है।

सभी विश्वासी मसीह की देह के अंग है (1 कुरि. 12:12–13)

> ''क्योकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से है और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार, मसीह भी है। क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास हो, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया।''

मै चाहता हूं कि आप पद 12 के अतं में ध्यान दे,

> देह तो एक है और उसके अंग बहुत से है, और उस देह के सब अंग होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है
>
> *(शब्दशः मसीह)*।

यहां 'मसीह' शब्द का अत्याधिक असामान्य उपयोग हुआ है, यहां मसीह को सिर कहा गया है साथ मैं कलीसिया उसकी देह। क्या यह अद्भुत नहीं है? कभी – कभी हम इन पदो के इतने आदी हो जाते है कि हम समझ नहीं पाते कि वे कितनी श्वांसरोधी है। यह बात मन को आंदोलित करती है कि परमेश्वर का आत्मा शब्द 'मसीह' का उपयोग 'मसीह (सिर) और कलीसिया (देह) के लिये करेगा। सभी विश्वासी सदस्य (अंग) है।

प्रभु यीशु में मैं सभी विश्वासियों से प्रेम करता हूं। मैं उन सबसे प्रेम करता हूं जो प्रभु के बेशकीमती लोहू से छुड़ाये गये है। वे मसीह में मेरे भाई और बहिन है, उसकी देह में संगी सदस्य (अंग) है। मैं उनमें से प्रत्येक से कुछ न कुछ सीख सकता हूं। प्रभु में विश्वास करनेवाला ऐसा कोई नहीं जिससे मैं कुछ नहीं सीख सकता। और न केवल यह, पर मुझे सभी विश्वासियों के लिये प्रार्थना करनी चाहिये, केवल उनके ही लिये नहीं जो स्थानीय मण्डली में है, पर सभी विश्वासियों के लिये क्योकि हम सभी एक देह के साथी सदस्य (अंग) है। और जब वे मसीह का प्रचार करते हैं मुझे आनंदित होना चाहिये। हो सकता है कि मैं उनके तौर तरीकों से सहमत नहीं, परन्तु फिर भी मैं फिलिप्पियों 1:18 में बताये अनुसार, मसीह का प्रचार होने पर, पौलुस के समान आनंदित हो सकता हूं।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे जो करते है, मैं वह सब कर सकता हूं। यहां हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। मैं उनसे प्रेम कर सकता हूं, मैं उनसे कुछ सीख सकता हूं, मैं उनसे प्रभु यीशु के प्रति धुन, और प्रेम और समर्पण सीख सकता हूं, परन्तु वे जो करते है, बहुतसी वे बातें मैं नहीं कर सकता। लूथर के समान अवश्य है कि मेरा विवेक परमेश्वर के वचन का कैदी हो। मुझे वही करना है जो परमेश्वर का वचन सिखाता है। उदाहरण के लिये, इसका अर्थ यह नहीं कि मै उनके साथ सहयोग करुं जहां अन्य विश्वासीजन, विश्वास में नये – नये आने वालों को फिर से एक धर्म

का परित्याग कर चुकी कलीसिया में वापस भेजते है। यह कार्य मुझे सोचने पर विवश करता है जैसा कि मूडी ने कहा था –

"मैं कभी एक जीवित चूजा मृत मुर्गी के निचे नहीं रखूंगा।" जब उसने यह कहा तब उसने बिल्कुल सही कहा था।

सभी विश्वासियों का याजकत्व

सभी विश्वासीजन याजक है। हम सब पवित्र याजक और राजकीय याजको का समाज है।

> उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों–(1 पतरस 2:4);
>
> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो –(1 पतरस 2:9)।

सभी पुरुष विश्वासीजन याजक है, सभी स्त्री विश्वासी जन याजक है। सभी विश्वासी याजक पदधारी है। और सभी का कार्य (कर्तव्य) है कि प्रभु को अपने व्यक्तित्व, सम्पत्ति, प्रशंसा और सेवा का बलिदान चढ़ाये। परन्तु परमेश्वर का आत्मा याजकत्व के सार्वजनिक अभ्यास पर नियंत्रण करता है हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। विचार कीजिये कि पवित्रात्मा अन्य – अन्य भाषा के मण्डली में उपयोग पर नियंत्रण करता है (1 कुरि. 14)। यदि कोई अन्य – अन्य भाषा मे बोलता है, वहां अनुवाद करनेवाला होना चाहिये। किसी एक सभा में तीन से अधिक लोग अन्य भाषा में न बोले, उन्हें एक के बाद एक बोलना चाहिये। वे जो कहते है वह उन्नति करनेवाली बात हो। स्त्रिंया चुपचाप रहे। सभी बाते शालीनता और व्यवस्थित रुप से की जाये। और यही बात सार्वजनिक स्थल में याजकत्व के लिये भी है। "इसलिये मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष .... प्रार्थना करे (1 तीमु. 2:8)। "मै कहता हूं कि स्त्री उपदेश न करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाये,वरन चुपचाप रहे।" (1 तीमु. 2:12)। हमें इन नियंत्रणो पर आश्चर्य नही होना चाहिए, परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों के दान वरदानों पर नियंत्रण करता है तो विश्वासियों के याजकत्व पर भी नियंत्रण क्यों नहीं कर सकता?

प्राचीनों और कार्यकारी संतो का एक से अधिक संख्या में होना

एक स्थानीय मण्डली संतो, प्राचीनों और सेवकों से मिलकर बनती है। फिलि. 1:1 में यह स्पष्ट बताया गया है – "मसीह के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, सब पवित्र लोगो के नाम जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते है, अध्यक्षों (प्राचीनो) और सेवकों (डीकनों) समेत ....।"

फिलिप्पी की कलीसिया की सरंचना ऐसी थी। *वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे* (प्रेरितों के काम 2:42)। यदि आप उन सब पदो को

एक साथ देखे आपको स्थानीय मण्डली की परिभाषा मिल जायेगी। यह संतो, प्राचीनो, और सेवको का एक समूह है जो प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति करने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के लिये एकत्रित होते थे।

मण्डली का सबसे बड़ा सच यह है कि उसमे याजक व्यवस्था जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। वहां कोई एक व्यक्ति अधिकारी नहीं था। यह एक महिमामय सत्य है। उसमें संतो का काम सेवकाई करना था। दान–वरदान दिये गये, ''जिसे से पवित्र लोग सिद्ध हो जाये और सेवा का काम किया जाये, और मसीह की देह उन्नति पाए'' (इफि. 4:12)। परमेश्वर के वचन में यही वह भाग है जिसके कारण आज मैं एक मण्डली की सहभागिता और संगति रखता हूं। मैं होनोलुलु गया हुआ था जब परमेश्वर के आत्मा ने मुझसे एक विशेष रुप में संपर्क किया और पूछा – ''तुम इस मण्डली में किस लिये हो? क्या तुम एक कलीसियाई प्रखण्ड की मण्डली में खुश रह सकते हो? या फिर बाइबल–सम्मत कलीसिया में खुश रहोगे? तुम क्या इसलिये यहां हो क्योकि तुम्हारे पिता यहां थे? क्या इस कारण तुम यहां हो? और मैंने कहा – ''यही बात है। मैं परमेश्वर के वचन में खोजूंगा कि वह क्या शिक्षा देता है।'' मेरा वास्तव में विश्वास है कि पवित्रात्मा ने इस वृतान्त के लिये मेरी अगुवाई की, मैंने देखा कि हर विश्वासी एक सेवक है अर्थात् प्रभु का दास।

सदियों से याजक तंत्र के चारो तरफ घूमने और परम्पराओं से बंधे रहने के बाद यह विश्वास करना कठिन है कि एक व्यक्ति का कलीसिया में अधिकारी होना, और सबकुछ नहीं तो भी बहुत कुछ करना, विशेषकर प्रचारकार्य, नये–नियम के अनुसार नहीं है। फिर भी भाइयों को याजको और अयाजकों में विभाजित करना, पवित्रशास्त्र सम्मत आधार पर नहीं है। नये – नियम में यह अवधारणा नहीं थी। बाइबल में कोई आदेश नहीं है, ऐसा कुछ नहीं कि कोई 'मेरा पास्टर' कहे या कोई प्रचारक मेरी कलीसिया कहे। यह परमेश्वर के वचन में नहीं लिखा है। नये – नियम में कही भी, एक भी संदर्भ पद नहीं है – मैं आपको कुछ बातें बतौर उद्धरण बताना चाहता हूं – जो उन्होंने कही है जो अधिकांश रुप में कलीसिया के पासबान (याजक) के पद पर रह चुके है, और वे सबके सब एक ही बात कहते है – कि यह सही नहीं है।

प्रसिद्ध बाइबल टीकाकार बार्नस् ने लिखा –

> ''इस बात का जरा भी संकेत नहीं मिलता कि प्राचीनों और सेवकों से वरिष्ठ कौन है। यदि पौलुस यह चाहते थे कि कलीसिया में कोई याजकीय अधिकारी हो तो उन्होंने कहीं कोई संकेत क्यों नहीं दिया? उन अधिकारियों की अहर्ताओं का कही उल्लेख क्यों नहीं है? यदि तीमुथियुस वह अधिकारी था तो उसने अपने बाद उस पद पर किसी को नियुक्त क्यों नहीं किया? क्या ऐसे पद के संबंध में कोई विशेष अहर्ताएं नही थी, जो उस पद पर नियुक्त होनेवाले में आवश्यक थी उनका उल्लेख करना क्या उचित न था? यदि उस विशेष पद पर तीमुथियुस था तो पौलुस द्वारा उस बारे में संकेत करना क्या सम्मान जनक नहीं होता? पर ऐसा पद नहीं था।[51]

लोग कहते है – ''पौलुस स्वयं वह सेवक था।'' सुनिये, पौलुस सबसे लंबे समय तक इफिसुस में रुका था, दो वर्ष के लिये। उसकी पूरी सेवकाई में वह वहां तीन वर्ष रुका था। पर एक बार में वह वहां दो वर्ष रहा और उसकी रणनीति थी कि लोग उद्धार पाये, उनका विश्वास दृढ हो, और तब वह आगे बढ़ जाता था। कलीसिया के लिये उपहार स्वरुप मानकर वह स्वयं को खर्च करने योग्य मानता था।

तीमुथियुस कौन था? क्या वह सेवक था? पुरानी बाइबलों में एक जानकारी जोड़ी गयी थी कि 'तीमुथियुस' इफिसुस की कलीसिया का प्रथम बिशप था। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तीमुथियुस की पत्रियों से वह वाक्य हटा दिया गया है। तीमुथियुस कलीसिया में सेवक नहीं था। वह कलीसियाओं में जा जाकर पौलुस के बताये अनुसार समस्याओं को दूर करता था, वह किसी एक कलीसिया में याजक के रुप में नियुक्त नहीं था। नया – नियम किसी एक व्यक्ति द्वारा सेवकाई करने की नहीं परन्तु प्राचीनों की परिषद अर्थात् एक से अधिक लोगों द्वारा सेवकाई करने की शिक्षा देता है।

एलेक्जेन्डर मैक्लेरेन ने लिखा –

''मुझे यह मानना पड़ता है कि वर्तमान् में प्रचलित केवल एक व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक रुप में शिक्षा देने की कलीसियाई प्रथा ने क्षती पहुंचायी है। क्यों एक ही व्यक्ति सदैव बोलता रहे और सैकड़ो लोग, जो शिक्षा देने के योग्य है, चुप करके बैठे रहे, सुनते रहे या सुनने का प्रदर्शन करे? मैं बलपूर्वक क्रांति लाने से नफरत करता हूं और नहीं मानता कि कोई भी संस्था – राजनैतिक या धार्मिक, जिसे हटाने के लिये हिंसा का सहारा लेना पड़े – हटने के लिये तैयार है, पर मैं यह विश्वास करता हूं कि यदि आत्मिक जीवन का स्तर हमारे बीच ऊंचा किया जाये, स्वाभाविक रुप में नये – नये प्रारुप उभरेंगे, जिन में मसीहत में प्रजातांत्रिक स्वरुप के बड़े – बड़े नियम स्थापित होंगे, जैसे कि, मै सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा, तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं अपना आत्मा उण्डेलूंगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।''[52]

जे. आई. पैकर अपनी साक्षी देते है, वे कहते है –

याजकीय तंत्र से मेरा अर्थ है – षडयंत्र और तानाशाही का गठजोड़ जिसमें सेवक दावे करते हैं और मण्डली उसे मानती है कि सभी आत्मिक सेवकाई सेवक की जिम्मेदारी है, मण्डली की नहीं, और यह अवधारणा नियमों के अनुसार प्रतिष्ठित नहीं है और अभ्यास में आत्मा को बुझानेवाली है।[53]

जॉन आ. डबल्यु स्टॉट ने अपनी पुस्तक 'गॉड्स न्यू सोसायटी' में लिखा है –

''कलीसिया का कौनसा प्रारुप हमे अपने मनों में रखना चाहिये? परंपरागत जो एक पिरामिड जैसा है, जिसमे 'पास्टर' सबसे ऊंचे पर है – अपनी कलीसिया में एक छोटे पोप के समान, जबकि अयाजक लोग उसके सामने कमतर मूल्य की श्रेणियों में भीड़ के समान खडे है। यह पूरी तरह बाइबल से असम्मत तस्वीर है क्योंकि नये नियम में एक अकेले पास्टर और उसके प्रति समर्पित झुंड का दर्शन नहीं है, परन्तु उसमे एक से अधिक व्यक्तियों का नेतृत्व और प्रत्येक सदस्य की सेवकाई है।[54] यह किसी ऐसे व्यक्ति ने नहीं लिखा है जो याजक तंत्र का विरोधी था, वे चर्च ऑफ इंग्लैण्ड में 'याजक' रह चुके है।

डॉनल्ड ग्रेय बार्नहाऊस फिलाडेल्फिया में टेन्थ प्रेस्बीटीरियन चर्च के पास्टर थे। उन्होंने कहा –

'प्रथम सदी के समापन के दिनों में, कलीसियाई संगठन में एक दल था जिसने प्रभुत्व का स्थान प्राप्त करके अयाजकों पर विजय प्राप्त की यद्यपि पतरस ने इस बारे में चेतावनी दी थी। जैसा कि प्रकाशितवाक्य के दूसरे अध्याय में इफिसुस की कलीसिया को लिखे पत्र से पता चलता है, कि प्रथम शताब्दी में वहां एक दल था जिन्हें 'नीकुलई' कहते थे, और उनके ग्रीक नाम से संकेत

मिलता है कि उन्होंने अयाजकों पर प्रभुत्व पा लिया था। वहां लिखा है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उनके कामों से घृणा करते है जो मसीह की देह में अन्य अंगो (सदस्यों) पर अधिकार जताते और उसे उचित ठहराते है।[55]

सुसमाचार – प्रचारक लेटन फोर्ड ने ''क्रिश्चियन पर्सुएडर'' में लिखा है, ''कलीसियाई गतिविधियों की हमारी सम्पूर्ण शब्दावली बदल जायेगी, यदि हम नये – नियम के प्रारुप को गंभीरता पूर्वक अमल में ले।'' और तब उन्होने रिचर्ड हल्वरसन को यह कहते हुये उद्धृत किया है,

जब हम पूछते है – ''आपकी कलीसिया में कितने सेवक है? पारम्परिक उत्तर है, '' एक, या दो, या पाँच।'' यह वैतनिक स्टाफ की संख्या पर निर्भर है। सही उत्तर है – दो सौ, या दो हजार, यह सदस्यों की संख्या पर निर्भर करता है। प्रत्येक विश्वासी एक सेवक है। वह कलीसिया जिसने बाह्य संपर्क के लिये चुनिंदा लोगों विशेषज्ञों, पास्टरों, सुसमाचार – प्रचारकों को नियुक्त कर दिया है कि वे गवाही दे, वे कलीसिया के सिर और आरंभिक कलीसिया के स्थिर प्रारुप के अभिप्रायों के विरुद्ध या उनका उलंघन करनेवाला जीवन जी रहे है।[56]

ई– स्टेनली जोन्स, जो वर्षो पूर्व भारत में मेथोडिस्ट सेवक रहे उन्होंने कहा –

अंताकिया की कलीसिया की स्थापना अयाजको ने की थी, उसे चलाया भी अयाजकों ने, और अयाजकों ने ही उसे प्राचीन विश्व में फैलाया। यह बात आज कलीसिया का पुर्ननिर्माण करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अगली महान् आत्मिक –जागृति भी अयाजको के द्वारा आनेवाली है। अब तक गुरुत्व का केंद्र केवल सेवक (पासबान) पर था, अब गुरुत्व का केंद्र स्थान बदलकर 'आयजको' पर लाना है। हम सेवक, मिशनरी, और सुसमाचार –प्रचारक संसार को कभी जीत नहीं पायेंगे। यह कार्य करने हम संख्या में बहुत कम है और यदि हम यह कर पाये, तो यह अच्छा नहीं होगा – क्योंकि यह अयाजकों से उस आत्मिक उन्नति और विकास को छीन लेंगे जो विश्वास को बांटने से आते है। परन्तु हम कभी भी मसीही आंदोलन की बागडोर अयाजको को नहीं लेने देंगे, न विस्तार के लिये उस पर निर्भर करेंगे, और कहेंगे – ''आओ, आगे आओं और पास्टर की सहायता करो।'' उनका आतंरिक और कभी – कभी बाहरी प्रत्युत्तर होगा – ''हम क्यों करे?'' यह उसका काम है, हम उसे काम के बदले वेतन देते है।''[56]

साधारण रुप में कलीसिया का स्वरुप गुमनाम लोगों को उत्पन्न करता है। मण्डली अकसर चुपचाप और सुननेवाली होती है और पास्टर ही बोलनेवाला और आक्रामक होता है, जैसा कलीसिया का स्वरुप है केवल दर्शक गण और भाग लेने वाले ही मिलते है। यह पीछे रहने वाले, अविकसित, योगदान न करनेवाले और परजीवी उत्पन्न करता है। पुरे सप्ताह भर अभिमत बनाने और बदलने वाले और बड़ी–बड़ी बातों की चिंता करनेवाले, नियतियों के निदेशक स्त्री–पुरुष रविवार के दिन मुंह पर पट्टी बांधकर बैठते है, और उनसे आशा की जाती है कि वे ऐसे ही बने रहे। उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं, इसलिये वे कोई प्रत्युत्तर नहीं देते, संभवतः केवल इतना कहते हैं – ''मुझे आपका संदेश (उपदेश) अच्छा लगा।'' उनके लिये करने को कुछ नहीं है क्योकि वे कुछ नहीं करते।[58]

अयाजक – समस्त समूह उन दर्शकों के समान है जो दर्शक दीर्घा में बैठते है और याजक वर्ग मैदान में खेल खेलनेवालों के समान है। यदि याजक वर्ग में से कोई गोल करता है – या

स्कोर बनाता है, उसके लिये तालियां बजती है। ''बहुत अच्छे, पास्टर साहब, आशा है आप बनें रहेंगे।'' यह स्वरुप बदलना चाहिये, अयाजकों को दर्शक दीर्घा से बाहर आना चाहिये और खेल के मैदान में उतरना चाहिये, और याजकवर्ग को खिलाड़ी न बनकर मैदान के किनारे प्रशिक्षक (कोच) बनकर खड़े होना चाहिये और अयाजकों के अभियान के आत्मिक प्रशिक्षक बनना चाहिये। क्या यह याजकों को कमतर बनाना है? नहीं – उन्हें उन्नत करना है। क्योंकि 'खिलाडी' होने से 'प्रशिक्षक' (कोच) होना बेहतर है। दस व्यक्तियों का काम अकेले करने से दस व्यक्ति काम पर लगाना अधिक बेहतर है।[59]

आप ध्यान दे कि बहुत से लोग याजकवर्ग, अयाजक वर्ग, और सेवकों के बारे में बाते करते समय उन्हें एक विशेष दर्जा देते हैं वे यह नहीं समझ पाते कि ये शब्द पवित्रशास्त्र से असंबद्ध पद या पदनाम है। कितुं उन्हें याजकवर्ग की निर्बलताओं को समझने और पहिचान लेने का श्रेय दिया जाना चाहिये।

ब्रायन ग्रीन कहते है, ''मसीहत और विश्व में सुसमाचार – प्रचार का भविष्य साधारण (आम) स्त्री–पुरुषों के हाथों में है, न कि पेशेवर समझें जाने वाले मसीही सेवकों के हाथों में है।''[60]

हर्नाक दावा करते है कि – ''रोमन साम्राज्य के आरंभिक दिनों में कलीसिया द्वारा प्राप्त की गयी बड़ी – बड़ी विजय प्रचारकों, शिक्षकों या प्रेरितों द्वारा नहीं प्राप्त की गई थी, पर उन अनौपचारिक मिशनरियों और उन लोगों ने प्राप्त की थी जो जहां कहीं जाते वही सुसमाचार की बातें करते।[61]

'न्यू पाथ्स् इन मुस्लिम इवेन्जेलिज्म', में फिल परशैल हमें स्मरण दिलाते है –

मसीही जगत में 'सेवकाई' का संदर्भ पेशेवर याजको से है, परन्तु नये–नियम में सेवकाई का संबंध किसी एक वर्ग से नहीं है। यह वह भूमिका है जिसकी बुलाहट सभी विश्वासियों के लिये है। 1 कुरि. 12: 4–30 में पौलुस पवित्रात्मा के द्वारा दिये जानेवाले विभिन्न दान– वरदानों के बारे में कहते हुये सेवकों की विविधता कहा गया है, और देह की उस तस्वीर में वे सभी विश्वासियों को सम्मिलित करते है। नये नियम में, स्थानीय कलीसिया के नेतृत्व के लिये किसी एक अगुवे पर निर्भर नहीं किया गया है। कलीसियायें घरों में सभाएं करती थी और उन्हें प्राचीनों की परिषद (समूह) मार्गदर्शन प्रदान करती थी। प्रेरितो के काम 20:17–38 में पौलुस और इफिसुस के प्राचीनों के बीच के वार्तालाप का उल्लेख किया गया है। उस वृतान्त में एक ही अगुवे से संबंधित कोई चर्चा नहीं की गई है।[62]

डेविड गुडिंग इससे सहमत है, वे लिखते है –

कलीसिया किसी भी तरीके से सभाये करे, एक बात उसे नहीं करनी चाहिये और वह यह है कि उसका एक सदस्य, केवल एक सदस्य लगातार प्रचार कार्य, शिक्षण, सुसमाचार – प्रचार कार्य और आत्मिक सेवकाई के पूरे कार्य करे। यह मसीह की देह की उन्नति में गंभीर रुप में क्षतिकारक है, क्योंकि हम इस मामले में नये – नियम के प्रारुप से दूर हट जाते है।[63]

और अंत में, मैं पढ़ना चाहूंगा कि जे. ए. स्टीवर्ट ने क्या कहा – वे हमें स्मरण दिलाते है कि – ''स्थानीय मण्डली का प्रत्येक सदस्य मसीह के लिये आत्माओं को जीतने गया, और व्यक्तिगत सपर्को के कारण बहुत से नये जन्में शिशुओं को लेकर स्थानीय कलीसियाओं में वापस आया, जहां उन नये विश्वासियों, को धर्मशिक्षा सिखाई गई और उद्धारकर्त्ता के विश्वास में बलवंत किया गया। बाद में वे

भी आत्माओं को जीतने के लिये निकले।'' एक अन्य स्थल में, स्टीवर्ट ने लिखा है – ''परमेश्वर जैसा चाहते है, संसार में कभी वैसा सुसमाचार प्रचार नहीं होगा, जब तक कि कलीसियाओं में याजक – तंत्र बना रहेगा।''[64] इस बात में दम है।

ऐसे समय में जबकि बहुतेरे सुसमाचार प्रचारकीय मसाही याजकीय तंत्र से पिदे हट रहे है, मण्डलीयों से बहुतेरे याजकीय तंत्र की और बढ़ रहे है। वे चाहते है कि उनके बदले में धार्मिक कार्य करने किसी एक को वेतन देकर रखा जाये। वे ऊंचे दाम पर खरीद रहे है और कम दाम पर बेच रहे है। उनकी पुकार है – ''हमें दूसरी कलीसियाओं के समान सेवक दो।'' ''वे उन लोगों के समान है जो सामाजिक विज्ञानों मे, जब गैर धार्मिक पेशेवर लोग विषय पर जारी प्रचलन की गंभीर आलोचना करने लगते है, तब वे विचारों के लोक प्रिय रुझान के पक्ष में हो जाते है। यह उसी प्रकार है कि धीमी होती हुई बैण्डवैगन में चढ़ जाये।''[65] आज यही हो रहा है।

याजकीय तंत्र में क्या नुकसान है? उसमें सदैव यह खतरा है कि लोगों को धन्य प्रभु यीशु मसीह के पास पहुंचाने के बदले किसी मनुष्य के पास पहुंचा दिया जाता है। यह तंत्र मण्डली के सदस्यों के दान –वरदानों को रोकता है। जब एक ही व्यक्ति शिक्षा देने का समग्र कार्य करता है, तब एक खतरा और भी होता है। सत्य पर किसी एक का एकाधिकार नहीं है, और परमेश्वर का आत्मा अलग – अलग व्यक्तियों को चुनकर उनके द्वारा बातचीत करना पसंद करता है। जब लोग एक ही व्यक्ति को शिक्षक मान लेते है तब गलतियां होना अधिक आसान है। याजकीय तंत्र उस उद्देश्य की उपेक्षा करता है जिसके लिये विभिन्न दान– वरदान दिये गये थे। वे इसलिये दिये गये थे कि पवित्र लोग सिद्ध हो जाये और सेवकाई का काम होता रहे। पवित्र लोग (संत) वे है, जिन्हें सेवकाई का कार्य करना है।

याजकीय – तंत्र में अकसर वेतन पानेवाले सेवकाई करते है। और यह परमेश्वर के काम पर एक अभिशाप है। इसमें यह बड़ा खतरा है कि जब किसी व्यक्ति का मूल्यांकन कलीसिया के आकार और बढ़ोत्तरी के आधार पर होने लगता है, वह स्तर को नीचे गिराने की परीक्षा में पड़ता है। वे जो बांसुरीवादक को 'वेतन' देते है, वे अपनी मनपसंद धुन भी बजवाते है।

आराधना की केंद्रीयता

नये – नियम की कलीसिया का एक महान् सत्य यह भी है कि उसमें आराधना का केंद्रीय स्थान है। बहुत से लोग जो किसी सहभागिता में अनेक वर्षो से भाग लेते रहे और उन्हें उसे छोड़कर कहीं और गये, वे कहते है, ''मुझे प्रभु – भोज की याद आती है।'' मैं उनसे पूछना चाहता हूं – आप क्यों गये? आराधना केंद्रीय है। यदि आप आराधना करना पसंद नहीं करते, आप स्वर्ग को पसंद नहीं करते, क्योंकि स्वर्ग में आराधना करना ही केंन्द्रीय गतिविधि होगी।

प्रत्येक विश्वासी के पास कुछ न कुछ दान – वरदान है हम यह मानते है – और मण्डली में उन दान – वरदानों का उपयोग करने के लिये स्वतंत्रता होनी चाहिये। ये दान – वरदान देह के लाभ के लिए दिये गये है, न कि स्वार्थमय प्रदर्शन के लिये। निश्चय ही कुछ दान – वरदान है, जैसे कि 'सुसमाचार –प्रचार' और 'अतिथि – सत्कार' जिनका संबंध विश्वासियों की सेवा करने तक ही सीमित नहीं है।

नीतिया और सामर्थ

मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि नये – नियम के सिद्धांतो के लिये नये – नियम के सामर्थ की आवश्यकता है। आत्मिकता का स्थान कोई और बात नहीं ले सकती। लोगों को बिना आत्मिकता कार्यो में प्रयासरत देखने से अधिक बुरी बात कुछ नहीं है। परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहते है जो उनके संपर्क में रहे, वे जो दिन – प्रतिदिन आत्मा में चले, वे लोग जो धन्य प्रभु यीशु मसीह की सहभागिता में चल रहे है। केवल सही धर्मशिक्षा ही आवश्यक नहीं है, अवश्य है कि हम सही आत्मिकता में हो।

आज, नये – नियम के सत्यों पर अमल करने और उन पर बने रहने के कारण निंदा और अपयश मिलता है। यदि आप उस अपयश को स्वीकार करने तैयार नहीं है तो आप बहक जाएंगे। यदि आप नये नियम के सत्य पर न रहेंगे तो आप सुसमाचार – प्रचारकीय समाज में सदैव झुके पंख के पक्षी के समान रहेंगे। मैं आपको एक के बाद एक, कई उदाहरण दे सकता हूं। परन्तु मैं यह सोचता हूं, मृत्युदण्ड पाने से पहिले, अनाकेन जैन्ज ने अपने अल्पायु पुत्र को लिखा –

> ''जब तुम्हे कंगाल, साधारण, बहिष्कृत छोटें झुंड के बारे में पता चले जिसे तुच्छ समझा जाता है और संसार उसका तिरस्कार करता है, उनमें शामिल हो जाना, क्योंकि जहां क्रुस है, मसीह भी वहां है।''

वर्षो पहिले अल्फ्रेड मेस ने मुझ से कहा, ''बिल, जब तुम्हे ईश्वरीय सिद्धांत मिले, उन पर दृढ़ बने रहो।'' और यह बात मेरे मन में उतर गयी। मैंने उस पर अमल करने का प्रयास किया। जब आपको ईश्वरीय सिद्धांत मिले, उन पर दृढता से बने रहिये, समझौता न करे और उन से पीछे न हटे। उसने मुझसे और भी कुछ कहा – ''किसी मनुष्य को प्राप्त वरदान परमेश्वर के सिद्धांत से बढ़कर नहीं है।'' मैं भले ही सोचूं कि मेरा वरदान उस छोटी तुच्छ समझने योग्य मण्डली के लिये बहुत बड़ी बात है। कभी नहीं! किसी मनुष्य का वरदान परमेश्वर के सिद्धांत या नियम से अधिक बढ़कर नहीं है।

समापन करते हुये कहूंगा – कि मण्डली के प्रति समर्पित रहे, उसके लिये उत्साहित रहे – कलीसियाई टिड्डे मत बनिये, धार्मिक तितली मत बनिये। वैसा बनिय, जिसे मसीह कह सके, ''तुम मेरे साथ मेरी परीक्षाओं में बने रहे और मैं तुम्हे एक राज्य देता हूं।''

स्मरण रखिये कि परमेश्वर के लिये सबसे लघुत्तम, निर्बलतम मण्डली का मूल्य (महत्व) संसार के सबसे महानतम् सामाज्य से अधिक बढ़कर है। जब परमेश्वर साम्राज्यों की चर्चा करता है उन्हें बाल्टी में एक बुंद पानी कहता है, कितुं कलीसिया के बारे में वह कभी ऐसा नहीं कहते। कलीसिया मसीह की देह और दुल्हिन है। कल्पना करे! स्मरण रखे कि देशों का हाकिम होने से एक मण्डली में ईश्वरभक्त प्राचीन होना परमेश्वर के लिये अधिक मायने रखता है। नये – नियम में किसी राष्ट्रपति या राजा के बदले एक प्राचीन के कामों का वर्णन करने में अधिक स्थान दिया गया है। इन दृढ़ विश्वासो को धारण करे, भला हो कि ये विश्वास आपके जीवन को सांचे में ढाले और आप उनके प्रकाश में जीयें।

अध्याय - 32

शालीनता का आचरण करे

कुछ सामान्य सुझाव

साफ, सलीकेदार वस्त्र पहिने। दूसरों के लिये एक उदाहरण बने। ओस्वॉल्ड चौम्बर्स के शब्दों को स्मरण रखे – ''बेतरतीबी (अव्यवस्था) पवित्रात्मा का अपमान है।'' समय पर मिलने के लिये पहुंचे। विलंब करके जाना सराहनीय नहीं है। विलंब का अर्थ है कि आपका समय महत्वपूर्ण है, दूसरों का नहीं। यदि आपको देर हो रही है, फोन करके सूचना दे और समझाये। जब कोई प्रार्थना – सभा में देर से आता, श्रीमती बेदेरल जॉनसन उन्हें चेतावनी देती कि अगली बार से वे समय पर आए। वे कहती थी, ''पवित्रात्मा की महानता का अपमान न करे।'' शरीर की दुर्गन्ध और सांस की दुर्गन्ध दूर करे। दुर्गन्धनाशक उपयोग करे, नियमित रुप से दांतो की सफाई करे। मिंट (पुदीना/ पिपरमिंट) लाभदायक है। लगातार बोलनेवाले न बने। लोग जो रुकते नहीं बोलते जाते है बोर करते है। धीरज धरकर सुननेवाले बने और आपको आश्चर्य होगा कि आप कितना कुछ सीख सकते है। दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बने। दूसरों का मजाक न बनाये और न नकारात्मक बाते कहे – उनके वस्त्रों, केश विन्यास, रुपरंग या योग्यताओं इत्यादि के संबंध में।

स्थानीय संस्कृति और सामाजिक रीतिरिवाजो के प्रति संवेदनशील बने, जहां तक संभव हो सके सामंजस्य रखे। ये बातें वस्त्रों के संबंध में विशेष रुप से ध्यान में रखे। जब आपको प्रचार करने आमंत्रित किया जाये, पता करे कि अगुवे कैसे वस्त्र पहिनते है, उनके अनुसार करे।

पुरुष, पुरुषो से हाथ मिलाते है। जब सामने कोई महिला हो जब तक वह स्वयं हाथ न बढ़ाये, प्रतीक्षा करे, तब हाथ मिलाये। ध्यान रखे कि यदि वहां कोई अजनबी है, उसका परिचय प्राप्त करे या परिचय कराये। यदि महिला खड़ी है तो पुरुष को भी सदैव उठकर बातें करनी चाहिये। वृद्ध व्यक्तियों के सम्मान में उठ जाना अच्छीबात है। जब दो व्यक्ति बातचीत कर रहे हो, बीच में न बोले। यदि कोई पढ़ रहा है या व्यस्त है तो उसे बीच में न टोके। यदि प्रार्थना चल रही है या पवित्रशास्त्र का पठन हो

रहा है, कमरे में प्रवेश न करे, प्रतीक्षा करे। यदि किसी की कार का उपयोग करे, उपयोग के बाद गैस – पेट्रोल भर दे। यदि आपको सर्दी– जुकाम है, छींकने की आवाज न करे, रुमाल से नाक साफ रखे।

सेवक जैसा ह्दय रखे। तरीके खोजे, जिनसे आप दूसरो की सेवा कर सके और सेवा भी – बिना बाजे गाजे या तुरही बजाकर करे। क्या होना चाहिये, पता करे, और उन्हें करे। यदि आप किसी को आपके साथ रेस्त्रां चलने के लिये कहते है, बिल देना आपकी जिम्मेदारी है। भले ही आप मांगे, न मांगे, सदैव पानेवाले स्थान में न रहे। जिम्मेदारियों को बांटे और काम करे। जब आप कम्पनी में है कुछ पढ़ते हुये स्वयं को चर्चा से अलग न करे, उन्हे सोचने न दे कि उनकी बाते सुनने लायक रही है, साथ ही ऐसा करना अभद्रता है यदि आप किसी के साथ कमरे में है और उनसे पहिले आपको जाना हो तो शालीनता पूर्वक अनुमति ले और 'गुड–बाय' कहें। बिना कुछ कहे चुप चाप से चले न जाये।

प्राप्त उपहारो की शीघ्रता से पावती दे। आपके पत्र का लोगो की आत्मिक सेवकाई के अवसर के रूप मे उपयोग करे। यही बात पौलुस ने तब की थी, जब उसने फिलिप्पि के विश्वासियो को पत्र लिखा। किसी प्रश्न का उत्तर देते हुये – 'अवश्य' न कहे – यह बात समाप्त करता है और यह ऐसा कहने जैसा है – Þहां, तुम निर्बुद्धि।" अपने सेल फोन का उपयोग अकेले में करे, खाने की मेज पर या सबके बीच, या सार्वजनिक स्थल पर न करे। मीटिंग में मोबाइल की आवाज बंद रखे, बात करने वाले से न कहे कि वह प्रतीक्षा करे, आप को एक दूसरी कॉल का उत्तर देना है। यह शिष्टाचार नहीं है।

जब आप किसी के घर में अतिथि के रुप में होते हो

यदि आप पूर्ण कालीन सेवक बनने जा रहे है, आपको प्रभु के लोगो के घर पर आमंत्रित किया जायेगा। महत्वपूर्ण है कि आप समुचित व्यवहार करना जाने। आप नही चाहेंगे कि लोग आपको सुसंस्कृत न समझे। आप अपने मेजबान को आपके आने के साधन और अनुमानित समय की सूचना दे। यदि आप विमान से आ रहे है, एयरपोर्ट, एयरलाइन, फ्लाइट नम्बर, और समय इत्यादि बताये। कभी – कभी एक ही क्षेत्र में दो एयरपोर्ट होते है, उन्हें बताये कि आप कहां उतरेंगे। पहिले से सूचित किये बिना किसी अन्य को साथ में न लाये। सामान्य तौर पर माना जाता है कि पत्नी साथ होगी, यदि ऐसा है तो पहिले से सूचना दे। जब सनकी मि. बुच मैन ने श्रीमती हिटवन से हाथ मिलाया, उसने कहा –

"प्रभु ने मुझसे कहा तीन और व्यक्तियों को डिनर पर ले जाओ।"

ओह, पर मैं ऐसा नहीं साचती,

"क्यों नहीं?

श्रीमती हिब्बन ने उत्तर दिया, "क्योकि परमेश्वर सज्जन है।"

मेजबान के घर में जहां तक संभव हो, उनके समय के अनुसार सामंजस्य करे, कम से कम रुकावट उत्पन्न करे। बाथरुम में अधिक समय न लगाये। भोजन के समय का पालन करे। समुचित समय पर सोने जाये। बाथटब और हैण्डबेसिन हरबार उपयोग के बाद साफ करे। कोई अन्य भी उसे उपयोग करेगा, किसी के घर में उनकी व्यक्तिगत वस्तुओं को काम में न लाये जैसे कि कोलोन, टूथपेस्ट इत्यादि। बिना अनुमति लिये फोन न करे। अनुमति लेकर उपयोग करने पर भी जाने से पहिले फोन कॉल के पैसे दे दे। सुबह उठकर बिस्तर सुधारे और बाहर जाने से पहिले कमरे को स्वच्छ रखें।

घर के कामों में मदद का प्रस्ताव करे, जैसे कि बर्तनों को धोना और सुखाना इत्यादि। चिंता न करे यदि नेक दिली में मेजबान कहें कि आप उसके लिये एक बुरा उदाहरण दे रहे है, आपके मेजबान के पत्राचार, फाइलो, क्लाजेट या ड्रावर पर दृष्टि न डालें।

जाने से पहिले मेजबान दपंत्ति को धन्यवाद दे और अतिथि – सत्कार के लिये धन्यवाद का संदेश (या पत्र) भेजना न भूले।

भोजन करते समय

भोजन करते समय बैठने से पहिले मेजबान से संकेत मिलने की प्रतीक्षा करे। एक व्यक्ति को दाहिनी ओर बैठनेवाली महिला की बैठने में सहायता करनी चाहिये (यदि दूसरी ओर उसका पति न हो तो यह उस व्यक्ति का कर्तव्य है)। जब तक मेजबान आरंभ न करे, भोजन करना आरंभ न करे। यह नियम प्रत्येक भोजन के आरंभ के लिये है और उसके बाद के सभी भोजनों के लिये भी है। सभी को भोजन मिले, इसका विचार करे, ऐसा न हो कि सभी प्रकार के व्यंजन आपके सामने आकर जमा हो जाये। जब किसी को देने का निवेदन किया जाये, पहिले अपने लिये मत निकालिये। ऐसी बातचीत से बचें जो स्वादिष्ट भोजन का रस लेने में सहायक न हो। मेज पर कोहनियां न रखे। अशिष्ट व्यवहार न करे। अपनी भूख पर नियंत्रण रखे। थोड़ा–थोड़ा करके खाये, सुनिश्चित करे कि आपके बाद खानेवालो के लिये पर्याप्त परिमाण में बचे। दूसरी बार भोजन लेना स्वीकार्य है, उसके बाद भी खाते रहने पर लोग आपको पेटू समझ सकते है।

चुन चुनकर भोजन न करे। ''जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाये, वही खाओ, और विवेक के कारण कुछ न पूछों'' (1 कुरि. 10:27)। यह एक अच्छी मिशनरी प्रशिक्षण है। बेहतर रुकने का स्थान ढूंढन मे आसपास जाकर खोजबीन न करे। क्या यीशु ने नही कहा कि उस पहिले घर में ही रूके जहां उनका स्वागत होता है, और घर – घर नहीं जाये (लूका 10:5–7)? इफिसियों 4:29 मे मसीहियों की बातचीत के लिये सुनहरा नियम है – ''कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले, जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सब सुनने वालों पर अनुग्रह हो।''

यहां अंग्रेजी में courrupt शब्द आया है जिसका अभिप्राय गंदी, अश्लील और अशुद्ध भाषा है, जिसे हम व्यर्थ कह सकते है। हमें हल्की बातों में नहीं फंसना चाहिये, परन्तु लगातार कोशिश (प्रयास) करना चाहिये कि बातचीत का रुख उस ओर करे जो सुननेवालों की उन्नति करे।

जब प्रभु का एक सेवक साथ में होता है वे उसे सुनना चाहते है कि उसकी सेवकाई में सुसमाचार की विजय कैसे हुई और अन्य घटनाएं जो उसकी सेवकाई से संबंधित है। उसे स्वयं को अनुशासित रखना चाहिये कि उसकी बातें आत्मिकता के स्तर पर हो।

बच्चो को और चुप रहनेवाले वयस्को को भी बातचीत में शामिल करे, ताकि उन्हें अजनबीपन महसूस न हो। अधिक हंसी–मजाक न करे। लोग आप को चुटकुले बाज के रुप में न याद रखे। मसीही विश्वास के मसले गंभीर है। बहुत से प्रचारक सोचते है कि लगातार चुटकुले बाते करके वे जवानों के बीच अपना स्थान बनालेंगे। अधिकतर जवान कुछ गंभीर, उपयोगी और सार्थक सुनना चाहते है।

किसी को परेशानी में डालनेवाली कोई बात कभी न कहें। जब एक प्रचारक सभा में कुछ उदाहरण दे रहा था और उसने श्रोताओं में एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिस पर उन बातों का गलत प्रभाव होता, उसने बीच में ही वह बात बंद कर दी। सभा के बाद किसी ने पूछा कि उसने कहानी आधी क्यों छोड़ दी, उसने उत्तर दिया कि, ''किसी को चोट पहुंचाने से एक अच्छी कहानी खराब करना अधिक बेहतर है।''

आपकी पत्नी

जैसा मसीह ने कलीसिया से किया, वैसा प्रेम अपनी पत्नी से करे (इफि. 5:25)। ऐसे पुरुष के प्रति अधीनता में रहने से किसी पत्नी को इन्कार नहीं होगा। अपनी पत्नी को सज्जन महिला के समान सम्मान दे। उसके बैठने या बाहर निकलने के लिये कार का दरवाजा खोले। सड़क के किनारे चलते हुये सड़क की ओर वाले भाग मे चले। कभी उसकी आलोचना न करे, उसके विपरीत न कहें, सबके सामने उसे नीचा न दिखाये। इसके विपरीत सबके सामने प्रशंसा करने और धन्यवाद देने का चलन कभी पुराना नहीं होता।

सार – संक्षेप

यदि आपको किसी स्थिति में कुछ संदेह है, तो दूसरों से वैसा व्यवहार करे जैसा आप चाहते है, कि वे आपसे करे। दूसरों को स्वयं से बेहतर मानना शालीनता है। परस्पर संबंधो में यह प्रभु यीशु की अनुकृति करना (अनुसरण) है। शालीनता वह तेल है जो जीवन को अधिक सहज बनाता है, परेशानी से बचाता है और जीवन को एक हर्षित करनेवाली चमक प्रदान करता है।

अध्याय - 33

नासमझ न बने

मसीहीजन अकसर नासमझी करते है। वे सोचते है कि क्योंकि प्रेम सब बातों की प्रतीति करता है, उन्हें भी सब बातों पर भरोसा करना चाहिये। दो बस चालक एक दर्शनीय स्थल पर रुके ताकि पर्यटक बाहर उतरकर दृश्य देखे और आनंद ले।

एक बस चालक ने दूसरे से कहा – ''मेरी बस में कुछ मसीही है,''

अच्छा। वे क्या विश्वास करते है?''

वे सबकुछ मान लेते हैं जो मै उनसे कहता हूं''

जब हम मसीही बनते है परमेश्वर यह नहीं चाहते कि हम बुद्धि को पीछे छोड दे, वे चाहते है कि हम परखनेवाले बने। वे चाहते हैं कि हम भले और बुरे में, सच और झूठ में, और पवित्र एवं अपवित्र में भेद कर सके। यह विचार धारा अकसर आप बाइबल में पाएंगे –

यदि तू अनमोल को कहे और निकम्मे को न कहे, तब तू मेरे मुख के समान होगा। (यिर्मयाह 15:19ब);

वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें–(यहेजकेल 44:23 और लैव्यव्यवस्था 10:10 के संदर्भ ले)

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है–(1 कुरि. 2:14)।

किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।...........और किसी को आत्माओं की परख –(1 कुरि. 12:7, 10)।

हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनोरू तौभी बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो–(1 कुरि. 14:20)।

और मैं यह प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए– (फिलि. 1:9)

सब बातों को परखो, जो अच्छी है उसे पकड़े रहो–(1 थिस्स. 5:21)

क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं–(इब्रानियों 5:13–14)

हे प्रियों, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं–(1 यूहन्ना 4:1)

हमे परखना सीखना चाहियें

बाइबल सब बातों को परखने का आधार है।

> ''व्यवस्था के लिये और साक्षी के लिये। यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोले, तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी'' (यशायाह 8:20)।

आप एक आड़ी– तिरछी रेखा को कैसे पहिलचानते है? यह वह रेखा है जो सीधी नहीं है। आप कैसे जानते है कि कपड़ा गंदा है? साफ कपड़े से उसकी तुलना करके। यहां कुछ क्षेत्रो के उदाहरण प्रस्तुत है जिनमें हमें परखने की आवश्यकता है। हमें यह परखना आना चाहिये कि कौनसा मसीही किताबों का प्रकाशक भरोसेमंद है। सर्वाधिक भरोसेमंद प्रकाशकों में से कुछ अपने बुनियादी उद्देश्य से हट गये है।

हमें विभिन्न बाइबल कॉलेजो और सेमिनरियों को परखना आना चाहिये कि क्या वे विश्वास के प्रति सच्ची है। अब उनमें से बहुतो के विषय में कहा जा सकता है कि – ''महिमा उठ चुकी है।'' बहुत वर्षो तक मसीही माता–पिताओं ने बाइबल की आज्ञाएं मानने के बदले विशेषकर नीतिवचन जिसमें बच्चों के विषय में निर्देश दिये गये है उन्होने डॉ. स्पॉक की पुस्तक 'बेबी एण्ड चाइल्ड केयर' के अनुसार अपने बच्चों का लालन–पालन किया। उन्होंने डॉ. स्पॉक के अनुसार अनुशासन में ढ़ील देने और सख्ती न बरतने के विचार पर अमल किया।

वर्षो के बाद डॉ. स्पॉक ने कहा, ''मेरे विचार से सख्ती न कर पाना आज के माता–पिता की सबसे आम समस्या है।'' उन्होंने बच्चों की अनुशासन हीनता का दोष विशेषज्ञों को दिया। जैसे कि बाल–मनोवैज्ञानिक, बालमनोचिकित्सक, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्त्ता और शिशु रोग विशेषज्ञ जैसे वे स्वयं थे। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि माता – पिता का नरमी बरतना बच्चों को अधिक उग्र, मांग करनेवाला बनाता है – और ये बातें माता – पिता में प्रतिकार की भावना को बढ़ाती है .... अतं में वे क्रोध से फट पडते है – बड़े या छोटे रुप मे – और तब बच्चे समर्पण करते है। डॉ. स्पॉक ने कहा, ''दूसरे शब्दों में माता – पिता की सहनशीलता से बुराईयां दूर नहीं होती, वह उन्हें अवश्यंभावी बना देती है।''

बिरिया के मसीहियों के समान (पढ़े, प्रेरितों के काम 17:10–11) हमें नीचे दी गई बातों का मूल्यांकन करना सीखना चाहियेः

- तत्कालीन मान्यता है कि बड़ा होना सफलता को निशानी है। कलीसियाई उन्नति के सांख्यकीय आंकडे विशाल कलीसियाओं पर जोर देते है। कलीसियाई उन्नति का आधार सदस्यों की पवित्रता है या उनकी अधिक संख्या?
- सबको एक साथ लेकर चलनेवाले कहते है – "धर्मशिक्षा विभाजन करती है, सेवा जोड़ती है।" आप इसका उत्तर कैसे देगे?
- बहुतसी पेंटिकॉस्टल एवं करिश्माई सभाओं में वक्ता किसी व्यक्ति को स्पर्श करता है और वह 'आत्मा में शिथिल होकर नीचे फर्श पर गिर पड़ता है। यहां हमें परखने की आवश्यकता है। बाइबल में हम यह बात कहां पाते है?
- साथ ही चंगाई की सभाओं पर विचार करे, जहां टेलीविजन पर सुसमाचार – प्रचारक पांवो की लम्बाई बढ़ाने, कैंसर से चंगाई, और बहुत से अन्य शारीरिक कष्टों से मुक्ति की घोषणा करता है। क्या हम ईश्वरीय चंगाई में विश्वास नहीं करते? हां करते है, पर यह भी जानते है कि बहुत से विश्वास द्वारा चंगाई करने वाले बहुत से ऐसे धोका धड़ी के काम करते है जो चंगाई की नकल दिखाते है।
- समृद्धि की धर्मशिक्षा वाले पुराने नियम से भौतिक समृद्धि की प्रतिज्ञाएं लेकर उन्हें नये – नियम की वर्तमान कलीसिया पर लागू करते है। क्या ऐसा करना सही है?
- हमें चिन्हं और चमत्कारों के आंदोलन के बारे में भी परखने की आवश्यकता है? क्या यह बाइबल में दी गई शिक्षाओं से मेल खाता है?
- बहुत से विश्वासियों के सामने लगातार बनी रहनेवाली समस्या यह जांचना है कि 'अन्य–अन्य भाषा का आंदोलन' वचन के अनुसार है या नहीं। आप क्या सोचते है?
- क्या स्त्रियों के लिये प्रचार करना और कलीसिया में नेतृत्व के पद लेना सही है?
- आत्मिक मामलो में किस सीमा तक हमें अपनी भावनाओं पर भरोसा करना चाहिये?
- एक लोकप्रिय शिक्षा है कि आप परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते यदि आप अपने आप से प्रेम नहीं करते। क्या यह सही है?
- एक और धर्मशिक्षा प्रचलन में है कि मसीही जन कभी उनके पापों का अंगीकार नहीं करते, वे केवल धन्यावाद करते है कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है।
- एक मसीही लड़की की हत्या कर दी गई, उसके हत्यारे अब जेल में है। लड़की की मां जेल जाकर हत्यारे को भरोसा दिलाती है कि उसने उसे क्षमा कर दिया है। क्या यह धार्मिकता है?

- कुछ शिक्षकों का मानना है कि जब हम प्रार्थना करते है, हमें कभी भी यह नहीं कहना चाहिये – ''यदि यह आपकी इच्छा है।'' क्योंकि ऐसा कहना विश्वास की कमी दर्शाता है। क्या आप सहमत है?
- ''सब बातों के लिये प्रभु की स्तुति हो।'' यह एक पुस्तक की विचारधारा थी, जिसकी हजारों प्रतियां बिकी थी। आखिरकार, बाइबल भी तो कहती है – कि सब बातों में प्रभु का धन्यवाद करो?
- जे लोग परिवार में पुरुष की प्रधानता का विरोध करनेवाले पति–पत्नी का परस्पर आधीनता में रहने की शिक्षा देते है, वे इफि. 5:21 का उद्धारण देते है – ''मसीह (परमेश्वर) के भय से एक दूसरे के आधीन रहों।'' हमें इसका उत्तर देना आना चाहिये।

किसी संप्रदाय के लोग घर आते है, उनके पास बाइबले और धार्मिक साहित्य होता है, इस कारण लोग सोचते है कि वे सही है। हमें उनकी शिक्षाओं को पवित्रशास्त्र से परखना आना चाहिये। हमें अप्रमाणिक कहानियों पर शीघ्रता से विश्वास नहीं करना चाहिये, जो नासमझ मसीहियों को प्रसन्न करती है। वे उन पर विश्वास करना चाहते है।

- एक सुसमाचार का पर्चा है जिसमें कहा गया है कि डार्विन ने अपनी मृत्युशैय्या पर मसीह का अंगीकार कर लिया था। यह कहानी खोकली है। एक और कहानी में बताया जाता है कि निकिटा खुश्चेन ने प्रभु पर विश्वास कर लिया था, इसी कारण उसे सोवियत् संघ की सत्ता से उन्हे हटा दिया गया था। जब मैं लड़का था, मैंने एक सुसमाचार पर्चा पढ़ा जिसमें कहा गया था कि परमेश्वर के मंदिर के लिये इण्डियाना लाइम स्टोन के पत्थर न्यूयार्क में जमा किये गये है और उन्हें शीघ्रही जहाज से इस्राएल पहुंचाया जायेगा।

एक मसीही अगुवे ने जीम इलियट से कहा, "हे जवान, हम मसीह के सहस्त्र वर्षीय राज्य के 40 वे वर्ष में है, और यह पाम्परिक अभिमत है।'' यह बात 2 जनवरी 1956 की है।[66] एक खबर प्रसारित हुई कि बेल्जियम के एक कम्प्युटर ने यहोशू 10 के लंबे दिन की गनना की है (जब सूर्य स्थिर हो गया था)। संभव है यही वह कंप्यूटर है जिसे 666 कहा गया है। कहा जाता है कि बीच रास्ते में कार में मदद मांगकर बैठनेवाले एक व्यक्ति ने कारचालक और उसकी पत्नी को बताया कि यीशु तब आनेवाले ही थे। कुछ मिनटों के बाद जब कारचालक ने पीछे दृष्टि की, वह व्यक्ति अदृश्य हो चुका था। जबकि कार 65 मील प्रति घण्टे की रफ्तार से चल रही थी।

अवश्य है कि रेडियो और टेलीविजन पर सुसमाचार प्रचारकों की आर्थिक सहायता की अपीलें सुनते समय हम उन्हें परखे। वे प्रार्थना का कपड़ा, आशीषें, पवित्र – जल (यरदन नदी का जल), पवित्र क्रुस इत्यादि भेजने का प्रस्ताव रखते है। कुछ दान दाताओं के लिये प्रतिदिन प्रार्थना करने का वादा करते है। धार्मिक कलाबाजों ने मसीहियों से लाखों – करोडों रुपये ठग लिये है। फर्जी स्कीमं, पिरामिड स्कीमें और लॉटरियां मानवीय स्वभाव के लालच को उदीप्त करती है। मसीहियों सावधान रहे। दोपहर का भोजन मुफ्त में नहीं मिलता।

सच्चा सुसमाचार

सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि हम बाइबल के पुरुष और स्त्री हो। हमें बाइबल पढ़ना चाहिये, उसका अध्ययन करना चाहिये, उसके पद कंठस्थ करने चाहिये, उस पर मनन करना चाहिये, उस पर अमल करना चाहिये, और सभी बातों को बाइबल के आधार पर परखना (जांचना) भी चाहिये। आजकल के लोग बाइबल के संबंध में अनपढ़ है। यही कारण है कि गलत – शिक्षायें आसानी से फलफूल रही है। अवश्य है कि परमेश्वर के अनुग्रह के सच्चे सुसमाचार को लेकर हमारे मन में कोई संदेह न हो। सार रुप में कहे – समस्त संसार में केवल दो ही धर्म है – कार्यो के द्वारा उद्धार, और विश्वास से अनुग्रह द्वारा उद्धार। केवल सच्चा मसीही विश्वास, अनुग्रह से उद्धार की शिक्षा देता है:

यहां एकमात्र सुसमाचार की अव्दितीयता है:

- जिसमें केवल पापी–जन उद्धार पा सकते है।
- केवल मसीह उद्धार कर सकते हैं। केवल यीशु मसीह पापियों के बदले मे मरा।
- केवल यीशु मसीह का लोहू पापों से शुद्ध करता है।
- यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानकर विश्वास करने से ही हमें उद्धार मिलता है।
- स्वर्ग में केवल वे पापी होंगे जो मसीह के लोहू के द्वारा छुटकारा पाये हुए है।

संक्षेप में, उन मसीहियों के समान मत बनिये जो पर्यटन यात्रा में जो भी बस चालक कहें उस पर विश्वास कर लेते थे।

अध्याय - 34

कभी हार न मानें

इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद–विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है –(इब्रानियों 12:1–6)।

परिभाषाः–

सहनशीलता का अर्थ केवल परीक्षाओं और पीड़ाओं को धैर्य पूर्वक सहना नहीं है, परन्तु उनमें जय पाना है। यह भाग्य को सहन करने की मजबूरी का धीरज नहीं है, परन्तु वह धीरज है जो स्थितियों पर स्वामित्व (अधिकार) जताता है। सहनशीलता भीतर से आनेवाली निराशा और बाहर से आनेवाले विरोध के सामने रुकती नहीं है। यह वह दृढ़ता है जो अतं तक बनी रहती है, जब तक कि अतं में सफल न हो जाये। यह निष्क्रिय रुप मे परिस्थितियों को भाग्य मानकर स्वीकार करना नहीं है, परन्तु वह दृढता है जो अतं तक बनी रहती है। सहनशीलता उद्धार पाने का मार्ग नहीं है जबकि एक या दो पदों को पढ़ते से ऐसा लगता है, ''परतुं जो अतं तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा '' (मत्ती 24:13)। यहां क्लेश काल की चर्चा है। विश्वासियों को यह नहीं समझना कि शत्रुओं के समक्ष निष्क्रिय समर्पण में ही उनकी सुरक्षा है। ये वे है जो सहनशीलता रखेंगे और सहस्त्रवर्षीय राज्य में प्रवेश करेगे, ''जो

कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं '' (लूका 9:62)। यहां विषय 'सेवा' या सेवकाई है, उद्धार नहीं। छोडकर जानेवाले लोग सेवा के लिये उपयुक्त नहीं है।

वे क्षेत्र जिनमे हमे सहनशीलता की आवश्यकता है

हमें पारिवारिक जीवन और बच्चों के पालन –पोषण में धीरज और सहनशीलता की आवश्यकता है। हमें शिक्षा पाने के लिये भी उसकी आवश्यकता होती है। स्थानीय कलीसिया में भी इसकी आवश्यकता होती है जहां सामान्य स्थिति का नाम 'कठिनाई' है (जे – एलेक्जेडर क्लार्क) हमें मिशन –फील्ड में निरन्तर चलनेवाले परस्पर वैयक्तिक –संघर्षो में भी इसकी आवश्यकता है। ओर बीमारी और अपगंता के दिनो मे, जब आत्मा तैयार हे, पर देह दुर्बल है, इसकी आवश्यकता है। मसीही जीवन दीर्घजीवी जड़त्व के बाद कुछ समय की तीव्र हलचल नहीं होना चाहिये।

हार मानने या पीछे लौटने पर विवश करनेवाली बाते (कारण)

- एक गलत प्रेम प्रसंग या विवाह जो स्वर्ग में तय नहीं हुआ।
- व्यक्ति के जीवन मे पाप – '' मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है '' (नितिवचन 19:3) या फिर आधुनिक संस्करण जैसा लिखते है – कुछ लोग अपने मूर्खता के कामों से स्वयं का अहित (बर्बादी) करते हे और तब परमेश्वर को दोषी ठहराते है ''
- विश्वास का गलत अंगीकार जैसा मत्ती 13 में 'चार प्रकार की भूमि' में बताया गया है। बीज जो सड़क किनारे गिरे, बीज जो चट्टानी भूमि पर पड़े, बीज जो झाडियों में पड़े, वे सभी विश्वास का गलत रुप में अंगीकार करनेवालो को दर्शाते है। परन्तु 'फल लाने वाला' बीज ही अच्छा या सही था। आज लोग भौतिकवाद, लालच, झूठी अपेक्षाएं, लोगो में निराशा, हतोत्साह और सताव के कारण पीछे हट जाते है। कीमत अत्याधिक बड़ी है।

सहनशीलता या धीरज धरने के बाइबल से उदाहरण

बाइबल में एक दिन में जितना भौतिक नुकसान अयूब ने सहा उतना किसी और ने नहीं सहा। वह सदैव धीरजवन्त नहीं था परन्तु उसने सहनशीलता दिखाई। जब हम पौलुस के द्वारा मसीह के लिये सहे गये दुखों, खतरों, सतावों और पीड़ाओ के बारे में पढ़ते हैं (2 कुरि. 11:23–28) तो आश्चर्य होता है कि क्या हम मसीही है। निश्चय ही यीशु सहनशीलता का सर्वोच्च उदाहरण है (इब्रा. 12:1–4) दुष्टात्मायें और मनुष्य सब मिलकर जो बुरी से बुरी जांच या परीक्षायें कर सकते थे, उन सबके बावजूद वह क्रुसपर चढ़ने के अपने निश्चय से पीछे नहीं हटा।

शारीरिक सहनशीलता के उदाहरण

रॉबर्ट ब्रुस ने स्कॉटलैण्ड को स्वतंत्र कराने के प्रयास में 6 बार सैनिकी पराजय का सामना किया। एक गुफा में छिपे हुये उसने एक मकड़ी को देखा जो बार – बार अपना जाला बुनती। वह छह बार

असफल रही किंतु सातवीं बार सफल रही। इस बात ने ब्रुस में साहस भर दिया और उसने फिर से प्रयास किये। इस बार वह सफल हुआ।

कोस्टारिका के पांच मछुवारे एक तूफान से घिर गये, उनकी नौका बुरी तरह क्षतिग्रस्त थी। उसमें पानी भर गया और लगातार पानी उछालने की आवश्यकता थी। रेडियों बिगड़ गया था। बहुत दिनों तक वे बिना भोजन और पानी के रहे। एक बार एक टैंकर पास आया जिससे उन्हें पीने का पानी मिला, फिर वह टैंकर दूर चला गया। जब उन्हें अतं में खोजकर बचाया गया उन्होंने समुद्र में भटकने का विश्व कीर्तिमान कर दिया था। वे 142 दिन बादभी समुद्र में जीवित रहे, उन्होंने पानी, मछली और कछुवों के बल पर समय निकाला, उन्होंने लगभग 200 कछुवों को खाया। उन्होंने 3600 मील से भी अधिक (समुद्री) दूरी तय की और लगभग 4 बार अंतराष्ट्रिय समय सीमाओं को पार किया।

मार्कवेलमैन ने एल. कैपिटन, विश्व के सबसे ऊंचा एकाश्म पर चढ़कर दिखाया, जबकि वह निम्न अंगो के पक्षाघात से पीड़ित था। उसे 3000 फीट चढ़ने में 7 दिन और 4 घण्टे लगे, जबकि एक बार में वह 6 इंच ही सरकता था। कभी – कभी तेज हवाओं ने उसे चोटी से दस फीट दूर तक फेंक दिया। उसके बाद उसे हाफ डोम की चढ़ाई की, और योसे माइट नेशनल पार्कभी गया। उसे 2000 फीट चढ़ने में लगभग दो सप्ताह लगे।

ये व्यक्ति टाइमेक्स घड़ियों के समान थे – वे गिरे अवश्य पर उठकर चलते। मसीही जीवन मैराथन के समान है, यह 100 मीटर की तेज दौड़ नहीं है। विन्सटन चर्चिल के शब्दों को स्मरण रखिये – "कभी हार मत मानों, कभी हार मत मानों, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, किसी भी बात में, बड़ी या छोटी, विशाल या तुच्छ, कभी हार मत मानों जब तक यह विश्वासों या सिद्धांनों के सम्मान और भलाई के लिये न हो।" कौलमैन क्रॉक्स ने कहा " यहां तक कि कठफोड़वा पक्षी की सफलता का श्रेय इस तथ्य को जाता है कि वह अपने सिर (और चोंच) का लगातार उपयोग करता रहता है, जब तक कि उसने जो काम आरंभ किया है, उसे पूरा न कर ले " एक अग्रणी नेता ने कहा था, "बहुत से लोग हार मान लेते है जबकि वे सफलता के बहुत नजदीक होते है। " वे एक गज पहिले मैदान छोड़ देते है, वे खेल के अंतिम मिनट में हार मान लेते है, और जीतने की रेखा से एक कदम पहिले हार मान लेते है।

> जब स्थितियां विपरीत हो, जैसा कभी – कभी होता भी है, जबकि आपका मार्ग चढ़ाई से भरा लगता है, जबकि चिन्ताये आप पर दबाव बना रहीं हो, कुछ देर विश्राम करे, यदि विश्राम की आवश्यकता है, परन्त कदापि हार न माने। अकसर लक्ष्य मूर्छा खाने वाले और लड़खड़ाने वाले को जितनी दूर दिखता है, उससे कहीं अधिक पास होता है।अकसर संघर्ष करनेवाला तब हार मान लेता है जबकि वह विजयश्री का वरण करने के नजदीक होता है – आगे बढ़ते रहे
>
> *(लेखक –अज्ञात)*

एक व्यक्ति था जो व्यापार में असफल रहा। उसने विधायिका का चुनाव लड़ा और हार गया। फिर एक और व्यापार मे घाटा हुआ। उसके बाद विधायिका में चूनकर आने के बाद उसे 'नर्वस – ब्रेक डाऊन' हुआ। अगले दस वर्षो में वह 'स्पीकर', लैण्ड – ऑफिसर, इलेक्टर और कांग्रेस मैन जैसे पदों पर चुनाव में असफल रहा। अतं में वह कांग्रेस मे चुना गया पर दोबारा चुनाव के लिए हार गया। उसने

यू. एस. सीनेट के पद के लिये प्रयास किये, पर हार गया। एक वर्ष बाद वह उप–राष्ट्रपति के लिये नामांकन में हार गया। और फिर एक बार यू. एस. सीनेट पहुंचने में असफल रहा। अतं में, अपनी सभी असफलताओ के बावजूद वह अमरीका का राष्ट्रपति चुना गया – उसका नाम अब्राहम लिंकन था।

प्रभु यीशु मसीह ने भी पापियों के द्वारा उनके विरुद्ध कहीं गयी न जाने कितनी बुरी बातों को सहन किया (इब्रा. 12:2)। उसने उसके पिता द्वारा उसे दिया गया कार्य पूरा किया (यूहन्ना 17:4) उसने कभी भी वापस पीछे हटने की नहीं सोची। अपने पिता का कार्य पूरा करना, जो उसे पिता ने उसे सौंपा था उसके लिये भोजन समान था (यूहन्ना 4:34)। यदि हम यीशु के समान है, हमें भी सहनशील होना चाहिये। हमारे भीतर एमी कार माइकेल की भावना होनी चाहिये – जिसने लिखा था –

मेरा हाथ हल पर है, मेरा कांपता हुआ हाथ,
परन्तु मेरे सामने बिना जोता गया समुचा भू–भाग है
जंगल और वीरान स्थान, सुनसान मरुस्थल,
और उनके बीच के स्थान,
मेरे हल मेरे आंसुओं से भीगे है,
और लोहे में जंग लग चुकी है,
फिर भी, फिर भी, जबकि मै खेत में हूं,
मैं ढ़ीली नहीं हो सकती,
हे मेरे परमेश्वर! हे मेरे परमेश्वर!
मुझे वापस लौटने मत देना।

अध्याय - 35

जीवित एवं शुद्ध विवेक रखे

सभी लोग कभी न कभी विवेक की अवहेलना करने की परीक्षा में पड़ते है। आपका व्यवसाय चाहे कुछ भी हो, उसमें नीतिगत समस्याएं होती ही है। उपयोग में आ चुकी कारे बेचनेवाले कार से कमाने के दबाव में रहते हैं जबकि वे जानते हैं कि कार खराब हो चुकी है। चिकित्सको पर जीवन बीमा के बिलों पर हस्ताक्षर करने का दबाव रहता है, उन चोंटो और बीमारियो के लिये जिनका अस्तित्व नहीं है या फिर नशे की लत वालों के लिये दवायें लिखने का दबाव। वकील उन लोगों की निर्दोषिता साबित करने बहस करते हैं जिन्हें वे जानते है कि वे सही लोग नहीं है, मेढ़े के सींगो जैसे घुमावदार है और अपराध (पाप) के दोषी है। अचल सम्पत्ति के अभिकर्त्ता (दलाल) सत्य को छुपाने या उसका स्वरुप बदलने में विशेषज्ञ हो गये है। पुलिस के अधिकारी उन लोगों से मदद लेते हैं जो सोचते हैं कि जब उन्हें कानून से तकलीफ होगी तब वे उनकी सहायता करेंगे। ठेकेदार अपने लाभ को बढ़ाने हैं और आवश्यक स्तरीय सामान नहीं लगाते और गलत सामान का उपयोग करते है। लेखक अन्य दूसरों के लेखन से चोरी करते है, एयर क्राफ्ट के मैकेनिक काम हो गया कहकर हस्ताक्षर करते है जबकि काम नहीं हुआ है, और इस प्रकार, विमानों को उड़ाने के संबंध में अपना अभिलेख पूरा करते है। वे लोग जो सामान और सेवाएं बेचते है, वे नगद में लेनदेन करते है ताकि लेनदेन का कागजों पर हिसाब न दिखे, ताकि उन्हें आयकर न देना पड़े। कामगार छुट्टी मांगते है कि वे बीमार है – या नानी – दादी चल बसी है, पर आप उन्हें बेसबाल खेलता हुआ देखते है।

मसीही लोग लगातार झूठ बोलने की परीक्षा का सामना करते है। जब आयकर विवरणी भरनी होती है, शारीरिक अभिलाषा उठती है कि आय कम और खर्च अधिक बताये। मिशनरियों का काम तेजी पकड़ लेगा यदि वे कस्टम वालों को रिश्वत दें या पुलिसवाले की हथेली गरम करके। गृहिणी को सुपर मार्केट में छुट्टे पैसे की किल्लत होती है पर वह छुट्टा अपने पास रखने का निर्णय लेती है। सुसमाचार –प्रचारक उनके क्रूसेड में आनेवालों या मसीह पर विश्वास करने का निर्णय लेने वालों

की संख्या बढ़ा चढ़ा कर बताने में लाभ समझते है। छात्रों को सदा की तरह परीक्षा में नकल करने की परीक्षा का सामना करना पड़ता है। जोशीले मसीही कम्पनी में काम के समय मसीह के लिये गवाही देते है। वे इस काम के लिये वेतन नहीं पाते है। हम खाली सड़क पर क्यों कार तेज चलाते है और जब देखते है पुलिस वाले पीछा कर रहे है तब कार धीमी कर लेते है? पुलिस की कार देखकर क्यों असहज हो जाते है एक भिखारी भीख मांगता है और हम कहते है, 'मेरे पास कुछ नहीं है' या फिर, कार्यालय में फोन की घंटी बजती है और सेक्रेटरी उत्तर में कहती हे – " वह यहां नहीं है," पर वह वही होता है। क्या आप डाक–टिकट दोबारा काम में लाते है यदि उसे छापा नहीं गया है? हम कॉपीराइट वाले ऑडियो और वीडियों की अवैधानिक प्रतियां बनाते है और पायरेटेड कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर काम में लाते है।

बच्चों को हर समय समस्याये आती है। वे मां के पर्स से चोरी करते है, फिर सजा से बचने झूठ बोलते है, भाई – बहिनों पर दोष लगाते है या फिर साफ मुकर जाते है। इनमें से कुछ बाते छोटी और अर्थहीन जान पड़ती है, पर वे छोटी लोमड़ियां है, जो दाख की बारी बर्बाद कर देती है। नीतिगत बातों के उलंघन को सहीं ठहराने वाला तर्कपशु का चिंह लेने को सही बताने में उपयोग किया जा सकता है। भ्रष्टाचार के युग में एक जीवित और शुद्ध विवेक परमेश्वर के लिये बोलता है। एक विश्वासी की ऐसी प्रतिष्ठा थी कि वह अपने घर पर भी मसीहत पर अमल करता है। एक व्यापारी ने एक प्रतिस्पर्धी – मसीही के लिये कहा – "उसके साथ अनुबंध करने की आवश्यकता नहीं है – उसके शब्द ही पर्याप्त है।" एक फुटबाल रेफरी ने कहा – "जब मैं रेफरी होता हूं और टॉमी वॉकर खेल रहा है, तो मुझे केवल २१ खिलाड़ियों पर दृष्टि रखनी है, 22 पर नहीं, क्योकि टॉमी कभी गलत काम नहीं करेगा।" टॉमी की मसीहत ने उसके खेल को प्रभावित किया। जब एक श्रमिक ने आयकर सलाहकार को बताया कि उसकी एक बड़ी धनराशि है, जिसके बारे में किसी को पता नहीं है, आयकर सलाहकार ने कहा, "जाने दो, सरकार को कभी पता नहीं चलेगा " श्रमिक ने उत्तर दिया, "पर मुझे तो पता है, मैं एक मसीही हूं "

ये व्यवहारिक धार्मिकता के उदाहरण है – तुलना करे कि एक मसीही विश्वास का अंगीकार करनेवाले ने अपनी गलत मांग पर अगुंली उठाये जाने पर कहा – " सुनो। वह रविवार की बात है, और आज बुधवार है।

लगातार नीतिगत असफलता का विवेक पर निर्बल करने वाला प्रभाव पड़ता है। जैसे रबर बैण्ड को आप जितना अधिक खींचेंगे, उसका लचीलापन उतना ही कम होता जाता है। विवेक को चुप रखने का आसान तरीका यह कहना है कि किसी को पता नहीं चलेगा। परन्तु किसी न किसी को पता चलेगा। सभी बातें परमेश्वर की आँखो के सामने खुली है, जिससे हमें काम है। वह न केवल हमारे कामों को परन्तु हमारे ह्दय के विचारों और अभिप्रायों को भी पढ़ता है। विवेक का उलंघन करने के परिणाम किसी पाप के परिणाम जैसे ही होते है।

- परमेश्वर के साथ सहभागिता भंग हो जाती है (1 यूहन्ना 1:6)
- उद्धार का आनंद खो जाता है (भजन संहिता 51:12)

- प्रभावशाली साक्षी खो जाती है (उत्पत्ति 19:14) और आत्मिक सामर्थ का क्षय हो जाता है। हम पाप करके बच नहीं सकते वह हमारे उपर बोझ बन जाता है। हम भले सोचे कि हम पहिले के समान प्रभावशाली है – पर हमारी सेवा पर परमेश्वर की आशीष नहीं होती। रथ के पहिये भारी चलते है।
- यह प्रभु के नाम को लज्जित करता है (2 शमूएल 12:14अ)
- यह दूसरों को ठोकर खिलाता है (यूहन्न 17:21)।
- वह व्यक्ति प्रार्थना में परमेश्वर की निकटता को खो देता है (भजन संहिता 66:18)।
- यह उन पापों में से है जिन्होंने उद्धारकर्त्ता को क्रुसपर चढ़ाया।
- यह परमेश्वर का ह्दय तोड़ देता है।
- यह व्यक्ति को परीक्षा और बुरे निर्णयों की ओर ले जाता है यह परमेश्वर की ताडना को लाता है (इब्रा. 12:6)
- यदि अंगीकार करके त्यागा न जाये, इसका परिणाम मसीह के न्याय आसन के सामने प्रतिफल खो देने में है (1 कुरि. 3:11–15)

जब असफलता आती है तब उसके सुधार के लिये मार्ग भी अवश्य होता है। 1 यूहन्ना 1:9 में यह पाया जाता है। हम बुराई को खींचकर सबके सामने लाते है। और उस पाप का अंगीकार करते है। जब हम ऐसा करते है, परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने और सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है। अवश्य है कि हम सब अपनी प्राथमिकताएं निश्चित करे। आप उन्हें किस क्रम में रखते है – लाभ, उत्पाद, लोग, सिद्धात?

कभी – कभी यह उन मसीहियों को मंहगा पड़ता है जिनके विवेक परमेश्वर के वचन में शिक्षित होते हे, जो आज्ञापालन के लिये संवेदनशील होते है। एक युवा विश्वासी से कहा गया कि वह अपने उपभोक्ताओं को सामग्री और कीमत के बारे में गलत जानकारी दे। उसने अपनी पत्नी के साथ मिलकर प्रार्थना की और प्रभु से अगुवाई मांगी कि वह क्या करे। अगले दिन उसने अपने सुपवाइजर से कहा कि वह उपभोक्ताओं से झूठ नहीं बोलेगा। उस शुक्रवार उसे नोकरी से हटा दिया गया। वह जानता था क्यों। हमारे लिये यह हमारी महत्वांकांक्षा और आनंद की बात होनी चाहिये कि हम प्रेरित पौलुस के साथ कह सके " मैने आज तक परमेश्वर के लिये बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है " (प्रेरितो के काम 23:1)। यदि हमारा विवेक – परमेश्वर के वचन से मार्गदर्शन पाता है, तो वह न केवल हमें पाप से छुटकारा देगा परंतु हमें अनावश्यक भीरुता से भी बचायेगा।

अपने एक भजन में जो अधिक प्रसिद्धि का हकदार है, चार्ल्स वेसली ने लिखा था –
मैं एक सिद्धांत मुझमें चाहता हूं, ईर्ष्या, ईश्वरीय भय,
पाप के प्रति संवेदनशीलता, उसे महसूस करने का दर्द कि वह पास है,
मैं सबसे पहिली मनोवृत्ति चाहता हूं कि महसूस करूं, उस गर्व को,
उस चाहनेयोग्य अभिलाषा को, कि अपनी भटकती इच्छा को रोक सकू,
और सुलगती अग्नि को बुझा सकू,

कि तुझसे मैं कभी अलग न होऊ, आपको फिर कभी शोकित न करुं,
मुझे वह यथोचित आदरभाव, मांस का हृदय और कोमल विवेक दीजिये
जैसे आपकी आंख की पुतली, वैसे, हे परमेश्वर, मेरे विवेक को बना दीजिये।
जब पाप निकट हो, मेरे मन को जागृत कर दे और उसे जागृत रखे,
यदि मै दांये या बांये भटक जाऊं, उस पल हे प्रभु, मेरी ताड़ना करे,
और मुझे आपके प्रेम को शोकित करने के कारण आँसू बहाने का जीवन दीजिए।
भला हो कि थोडी सी गलती मेरे सुशिक्षित मन को दुखी करे
और मुझे आपके लोहू के पास ले आये, जो घायलों को चंगाई देता है।

अध्याय - 36

जहां तक संभव हो सबके साथ मेलमिलाप से रहे

इस अध्याय का शीर्षक यह कहने का रुचिकर तरीका है कि – 'सबके साथ मिलकर रहो, या 'दूसरो के साथ मेलमिलाप रखो। यह मसीही जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। यह घर में और कलीसिया में अधिक बड़ी समस्या बनती है। चाहें स्वदेश में या विदेश में। यह समस्या सभी नस्लों, देशों और संस्कृतियो के लोगों में है। बिल रोजर्स का आशय यही था जब उन्होंने यह कहा था, '' संसार में समस्या का कारण लोग ही है। कहने की आवश्यकता नहीं कि हम सभी बातों या आधारों की चर्चा एक अध्याय में नहीं कर सकते है। सारी बातो के लिये बहुत बड़ी किताब जैसे कि टेलीफोन डायरेक्टरी या उसके या उसके जैसे मोटी कीताब की अवश्यकता पडेगी। इस कारण हम केवल यह विचार करेंगे कि हम कौनसे सकारात्मक कार्य कर सकते है, और कौन से काम और दृष्टिकोन या अभिवृत्तिया हमें अनदेखी करनी होगी।

दूसरो के साथ व्यवहार में उनकी गलतियों के बदले भले गुण देखने का प्रयास करे, यदि वे मसीही है तो उनमे मसीह को देखने का प्रयास करे। भारतीयों के लिये प्रेरित, मिन्नेसोटा के बिशप व्हिप्पल ने कहा था, '' मैने तीस वर्ष तक मसीह के चेहरे को उनमें देखने का प्रयास किया जो मुझसे सहमत नहीं थे।''

जीवन में बढ़ते हुये गलतियां मत देखो, और यदि आप उन्हें पायें,
तो बुद्धिमानी और दया इसमें है कि आप उनकी अनदेखी करे
और उनके पीछे छुपे सद्‌गुणों को देखे।
क्योंकि बादलों से भरी रात में कही न कही, अंधेरे में छुपी रोशनी की किरण होती है,
बेहतर है कि सूर्य के धब्बों पर ध्यान देने के बदले,
हम किसी तारे की खोज करे।

(एल्ला व्हीलर निलकॉक्स)

लोगो की गलतियों को बढ़ा चढ़ाकर देखने के बदले हमें उनकी योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये। वे अभी क्या है, इससे अधिक बढ़कर बात यह है कि वे क्या बन सकते है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि हम सब में गलतियां और असफलताएं है। हमें दूसरों में उस सिद्धता की आशा नहीं करनी चाहिये, जो हम स्वयं में नहीं दिखा सकते। यीशु ने चेलो को स्वीकार किया, जहां वे थे, फिर वहां से उसने उन्हें बनाया। उसने यह मांग नहीं की, कि वह उनके साथ काम करना आरंभ करे उससे पहिले वे आत्मिक महामानव बन जाये। हम लोगों को स्वीकार कर सकते है , बिना उनके कामो का समर्थन किये – डेल–ई गैलोवे ने कहा था,

> ''हम मे से बहुत से लोग व्यवहार को स्वीकार करने और व्यक्ति को स्वीकार करने के बीच का अंतर कभी समझ नहीं पाते। जब मैं किसी व्यक्ति को बिना शर्त स्वीकार करने की बात कहता हूं, तब मेरा अर्थ यह नहीं है कि हम उसके सभी कामों और
>
> दृष्टिकोण को स्वीकार करे। हमें उस व्यक्ति से प्रेम करना है उसकी गलतियों के साथ, जैसा भी वह है।

बुद्धिमानी इसमें है कि हम लोगों की पृष्ठभूमि, उनकी विभिन्न योग्यतायें और अनुभवों, उनकी आत्मिक परिपक्वता के विभिन्न स्तरो को स्वीकार करे। यह करने के लिये हम उनके प्रति आलोचना को उदार बना सकते है या उसे पूरी तरह रोक सकते है, कि न करे। कभी – कभी जब लोग हमसे गलत व्यवहार करते है, उसका कारण यह होता है कि वे बुरे या कठिन समय से गुजर रहे है – धीरज धरने और सहानुभूति का व्यवहार करने का प्रतिफल मिलता है। हमें उन विभिन्नताओं का सम्मान करना चाहिये जो परमेश्वर ने अपने लोगो में रखी है। केवल एक देह है – मसीह की देह – परन्तु अंग बहुत से है और वे एक समान नहीं है। कल्पना करके देखिए कि संसार कैसा होगा यदि सभी सदस्य आपके समान होते।

हम लोगों को उनके बाहरी रुपरंग के आधार पर देखते है। यदि वे देखने में सुदंर है, हम स्वयं मान लेते हैं कि वे अच्छे है। जेम्स डॉबसन कहते है कि सुंदरता मानवीय मूल्य के आंकलन का सुनहरा सिक्का है वे आगे समझाते है कि ऐसा नहीं होना चाहिये, परन्तु बहुधा ऐसा ही होता है।

> एक नवयुवती मोजार्ट से विवाह करनेवाली थी परन्तु उसने विचार बदल लिया क्योंकि मोजार्ट 'नाटा' था, और उसे एक सुदर्शन पुरुष मिल गया जो ऊंचा – पूरा और आकर्षक था। बाद में जब मोजार्ट प्रसिद्ध हो गये, वह अपने निर्णय पर पछतायी। उसने कहा, ''मैं उसकी बुद्धिमत्ता और महानता के बारे में कुछ नहीं जानती थी, मैंने तो बस उसे एक 'नाटा' व्यक्ति समझा। ''[67]

किसी को समझने या उसके बारे में निष्कर्ष निकालने से पहिले अवश्य है कि हम उसे जाने। शीघ्रता करना खतरनाक है। यदि हमें कोई गलती करनी है, तो हम अनुग्रह के पक्ष में करे, और बेहतर होगा कि सभी बाते (तथ्य) जाने बिना हम कोई निर्णय न ले। जॉन वेसली का एक व्यक्ति के बारे में बुरा विचार था, वे सोचते थे कि वह व्यक्ति कंजूस था। एक दिन जब वेसली ने ध्यान दिया कि उसने दान में बहुत कम दिया हे, उन्होंने सबके सामने उस बेचारे की आलोचना की। बाद में उस व्यक्ति ने बेसली को बताया कि वह पार्सनिप (चुकंदर – गाजर जैसी एक सब्जी) खाकर और पानी पीकर दिन

काट रहा था। जब उसने उद्धार नहीं पाया था जब उस पर भारी कर्ज था। अब वह पाई–पाई जोड़ रहा था ताकि अपना कर्ज चुका सके। ''मसीह ने मुझे एक ईमानदार व्यक्ति बनाया है,'' उसने कहा, इसलिये कि उसे कर्ज चुकाना है, वह दशवांश में कुछ शिलिंग ही दे सकता है। मुझे अपने सांसारिक पड़ोसियों को दिया वचन निभाना है और उन्हें बताना हे कि परमेश्वर का अनुग्रह उस व्यक्ति के ह्दय में क्या कर सकता है, जो एक समय बेईमान था।'' वेसली क्या करते, उन्होंने उस व्यक्ति से क्षमा मांगी जिसकी सबके सामने इतने गलत रुप में आलोचना की थी।[68]

लोगों के साथ अपने लाभ के लिये नहीं परन्तु उनके भले के लिये व्यवहार करना एक भला विचार है। हमें लोगो का 'उपयोग' नहीं करना चाहिये, अर्थात उनका शोषण या दुरुपयोग, या हमारे अपने लाभ के लिये आगे करके उपयोग नहीं करना चाहिये।

> ''परमेश्वर ने हमें सृजा कि लोगों से प्रेम करे और वस्तुओं का उपयोग करे, हमारी समस्या है कि हम वस्तुओं से प्रेम करते है और लोगों का उपयोग करते है।'' (अज्ञात)

विचित्र स्वभाव के लोगों के साथ सामजस्य करने के लिये परमेश्वर से विशेष धीरज मांगे। साथ ही इस वास्तविकता को भी स्वीकार करे कि उन में कुछ ऐसे लोग अवश्य है जिनके साथ आप हिलमिलकर काम नहीं कर सकते। यहां तक कि पौलुस और बरनबास भी प्रभु की सेवा साथ– साथ नहीं कर सके और अलग हो गये। पौलुस का कहना है कि हम अन्य दूसरों को स्वयं से बेहतर समझें। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी का चालचलन आप से बेहतर है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि हमें अपने लिये नहीं पर दूसरो के लिये जीना चाहिये। हमें दूसरों के हित अपने हित से पहिले रखने चाहिये, और उनसे वैसा ही व्यवहार करना चाहिये, जैसा व्यवहार प्रभु यीशु ने हमसे किया है।

जब हम लोगों से मिलते है उन्हें लगना चाहिये कि उनसे मिलना एक सार्थक अनुभव था। मेरा एक मित्र है जो सबका अभिवादन करता है, अजनबियों का भी और ऐसी गर्मजोशी और उत्साह के साथ कि व्यवहारिक रुप में उनका दिन अच्छा व्यतीत होता है। हमें अपनी सीमा से बढ़कर अजनबियों से मुलाकात करनी चाहिये। यदि इसमे कठिनाई लगे, हमें स्वयं पर जोर देकर यह करना चाहिये। हमें अपना परिचय देने में तत्परता दिखानी चाहिये, और ऐसे प्रश्न पूछने चाहिये जिनसे लगे कि हमारी रुचि बनावटी नहीं हे। यीशु ने सामरी स्त्री से पानी मांगकर अपने आप को परिचित कराया (यूहन्ना 4:7)। यदि हम उनके नाम स्मरण रखते है तो हमारी वास्तविक रुचि प्रमाणित होती है एलिजा बेथ इलियट ने लिखा,

> कहा जाता हे कि किसी भी भाषा में सबसे मनोहर लगनेवाला शब्द 'आपका अपना नाम' है। वे लोग जो सार्वजनिक संस्थानों में काम करते है किसी के नाम का उपयोग करने का महत्व अच्छी तरह से समझते है। जो नाम हम लेते है वे अत्याधिक महत्वपूर्ण होते हे – और अकसर उस व्यक्ति के प्रति हमारी अभिवृत्ति के परिचायक होते है।

बहुधा हम यह बहाना बनाकर स्वयं को संतुष्ट कर लेते है – ''मुझे नाम स्मरण नहीं रहते'' यह बात छुपाना है और सच नहीं है। हम जिसे महत्वपूर्ण समझते है, वह सब स्मरण रखते है। नामों को स्मरण रखने का सरल तरीका अकसर उन्हें लिखकर रखना है। हमें ऑलिवर क्रॉमवेल की सलाह स्मरण रखनी

चाहिये – ''मै तुम्हे मसीह की दया स्मरण दिलाकर कहता हूं कि आप यह बात माने कि संभव है आप गलती पर हो '' अकसर इस बात की भयंकर संभावना होती है। जब कभी ऐसा हो तो हमें कभी यह कहने में संकोच नहीं करना चाहिये – मैं गलत था, मुझे खेद है, कृपया मुझे क्षमा करे।'' लोग चुप रहते है या सब जानते है। वे उनके साथ अधिक सहज रहते है जो मानते है कि उनका ज्ञान असीम नहीं है और वे गलती भी कर सकते है। जब कोई क्षमा याचना करे, हमें कहना चाहिये कि हमने उसे क्षमा कर दिया है। हमें ऐसा व्यवहार नहीं दर्शाना चाहिये कि क्षमा याचना की कोई आवश्यकता नहीं है। संभव है कि पश्चाताप के स्थान में आते हुये उसे लंबा और कठिन संघर्ष करना पड़ा है और अब वह सुनना चाहता है कि उसे क्षमा कर दिया गया है।

हमें आंखे मिलाकर (बिना घूरे) बातचीत करनी चाहिये। यदि बातें करते समय हमारी दृष्टि स्थिर नहीं है, तो यह संकेत है कि हमारा मन भी भटक रहा है। कितुं एकटक घुरने पर हम जिससे बात कर रहे हैं वह हमसे कह जाता है।

बहुत सी आधुनिक पुस्तके इस बात पर जोर देती है कि गर्मजोशी से हाथ मिलाना, गले लगाना, या चुम्बन की गर्माहट और भिन्नता महत्वपूर्ण है। यह सत्य है, निश्चय, पौलुस ने कुरिन्थवालों को लिखा ''पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो'' (1 कुरि. 16:20)। पर यह तथ्य सतुंलनकारी है कि यदि स्पर्श में पवित्रता नहीं है तो यह कड़ी परीक्षा और यौन पाप की ओर ले जा सकता है। साथ ही यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिये कि कुछ सही स्पर्श भी लोगों की दृष्टि में बुरे हो सकते है, इसलिये उनसे बचना चाहिये। (1 थिस्स 5:22)।

दूसरो से मेल मुलाकात के समय हम अति संवेदनशील न बने। कुछ लोगों में थोडी –सी बात पर चोट लगने और प्रतिकार करने के लक्षण दिखने लगते है। वे एक मजाक भी नहीं सह सकते। वे ऐसी बातों पर भी बिदक जाते है जिनमें उन्हें नीचा दिखाने का लेश मात्र अभिप्राय नहीं होता। एक मसीही की त्वचा गैंडे के समान होनी चाहिये।

> ''मैने प्रभु से मांगा है कि वह मेरी अति– संवेदन शीलता को मुझसे दूर कर दे जो मेरे मन का आनंद और शांति चुरा लेती है और सहभागिता को अवरुद्ध कर देती है''
>
> *(लेखक – अज्ञात)।*

हम आलोचना को कैसे स्वीकार करते हे, यह हमारे चरित्र और आत्मिक परिपक्वता का चिन्हं है। हमें समझना चाहिये कि हमारे हावभाव चारित्रिक विशेषतायें और आदतें होती है जो दूसरों को नाराज करती है। हमारे भीतर अनगिनत गलतियां और असफलताएं होती है। इसलिये हमें विनम्र भाव से आलोचना स्वीकार करनी चाहिये और उससे लाभ उठाना चाहिये। हमें कहना चाहिये – ''अच्छा, मेरे भाई , आप मुझे ठीक से नहीं जानते, यदि जानते, तो आलोचना करने लायक और बहुत सी बातें भी जानते।''

कभी – कभी आलोचना सही नहीं होती। ऐसे समय में हमें धीरज से सुनना चाहिये और प्रभु को वह बात न्याय के लिये सौप देना चाहिये।हमे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह हम पर लगाये गये आरोप, या आलोचना के बाद भी हमें ठंडा, कड़वा या चिडचिड़ा न बनने दे। वे सदैव यहीं करेंगे। लोग ऐसे मित्र चाहते है जो उत्साही सकारात्मक और आशावादी हो। उदास रहनेवाले मत बनें।मै ऐसे लोगो

को जानता हूं कि वे इतने उर्जावान होते हैं कि जब कमरे में आते है, कमरा मानों खिल उठता है। वे अनुकरण करने के लिए एक अच्छे उदाहरण है।

दूसरों के साथ व्यवहार में सबसे अधिक ठोकर खिलाने वाला एक अंग जीभ है। मसीही बातचीत के अध्याय में इस पर विस्तार से चर्चा की गई है, इसलिये यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं है। जब एक प्राचीन, सेवक, बोर्ड – निदेशक, न्यासी या कमेटी के सदस्य के रुप में सेवा कर रहे है तब पारस्परिक संबंधो पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मूलभूत महत्व के विषयों पर सबकी पूर्ण सहमति होनी चाहिये। मसीही विश्वास की बड़ी – बड़ी धर्मशिक्षाओं पर सौदेबाजी नहीं की जा सकती, और न ही सही और गलत के मामलों में। छोटी–छोटी बातों पर कुछ बाते दोनो पक्षों की मानी जाये। ऐसे मसलों पर समझौता करना बुरा नहीं है। आपस में बातचीत करने, समझने और समझाने और अतं में समूह के बहुमत के अनुसार चलने में सहमति रखनी चाहिये।

यदि कोई हर समय अपनी ही इच्छा से चलना चाहे, या जो सोचता है कि उसके निर्णय त्रुटिरहित है, उसे कभी भी नीति–निधरिको के समूह के साथ काम करने के लिये सहमत नहीं होना चाहिये। अपने अभिमत पर कठोरता से अड़कर और हठीलेपन के साथ समर्पण न करके वह परमेश्वर के काम को बिगाड़ सकता है। पौलुस ने चेतावनी दी है जो एक स्थानीय कलीसिया में बिगाड करेगा, परमेश्वर उसे दण्ड देंगे (1 कुरि. 3:16–17)।

प्रभु यीशु मसीह बुद्धिमान, सहयोग करनेवाला और शालीन था। वह हमारे लिये नमूना है। हम जितना अधिक उसके जैसे होगे उतना अधिक हम दूसरों के साथ मिलकर आगे बढ़ने की उत्तम कला को सीखेंगे। समापन करते हुये मैं तीन मार्गदर्शन देना चाहता हूं जो इस क्षेत्र में शांति बनाकर रखने में सहायक सिद्ध होंगे:

- हमें विश्व के जनरल मैनेजर (महाप्रबंधक) के पद से इस्तीफा देना चाहिये ताकि प्रभु उस पद पर कार्य करे।
- हम दूसरों के लिये उनका जीवन नहीं जी सकते। प्रयास न करे।
- बिना मांगे दी गई सलाह का स्वागत नहीं होता। जब तक पूछा न जाये, प्रतीक्षा करे।

अध्याय - 37

त्यागपूर्वक जीवन जीएं

देना सौभाग्य है। प्रश्न यह नहीं है – मुझे कितना देना चाहिये? पर यह है कि मैं कितना त्याग कर सकता हूं? स्वयं के आर्थिक भण्डारीपन पर विचार करते हुये आरंभ मे हमे निश्चय कर लेना है कि परमेश्वर को उसका भाग देंगे (नीतिवचन 3:9–10 मलाकी 3:10)। हमें देना चाहिये:

- नियमित रुप मे, सप्ताह के प्रथम दिन (1 कुरि. 16:2)
- व्यक्तिगत रुप में, (प्रत्येक व्यक्ति दे) (1 कुरि. 16:2)
- निश्चय के साथ दे, (कुछ अलग रखे) (1 कुरि. 16:2)
- आनुपातिक रुप में दे, (ताकि वह उन्नति करे) (1 कुरि. 16:2)
- उदारतापूर्वक दे, (उदारता का धन) (2 कुरि. 4:2, 9:13)
- त्यागपूर्वक दे (आशा से अधिक दे) (2 कुरि. 8:3)
- साथ ही जीवन भी अलग किया गया हो, (सर्वप्रथम वे स्वयं को प्रभु के लिये दे 2 कुरि. 8:5)
- स्वेच्छापूर्वक दे (मन से सहमत होकर दे (2 कुरि. 8:12)
- केवल आज्ञापालन के लिये नहीं (2 कुरि. 8:8)
- ईमानदारी से दे (अपने प्रेम की ईमानदारी की जांच करते हुये, 2 कुरि. 8:8)
- उद्देश्यपूर्वक दे (जैसा मन में विचार किया था, 2 कुरि. 9:7)
- बिना कुड़कुड़ाये दे (2 कुरि, 9:7)
- खुशी से दे (परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम करता है, (2 कुरि. 9:7)
- बिना आडम्बर या दिखावे के दे (अपने आगे तुरही न बजवा, मत्ती 6:2, तेरा बांया हाथ न जाने कि दायां क्या कर रहा है, (मत्ती 6:3)

एक अन्य मूल नियम है – अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिये और परिवार की आवश्यताओं को पूरा करने कड़ा परिश्रम करे (2 थिस्स. 2:10; 1 तीमु. 5:8)। प्रभु के कार्य को सबसे उपर रखें (मत्ती 6:33, 2 कुरि. 5:7)। एक मसीही दम्पति को परमेश्वर के सामने यह तय कर लेना चाहिये कि वे किस स्तर की जीवन शैली में सतुंष्ट रहेंगे, ताकि उसके बाद जो भी बचे, वे प्रभु के काम के लिये दे सके। वर्तमान आवश्यकताओं के लिये कुछ धनराशि बैंक में होनी चाहिये ताकि देयको का शीघ्र भुगतान किया जा सके और व्यक्ति का देनदारियों को समय पर चुकता करना एक अच्छी साक्षी बनें। इसका अर्थ 'पृथ्वी पर धन ' इकठ्ठा करना नहीं है। सामान्य तौर पर हमें उधार लेने से बचना चाहिये, कर्जदार कर्ज देने वाले का गुलाम होता है (नीतिवचन 22:7)।

हमें उधार लेने से बचना चाहिये यदि अधिक व्याजदर से व्याज देना पड़े या फिर वापस करने में सक्षम न हो। इस अर्थ में हमें किसी मनुष्य का कर्जदार नहीं होना चाहिये (रोमियो 13:8)। कभी – कभी किराए पर रहने से मकान खरीद लेना अधिक बेहतर शिष्यता है। मकान बंधक रखना वैद्य है क्योंकि ऋण न चुकाने पर मकान उसकी भरपाई करता है। यदि आप चुका नहीं सकते, लेनदार मकान पर कब्जा ले लेगा। मत खदीदे यदि आपने प्रार्थना करके परमेश्वर से आपूर्ति करने की मांग नहीं की है। वह आपको आपके खरीदने से बेहतर दे सकता है। तैश में आकर मत खरीदें। आपको क्या चाहिये, उनकी सूची बना ले, तब उसके अनुसार खरीद दारी करे। विलासिता की वस्तुएं या गैर – जरुरी सामान खरीदने से बचे। एक रोलक्स घड़ी किसी १५ डॉलर की कैसियो से अधिक बेहतर समय नहीं बताती। विलासिता की वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने का आनंद ले ताकि आप सामान्य जीवन जी सके। घरेलू उत्पाद खरीदे, न कि राष्ट्रीय स्तर के बैण्ड उत्पाद, सोचिये कि ब्रैह्णण्ड उत्पादों के राष्ट्रीय विज्ञापनों का खर्च कौन देता है? आप वह धन बचाते है जब स्टोर के नामवाले या स्थानीय उत्पाद खरीदते है।

कम कीमत के धोके से बचने के लिये वजन की जांच करे। गुणवत्ता के अनुसार कीमत की तुलना करे। सस्तें जूतों को खरीदकर बाद में डॉक्टर को पैसा देने से बेहतर है, अच्छे, गुणवत्ता के जूते खरीदे। मंहगे रेस्त्रां में भोजन करने से बचे। सोचिए कि पैसे बचाकर आप पंसारी की दुकान से कितने 'स्टीक्स और रोस्ट' खरीद सकते है। वस्त्र का पूरा उपयोग करे, उन्हे पहिनकर खत्म करे, काम में लाये, बिना उसके काम चलाये यह सूत्र उनके लिये सार्वकालिक है जो अपने धन को प्रभु के लिये अधिक से अधिक उपयोग में लाना चाहते है। अपव्यय न करे। जब यीशु ने ५००० को भोजन कराया था, उसने बची रोटिया और मछलियां इकठ्ठा करने के लिये कहा था।

कभी – कभी पहिले उपयोग में आ चुकी वस्तुएं लेना अधिक बेहतर होता है जैसे कि कार, विशेष कर जब डीलर मसीही हो। अन्यथा आप किसी और की मुसीबत खरीद लेंगे। सस्ते में बेचनेवाली दुकानों के पक्षधर बनकर गर्व न करे। यदि आप सावधानी बरते, बहुत–सी दुकाने हैं जहां सौदेबाजी की जा सकती है दूसरों के लिये गारंटी लिखकर न दे। यहां तक कि रिश्तेदारों के लिये भी नहीं, यदि आप सदा के लिये अपना धन खोना नहीं चाहते। (नीतिवचन 6:1–5, 11:15, 17:18, 20:16, 22:26, 27:13)। बाइबल की भाषा में इसे दूसरे का उत्तरदायी बनना या जमानत लेना कहते है। जब धन दरवाजे से आता है, प्रेम अकसर खिडकी से चला जाता है।

किसी दूसरे मसीही को भी उधार न दो, यदि वापस न मिलने पर आपकी शांति बनी रहती है तो आप दे सकते है। आर्थिक भरपाई के मामलों में अदालत में न जाये। यदि आप अदालत जायेंगे, आप फंस जायेगे। यद्यपि कुछ बीमा कराना आवश्यक है, जैसे कि वाहनों का बीमा, बीमा पर निर्भर मत रहो। प्रभु पर आपके और आपके परिवार की देखभाल के लिये भरोसा करो। अपनी संपत्ति की समय समय पर जांच करे और जिसकी आवश्यकता नहीं उसे बेच दे या दान कर दे। एक स्त्री ने बताया कि उसने विवाह के प्रथम २५ वर्ष वस्तुएं जमा करने में बिताये ओर अगले २५ वर्ष उन वस्तुओं से छुटकारा पाने में बिताये। सामान्य रुप में, शालिनता पूर्वक जीवन जीयें ताकि आप अपने निवेशों का अधिकतम आत्माओं को अनंतजीवन देने में व्यय कर सके।

सादगी की जीवन शैली सर्वोत्तम है

1. वचन में यह सिखाया गया है (2 कुरि. 8:9) पढें – मत्ती 6:19 और 1 तीमु. 6:8'' प्रतिदिन की रोटी, आज हमें दे।''

2. हमारे निर्धन, नासरत के मित्र का प्रतिनिधित्व करने का यह उचित तरीका है।

> सोरेन कायर्केंगार्ड ने एक बार कहा था, ''मैं चर्च गया, मखमल की गद्दीपर बैठा, मैंने घिसे हुये रंगीन कांच की खिडकी से सूर्य को किरणों को भीतर आते देखा। सेवक भी मखमल के वस्त्रों में था, उसने सुनहरी जिल्दवाली बाइबल खोली, सिल्क मार्कर से उसमें चिहं लगे थे, और उसने कहा,'' यदि कोई मेरा चेला बनना चाहे, अपने आपे से इंकार करे, अपना सबकुछ बेचकर कंगालों को दान कर दे और अपना क्रुस उठाकर मेरे पीछे हो ले,'' और मैंने चारों ओर देखा, कोई भी हंस नहीं रहा था।[69]

3. यह हमारे आत्मिक जीवन को गहिरा बनाता है, अधिक से अधिक हम प्रभु पर अपना बोझ डालते है और अधिक गर्मजोशी से प्रार्थनाएं करते है।

4. यह सबसे अधिक खुशहाल, चिन्ताओं से मुक्त जीवन है।

5. संसार की आवश्यकता सादगी की मांग करती है। लाखो – लाखो जिन्हें मसीह के बारे में बताया नहीं गया है, अब भी अनजाने में है। विलियम बर्नस् के विषय में बोलते हुये हडसन टैलर ने कहा –

> सादगी में जीवन जीना उनके लिये बड़े आनंद की बात थी। वे अकेला रहना पसंद करते थे और कम से कम बातों की परवाह में खुश रहतें थे। उनका विचार था कि पृथ्वी पर एक मसीही के लिये सबसे अच्छी दशा तब है जब उसकी कम से कम आवश्कताएं हो। वे अकसर कहा करते थे, ''यदि किसी व्यक्ति के ह्दय में मसीह है, स्वर्ग उसकी आंखों के सामने है, ओर जितनी आवश्यक है उतनी ही श्रणिक (तात्कालिंक) आशिषें है जो जीवन को सुरक्षित आगे बढ़ाने में आवश्यक है, तो दर्द, पीड़ा और दुख के लिये स्थान नहीं है '' उस प्रभु के साथ एक होना जो सूर्य और ढाल दोनों है, एक निर्धन पापी के लिये वह सब है जो उसे पृथ्वी और स्वर्ग के बीच खुश रखने के लिये आवश्यक है।

अध्याय - 38

जीभ को लगाम दो

किसी को यह सूनकर आश्चर्य नहीं होगा कि मसीही बातचीत उस व्यक्ति के चरित्र का संकेतक है। ''जो मन मे भरा है, वही मुंह पर आता है'' (मत्ती 12:34)। किसी व्यक्ति की बातचीत सुनकर आप बता सकते है कि वह आत्मिक है या नहीं। याकूब हमें वह सब स्मरण दिलाते हैं जो अनुभव ने हमें पहिले ही सिखा दिया है – कि यद्यपि जीभ छोटासा अंग है, बहुत बड़ी भलाई और बहुत बड़ी बुराई करने में सक्षम है। यद्यपि मनुष्य न जाने कितनों (जंगली जानवरों) को पालतू बनाये, पर कोई जीभ को वश में नहीं कर सका है। वह ऐसी बला है जो रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी है। ''सृष्टि की अन्य भली वस्तुओं के विपरीत जीभ, परस्पर विपरीत बातें उत्पन्न करती है, जैसे कि मीठे और कड़वे बोल, आशीष देना और शाप देना'' (याकूब 3:1–12)। भले ही हम जीभ को वश में नहीं कर सकते, हम अनंतकाल के लिये आभारी हो सकते है – क्योकि परमेश्वर उसे वश में कर सकते है। पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा वे तीखी जीभ को अनुग्रहकारी और काना फूसी करनेवाली को उन्नतिदायक बना सकते है। यहां कुछ गुण बताये गये है जो हमारी बातचीत मे होने चाहिये:

वह सत्य हो – हमारे प्रभु पारदर्शी रुप में ईमानदार थे। उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला और सत्य को अलग रंग देने का काम नहीं किया। कभी एकबार भी उन्होंने बात बढ़ाचढ़कार नहीं की और न चाटुकारिता की। ''इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग है'' (इफि. 4:26)। क्योंकि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते, वे बढ़ाचढ़ाकर बताना, चाटुकारिता और प्रतिज्ञा का उल्लंघन जैसी बातों की अनुमती नही दे सकते। मसीही सेवकाई के परिणामों को बढ़ाचढ़ाकर नहीं बताना चाहिये। सचिव को नहीं कहना चाहिये कि बॉस ऑफिस मे नहीं है जबकि वह वही है। किसी अनचाहे आगंतुक से बच्चों द्वारा झूठ नहीं कहलवाना चाहिये। यदि एक व्यक्ति ईमानदार है, उसे अच्छी याददाश्त की जरुरत नहीं है कि उसने किस से क्या कहा था। ई–स्टेनली जोन्स ने कहा था – यदि आप झूठ बोलते है तो आपकी याददाश्त तेज होनी चाहिये, ताकि

आप झूठ को छिपा सके, परन्तु यदि आप हर बार सच बोलते है, आपको अच्छी याददाश्त की जरुरत नहीं है, आप केवल सच बोले, और यह सरल है।''

वह यथायोग्य हो – ''कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले''(इफि. 4:29अ)। यहां 'गंदी बात' का अभिप्राय निम्न स्तर की बातों, उपयोग के लिये अनुपयुक्त और अनुचित से है। जब पहिली बार रिकार्डर बनें तो यह मजे लेने का खेल था कि उसे छुपाकर मेज पर होनेवाली बाते रिकार्ड करे। जब टेप चलाये जाते तब बोलनेवाले अपने निरर्थक शब्दों को सुनकर शर्मिन्दा हो जाते थे। यीशु ने चेतावनी दी है – ''जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर उस बात का लेखा देंगे'' (मत्ती 12:36)। इसलिये व्यर्थ की बातचीत को पाप मानकर अंगीकार करना चाहिये और हमारे जीवनों से दूर करना चाहिये।

एडमिरल हायमन रिकोवर जो यू. एस.नेवी में थे, उन्होंने कहा था – ''बड़े मन वाले विचारों पर चर्चा करते है, औसत मन वाले घटनाओं पर, और छोटे मन वाले मनुष्यों पर चर्चा करते हैं।'' वे कह सकते थे कि सबसे बड़े मन वाले अनंतकालीन सत्यों पर चर्चा करते है।

वह उन्न्ति करनेवाली हो – ''.....जो उन्नति के लिये उत्तम हो. '' (इफि. 4:29ब) दूसरे शब्दों में हमारा लगातार प्रयास यह हो कि हम जो कहते हैं उससे दूसरों की उन्नति हो। एच. ए. आयरनसाइड सदैव बातचीत का रुख उन्नति करने वाले विषयों की ओर मोड़ देते थे। वे अकसर पूछा करते थे – आपके अनुसार इस पद का क्या अर्थ है? और फिर एक जटिल पद सुना देते। यदि दूसरा व्यक्ति नहीं जानता, तो आयरनसाइड अनुग्रह सहित समझाते ''क्या आपको लगता है कि इसका अर्थ यह है? उनके स्पष्टीकरण अविस्मरणीय होते थे।

मेरे एक मित्र किसी और के बारे में कुछ नकारात्मक बातें कहने लगे थे और लगता था कि बातचीत एक चटपटी कानाफुसी में बदलती जा रही है। परन्तु उन्होंने बीच में ही बात रोक दी, और वाक्य के बीच में बोले – नहीं। यह बात उन्नति करनेवाली नहीं है।'' मैं उस दिन उत्सुकता वश सुनने के लिये आतुर था परन्तु मैंने उस दिन एक मूल्यवान सबक सीखा कि जीभ को अनुशासन में कैसे रखें।

हमारी बातचीत उचित होः ''कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो ....'' (इफिसियों 4:29क)। हमारे प्रभु ने जगंल में शैतान की परीक्षा के उत्तर में व्यवस्था विवरण के तीन पद कहें जो उस समय के अनुसार सर्वथा उचित थे। सही समय पर सहीं बात कह पाना एक बहुत बड़ा वरदान है। यह उस भक्त प्राचीन के समान है जिसने मृत्यु शैय्या पर पड़े एक पवित्र–जन के कान में कहा–*यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक लगाये हुए जंगल से चली आती है?* श्रेष्ठगीत 8:5। – या फिर वह मसीही स्त्री जिसने। एक निराश प्रचारक को लिखे पत्र के अतं में यशायाह 49:4 लिखा – ''मैं ने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैंने व्यथ ही अपना बल खो दिया है, तौभी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है, और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है ''

जब डॉ. एलेक्जेन्डर व्हायटे एक वकील के कार्यालय गये, वे उसका प्रश्न सुनकर चकरा गये. ''क्या आपके पास एक पुराने पापी के लिये कोई संदेश है?'' उन्होंने वही वृतान्त दोहरा दिया जिस पर

वे मनन कर रहे थे – '' वह करुणा से प्रिति रखता है '' (मीका 7:18)। वकील ने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि केवल ये ही वचन उसे शांति दे सकते थे। ये शब्द उस समय की आवश्यकता के अनुसार थे। इसकारण, ''जैसे चांदी की कटोरियों में सोने के सेब हो, वैसा ही ठीक समय पर कहा गया वचन होता है,''(नीतिवचन 25:11) और, अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है (नीतिवचन 15:23)।

वह अनुग्रह सहित हो – न केवल हमारी बातचीत उचित हो, वह अनुग्रहमय भी हो। ''तुम्हारा वचन सदैव अनुग्रह सहित और सलोना हो (कुल. 4:5अ)। हमारे प्रभु अनुग्रहकारी थे, इतना अधिक कि लोग'' जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थी, उनसे अचंभित हुये'' (लूका 4:22)। क्या यह अनुग्रह नहीं था कि यहूदी होकर उसने तुच्छ गिने जाने वाली सामरी स्त्री से पीने का पानी मांगा (यूहन्ना 4:7)? और यह अनुग्रह नहीं तो क्या था, जब उसने व्याभिचार में पकड़ी गई स्त्री से कहा, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता (यूहन्ना 8:11)? अनुग्रह की मांग है कि हम चुभनेवाले, शब्द न कहे, न निर्दयता से अपमान करनेवाले और कटीले व्यंगात्मक शब्द कहे। लेडी आस्टर ने कहा – सर विंस्टन, यदि मैं आपकी पत्नी होती आपको कॉफी में मिलाकर जहर पिला देती।'' इस पर चर्चिल ने उत्तर दिया, ''लेडी आस्टर, यदि मैं आपका पति होता, तो पी लेता.'' यह मजेदार तो है, पर अनुग्रह सहित नहीं है।

हमारी बातचीत अनुग्रह सहित और सलोनी हो ''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित सलोना हो'' (कुलु. 4:6) उसी प्रभु ने, जिसने कहा, '' मुझे पानी पिला,'' उसी ने कहा, ''जा, अपने पति को बुला ला'' (यूहन्ना 4:16)। यह कहने के बाद, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता.'' उसने, आगे जोडा – ''जा, फिर पाप न करना।'' वचनों में एक धार होती हे, वे मसालेदार होते है। नमक संरक्षक है, वह सड़न को रोकता है, और नमक प्यास उत्पन्न् करता हे, इस कारण, जब हम बात करे, हमें नैतिक एकनिष्ठा का स्तर सुरक्षित रखना चाहिये और उस जीवन के जल के लिये प्यास उत्पन्न करना चाहिये, जो मसीह देता है।

अवश्य है कि विश्वासियों की बातचीत शुद्ध हो ''जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार और किसी प्रकार के अशुद्ध काम या लोभ की चर्चा तक न हो, और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठठ्ठे की, क्योंकि ये बाते शोभा नहीं देती, वरन् धन्यवाद ही सुना जाये'' (इफिसियों 5:3–4)। हम पाप और अनैतिकता के बारे में जितनी अधिक बातें करते हे, और खुलकर बातें करते हे, उनकी गंभीरता हमारे लिये ओर सुननेवाले दोनों के लिये उतनी कम होती जाती है, वे हमसे बहुत अधिक घुलमिल जाते है और हम उनकी भयानकता से डरना बंद कर देते है। यह सत्य है कि बाइबल कभी – कभी जघन्य पापों की चर्चा करती है, पर उसका तरीका सदैव घृणा उत्पन्न करता हे न कि उसे सहने योग्य ओर हल्का करके बताता है, ओर न ही उसे करने का आकर्षण उत्पन्न करता है।

कोई भी साफ – सुथरे हास्य का विरोध नहीं करेगा, परन्तु यह सत्य हे कि अधिक हंसी–मजाक आत्मिक सामर्थ को दूर कर देता है। सभाओं में पवित्रात्मा अकसर हंसानेवाली कहानियों के कारण बुझ जाता है। मनोरंजन की स्तर हीन बातें सुसमाचार की अपील की गंभीरता को नष्ट कर देती है। हमें मंच पर विदूषक (हास्य – कलाकार) बनने की बुलाहट नहीं दी गयी है।

हमारी बातचीत बिना शपथ खाये सम्पन्न हो। ''....कभी शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है .... तुम्हारी बात ' हां' की हां, और 'नही' की नही हो, क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है, वह बुराई से होता है'' (मत्ती 5:34–37)। ''सबसे श्रेष्ठ बात यह है कि शपथ न खाना, न स्वर्ग की, न पृथ्वी की, न किसी वस्तु की, पर तुम्हारी बातचीत हां की हां,और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरों'' (याकूब 5:12)। एक मसीही की बातचीत इतनी पक्की और ईमानदार होनी चाहिये कि से कभी शपथ द्वारा उसे प्रमाणित करने की आवश्यकता ही न हो। जैसा कि किसी ने कहा था – ''शपथ किसी काम की नहीं, एक भले मनुष्य को उसकी आवश्कता नहीं, और बुरा मनुष्य उसकी सुनेगा नहीं।''

ठीक है, पर अदालत में शपथ लेने के बारे में क्या कहा जाये? जब हमारे प्रभु की सुनवाई हो रही थी, महायाजक ने कहा, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ धराकर कहता हूं कि हमें बता, क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' यहां उपयोग में आये शब्द *शपथ* का अर्थ 'शपथ के आधीन आज्ञा देना है'।

एक यहूदी और व्यवस्था के आधीन होने के नाते यीशु को शपथ के आधीन साक्षी देने की आवश्यकता थी (लैव्यव्यवस्था 5:1) और यीशु ने यही किया। बहुत से मसीहियों के लिये यह बात स्थिति को साफ कर देती हे। परन्तु यदि फिर भी शपथ लेने के प्रति उनके विवेक को अपत्ति है, तो यू. एस. में वे बिना शपथ लिये सहमति देकर भी अपनी बात कह सकते है। इसका अर्थ है कि प्रश्नों का उत्तर देते समय और प्रमाण देते समय उन्हें परमेश्वर की शपथ लेने की आवश्यकता नहीं है। हम सब जानते है कि परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेना गलत है और आपत्तिजनक चार अक्षरों के शब्द कहना भी। परन्तु मिलीजुली शपथों और गंदी बातों को दूसरे शब्दों में कहने को क्या समझा जाये? उदाहरण के लिये गॉड के लिये गॉश या गॉली कहना, यीशु (जीजस) के लिये जी या जीस कहना यीशु मसीह के लिये श्रीपर्स क्रीपर्स कहना, डैम के लिये डार्न, नर्क के लिये हेल कहना। ये सभी शब्दों के हेरफर पवित्र शास्त्र का उसी प्रकार उलंघन करते है, जैसे उनके मूलशब्द था अधिक स्वाभाविक नकली शब्द।

हमारी बातचीत सम्मान पूर्वक हो – हमें पवित्र – वस्तुओं के बारे में हल्की (ओछी) या अनादर युक्त बातें नहीं करना चाहिये। हमें बाइबल के पदों से कटाक्ष नहीं करना चाहिये, अर्थात बाइबल की पदों को हास्य के रुप में, संदर्भ के बाहर नहीं लेना चाहिये। अलौकिक बातों को लेकर हमें गंभीर होना चाहिये।

मसीह के सेवको को व्यंगात्मक, चुटीले और नीचा दिखाने वाले कटाक्ष करने से बचना चाहिये। सभी बातचीतों में भाग लेने की लालसा, चटखारेदार बातें करना, या चुटकुले सुनाना, इत्यादि से व्यक्ति को आत्मिक रुप में हल्का समझा जाता है, उसकी प्रतिष्ठा गिरती है।

हमारी बातचीत शिकायतों से मुक्त हो – शिकायतें करना परमेश्वर की कृपा का अनादर करना है। इसका अर्थ है परमेश्वर को पता नहीं कि वे क्या कर रहे है। यह उन पर गलती करने या गलत निर्णय करने का आरोप लाता है। इसका अभिप्राय है कि उसे परवाह नहीं है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि जब शिकायते करने की परीक्षा हम पर आती है – हमारे लिये उस विचार को त्याग देना

और उन शब्दों को निगल जाना ही बेहतर है – हमें यह कहना चाहिये – '' परमेश्वर के मार्ग सिद्ध है '' (भजन 18:30)।

हमारी बातचीत संक्षिप्त और विषय के अनुरुप ही हो। ''जहां बहुत बातें होती है, वहां अपराध भी होता है परन्तु जो अपने मुंह को बंद रखता वह बुद्धि से काम लेता है'' (नीतिवचन 10:19)। दूसरे शब्दों में हम जितना अधिक बातें करेंगे, उतना अधिक पाप हो सकता हे। हम इस खतरे से बचने के लिये हमेशा कुछ न कुछ कहने की अभिलाषा को रोक सकते हे। ''और न अपने मन से कोई बात उतावली में परमेश्वर के सामने निकालना, क्योकि परमेश्वर स्वर्ग में है, और तू पृथ्वी पर है, इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हो,'' (सभोपदेशक 5:2)। जबकि यह बात परमेश्वर के सामने शपथ खाने से संबंधित है, फिर भी सामान्य तौर पर लाभदायक है।

वास्तव में बिना रुके बोलनेवाला बोर करता है। वह कभी सांस लेने रुकता नहीं और किसी को कुछ भी कहने का अवसर नहीं मिलता। वह हर बातचीत में अपना दबदबा बनाता है और बेचारे सुननेवालों के समय और ध्यान का अपव्यय होता है। जीभ को विचारों का अनुसरण करना चाहिये, विचारों का नेतृत्व नहीं, चुप रहने की अपेक्षा बातें करके लोग अधिक पछताते हैं। वह जो बोलता है 'बोता' है, पर जो सुनता है, वह 'काटता' है।

हमें कानाफूसी में संक्षिप्त नहीं होना चाहिये – कुछ वर्ष पूर्व अटलांटा जरनल में यह बात छपी:

> मैं गरजदार होवित्सर तोपों के गोलों से अधिक खतरनाक हूं। मैं बिना मौन के घाट उतारे ही जीत जाती हूं। मैं घरों को तबाह कर देती, हृदयों को तोड़ती और जीवनों को तहस–नहस करती हूं। मैं हवा के पंखो पर उडती हूं। किसी की निर्दोषिता मुझे डराने का बल नहीं रखती, कोई – शुद्धता इतनी शुद्ध नहीं कि मुझे निराश कर दे। मैं सत्य का सम्मान नहीं करती, और न न्याय का आदर करती हूं, और न असहायों पर दया करती हूं। मेरे मारे हुये समुद्र की बालू के किनकों समान अनगिनत है और अकसर वे निर्दोष होते है। मैं कभी भूलती नहीं और न क्षमा करती हूं मेरा नाम 'कानाफूसी' है। (च्वाइस ग्लीनिंग्स)

संभव है इसी पाप के बारे में सोचकर याकूब ने यह लिखा था – ''.... हम सब बहुत बार चूक जाते है, जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य हे, ओर सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है'' (याकूब 3:2)।

कानाफूसी करना अति आसान और स्वाभाविक है, उतना ही इस आदत को छोड़ना कठिन है? कानाफूसी है क्या? डब्लूएम. आर.मार्शल कहते है, यह 'कुछ न कहने' की कला है, जिसके बाद 'कुछ कहने के लिये' कुछ न बचे। बिल गॉथर्ड कहते है – यह उस व्यक्ति के साथ सूचना का आदान–प्रदान है जो समस्या और समाधान दोनो का अंग नहीं है। हम इसकी परिभाषा को विस्तार देकर कह सकते है कि यह उसके बारे में जो वहां उपस्थित नहीं है निदात्मक बाते करना है। कानाफूसी अपने शिकार को नापसंद करनेवाले दृष्टिकोन से देखती है, और वे बातें कहती है जो न दया दर्शाती है, न उन्नतिवर्धक है, और न आवश्यक है। यह किसी व्यक्ति की पीठ पीछे बुराई करना है – और उसे आमने सामने कहने से बचना है। यह एक प्रकार की चरित्र हत्या है।

नीतिवचन के लेखक ने यह बात सही कही है, ''जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनो होते है, और जो उसके काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।'' (नीतिवचन 18:21)। बाइबल इस व्यवहार पर कठोर है.'' कतरा बनकर अपने लोगो में न फिरा करना '' (लैव्यवस्था 19:16 अ)। ''जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है, परन्तु समझदार पुरुष चुपचाप रहता है'' (नीतिवचन 16:28)। ''कानाफूसी करने वाले के वचन स्वादिष्ट भोजन के समान लगते है, वे पेट में पच जाते है (नीतिवचन 18:8)। ''जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार, जहां कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहां झगड़ा मिट जाता है'' (नीति. 26:20)।

रोमियों 1:29 मे पौलुस ने कानाफूसी करनेवाले को हत्यारों और व्यभिचारीयों की सुची मे रखा है। कभी–कभी हम कानाफूंसी का का रंग बदलकर यह दर्शाते है कि हम सूचना दे रहे है कि उस विषय पर प्रार्थना की जाये। ''मैंने इस बात की चर्चा केवल इसलिए की, कि तुम इस बारे में प्रार्थना करो, परन्तु क्या तुम नहीं जानते कि ....'' या फिर हम सोचते हैं कि गुप्त रुप में या केवल भरोसेमंद व्यक्ति से यह बात बताकर ठोकर से बचा रहे है। अकसर उसका यह परिणाम होता है।

दो स्त्रियां ब्रुकलिन में बाते कर रही थी:

टिली ने मुझे बताया कि ''तुमने उसे वह बात बताई जो मैंने तुम्हें बताने से मना की थी कि उसे नहीं बताना।''

''वह कितनी बुरी है, मैंने टिली से कहा था कि जो मैं बता रही हूं वह किसी को नहीं बताना'',

''अच्छा ठीक है, मैंने टिली से कहा है कि मैं तुम्हें नहीं बताऊगी कि उसने मुझे बताया है – इसलिये तुम उससे मत कहना कि मैंने तुम्हे बता दिया है।''

अपनी पुस्तक 'सीजन्स ऑफ लाइफ' में चार्ल्स स्विन्डल ने अफवाहें फलानेवालों अर्थात् कानाफूसी करने वालों के विषय में लिखा है – देखिये, वे क्या लिखते है –

> वे जो अफवाहों पर पलते है वे 'छोटे' शंकालु लोग होते है – वे कम रोशनी वाली संकरी गलियों में बेचने– खरीदने से सतुंष्ट होते है, वे धूर्तता के बम छोड़ते हैं जो दूसरों के मनों में फूटते है, और तरह–तरह के संदेह (सुझाव) उत्पन्न करते है। वे एक अनिश्चित खबर को फैलाने वाले 'निर्दोष' माध्यम बनकर सहजता का अनुभव करते हैं – वे कभी खबरों के स्त्रोत् नहीं बनते। अफवाहें फैलाने वालों के लिये बहुप्रचलित 'वे कहते है' या 'क्या तुमने सुना?'' या, ''मैं उनकी बात से समझा कि' इत्यादि वाक्यांश सुरक्षा पहुंचाते है।
>
> ''क्या आपने सुना कि वह हिस्ट्रीकल कॉनक्रीट मे भी रियल चर्च विभाजन की कगार पर है?''
>
> मैं समझता हूं कि फर्डिनैण्ड और फ्लो का तलाक होनेवाला है ..... लोग कहते है कि वह विश्वास योग्य नही थी।''
>
> ''क्या आपको पता चला कि पास्टर एलफिन्स टॉन्स की से उनके पहिले चर्च को छोड़ने कहा गया था?
>
> मुझे किसी ने बताया कि उनका बेटा नशे का आदी है। वह दुकान से समान चुराते पकड़ा गया था।''
>
> ''किसी ने कहा कि उन्हें विवाह करना पड़ेगा।''

कोई कह रहा था कि वह बहुत अधिक शराब पीता है।''

''मुझे पता चला है कि वह चरित्रहीन है .... उस पर नजर रखो,

खबर फैली है .... कि उसने प्रथम आने के लिये धोकाधड़ी की है।''

''बहुत से लोगो का विचार है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।''[71]

हम जानते है कि 'कानाफूसी' और अफवाहे 'जब फैलती है, वे कैसे बढ़ती जाती है। हर व्यक्ति उसमें कुछ न कुछ नकारात्मक जोड़ता जाता है, और सबसे अंतिम कहानी का स्वरुप आरंभिक कहानी से बिल्कुल ही भिन्न होता है। किसी की आपत्ति हो सकती है कि पौलुस ने हुमिनयुस और सिकंदर (1 तीमु. 1:19, 20) और फूगिलुस और हिरमुगिनेस (2 तीमु. 1:15), और सिकंदर ठठेरे के बारे में आलोचनात्मक बाते लिखी है। और यूहन्ना ने दियुनिफस को नहीं छोड़ा (3 यूहन्ना 9:10)। यह साक्षी सच्ची है। परन्तु उद्देश्य उनकी निंदा करना नहीं किंतु अन्य विश्वासियों को सावधान करना था। अकसर अगुवों के लिये यह चर्चा करना आवश्यक होता है कि किस व्यक्ति को सुधार या अनुशासन की आवश्यकता है। परन्तु यह अन्य सभी की सहायता के लिये नहीं है। हम कानाफूसी के संदर्भ में कुछ सकारात्मक कदम उठा सकते है –

प्रथम, हम उस व्यक्ति से पूछ सकते हैं कि वह स्त्रोत् बताये। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 1:11 में हमारे लिये एक उदाहरण रखा है – ''हे मेरे भाइयों, खलोए के घराने के लोगो ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया कि तुम में झगडे हो रहे है।''

दूसरी बात, हम उस बतानेवाले की अनुमति ले सकते है, और कह सकते है – ''आप जिसके बारे में कह रहे थे मैं उसे बताना चाहता हूं कि आपने मुझे क्या बताया, आप बुरा तो नहीं मानेंगे?''

''ओ! ईश्वर के लिये ऐसा मत करना, हमारी भिन्नता समाप्त हो जायेगी।''

या फिर हम उस बात को सुनने से मना कर सकते है। हम विनम्रतापूर्वक कह सकते हैं कि बेहतर होगा हम न सुने। या हम बातचीत को उन्नतिवर्धक माध्यमों में ले जा सकते है। यदि कोई भी कानाफूसी की बातें न सुने, तो बोलनेवालों को बोलना बंद करना होगा, श्रोताओं को बहिरा बना दो तो कानाफूसी करनेवाला गूंगा बन जायेगा। (डबल्यू–एम. आर. मार्शल)। एक तुर्की कहावत है – ''जो आपसे कानाफूसी करता है, वह आपके बारे में भी कानाफूसी करेगा।''

समापन करते हुये मै आपको अर्थपूर्ण सार बताना चाहता हूं। मैं नहीं जानता, यह किसने लिखा, पर मैं सोचता हूं, कि काश यह मैंने लिखा होता –

> एक मसीही व्यक्ति को अपनी जीभ के साथ क्या करना चाहिये? उसे उस पर नियंत्रण करना चाहिये, कभी बातों में किसी पर हावी होने की चेष्ठा न करे। उसे जीभ को अनुशासित करना चाहिये कि जितना कह सकती है, उससे कम कहे। उसे कभी झूठ बोलने के लिये उपयोग न करे, न अर्धसत्य कहे, न बुराई, न नीचा दिखानेवाली, न व्यंगात्मक, न गंदी बातें और न व्यर्थ बातों में उपयोग करे। उसे सदैव जीभ का उपयोग परिस्थितियो के अनुसार साक्षी देने, अंगीकार करने, या प्रोत्साहन के शब्द बोलने के लिये करना चाहिये। यदि वक्ता उन अजीब लोगों में से है जो 'धन्यवाद' कहने में कठिनाई अनुभव करते है तो उसे जीभ को यह कहने में प्रशिक्षित करना चाहिये, और मन के भीतर जो विनाशकारी अहंकार है, उसका सामना करना चाहिये।

अध्याय - 39

विवाह

नीचे दी गई सामग्री में से कुछ पिछले अध्यायों में उपयोग की जा चुकी है, किन्तु ये दोहराने के योग्य है। हम जोर देने के लिये उन्हें दोहरायेंगे।

परमेश्वर ने अदन की वाटिका में, पाप के इस संसार में प्रवेश करने से पहिले विवाह की स्थापना की (उत्पत्ति 2:21–24)। इसी कारण इब्रानियों का लेखक स्मरण दिलाता है – विवाह सब में आदर की बात समझी जाये (इब्रानियों 13:4 अ)। विवाह को तुच्छ ठहराने वाले चुटकुले या मजाक करना उचित नहीं है। यह एक सम्माननीय और विशुद्ध सम्बन्ध है। विवाह में दो व्यक्ति, पुरुष एवं स्त्री, एक हो जाते हैं (उत्पत्ति 2:24, मत्ती 19:5, इफिसियों 5:31ब, 33। परमेश्वर चाहते है यह गठबंधन जीवनभर चले (मत्ती 19:6ब; 1 कुरि. 7:39)। दम्पत्ति एक दूसरे के बिना अधूरें और अकेले है। परमेश्वर ने विवाह के संबंधो को एक ही व्यक्ति से ठहराया है, अर्थात एक ही व्यक्ति के साथ समागम (1 कुरि. 7:2)। यह दो व्यक्तियों से विवाह और बहुविवाह का निषेध करता है। परमेश्वर ने जब भी ऐसे विवाहों का उल्लेख किया है जिनमे एक से अधिक से विवाह है कभी उन्हें मान्यता नहीं दी है।

विवाह के पांच उद्देश्य है – यह एक साथी (सहायक) की कमी को पूरा करता है। ''आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं'' (उत्पत्ति 2:18)। यह सन्तानोंत्पत्ति का साधन है, ''फूलो–फलों, और पृथ्वी में भर जाओ'' (उत्पति 1:28)। यह नैतिक शुद्धता (पवित्रता) मे बढ़ाने के लिये है – ''परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो'' (1 कुरिन्थियों 7:2)। इसका अभिप्राय सहायता देना है – ''मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाये'' (उत्पत्ति 2:18)। परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता में बने रहने पर यह आनंद और सुख का स्त्रोत है (नीतिवचन 5:18–19)।

विवाह के संबंधो में पुरुष की भूमिका प्रधान की है (इफि. 5:23)। प्रधानता का यह क्रम सृष्टि के क्रम (1 तीमु. 2:13), सृष्टि का तरीका (1 कुरि. 7:8), और सृष्टि के उद्देश्य (इफि. 5:22) से आरंभ

हुआ है। स्त्री को पुरुष की आधीनता में रहना है। हव्वा ने प्रधानता का क्रम तोड़ा (उत्पत्ति 3:1–6), और पाप के भयानक परिणाम पृथ्वीपर आये। परन्तु पाप की जिम्मेदारी आदम के सिर आयी, क्योंकि वह मानव–नस्ल का शिरोमणि (प्रधान) था। ''इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया ....'' (रोमियों 5:12)।

पत्नी का पति की आधीनता में रहना उचित है क्योंकि यह प्रभु ने कहा है (कुलु.3:18), और उसे यह भाता है। भले ही स्त्री पुरुष से अधिक योग्य और आत्मिक हो, उसे पति को प्रोत्साहित करना चाहिये कि वह प्रधान बने, न कि वह स्वयं प्रधानता का पद ले। पति को पत्नी से प्रेम करना चाहिये जैसा प्रेम मसीह ने कलीसिया से किया (इफि. 5:24)। उसे चाहिये कि वह उसे आदर दे। इससे भी बढ़कर वह उसे वैसा प्यार करे जैसा वह अपने आप से करता है (इफि. 5:28, 33 अ)। किसी ने कहा है– ''कोई स्त्री ऐसे पति की आधीनता से इन्कार नहीं करेगी, जो उससे वैसा प्रेम करता है जैसा मसीह ने कलीसिया से किया है।''

पति या पत्नी चुनने में सबसे पहिली प्राथमिकता यह होनी चाहिये कि वह 'प्रभु में 'हो, अर्थात् विश्वासी हो (1 कुरि. 7:39, 2 कुरि. 6:14)। परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। उन दोनों में बाइबल के विश्वासों के प्रति एकरुपता होनी चाहिये। उनके जीवन के लक्ष्य एक समान होने चाहिये। ''यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हो, तो क्या वे एक संग चल सकेगे?'' (आमोस 3:3)। मानव– नस्ल के लिए विवाह परमेश्वर का सामान्य नियम है। एक अपवाद मत्ती 19:12 में है– जहां कुछ लोग परमेश्वर के राज्य के लिये नपुंसक है। ये वे है जो परमेश्वर के कार्य के लिये बिना रुकावट आगे बढ़ाने के लिये विवाह नहीं करते। परमेश्वर के लिये धुन रखनेवाला एक युवाचेला शपथ ले सकता है कि वह कभी विवाह नहीं करेगा। वह चाहता है कि बिना ध्यान भंग किये वह स्वयं को प्रभु की सेवा में दे। उसका ध्येय अच्छा है पर शपथ न खाना अधिक बेहतर है। वह कैसे जानता है? एक बार में एक दिन जीना सबसे उत्तम है, और उसमें भी प्रभु ही अगुवाई करे। संभव है कि प्रभु की इच्छा हो कि वह भविष्य में कभी विवाह करे।

प्रेरित पौलुस ने तो यहां तक कहा है, ''जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हो, मानों उनके पत्नी नहीं'' (1 कुरि. 7:29)। इसका अर्थ यह है कि मसीह हमारी प्राथमिकता हो। पत्नियों को दूसरा स्थान लेना चाहिये। क्या इसका अर्थ यह है कि पत्नियां उपेक्षित है? नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह है कि यदि किसी का पति, मसीह को प्रथम स्थान देता है, तो वह सही पति है। जब कोई पुरुष विवाह करता है, उसे अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहना चाहिये (इफिसियों 5:31)। इसका अर्थ है – कि पत्नी को पति के माता–पिता से उपर स्थान मिलता है। परन्तु किसी को उनके (पति और पत्नी के) जीवन में प्रथम स्थान मिलना चाहिये। वह व्यक्ति प्रभु यीशु है। पति और पत्नी को प्रभु के बाद का अर्थात् दुसरा स्थान मिलना चाहिये।

बहुत से विवाह बचाये जा सकते है यदि 1 कुरि. 7:4–7 में दिये गये निर्देश माने जाये। इन में कहा गया है कि जब भी पति–पत्नी में से कोई एक चाहे, सहवास का कार्य किया जाये। पति को पत्नी की देह पर वैध अधिकार है और पत्नी को भी अपने पति की देह पर यह अधिकार है। यह

सामान्य नियम है। अपवाद तब है, जब उनमें से कोई –प्रार्थना और उपवास के लिये स्वयं को अलग रखना चाहता है। अवश्य ही पति या पत्नी, अपने साथी की शारीरिक और भावनात्मक भिन्नताओं के प्रति संवेदन शील होना चाहेंगे। उनमें से किसी को भी अपनी देह को हथियार के रुप में उपयोग नहीं करना चाहिये। एक पति को कभी भी पत्नी से कठोरता नहीं करनी चाहियें (कुलु. 3:19)। परन्तु उसके साथ बुद्धिमानी से जीवन निर्वाह करना चाहिये, और उसे जीवन के वरदान का वारिस जानकर उसका आदर करना चाहिये (1 पतरस 3:7)। ऐसा करने पर जब वे साथ –साथ प्रार्थना करेंगे, स्वतंत्रता की गारंटी होगी।

खुशहाल विवाह के लिये एक प्रमुख आवश्यकता 'टूटापन' है। जब उनमें से कोई दूसरे के साथ गलत करे, उसे क्षमा मांगनी चाहिये ऐसा करना तकलीफ देह है – परन्तु अतंहीन लंबे समय तक उदासीन व्यवहार को सहन करने से यह बेहतर है। आपके अहं के लिये यह कठिन होगा, पर सूर्यास्त होने से पूर्व गलती का अंगीकार कर ले। कुछ प्रश्न ऐसे है कि उनके लिये किसी निर्णय पर पहुंचने से पहिले दोनों को प्रभु के समक्ष प्रार्थना में प्रतीक्षा करनी चाहिये। क्या उन्हें संतानो के जन्म को रोकने का प्रयास करना चाहिये? उनका परिवार कितना बड़ा हो? ऐसे प्रश्नों का कोई सही उत्तर नहीं है। सभी दंपत्तियों को अपने परिवार के लिये प्रभु से यह मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिये। अन्य मसीहियों को चाहिये कि वे उन्हें परामर्श देने से बचे, उन्हें दोष न दे और न अपने रुढिवादी विचारों को सही मानते हुये बलपूर्वक दूसरों पर थोपे।

विवाह के लिये आदर्श है – 'जब तक मृत्यु हमें अलग न करे।' किंतु फिर भी तलाक का प्रावधान है, यदि एक साथी विश्वासयोग्य नही रहता (मत्ती 19:9)। तलाक की आज्ञा नहीं पर अनुमति दी गई है। उस दशा में जिसकी गलती नहीं है वह पुनः विवाह करने के लिये स्वतंत्र (हकदार) है। जब हम मलाकी 2:16 पढ़ते है कि परमेश्वर तलाक से घृणा करते है, तब उसका अभिप्राय पवित्रशास्त्र के विरुद्ध तलाक से है, क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएल को तलाक दिया था (यिर्मयाह 3:8), और उस का वही कारण था – अविश्वास–योग्यता। जब मिशनरी कार्ल नॉट से विवाह के १० प्रमुख बिंदुओ के बारे में पूछा गया, उन्होंने कहाः

अपनी प्राथमिकताएं तय करो। परमेश्वर को सबमें प्रथम स्थान दो। आरंभ ही से विवाह को प्रभु को समर्पित करे और अपने घर पर परमेश्वर की प्रभु सत्ता को मानों।

बिना दिशासूचक यात्रा न करे। प्रतिदिन पवित्रशास्त्र पढ़े, उन पर विचार करे उन पर चर्चा करे और उनका पालन करे (व्यवस्थाविवरण 6:6–9; याकूब 1:22)।

पतियों, तुम पुरुष हो, आत्मिक बनो, शारीरिक (सांसारिक) नहीं। परिवार की मसीही तरीके से अगुवाई करने की पूरी जिम्मेवारी ले (उत्पत्ति 3:16; 18:19 कुलु. 3:18)। अपनी पत्नी और बच्चों के लिये एक उदाहरण बने।

पत्नी, आप स्त्री है, आपका परमेश्वर–प्रदत्त भविष्य और सेवकाई का स्थान परिवार है (तीतुस 2:3–5)। अपने पति की ओर झुकाव रखें और उसे सहयोग करे। अपने घर में और घर के द्वारा प्रभु की सेवा करे (नीतिवचन 31)।

जहां तक संभव हो दूसरों के सामने पति या पत्नी से असहमत न हो, और दूसरों के सामने कभी पति या पत्नी की आलोचना न करे और न आलोचना सुनें। जो भी सुधार आवश्यक हो, उस पर अकेले में, धर्मसंगत तरीके से चर्चा करे।

भला हो कि प्रभु आपके परिवार के आर्थिक मसलों पर नियंत्रण करे, पृथ्वी पर धन इकठ्ठा न करे (मत्ती 6:19) और जो आपके पास है, उसे लेकर उदार बने। प्रभु उदारता से देनेवाला प्रभु है।

सबके लिये घर के दरवाजे खुले रखने की नीति अपनाएं – अर्थात् अतिथि –सत्कार करे। दूसरों की परवाह करे और अपने घर के उपयोग के द्वारा उसे साबित करे। आपके पास क्या नहीं है, उसकी चिन्ता न करे (2 कुरि. 8:12)।

स्थानीय कलीसिया के साथ सहयोग करके काम करे मसीह के लिए और सुसमाचार के लिए बाहर जाकर दूसरों की सेवा करे (मरकुस 1:28–34; लूका 18:28–30; प्रेरितों के काम 18:24–26)।

प्रार्थना करनेवाला परिवार बने। जाते समय प्रार्थना करे और जैसी प्रार्थना करे उसके अनुसार जाये। निर्णय लेने से पहिले प्रार्थना करे, जब समस्याएं आएं, प्रार्थना करे, जब सबकुछ ठीक चल रहा है तब भी प्रार्थना करे।

अपने वैवाहिक संबंधों को दृढ करे। विवाह एक संबंध है, मित्रता है और भागीदारी है। कुछ लोग अपनी पत्नी से अधिक अपने व्यापार (काम) में लगे रहते है। समय बीतने के साथ–साथ अति निकट मित्र बने। एक साथ अकेले में समय का आनंद ले। बाहर खाने जाये, चहलकदमी करे, दूर कहीं जाकर एक दिन बितायें और अपने –अपने ह्दय की बातें एक दूसरे से करे।

उन मसीहियों के बीच अकसर समस्या आती है जो किसी न किसी कारणवश, वास्तविक अभिलाषा के बावजूद विवाह नहीं कर पाते है। उनके लिये उच्चआदर्शो का अनुकरण करते हुये जीवन जीने का विकल्प है, अर्थात् वे अपनी आदिम इच्छाओं की दिशा बदलकर प्रभु यीशु और उसके लोगों की सेवा करे। एमी कारमाइकेल, जॉन नेलसन डर्बी, ग्लेडी अयलवार्ड, कॉरी टेनबून और फन्नी क्रांसबी जैसे लोग अकेले और अविवाहित जीवन के बावजूद फलदायी होने के उदाहरण है। किसी को भी ऐसा अनुभव नहीं करना चाहिये कि वह परमेश्वर के कार्य क्रम में छूट गया है। मसीह के लिये जीवन को उण्डेलकर, कोई भी विश्वासी सच्ची भरपूरी के जीवन का अनुभव कर सकता है।

अध्याय - 40

माता–पिता के उत्तरदायित्व पूरे करना

इस अध्याय के लिये हमारा सुनहरा पद, निर्गमन 2:9 है – ''इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलायाकर और मैं तुझे मजदूरी दूंगी।'' विश्वास करनेवाले माता–पिता के लिये ये प्रमुख वचन उनके लिये है। हमें अधिकृत किया गया है कि हम मसीह के लिये अपने बच्चों की परवरिश करे, संसार के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये, नरक के लिये नहीं पर स्वर्ग के लिये। इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, अपने घर में परमेश्वर के वचन को छाया के समान सब बातों पर प्रमुखता देना।

> और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहे, और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिहं के रुप मं बांधना, और ये तेरी आंखो के बीच टीके का काम दे। और इन्हें अपने – अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना (व्यवस्थाविवरण 6:6–9)।

बाइबल में एक सृदृढ़ आधारशिक्षा रखने से बेहतर मीरास माता–पिता अपने बच्चों को नहीं दे सकते। बच्चों की शिक्षा में प्रार्थना का अति प्रबल और प्रमुख स्थान होना चाहिये। जितनी पुस्तके वह पढ़ता है उनसे अधिक बढ़कर वह जीवन के उदाहरण से सीखेगा। जीवन की सबसे बेशकीमती स्मृतियां मां की होती है, जो घुटनों पर अपने बच्चों के लिये प्रार्थना करती है।

माता–पिता के उत्तरदायित्व का एक बड़ा भाग 'शिक्षा देना' है। प्रत्येक बालक–बालिका को अपनी मां और पिता का आदर करना, अधिकारियों का आज्ञापालन करना, अच्छे मित्रों का चुनाव करना, पापमय अभिलाषाओं का प्रतिरोध करना, यत्नपूर्वक कार्य करना, और सामान्य शिष्टाचार की बाते सीखनी चाहिये। माता–पिता का आज्ञापालन अनिवार्य है। यह समझ लीजिये कि आपको एक आदेश, एक बार ही देना है। दूसरी बार दोहराने का अर्थ उसे निर्बल बनाना है। पीठ पीछे की बुराई और व्यंगात्मक भाषा को प्रश्चय न दे। अधिकारियो के प्रति आज्ञापालन में स्कूल, रोजगार, सरकार

और कलीसिया के अधिकारी भी आते है। सभी व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समाजो में प्रधानता होनी चाहिये और उसके प्रति आधीनता भी (जब यह आधीनता मसीह के प्रति स्वामिभक्ति का उलंघन न करे) बिना इसके वहां अराजकता होगी। बच्चों को आरंभ में ही यह सीख लेना चाहिये।

पिताओं को सावधान रहना चाहिये कि बच्चे को रिस न दिलाये (इफि. 6:4) यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है। एक पिता उपेक्षा करके, अनावश्यक मांग करके, नकारात्मक बातें करके, और अपने उच्चज्ञान का उपयोग करके बच्चे को हीनभावना का अनुभव कराने के द्वारा, उन्हें रिस दिला सकता है। मां का लाड़–प्यार बच्चे को बिगाड़ सकता है। कौनसी बात अधिक बुरी है? बच्चों को अच्छे मित्रों का चुनाव करना सीखना चाहिये। बहुत बार मातापिता आंसुओं के साथ अंगीकार करते है कि ''वह गलत लोगों की संगति में फस गया/गयी है।''

माता पिता बच्चों से पापमय परीक्षाओं के बारे में बातचीत करने के लिये जिम्मेवार है, विशेषकर यौन के क्षेत्र में, अन्यथा वे ये बाते गंदी जगहों में जाकर सीखेगे। आज के युवा यौन, अश्लील चलचित्र और यौन साहित्य और वासना से भरे संसार में रह रहे है। उन्हें टेलीविजन के रिमोट कंट्रोल के उपयोग में सिद्धहस्त होना चाहिये। वे संसार के प्रलोभनों और शरीर की बुराई से भरी भूख– प्यास के लिये 'नहीं' कहना सीखे।

घर के कामों में बच्चों को प्रशिक्षित करना दया का काम है। उन्हें उन क्षेत्रों में विशेष प्रोत्साहन दिया जा सकता है जिनमें उनकी स्वाभाविक रुचि है। वे माता–पिता जो बच्चों के लिये सबकुछ करते है वे उन्हें बदलने का अवसर नहीं देते। माता–पिता तय करते हे कि उन के बच्चें शालीन बने या नही। लड़के और लड़कियां जो दूसरों के बारे में सोचते है, दूसरों के साथ आदान–प्रदान करते है और दूसरों को स्वयं से अधिक महत्व (स्थान) देकर अच्छे गुणों को प्रगट करते है वे शिष्ट है। ये बातें उन्हें जीवन भर काम आयेगी।

भोजन के समापन पर एक युवा के मुंह से यह सुनना कि, ''मम्मी, खाना स्वादिष्ट था।'' मन को प्रसन्न कर देता है। परन्तु कृतज्ञता के भाव जन्म से नहीं आते, उन्हें सीखना–सिखाना पड़ता है।

लोग ऐसे बच्चों का साथ पसंद करते है जिनमें यह गुण हो, जिन्होंने ये सबक सीख लिये है। वे उपद्रवी बच्चों की सराहना नहीं करते अर्थात् वे जो नियत्रंण से बाहर है। अंततः सभी बच्चों को सुधार की आवश्यकता है, क्या बाइबल में नहीं लिखा, ''लड़के के मन में मूढ़ता की गांठ बंधी होती है, परन्तु अनुशासन की छड़ी के द्वारा वह खोलकर उससे दूर की जाती है (नीतिवचन 22:15)। अनुशासन या ताड़ना का कारण उन्हें बताना चाहिये। क्रोध में ताड़ना न करे। यह अवज्ञा के अनुसार हो। जब ताड़ना समाप्त हो, माता–पिता को फिर अपने प्रेम का निश्चय दिलाना चाहिये। इससे यह पता चलता है कि माता–पिता बच्चे का नहीं पर उसके आचरण का तिरस्कार कर रहे है। ताड़ना का उद्देश्य आज्ञापालन करना सिखाना है। बच्चें की ताड़ना करना प्रेम हैं जबकि ताड़ना न करना, उसके प्रति घृणा है (नीतिवचन 13:24)।

माता–पिता को अनुशासन में एकजुट होना चाहिये। बच्चे मां या पिता की कमजोरी को पहिचानने में माहिर होते है, और वे उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध उपयोग भी करते है। बच्चों को प्रोत्साहित करना

चाहिये कि वे कभी भी उनके पास आ सकते हैं और उन्हें यह भरोसा हो कि माता–पिता उन्हें अवश्य सुनेंगे। उन्हें पता चलना चाहिये कि आपको वास्तव में उनसे प्रेम है। उन्हें गले लगाना पवित्रशास्त्र के विरुद्ध नहीं है। बहुधा युवाओं के मुंह से सुना जाता है – ''मेरे पिता ने कभी मुझसे नहीं कहा कि वे मुझसे प्रेम करते है।'' इसके पहिले कि बहुत देर हो जाये, उन्हें यह बात बताये। बच्चों को टीम के खेलों में प्रोत्साहित करना अच्छी बात है, वहां वे मिलकर काम करना और अच्छी खेल भावना सीखते है। यदि एक नवयुवक या किशोर, संगीत के वाद्ययंत्र सीखता है, तो वह मन और मांसपेशी का बेहतर समन्वय और अच्छे संगीत के प्रति रुचि रखना भी सीखता है।

माता–पिता को अपने पुत्र या पुत्री पर मसीह को ग्रहण करने के लिये दबाव देने से बचना चाहिये। उसमें उनके द्वारा एक गलत अंगीकार किये जाने का खतरा है। बेहतर है, उनके लिये प्रार्थना करे कि वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे। आरंभिक वर्षो में, बच्ची को मसीह के लिये और सत्य के लिये खड़े होने की सोचे में ढ़ाला जा सकता है। वे बहुमूल्य और भली बातों को बुरी से अलग करना सीख सकते है (यिर्मयाह 15:19)। उनमें दृढ विश्वास आ सकता है और वे विरोध और उपहास की स्थिति में उन विश्वासों पर दृढ़ता से बने रह सकते है। मसीही शहीदों की कहानियां उत्कृष्ट होती है।

माता–पिता को जानकर अपने घर में अच्छे मसीही साहित्य को रखना चाहिये। हडसन टेयलर की मां ने बैठक कक्ष की टेबिल पर एक सुसमाचार पर्चा रख छोड़ा और फिर घूमने चली गयी। हडसन ने उस पर्चे को पढ़ा और मसीह पर विश्वास किया। परमेश्वर ने सुसमाचार के लिये उसे इनलैण्ड चाइना में संपर्क हेतु भेजा। हमने केवल सतह खोदी है, इस विषय पर बड़े–बड़े ग्रंथ लिखे जा सकते है। परन्तु उपर दिये गये सुझाव आपके लिये पर्याप्त होगे, यदि आप उनपर अपने मसीही परिवार में सफलता पूर्वक अमल कर सके।

अध्याय - 41

हमारा नहीं परन्तु परमेश्वर का तरीका

रोमियों 12:1–2 में प्रेरित पौलुस हमें स्मरण दिलाते है कि हमें न केवल अपने शरीरो को जीवित बलिदान के रुप में परमेश्वर को चढ़ाना है परन्तु ''बुद्धि के नये हो जाने से हमारा चालचलत भी बदलता जाये।'' इसका अर्थ है कि हम दुनिया के सोच विचार के तरीके छोड़कर हमारे प्रभु की सोच के अनुसार सोचना सीखे। बाइबल हमें बतलाती है कि परमेश्वर कैसा सोचते है। स्वयं प्रभु ने यह स्पष्ट किया है कि जैसे आकाश पृथ्वी पर ऊंचा है वैसे ही उसके विचार मनुष्यों के विचार से ऊंचे है (यशायाह 55:8–9)। यहां जो अतंर है, वह अत्याधिक बड़ा है।

उदाहरण के लिये सुसमाचार को ले, सामान्य रुप में मनुष्य सोचते है कि वे भले चरित्र और भले कामों के कारण स्वर्ग जाते है। आपको इस योग्य बनना होगा या यह हक पाना होगा। परमेश्वर कहते है – यह सच नहीं है – वास्तव में, वे ही लोग स्वर्ग जाते हैं जो स्वर्ग के हकदार नहीं होते, बल्की जो प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानकर ग्रहण करते है। यह काम करने का नहीं, पर विश्वास करने का मसला है। सुसमाचार मनुष्यों के लिये मूर्खता है। यह अत्याधिक सरल है, विश्वास करके उपहार के रुप में ग्रहण करना गले से नहीं उतरता। परन्तु परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों की बुद्धि से अधिक बढ़कर है। परमेश्वर के तरीके से कोई भी उद्धार पा सकता है, पर मनुष्यों के तरीके से किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता।

कुछ और बातें भी है, जिनके संबंध में हमें अपने विचार बदलने होंगे। परमेश्वर बाहरी रुप रंग से निर्णय नहीं लेता। उसे पता है कि हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती। मनुष्य बाहरी रुप रंग देखता है, पर प्रभु हमारे ह्दय को देखता है (1 शमूएल 16:7)।

वह शारीरिक सुदंरता से मुग्ध नहीं होता। ''शोभा तो झूठी और सुंदरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जायेगी'' (नीतिवचन 31:30), न ही परमेश्वर खेलकूद की प्रतिभा से अभिभूत नहीं होता। ''और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है'' (भजनसंहिता 147:10)। यहोवा

उन पर अनुग्रह करता है जो उसका भय मानते है, अर्थात् उनसे जो उसकी करुणा पर आशा लगाये रहते है'' (भजन संहिता 147:11)।

स्वाभाविक मनुष्य धनी और प्रसिद्ध लोगों की संगति पसंद करता है और बड़े और शक्तिशाली लोगों के नाम लेता है। हमारे प्रभु इसके कितने विपरीत है, वे उच्च शिक्षितों, सामर्थशाली और उच्चवर्ग से बहुतों को बुलाहट नही देते। बल्कि वे मूर्ख, निर्बल और तुच्छों को वरन् जो हैं भी नही, उनका उपयोग करते और बड़े –बड़े काम करते है (1 कुरि. 1:26–27)।

नेतृत्व के विषय में प्रभु की अवधारणा भिन्न है। मनुष्य नेतृत्व को प्रभुत्व के तुल्य मानता है, परन्तु ईश्वरीय विचारधारा से वास्तविक अगुवा एक सेवक है। परमेश्वर के राज्य में महान् (बड़ा) वही है जो सेवा करने के लिये नीचे झुकता है (मत्ती 20:25–27)।

वह भौतिक संपत्ति से प्रभावित नहीं होता (लूका 18:24–27)। लोग दूसरों का मूल्य उनके धन से आंकते हैं। उनका मूल्य कितना है? आत्मिक धन वास्तविक है। धन जमा रखना व्यक्ति को स्वर्ग से बाहर रख सकता है।

परमेश्वर संख्या या गिनती की अधिकता का पक्षधर नहीं है (न्यायियों 7:2)। वाल्टेयर ने जो कहा, उसके विपरीत, परमेश्वर बड़ी–बड़ी सेनाओं के साथ नहीं चलता। गिदोन के पास बहुत अधिक सैनिक थे। परमेश्वर ने उसकी सेना 32000 से घटाकर 300 कर दी, और वह युद्ध में जीत गया। थोड़ा भी बहुत है, यदि परमेश्वर उसमे है।

युद्ध बलवान का नहीं होता, और न दौड तेज– धावक की होती है। एरिक लिडेल ने 1924 ओलम्पिक में नया विश्व–रिकार्ड बनाया, जबकि उसके दौड़ने का तरीका सबको पसंद नहीं था। उसने प्रभु को आदर देते हुये प्रभु के दिन – रविवार को दौड़ने से इन्कार कर दिया, और बदले में परमेश्वर ने उसका मान रखा। हमारे प्रभु को कंगालों से विशेष प्रेम है (याकूब 2:3)। जब हम सोचते हैं कि वह क्या–क्या करता था, तब हम भी उन्हें चुन सकते है। वे मनुष्यों के लालच पर नहीं पर आवश्यकता पर ध्यान देते हैं। यह बात दाख की बारी में काम करनेवालों के दृष्टान्त (मत्ती 20:1–16) में दर्शायी गयी है। गृह स्वामी ने पहले आनेवाली सभी को वही मजदूरी दी थी जो उन सबने मांगी थी। उन्हें न्याय मिला। कितुं बाकी ने गृहस्वामी पर भरोसा किया कि वह उन्हें सही मजदूरी देगा। उन्हें अनुग्रह मिला। गृहस्वामी को पता था कि उन्हें उनके परिवार के भरण– पोषण के लिये धन चाहिये और इसलिये उसे जो ठीक लगा, उसने उन्हें दिया। पहिले आनेवालों ने शिकायत की क्योंकि उन्होंने आवश्यकता पर नहीं बल्कि लालच के अनुसार निर्णय लिया था।

वह सफलता नहीं पर विश्वास योग्यता का मान करता है (मती 25:21, 23)। हम सब विश्वासयोग्य हो सकते है पर सफलता उसी की ओर से मिलती है। वह अभिलाषा और उपलब्धि देखता है। दाऊद को मंदिर बनावाने का श्रेय मिला, क्योकि अभिलाषा उसके ह्दय में थी (1 राजा 8:18)। बाद में सुलैमान ने वास्तव में मंदिर बनवाया। जो परमेश्वर की दृष्टि में धन्य है, वे संसार की दृष्टि में तुच्छ गिने जाते है (मत्ती 5:3–10)। यीशु के परिवार ने सोचा कि वह अपने आपे में नहीं था (मरकुस 3:21)। पौलुस

के आलोचकों ने उसे 'बेसुध' समझा (2 कुरि. 5:13)। यदि हम भी मसीह के समान है लोग हमें भी पागल समझेंगे।

हत्या और व्यभिचार पहिले ह्दय में जन्म लेते हें (मत्ती 5:21–22, 27:30)। हत्या का आरंभ घृणा से और व्याभिचार का आरंभ वासना की दृष्टि से होता है। अशुद्धता ह्दय के भीतर से आती है (मत्ती 15:11)। लोग पाप की पुर्नव्याख्या करके उसे बीमारी बताते है। वे किससे परिहास कर रहे है? परमेश्वर बीमारी के कारण किसी को नरक में नहीं भेजते।

संसार शेक्सपियर के साथ कहता है – 'अपने आप के प्रति सच्चे रहे।' पौलुस ईश्वरीय – प्रेरणा पाकर कहते है – ''प्रत्येक दूसरों को अपने आप से बेहतर समझें'' (फिलि. 2:3)।

परमेश्वर बलिदान नहीं पर दया चाहता है (मत्ती 9:13)। यदि हम न्याय, दया और विश्वास की अनदेखी करे, तो केवल दशवांश देना पर्याप्त नहीं है (मत्ती 23:23)। परमेश्वर के राज्य में बड़ा बनना अर्थात् छोटे बालक जैसा बनना है (मत्ती 18:4)। मनुष्य आदर योग्य पद और पदवियां चाहते है, केवल परमेश्वर को वह आदर मिले (मत्ती 23:9–10)। लोग विशेष परिधान, जो पवित्रता और धार्मिक पद को या उनके महात्म्य के अंश को दर्शाये, पसंद करते है (मत्ती 23:5)। मसीह ने स्वयं को प्रतिष्ठा से शून्य कर दिया। मंदिर की पवित्रता उसके स्वर्ण से नहीं है, पर मंदिर है जिसके द्वारा स्वर्ण शुद्ध ठहरता है (मत्ती 23:18–22)। स्वर्ण के कारण मंदिर का मूल्य नहीं है, यह स्वर्ण का सौभाग्य है कि वह मंदिर के निर्माण में उपयोग किया गया। यह मंदिर है जिसने स्वर्ण को विशेष आदर के लिये हकदार बनाया। उसी प्रकार, वेदी पर रखा गया बलिदान, वेदी के कारण शुद्ध ठहरता है।

बड़प्पन का मार्ग छोटा बनने में है। वह जो स्वयं को घटाता है, वह ऊंचा किया जायेगा (मत्ती 23:12)। परमेश्वर के प्रेम की परिभाषा में शत्रुओं से प्रेम भी शामिल है (लूका 6:27)। संसार के लोग उनसे प्रेम करते है जो उनसे प्रेम करते है। परमेश्वर अपना सूर्य धर्मी और अधर्मी दोनों पर उदय करते है, और धर्मी और अधर्मी दोनो पर बारिश भेजते है (मत्ती 5:45)। हमें उसकी निष्पक्षता पर अमल करना चाहिये, ऐसा करना हमारी प्रकृति के विरुद्ध है।

अच्छा, ये कुछ उदाहरण या प्रदर्शन है जो दर्शाते है कि परमेश्वर के विचार और तरीके मनुष्यों से कितने भिन्न है। जब हम सोचते हैं कि प्रभु क्या करते है, तब खोजने में ये बातें हमें सहायता करेगी। बाइबल ईश्वरीय सोच या विचार धारा पर सम्पूर्ण प्रकाशन है। इस विषय पर अधिक विचार हेतु परिशिष्ट 'फ' को देखें।

भाग - 4

मसीही सेवा

अध्याय - 42

अपने वरदानों को जाने

ह्दय – परिवर्तन के समय विशेष आत्मिक योग्यता (प्रतिभा) प्रदान करना पवित्रात्मा की सेवकाईयों में से एक है, जिसे सामान्य तौर पर दान–वरदान कहते हैं। ये सामान्य योग्यता से भिन्न् होते है। एक अविश्वासी में भी योग्यताएं हो सकती हे जैसे आविष्कार करना, कलाकार या गणितज्ञ बनना। ये व्यक्ति मे वांशिक रूप मे आती है।

आत्मा के दान–वरदान भिन्न होते है। वे विशेष सामर्थ है जिन्हें केवल पवित्रात्मा दे सकता है और वह केवल उन्हें देता है जिनका नया–जन्म हो चुका है। अकसर इन दान–वरदानों के कारण वह व्यक्ति उन कामों को कर पाता है जिन्हें वह साधारण तौर पर नहीं कर सकता। वे काम उनकी स्वाभाविक योग्यताओं से इतने अधिक भिन्न होते हैं कि लोग समझ लेते हैं कि उनके माध्यम से अवश्य ही प्रभु कार्य कर रहे है। मैने पढ़ा है कि सी. एच. स्पर्जन को सार्वजनिक प्रचार से इतना डर लगता था कि वे मंच पर जाने से पहिले अकसर 'खून की उल्टी' कर देते थे। कुछ अन्य प्रचारकों को बोलने की गंभीर समस्याएं थी, पर जब वे प्रचार करते, तब उनकी आवाज सिद्ध रुप में ठीक हो जाती थी। जब हम अपने दान–वरदानों का उपयोग करे, लोगों को यह समझना चाहिये कि परमेश्वर की सामर्थ काम कर रही है और यह काम उस मसीही व्यक्ति का नहीं है।

रोमियों 12:3–8; 1 करिन्थियों 12:7–11, 28 और इफिसियों 4:11 में आत्मा के दान–वरदानों की सूची है। अन्य वरदान भी हो सकते है, जिनके नाम इन वृतान्तों में नहीं है। जिनका संबंध प्रमुख रुप में 'नये–नियम की कलीसिया' के शुभारंभ और नये नियम की कलीसियाओं की स्थापना करने से था। प्रेरित और भविष्यद्वक्ता वे लोग थे जिन्होंने प्रेरणा द्वारा नया–नियम प्राप्त किया और हमें दिया – ''विश्वास जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।'' अब वे हमारे पास नहीं है। हमें अब उनकी आवश्कता नहीं है क्योंकि हमारे पास उनकी सेवकाई नये नियम के पन्नों में संरक्षित है।

व्दितीय और कमतर संज्ञान के रुप में एक प्रेरित वह व्यक्ति है जो प्रभु के द्वारा शुभ–संदेश प्रचार करने और स्थानीय कलीसिया स्थापित करने भेजा जाता है। साथ ही व्दितीय संज्ञान में, भविष्यद्वक्ता वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन की व्याख्या करता है और सुननेवालों पर लागू करता है।

एक व्यक्ति कैसे जानेगा कि उसका वरदान क्या है? सबसे पहिले वह इस विषय पर गंभीरता पूर्वक प्रार्थना करे। उसे वरदानों का अध्ययन करना चाहिये। तब उसे विभिन्न सेवकाईयों में भाग लेना चाहिये जिनमें वे वरदान काम आते है। कुछ उसके लिये भारी पडेंगे, कुछ कम से कम थकान के साथ अधिक से अधिक प्रभावशीलता उत्पन्न करेंगे (बिल गॉथर्ड)। परख रखने वाले मसीही आपको मिले मार्गदर्शन को प्रमाणित कर देंगे और आपको बतायेंगे कि आपका वरदान क्या है।

हमें अपने दान –वरदानों का उपयोग परमेश्वर द्वारा प्रदत्त पूरी शक्ति के अनुसार करना चाहिये, जिनमें भिन्न –भिन्न वरदान है। परमेश्वर के सिद्धांतों से बढ़कर किसी का वरदान नहीं (एल्फ्रेड मेस)। एक प्रचारक जो सोचता है कि उस का वरदान बहुत बड़ा है और उसे छोटी–सी सहभागिता में नहीं रहना चाहिये, उसे परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता में बने रहने (चलने) की आवश्यकता है। उसे लगता है कि उसे विशाल चर्च की बुलाहट है जो सदस्यों की अधिक संख्या के लिए धर्मशिक्षा में समझौते करता है। उसके लिये ईश्वरीय सिद्धांतो (नियमो) मे दृढ़ रहना बुद्धिमानी होगी, और वह प्रभु को तय करने दे कि उसके श्रोताओं या कलीसिया के सदस्यों की संख्या क्या होनी चाहिये।

अध्याय - 43

सबके सेवक बने

जैसा कि हमने पहिले देखा है, यीशु वास्तव में खरीद गुलाम थे जिन्होंने अपना कान दरवाजे की चौखट पर रखकर कहा था – "मैं अपने स्वामी से प्रेम करता हूं मैं स्वतंत्र होकर नहीं जाऊंगा।" वह अब भी कह रहे हैं जैसे उन्होंने उस रात उपरी कोठरी में कहा था, "मैंने तुम्हे नमूना दिखा दिया है, जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है तुम भी वैसा ही करो" (यूहन्ना 13:15)। येल के बारडेन ने इस उदाहरण का पालन किया। यद्यपि वह धनी परिवार से था, कभी – कभी उसे 'स्किड रो मिशन' में बर्तन साफ करते देखा गया।

एक बाइबल कॉलेज के प्रोफसर ने घुटनों पर आकर वॉशरुम के फर्श को साफ किया जबकि लड़के उसे पानी से भरा छोड़कर अपनी कक्षाओं में भाग गये थे। स्टीव फर्रार एक विनोदपूर्ण वर्णन बताते है कि हम सेवकत्व के प्रति कैसे प्रत्युत्तर दे। वे एक पुस्तक लिख रहे थे और इस अनुच्छेद तक पहुंचे –

> मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं – क्या आप बदलना चाहते है? क्या आप बदलने के लिये तैयार है? जब मैं अपनी ओर से विचार करना बंद करुंगा, तभी सेवक बनने का यह अनुभव आपके लिये स्वाभाविक रुप से आयेगा। यह आपके जीवन में परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया स्वरुप घुटने कांपनेवाला भले न हो, यह निश्चित रुप में मेरा अनुभव नहीं है। परन्तु क्या आप जानते है? मेरे पास सचमुच अन्य कोई विकल्प नहीं है – मैं यही करने बुलाया गया हूं।"

फर्रार आगे कहते हैं –

> अब क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर भी हंसी –मजाक करते है? मैं गारंटी दे सकता हूं कि वे हंसी मजाक करते है। वास्तव में, मैं यह बात साबित करना चाहता हूं। क्या आपने पिछले अनुच्छेद का अंतिम वाक्य पढ़ा? उसमें कहा गया है – "मैं यही करने बुलाया गया हूं।" जबकि मैं यह अंतिम वाक्य पूरा कर रहा था, मैंने हल्के स्वर में सुना –"पापा....पापा...पापा...।" मैं अपने

> कार्यालय से बाहर आकर देखता हूं कि मेरा बेटा उसके शयन कक्ष और बाथरुम के बीच रास्तें में उलटी कर रहा था, और चूंकि मैं वहां अपने पुत्र के साथ अकेला था, सफाई करने का काम मेरे सिर आया। अगले 90 मिनट में जबकि मुझे यह अध्याय पूरा करना था, मैंने अपने पुत्र को साफ किया, बिस्तर पर लिटाया, और कार्पेट लगाया ... तो आप समझे, मैं क्या बता रहा था।
>
> रात के 9:48 बज गये। यह पूरा अध्याय 10:30 बजे तक फेडएक्स कंपनी को भेजना था और फेडएक्स अगले 42 मिनट में बंद होनेवाला था। जब मेरे पुत्र ने उल्टी की, मेरा पहला प्रश्न था – ''मेरी कहां है?'' वास्तव में ऐसा कहना सही नहीं है – मेरा पहला प्रश्न था, ''मेरी कहां है? उसने विवाह के समय प्रतिज्ञा की थी – कि वह बीमारी में और स्वास्थ में मेरा साथ देगी – और यह बीमारी थी।'' पर मैंने यह जोर से नहीं कहा परन्तु मैं यही सोच रहा था।
>
> जब मैंने जोशुआ को साफ किया और बिस्तर में लिटाया, मैंने अपनी घड़ी देखी और ध्यान दिया कि समय तेजी से बढ़ते हुये वहां आ रहा था – ''जब कोई मनुष्य काम नहीं कर सकेगा।'' मैं सोचने लगा – आखिर यह स्त्री है कहां, और क्या कर रही है। मेरे पास यह सब साफ करने का समय नहीं है। मुझे यह अध्याय पूरा करना है और फेडएक्स कंपनी को भेजना है।
>
> मुझे सेवकत्व पर यह भाग पूरा करना है, ताकि ये लोग वह बन सके जैसा परमेश्वर उन्हें बनाना चाहते है। वह कहां है? मैं कार्पेट की सफाई करने के बाद अपने आप को इस काम में झोंक देने तैयार था। मुझे फर्श से पचाया हुअ हॉट डॉग और चिली साफ करने के बदले परमेश्वर के राज्य के लिये कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना है।''

जब मैं अतं में बैठकर सोचने लगा, मेरी बात कहां छूटी है, मैंने ध्यान दिया कि अंतिम अनुच्छेद मैं मैने लिखा था –

> मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं – क्या आप बदलना चाहते है? क्या आप बदलने तैयार है? क्या आप एक सेवक बनने के लिये तैयार है? जब मैं अपनी ओर से विचार करना बंद करुंगा, सेवक बनने का यह अनुभव आपके लिये स्वाभाविक रुप से आयेगा। यह आपके जीवन में परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया स्वरुप घुटने कांपने वाला अनुभव न हो। निश्चित रुप में यह मेरा अनुभव नहीं है। परन्तु क्या आप जानते है? मेरे पास सचमुच अन्य कोई विकल्प नहीं है – मैं यही करने बुलाया गया हूं।[72]

मसीह के समान स्वभाव का यह आधिकारिक चिहं है, जब हम सेवा करने झुकते है।

निष्कर्षः–

आइये, हम भू बातों को संक्षेप में दोहराये। किसी भी मसीही मण्डली में एकमत होना चाहिये। पवित्रशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण मसले जो भले ही मूलभूत मसले न हो, उन पर प्रत्येक मण्डली परमेश्वर के भय में एक नीती तय करे कि वे क्या मानेगे। कोई भी विपरीत शिक्षा, सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, यदि झगड़े और विभाजन लाती है तो उसे अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। यदि कोई व्यक्ति मण्डली की नीति से असहमति रखता हे तो उसे अपनी भावनाये परमेश्वर की शरण में विश्वास योग्यता से रख देनी चाहिये, और यह कार्य चुपचाप एवं शांति बनाये रखते हुये करना चाहिये।

हमने कुछ मसलो की चर्चा की है जो महत्वपूर्ण नहीं है, उन पर आपसी समझौता (उग्हा।ह् ऊंव) करके एकता और शांति बनाकर रखनी चाहिये (इफि. 4:1–6)। हो सकता है इन क्षेत्रों में हमारे विश्वास पक्के हो, परन्तु हमें स्मरण रखना होगा कि मसीह के समान अन्य पवित्र लोग है जो हमसे सहमति नहीं रखते। इस कारण वश हमें अधिक रुढ़िवादी बनने से बचना होगा। क्रॉमवेल ने कहा था, ''मैं तुम्हे परमेश्वर की दया स्मरण कराके विनम्र निवेदन करता हूं कि हम यह विचार रखें कि हम गलत हो सकते है।'' जब भी किसी ने डॉ. आयरन साइड से किसी अमहत्वपूर्ण मसलें पर उलझने का प्रयास किया उन्होंने उत्तर दिया, ''ठीक है, भाई, जब हम स्वर्ग जाएंगे, हम में से कोई एक गलत होगा – और अधिक संभावना है कि मैं गलत हूंगा '' आग तुरन्त बुझ जाती थी क्योंकि डॉ. आयरन साइड उसे हवा नहीं देते थे। (पढे, नीतिवचन 26:20)। जितने भी विषयों पर हमने चर्चा की है उन पर एक मण्डली को स्पष्ट विचार या नीति तय करनी चाहिये। ऐसा न करने पर गड़बड़ियां होती है। विश्वासी सामान्य रुप में अनुसारण के लिये एक मार्गदर्शन चाहते है। जब परमेश्वर के सामने देर तक रुककर अगुवे किसी नीति (या विचार) को स्वीकार करते है तब उसमें कहा जा सकता है कि उनका निर्णय स्वर्ग से अनुमोदित है

(मत्ती 16:19, 18:18)। यदि वह पवित्रशास्त्र के किसी निर्देश, आज्ञा या नियम के विपरीत नहीं है।

किसी अमहत्वपूर्ण मसले पर असहमति के कारण मण्डली छोड़ देना कभी भी अच्छी बात नहीं होगी। ऐसी सहभागिता हो सकती हे जिनमें इन मसलों पर पूर्ण सहमति न हो, पर जहां प्रेम, और टूटापन, प्रार्थना और धीरज, विनम्रता और सहनशीलता हे, मतभेदों को सर्वमान्य रुप में हल किया जो सकता है। विश्वासीजन आपसी सहमति तोड़े बिना भी असहमत रह सकते है। मण्डली को छोड़ना केवल तब उचित माना जा सकता हे जब मण्डली में बने रहने पर व्यक्ति को यह महसूस हो कि वह प्रभु के प्रति अविश्वास योग्य है अथवा मण्डली की शांति भंग किये बिना उसका वहां रहना संभव न हो। किंतु तब भी हमारा तीसरा और रहकाल एवं परिस्थिति में प्रमाणित सूत्र – प्रेम – हर बात में काम करता है।

अध्याय - 44

व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की चुनौती

डेविड डनलॅप

मसीह की गवाही देना जीने का एक तरीका है। व्यक्ति मसीही है इस हैसियत से वह मसीह का गवाह है। मैं अच्छा गवाह हो सकता हूं या नहीं भी हो सकता, फिर भी मैं गवाह हूं। यीशु ने कहा, *"... तुम ... मेरे गवाह होंगे"* (प्रेरितों के काम 1:8)। हमारा गवाही देना महत्वपूर्ण है। जो मसीह को नहीं जानते उन पर हम काफी प्रभाव डाल सकते हैं। सवाल कब गवाही देना या कहां गवाही देना नहीं है। यदि हम मसीही हैं, तो हम गवाह हैं। परंतु हम अधिक प्रभावी रूप से सुसमाचार सुनाने वाले कैसे बन सकते हैं? प्रभावी गवाही के लिए सत्य को जानना आवश्यक है।*"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"* (यूहन्ना 8:32)। हम कार्यप्रणालियों के दिनों में जी रहे हैं। कुल मिलाकर, हमारा सुसमाचार प्रचार प्रणालियों पर केन्द्रित हो गया है। सुसमाचार की बेहतर प्रणालियों के विषय में कइयों ने सेमिनारों में भाग लिया। फिर भी उसी समय कलीसिया संदेश या सुसमाचार की विषयवस्तु की उसकी समझ में, और उसे निवेदन करने की उसकी योग्यता में कमज़ोर पड़ गई है। हम भूल गए हैं कि नया नियम "सुसमाचार सुनाने" को "शुभ संदेश बताना/उसे जाहीर करना/उसकी घोषणा करना" के रूप में करता है। समाचार शब्द का अर्थ ही है विषयवस्तु। उद्धार न पाए हुओं के सामने हम जो भी प्रस्तुति करते हैं उसमें बाइबल आधारित विषयवस्तु होनी चाहिए।

परमेश्वर - पवित्र एवं प्रिय सृजनहार

हम नहीं मान सकते कि आज लोगों के पास परमेश्वर की सही संकल्पना है। हमें यह देखने में उनकी सहायता करना है कि उनके जीवन पर उसे पूरा अधिकार है। जिस विचार को हम उन्हें स्वीकार करने के लिए विवश करना चाहते हैं, वह है हम में से प्रत्येक पर परमेश्वर का स्वामित्व। हमें एक सार्वभौम सृजनहार के विषय में बोलना है जिसने शून्य में से सारी वस्तुओं की सृष्टि की, जिसने हमें अपनी

ही इच्छा से उत्पन्न किया और सम्हालता है जिससे हम हर बात में उस पर निर्भर हैं (उत्पत्ति 1–2; प्रेरितों के काम 17:25; यशायाह 40:28; भजनसंहिता 100:3)। इसी बुनियाद से उसके अस्तित्व के दो बड़े स्तंभ आते हैं – ज्योति और प्रेम। ज्योति परमेश्वर के प्रताप, सत्य और पवित्रता के विषय में बताती है (1 यूहन्ना 1:5; 1 तीमिथियुस 6:15–16) परंतु हमारा परमेश्वर प्रेमी परमेश्वर भी है। उसने अपने प्रेम की खातिर हमें अपने स्वरूप में उत्पन्न किया ताकि हम उसके साथ संगति कर सके। इसलिए, आराधना ही एक मात्र उचित प्रतिक्रिया हो सकती है (व्यवस्थाविवरण 6:4–5)।

मनुष्य – पापी प्राणी

मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और जानबूझकर विद्रोह किया। बाइबल इसे पाप कहती है। हमें पाप की परिभाषा करना है और खोए हुए संसार को उसके परिणामों के विषय में बताना है। पाप के दो भाग हैं: पहला, यह एक रवैया है कि मैं ही खुद का ईश्वर हूं और इसलिए मैं ऐसे जीवन बिताता हूं जैसे परमेश्वर है ही नहीं। रोमियों 1:21 यह वचन पाप की परिभाषा परमेश्वर की आराघना न करना के रूप में करते हुए इस प्रवृत्ति का वर्णन करता है। फलस्वरूप, हम उन सारी बातों का इन्कार करते हैं जो परमेश्वर ने खुद के विषय में हम पर प्रकट की हैं। दूसरा, पाप परमेश्वर के विरोध में विद्रोह करना है – उसकी व्यवस्था का उल्लंघन करना। सुसमाचार प्रचार में दस आज्ञाओं की सूची प्रस्तुत करने से लोगों को अपराधबोध महसूस करने में सहायता मिलती है, और केवल मसीह में पाई जाने वाली क्षमा के लिए इच्छा उत्पन्न होती है (रोमियों 3:12; याकूब 2:10; यिर्मयाह 17:9)।

पाप का परिणाम मृत्यु है। बाइबल मृत्यु को आत्मिक और शारीरिक अलगाव कहती है। इन दो तत्वों को जब एक साथ जोड़ा जाता है, तब जीवन का मूलतत्व या सार बनता है। भौतिक मृत्यु शरीर से अलगाव है। रोग और शारीरिक क्लेश के लक्षण बताते हैं कि शारीरिक मृत्यु निकट है। आत्मिक मृत्यु अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलगाव है। इस प्रकार की मृत्यु के लक्षण हैं नफरत, युद्ध, विरक्ति, उद्देश्यहीनता, अपराघबोध, और निराशा (यशायाह 59:2; इफिसियों 2:1)।

मसीह – दयालू मुक्तिदाता

जब आप पुराना नियम पढ़ते हैं, तब आप स्पष्ट रूप से देखते हैं कि यीशु मसीह तीन भूमिकाओं को पूरा करने के लिए आया: भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा। पिछले सौ वर्षों से अधिक समय में सुसमाचार ने केवल उद्धारकर्ता के रूप में उसके विषय में कहा है। इस कारण कई लोगों ने "मसीह के लिए ऊपरी निर्णय" लिया है। हमें मसीह को उसकी तीनों भूमिकाओं में प्रस्तुत करना है – उसका सिद्ध जीवन, उसकी बलिदानात्मक मृत्यु, और उसका विजयी पुनरूत्थान।

भविष्यद्वक्ता होने के नाते, उसने परमेश्वर को अपनी शिक्षा और जीवन के द्वारा प्रगट किया (व्यवस्थाविवरण 18:15–19; यूहन्ना 1:14–18; 7:16–24)। उसके सिद्ध जीवन ने उसे हमारे बदले बलिदान देने के योग्य बनाया।

याजक परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। हमें क्रूस को मात्र परमेश्वर के प्रेम के अस्पष्ट प्रात्यक्षिक के रूप में प्रस्तुत नहीं करना है, बल्कि इतिहास में उस स्थान के रूप में उसे

प्रस्तुत करना है जहां परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु के रूप में समस्त संसार के पापों को मिटाया। परमेश्वर आज भी धर्मी और पवित्र है, फिर भी वह मसीह के द्वारा हमसे प्रेम करता है जिसने हमारे पापों को उठा लिया (1 पतरस 2:24; इब्रानियों 7:27; 10:10)।

हमें राजा के विषय में उसके पद के संबंध में कहना है। नया नियम यीशु मसीह का "उद्धारकर्ता" के रूप में 24 बार उल्लेख करता है, परंतु 694 बार उसे प्रभु कहता है – "उद्धारकर्ता" के प्रत्येक उल्लेख के लिए 28 बार से अधिक समय। जितने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करेंगे, उन्हें यीशु को अपने राजा के रूप में भी ग्रहण करना है। यीशु अब प्रेम और सत्य में अपने लोगों में राज करने के लिए जीवित है (मत्ती 25:24; प्रेरितों के काम 2:36; प्रकाशितवाक्य 5)।

उद्धार के लिए हमारी आवश्यक प्रतिक्रिया

मसीह के पूर्ण किए गए कार्य के द्वारा उद्धार पाना मनुष्य की एक मात्र आशा है, अतः मनुष्य मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में कैसे जान सकता है? हमें उद्धार न पाए हुओं से अनुरोध करना है कि वे अपने मन और हृदय से यह अंगीकार करें कि वे परमेश्वर के सामने दोषी हैं और उसके न्याय के योग्य हैं। उन्हें अंगीकार करना है कि उन्होंने उसके विरोध में विद्रोह किया है, और उससे फिर जाना है, मसीह के उद्धारदायक कार्य में भरोसा रखना है। उन्हें यह समझना है कि वे कुछ नहीं कर सकते। उन्हें यह समझना है कि खुद को परमेश्वर के सामने ग्रहनयोग्य बनाने के लिए वे कुछ नहीं कर सकते। उसके बाद हमें उन्हें मसीह पर भरोसा रखने हेतु और उद्धारकर्ता के रूप में उस पर निर्भर रहने हेतु उन्हें निमंत्रण देना है (यूहन्ना 1:12; 3:16; इफिसियों 2:8–9)।

याद रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातें

अपनी बाइबल का उपयोग करें: उस व्यक्ति को स्वयं वचन पढ़ने कहें, उसे आपको यह समझाने के लिए कहें कि वह अर्थ उसे कैसे समझता है। कई बार सुसमाचार की प्रस्तुति में यह परिवर्तन का क्षण होता है। वह स्पर्श रेखाओं को रोकता है, और परमेश्वर के अंतिम अधिकार के साथ उनका सामना कराता है।

वचन याद करें: वचन और उनके संदर्भ याद करें ताकि आप उस व्यक्ति को परमेश्वर के वचन का उचित भाग दे सकें।

प्रार्थना करें: हमारा संदेश गैर–मसीही व्यक्ति को मूर्खता लग सकता है, परंतु यदि हम सचमुच विश्वास करते हैं कि केवल पवित्र आत्मा उन्हें उत्तर देने के लिए प्रेरित कर सकता है, तो हम पापी व्यक्ति के सामने मसीह को प्रस्तुत करने से पहले, दौरान और बाद में हम प्रार्थना करेंगे।

निवेदन करना: शुद्ध बाइबल धारणाओं को स्पष्ट रूप से निवेदन करें ताकि व्यक्ति उसमें अपने विचार न जोड़ने पाएं। यह समझाने के विषय में सावधान रहें कि आप परम सत्य के विषय में बोल रहें है, मात्र अपनी राय के विषय में नहीं। आपका संदेश विषयवस्तु और महत्व की दृष्टि से परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य हों, परंतु प्रोत्साहित हों: परमेश्वर ने टेप–रेकॉर्डर को सुसमाचार सुनाने की आज्ञा नहीं दी ताकि उसे "सिद्ध संदेश" मिले। आप भी वही गलती करेंगे जो सभी करते हैं। परंतु

यदि आप परमेश्वर और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहने का प्रयास करेंगे, तो वह आपको आपके काम के विषय में सिखाएगा।

परिश्रम करें और उसमें लगे रहें

"हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे" (गलातियों 6:9)। कई मसीही विश्वासी सुसमाचार के कार्यों को जल्द ही छोड़ देते हैं। वे कुछेक बार सप्ताह के अंत में जाकर लोगों के द्वारा खटखटाते हैं। जब कुछ लोगों से संपर्क हो जाता है, तब वे खुद से कहते हैं, "यह मेरे लिए नहीं है। मैं उसके लायक नहीं हूं।" कोई भी उसके लायक नहीं है; परंतु वह कठिन कार्य है! शैतान हर मौके पर लड़ेगा। उसमें लगे रहें, प्रार्थना करते रहें, बीज बोते रहें, और परमेश्वर आपको बढ़ोत्तरी देगा।

अधिकारपूर्ण बने रहें

उन्होंने यीशु के विषय में कहा, *"वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था।"* (मरकुस 1:22)। गवाह को अधिकारपूर्ण होना चाहिए, परंतु मगरूर नहीं। कुछ मसीही लोग पक्षसमर्थकों (चवसवहमजपब) के समान गवाही देते हैं। सामान्य तौर पर, इस तरीके से ज्यादा परिणाम हासिल नहीं होते। उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति ऐसे संदेश में भरोसा नहीं करेगा जो अनिश्चित और संदिग्घ रूप से दिया गया है। उन्हें *"प्रभु यों कहता है"* कि ज़रूरत है।

द्वार खुला रखें

जिस व्यक्ति को सुसमाचार सुनाया जा रहा है वह यदि ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है, तो उस पर ज़ोर न डालें। यदि वह व्यक्ति कठोरतापूर्ण टिप्पणियां देता है, तो बदले में कठोर शब्द न बोलें। इस वजह से अब तक आपने जो उन्नति की है, उसको हानि पहुंच सकती है, या भविष्य में अन्य लोगों को मिलने वाले अवसर में रुकावट आ सकती है।*"और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए"* (2 तीमुथियुस 2:24)। आप विवाद में जीत सकते हैं, परंतु मसीह के लिए एक आत्मा खो बैठेंगे। यदि गवाही की परिस्थिति में गहमागहमी शुरू होने लगती है, तो रुक जाएं! क्षमा मांगें। उस व्यक्ति को जता दें कि आप विवाद करना नहीं चाहते, जो कुछ आपने कहा या किया वह यदि उस व्यक्ति को अपकारक लगता है तो उसके लिए आपको खेद है। यदि सुसमाचार ठोकर दिलाता है, तो ऐसा ही हो, परंतु मैं यदि ठोकर दिलाता हूं, तो मुझे अपनी गलती सुधारने की ज़रूरत है।

कठिन ईश्वरविज्ञान से संबंधित संज्ञाओं का उपयोग न करें

गवाह को वैसे ही विचार करना सीखना है जैसे उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति सोचता है। खुद को उनके स्थान पर रखें। कई लोगों ने "नया जन्म पाना" ये शब्द सुने हैं, परंतु वे उसका अर्थ नहीं जानते। "प्रायश्चित" और "घर्मी " ठहराया जाना जैसी बातों के विषय बोलने से उनके मन में उलझन

उत्पन्न होगी। वे "पाप," "क्षमा," "नरक," और "न्याय" जैसी संज्ञाओं को समझते हैं। सरल शब्दों का उपयोग करें।

निमंत्रण देना सीखें

सत्य न केवल जानकारी देता है, बल्कि वह परिवर्तन भी लाता है। कई लोग की गई पेशकश को स्वीकार करेंगे। लोगों को अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अवसर देना सीखें। चालाकी या धूर्तता न करें या जबरन उन पर अपने नियम न थोपें। परंतु उद्धार न पाए हुए व्यक्ति को परमेश्वर को हां कहने का अवसर दें। आप कभी किसी का हृदय नहीं जानते। हो सकता है कि उस व्यक्ति का हृदय अंदर से कायल हो रहा होगा परंतु बाहर उसका कोई संकेत या भावना दिखाई नहीं दे रही हो। आपके द्वारा सुसमाचार समझाने के बाद और सारे आक्षेप और प्रश्नों का उत्तर देने के बाद, आप केवल यह कहना चाहेंगे, "क्या आज रात आप मसीह को ग्रहण करना चाहेंगे?" बाइबल का तरीका है सुसमाचार प्रस्तुत करने के बाद स्त्री और पुरुषों को अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने हेतु निमंत्रण देना। पौलुस ने कहा *"हम ... तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवित परमेश्वर की ओर फिरो"* (प्रेरितों के काम 14:15)। *"इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं"* (प्रेरितों के काम 3:19)।

घुमावदार मार्ग को न अपनाएं

स्पर्श–रेखा से हट न जाएं। यदि शैतान आपको हरा नहीं सकता, तो वह घुमावदार मार्ग का उपयोग करेगा। यदि व्यक्ति प्रश्न पूछता है जो घुमावदार हो, तो उसके सामने यह सुझाव रखें कि आप पहले सुसमाचार की योजना प्रस्तुत करना समाप्त करना चाहेगे और उसके बाद आपके प्रश्न का उत्तर देगें। अन्य कलीसियाओं के सिद्धांत या प्रमुख टेलीविजन प्रचारक, बाइबल अनुवादकों की गलतियों के विषय में चर्चा न करें। मुख्य बात यह है कि सुसमाचार सुनाते समय मुख्य बात, मुख्य बात ही रहती है।

पाप का विषय प्रस्तुत करें

हमें स्पष्ट रूप से और हियाव के साथ उनके जीवनों में सक्रिय पाप के विषय पर बल देना है (रोमियों 6:23)। हमें परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह, और दया को प्रस्तुत करना है, परंतु हमें न्याय और पाप के परिणामों के विषय पर भी बल देना है। यह बाइबल का तरीका है। पतरस को प्रचार करते हुए देखें *"तुमने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और बिनती की कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए। और तुमने जीवन के कर्ता को मार डाला"* (प्रेरितों के काम 3:14–15)।

व्यक्तिगत गवाही दें

आपका उद्धार कैसे हुआ इस विषय में संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण करना सीखें। पाप की वजह से आपको उद्धार की ज़रूरत थी, और बाद में आपके जीवन में जो बदलाव आया उस पर ज़ोर दें। आप यह कहकर वार्तालाप शुरू करना चाहेंगे, "क्या मैं आपको वह सबसे अद्भूत बात जो मेरे साथ हुई बता सकता हूं?" संक्षिप्त वर्णन के बाद आप कह सकते हैं, "मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि मेरे सारे

पाप क्षमा कर दिए गए और मैं स्वर्ग जाने वाला हूं। मुझे दूसरों को इस विषय में बताना है। बाद में आप कह सकते हैं, "क्या तुम निश्चित रूप से जानते हो कि तुम स्वर्ग जाने वाले हो?"

परमेश्वर के वचन का उपयोग करें

जंगल में शैतान की परीक्षाओं का उत्तर देते समय, मसीह ने पवित्र शास्त्र के वचनों का उपयोग किया। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में प्रेरितों के प्रचार में, पुराने नियम कर उपयोग किया गया। यिर्मयाह ने कहा, *"यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले?"* (यिर्मयाह 23:29)। कई लोगों ने परमेश्वर के उद्धार को प्रस्तुत करने हेतु बड़ी सफलतापूर्वक परंपरागत तरीकों का उपयोग किया है। एक सुविख्यात तरीका है "रोमी मार्ग" – 3:10; 3:23; 5:8; 6:23; 10:9। कई लोग इस रूपरेखा का उपयोग करते हैं, परंतु उनमें विभिन्न बातों को जोड़ देते हैं। आपको मार्ग पर बनाए रखने के लिए रूपरेखा अच्छी है; उसके बाद व्यक्ति की ज़रूरतों के अनुसार अन्य वचन भी जोड़े जा सकते हैं। एक गम्भीर गलती है दोष लगाने वाले बनना: "आपको यह जानना ज़रूरी है कि आप पापी हैं।" वे प्रभु को ग्रहण करने के बजाए खुद को बचाने की सामान्य तौर पर कोशिश करेंगे। इसके बजाए, उन्हें पढ़ने कहें, *"कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं"* (रोमियों 3:10) या *"इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"* (रोमियों 3:23)। तब कहें, "हम *सब ने* पाप किया है, है ना?"

अध्याय - 45

वचन का प्रचार करें - सेवकाई की महिमा

प्रेरित पौलुस भी इस सच्चाई से नहीं हटा कि वह जो पहले कलीसिया का सतानेवाला था, उसे परमेश्वर ने मसीह की महिमा का सुसमाचार सौंपा। हमें भी नहीं हटना चाहिए। मैं जे.एच. होवेट का आभारी हूं कि उन्होंने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के महान अधिकार और सम्मान पर लिखा है। मैं उनमें से कुछ उत्तम अनुच्छेदों को यहां उद्धृत करना चाहूंगा:

> जो व्यक्ति ईश्वरीय बुलाहट के द्वार से सेवकाई में प्रवेश करता है वह अवश्य ही उसकी बुलाहट की "महिमा" को समझेगा। वह निरंतर विस्मित होकर सोचता रहेगा, और उसका सोचना नैतिक मवाद–विरोधी अर्थात एन्टीसेप्टिक औषधी होगी, कि उसे अनुग्रह के खजाने में एक सेवक नियुक्त किया गया है ताकि वह *"मसीह के अगम्य धन"* के विषय में बता सके। आप पौलुस के जीवन में उस विस्मयकारक विचार से दूर नहीं हट सकते। उसके उद्धारकर्ता के असीम प्रेम, और उसके अपने उद्धार की अद्भुत महिमा के साथ ही, उसके विस्मय को हम उसकी अपनी बुलाहट की श्रेष्ठ महिमा से कैद और परिपोषित होते हुए देखते हैं। विशेषाधिकार की ज्योति हमेशा कर्तव्य के मार्ग पर चमकती है। उसका काम कभी उसके प्रभामण्डल को नहीं खोता, और उसका मार्ग कभी पूर्ण रूप से मामूली और धुंधला नहीं होता। जितनी बार वह अपने मिशन के विषय में सोचता है, वह मानो सांस लेते हुए रुक जाता है और कई प्रकार की विपत्तियों के मध्य, महिमा और भी बहुतायत से प्रगट होती है। और इसलिए, इसी प्रकार के संगीत और गीत को हम अखण्ड रूप से पाते हैं, उसके उद्धार और बुलाहट की घड़ी से उसकी मृत्यु की घड़ी तक। *"मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं।"*
>
> क्या आप इन उद्‌गारों में पवित्र, ज्वलंत आश्चर्य, उसकी बुलाहट में पवित्र, उन्नत अभिमान नहीं देखते जो विस्मयकारी विनम्रता के साथ जुड़ा हुआ है कि नियुक्ति का रहस्यमय हाथ उस पर टिका हुआ है? वह स्थायी विस्मय उसके प्रेरितीय साधन का भाग था, और उसकी बुलाहट की

> महिमा का बोध उद्धारदायक अनुग्रह की महिमाओं की उसकी घोषणा से समृद्ध था। यदि हम हमारे कार्य के विस्मय के बोध को खो देंगे, तो हम आम बाज़ार में आम व्यापारियों के समान बन जाएंगे, जो अपनी साधारण वस्तुओं को बेचने के लिए चिल्लाते हैं।
>
> हमारी बुलाहट की महिमा में बड़े व्यक्तिगत आश्चर्य का यह बोध हमें विनम्र बनाए रखने के साथ–ही–साथ हमें महान बनाएगा। वह हमें क्षणस्थायी उद्यमों के निम्न अधिकारी बनने से बचाएगा। वह हमें सचमुच महान बनाएगा और इसलिए, हमें अपने दिनों को व्यर्थ बर्बाद करने से बचाएगा... सुसमाचार के प्रचारकों, जिनका कार्य उनकी सेवकाई की किसी गौरवशाली और अद्भुत कल्पना के उन्नत गुम्बज के नीचे किया जाता है, अवश्य ही आचरण की एक निश्चित विशालता पाएगा जिसमें ओछापन और क्षुद्रता सांस नहीं ले सकते।
>
> मैं बीस वर्षों से अधिक समय से मसीही सेवकाई में हूं। मैं अपनी बुलाहट से प्रेम करता हूं। मैं उसकी सेवाओं में अत्यंत आनंदित रहता हूं। मेरे बल और निष्ठा के लिए किसी प्रतियोगी के रूप में किसी भी विकर्षण का मुझे कोई एहसास नहीं है। मुझे तो एक ही लगन है और मैंने उसके लिए जीवन बिताया है – अत्यंत दुष्कर, परंतु हमारे उद्धारकर्ता और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और प्रेम की घोषणा करने का महिमामय कार्य।[73]

ईयन मैकफर्सन जोवेट की भावनाओं से सहमति रखते हैं। उन्होंने कहा, "प्रचार एक गरिमापूर्ण, उदात्त श्रध्दायुक्त भय उत्पन्न करने वाला अलौकिक कार्य, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के द्वारा व्यक्तियों के दल के प्रति प्रेषण है, जिस व्यक्ति का इस तरह प्रेषण या प्रचार किया जा रहा है, वह सनातन यीशु है।"[74]

सेवकाई की व्यक्तिगत तैयारी

सेवकाई की तैयारी के रूप में, लगातार अंगीकार और सारे ज्ञात पापों का परित्याग होना चाहिए। *"हे यहोवा के पात्रों के ढोनेवालो, अपने को शुद्ध करो"* (यशायाह 52:11)। आप मुझे बता सकते हैं कि आप ऐसे एक व्यक्ति के विषय में जानते हैं जो पाप में जीता था, फिर भी जब उसने प्रचार किया, तब आत्माओं ने उद्धार पाया। जी हां, यह संभव है। संदेश उसके देने वाले से हमेशा ही श्रेष्ठ होता है। परमेश्वर अपने वचन को आदर देता है। परंतु यदि आप चाहते हैं कि फल बना रहे (यूहन्ना 15:16), तो आपको मसीह में बने रहना होगा।

क्रमानुगत, प्रत्येक वचन के अनुसार अर्थ प्रकाशक संदेश

निसंदेह रूप से, उत्तम तरीका है प्रत्येक वचन का पवित्र शास्त्र के प्रत्येक वचन के अनुसार अर्थ प्रकाशन। संपूर्ण सत्य प्रस्तुत करने का, और जिस संतुलन में प्रभु ने वह दिया है उस तरह से प्रस्तुत करने का यह उत्तम तरीका है। यीशु के कुछ कठोर वचनों का सामना करने हेतु वह हमें विवश करता है। हमें परमेश्वर की संपूर्ण मनसा का प्रचार करने हेतु बुलाया गया है (प्रेरितों के काम 20:27)।

जब पूछा गया कि प्रभु का सेवक प्रचार के लिए कैसे तैयार किया जाता है, तब उसने उत्तर दिया, "मैं बाइबल के पास आता हूं, मैं खुद को खाली समझता हूं, और मैं पूर्ण रूप से खुद को पढ़ता

हूं, और खुद को साफ–साफ लिखता हूं, और मैं गर्मजोशी से प्रार्थना करता हूं।" प्रार्थना के साथ आरंभ करें।

खुद को वचन में डुबो दें। उत्तम प्रचार पूर्णरूप से पवित्र शास्त्र पर निर्भर रहता है। परमेश्वर ने वचन ही को आशीष देने की प्रतिज्ञा की है। मसीह का प्रचार करें। उसे विश्वास के पात्र और समस्याओं के उत्तर के रूप में प्रस्तुत करें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण संदेश उद्धारकर्ता से परिपूर्ण होता है।

समस्याओं और कठिनाईयों का सामना करें। यदि आप उत्तर नहीं जानते, तो कबूल करें। अपने श्रोताओं को धोखा देने की कोशिश न करें। यदि दो या उससे अधिक उचित अर्थ हैं, तो उन्हें बताएं। उन्हें बताएं कि आप कौनसा अर्थ पंसद करते हैं और क्यों।

जहां कहीं आपको सहायता की ज़रूरत है, वहां प्राप्त करें। बाइबल के विभिन्न संस्करणों, बाइबल शब्दकोषों, विख्यात समीक्षा और बाइबल शिक्षकों का उपयोग करें। अनुच्छेद का लागूकरण करें (इफिसियों 2:14–18)। उदाहरण के तौर पर, मसीह नें विश्वास करने वाले यहूदी और अन्यजातियों के बीच की दीवार तोड़ दी। हमें विभिन्न वांशिक और सजातीय समूहों के बीच दीवारें खड़ी नहीं करना है।

विषय–संबंध संदेश तैयार करना

लोगों की ज़रूरतों के विषय में प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा से बिनती करें कि वह संदेश को सामर्थ प्रदान करे। हमें मसीह का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है। प्रत्येक संदेश अनिवार्य रूप से और प्रबल रूप से उसी की ओर संकेत करने पाए। "परमेश्वर के पास अन्य ग्रहों के लिए अन्य शब्द होंगे, परंतु इस ग्रह के लिए उसका शब्द है यीशु।" बड़े कैन्वस पर चित्र में रंग भरें। आपको अद्‌भुत काम करने हेतु पुलपिट में खड़े रहना है। इसलिए अपनी सारी शक्तियों को मुख्य काम में लगाएं। मुख्य बात पर व्यापक तरह से ध्यान एकाग्र करें। मसीह का प्रचार करें।[75]

हमें सुसमाचार प्रचार करने के लिए, उसमें विश्वास के द्वारा उद्धार की खुशखबर सुनाने के लिए बुलाया गया है। हमारे पास सबसे उत्तम संदेश है। हमें 2 शमूएल 18:22 के अभागी मनुष्य के समान नहीं बनना है, जो दौड़ना चाहता था परंतु जिसके पास सुनाने के लिए सुसमाचार ही नहीं था। प्रत्येक संदेश में एकता, सम्बद्धता और प्रभाव होना चाहिए। एकता के लिए चाहिए कि संदेश का एक ही विषय हो जो शुरू से अंत तक स्पष्ट हो। प्रत्येक अनुच्छेद में भी प्रत्यक्ष सामंजस्य हो। सम्बद्धता का अर्थ है अनुच्छेद एक दूसरे से जुड़े हों ताकि विचार का प्रवाह निर्विघ्न हो, झटकेदार न हो। प्रभाव पराकाष्ठा की ओर पहुंचने से प्राप्त किया जा सकता है जो इस विषय में कोई संदेह नहीं छोड़ता कि आप क्या चाहते हैं कि आपका श्रोता जाने और करे।

संदेश की शुरूवात करना

लाईफ मासिक के लेखक पॉल ओ'निल कहते हैं, "पहले ही अनुच्छेद में पाठक का गला पकड़ लो, दूसरे में उसकी श्वास नली में अपने अंगूठे गड़ा दो, और उसे प्रचार वाक्य तक दीवार से दबाकर पकड़कर रखो।" इसे अब ओ'निल का नियम कहा जाता है।

संदेश की प्रस्तुति

हमें उत्साह के साथ प्रचार करना है। हमारे महिमामय संदेश को जैसे–तैसे तरीके से प्रस्तुत करना पाप है। मुझे लगता है कि स्पर्जन ने कहा था, "प्रभु के लिए आवेशी बन जाओ (प्रज्वलित बन जाओ) और संसार आपको चलते हुए देखने के लिए मुड़ जाएगा।" *लेक्चर्स टू माय स्टूडन्ट्स* नामक उनके व्याख्यान में, उन्होंने यह भी कहा है, "जब आप स्वर्ग के विषय में बोलते हैं, तो आपका चेहरा चमक उठे, आपकी आंखें प्रतिबिंबित महिमा से प्रकाशित हों; जब आप नर्क के विषय में बोलते है, तब सामान्य चेहरा ठीक है।" हमें खुद को पृष्ठभूमि में रखना है। जेम्स डेनी ने कहा, "प्रचार करते समय आप यह छाप नहीं बना सकते कि आप होशियार हैं और मसीह अद्भुत है।"[76]

जब आपका विनामूल्य उद्धार बताते समय,
मेरा हृदय और मन आपके विषय में सारे दिलचस्प विचारों में लौलिन होने पाए;
और सारे हृदय आपके वचन के प्रभाव के तले झुक जाते हैं
और उमड़ आते हैं, तब मुझे अपने क्रूस के पीछे छिपा लो।

(लेखक अज्ञात)

आप खुद का विज्ञापन देकर कभी दूसरों की सहायता नहीं कर सकते। खुद का विज्ञापन प्रभु यीशु की सेवकाई में उपसंहारक है। खुद के और खुद के कार्य के संबंध में अति प्रशंसा करने वाले, भड़कीले अनुच्छेद, हमारी सामर्थ और उपलब्धियों के विषय में अहंकारपूर्ण बयान–खुद को थोपने और खुद की दखल आदि सारी बातें– ये सारी बातें हमारे हाथों में सौंपे गए वास्तव में गहरे कार्य के लिए अत्यंत घातक हैं। हमारे संगी सहकर्मी जान लेते हैं कि हमारा काम कब घमंड से कलंकित होता है। जब शैतान हमें खुद की नुमाइश (प्रदर्शन) करने की इच्छा में फुसलाने में सफल होता है, तब वह प्रसन्न होता है। जब हम अपनी सर्वोच्च सामर्थ को स्वार्थपूर्ण प्रख्याति की चकाचौंध के सामने खोल देते हैं, तो वह सामर्थ सिकुड जाती है और मुरझा जाती है। वे इस प्रकार की रोशनी को सह नहीं सकते, वे अपना बल और सुंदरता खो बैठते हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप उनसे बचें। कभी लोगों से यह न कहें कि आप कितने होशियार व्यक्ति हैं... हम एक बात के विषय में निश्चित जान सकते हैं: कि जब हम खुद का प्रदर्शन करते हैं, तब हम अपने प्रभु को छिपाते हैं: जब हम अपनी ही तुरही फूकेंगे, तब लोग "परमेश्वर की शांत धीमी आवाज़" को सुन नहीं पाएंगे।[77]

संदेश समाप्त करना

यदि आपको कुछ महत्वपूर्ण नहीं कहना है, तो लगातार न बोलते रहें। मैंने एक प्यूरिटन के विषय में पढ़ा जिसने 800 श्रोताओं के साथ अय्यूब की पुस्तक पर उपदेश देना आरंभ किया और अंत में केवल 8 लोग बचे। "उसके श्रोताओं का धीरज उस पुरखा के बराबरी में नहीं था जिसके अनुभव के विषय में वह इतने लंबे समय तक बोलता रहा। प्रत्येक बात उसे कुछ और बात का स्मरण दिलाती रही" (डब्ल्यू एम. आर. मार्शल)। दूसरे प्रचारक के विषय में कहा जाता था कि अनगिनत वाक्यों में कुछ भी कह न पाने का उसका एक कष्टकारक तरीका था। युद्ध के बाद, एक छोटी लड़की अपनी मां के

साथ कलीसिया की आराधना में भाग लेने के लिए आईं थी। उबाऊ प्रचारक डेढ़ घंटे से भिनभिना रहा था (उबाऊ प्रचार कर रहा था)। लड़की ने सुनना छोड़ दिया और वह गिरजाघर की इमारत की ओर देखने लगी।

उसने झंड़ों की एक पांति देखी, प्रत्येक के नीचे एक पटिया थी। "ये झंड़ें किसलिए हैं, मां?" मां को अपनी छोटी बेटी की बेचैनी से सहानुभूति थी। उसने कहा, "वे उन लोगों की याद मनाते हैं (श्रद्धांजली देते हैं) जिनकी मृत्यु आराधना सभा में हुई थी।" छोटी लड़की ने पूछा, कौनसी आराधना में, "9 बजे की या 11 बजे की?"

सामान्य सुझाव

हमने स्वयं पवित्र शास्त्र के वचनों का पालन जहां तक किया है उसी हद तक जो प्रचार हम करते हैं और जो सिखाते हैं, उसमें हम सीमित होते हैं। हमने जो हासिल किया है उससे हम दूसरों की अगुवाई नहीं कर सकते। यदि हम कोशिश करें, तो वे उचित ही कहते हैं, "हे वैद्य, *खुद को चंगा कर।*"

हमें प्रभु के लिए आवेशी होना चाहिए। खतरा यह है कि समय के साथ उत्साह या आवेश कम हो जाएगा। *"प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।"* (रोमियों 12:11; मोफेट का अनुवाद)। "हमारे हृदय को वेदी के रूप में देखना अच्छा है, जहां पर आग जलती रहनी चाहिए। "और वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुझने न पाए (लैव्यव्यवस्था 6:12)। उत्तम प्रवचन वह है जो मन पर पूरा ज़ोर लगाता है, हृदय को गर्माहट देता है, चमड़ों को झुलसाता है, और इच्छा को उत्तेजित करता है। वह ऐसा नहीं जो श्रोताओं को यह कहने के लिए विवश करे, "यह बहुत उत्तम संदेश था।" इसके बजाय वह यह कहते हुए चले जाते हैं, "मुझे कुछ करना चाहिए।" अपने ही हृदय को प्रचार करें और आपको आश्चर्य होगा कि आप कितने हृदयों पर वार करेंगे।

पवित्र शास्त्र के वचनों के दो अर्थ न लगाएं। मज़ाक या विनोद करते समय सतर्क रहें। लोग संदेश से अधिक आपके विनोद को ज्यादा ध्यान में रखेंगे। वॅन्स हैवनर ने कहा, "पवित्र शास्त्र में जो परमेश्वर के जन हैं, वे यह संकेत नहीं करते कि वर्तमान समय का पीठ थपथपाना पवित्र मूर्खों का हास्यकर प्रकार है जो कभी–कभी संदेहपूर्ण मजाक करते हैं, पवित्र शास्त्र के पवित्र वचनों के दो अर्थ निकालते हैं।"[78]

"उदात्ता से नीरस अंतरंगता" के विरोध में लड़ें। मैं जे. एच. जोवेट से उद्धरण योग्य हवाला देकर समाप्त करना चाहूंगाः

> यदि सेवक ने मुख्य रूप से क्लेशपूर्ण तरस की आत्मा का बपतिस्मा नहीं लिया है, तो मैं नहीं जानता कि किस प्रकार कोई मसीह सेवा सफल होती है। जिस ज़रूरत को हम महसूस नहीं करते, उसे हम चंगा नहीं कर सकते। अश्रुरहित हृदय कभी उस आवेश के आग्रदूत नहीं बन सकते। यदि हमें उद्धारदायक लोहू के सेवक बनना है, तो हमें लहूलूहान होना होगा।

यह सच है कि आत्माओं को जीतनेवालों को आत्माओं के लिए रोने वाले बनना होगा। प्रभु, हमें सूखी आंखों वाली मसीहत के श्राप से छुड़ाईये।

अध्याय - 46

अनजाने में स्वर्गदूतों का आतिथ्य किया

सच्चे शिष्य की एक पहचान यह है कि वह आतिथ्य करने वाला होता है। उसका घर विश्वास के घराने के लिए और गैर–मसीहियों के लिए भी खुला होता है। यह एक तरीका है जिसके द्वारा वह मसीही प्रेम दिखा सकता है। लाजर, मरियम और मार्था आतिथ्य में माहीर थे। उनके घर में रहना यीशु को अच्छा लगता था। प्रत्येक मसीही घर वैसा हो सकता है। जब हम किसी का उसके नाम में आतिथ्य करते हैं, तो मानो हम प्रभु का आतिथ्य करते हैं।

एक अंग्रेज़ महिला ने जैतून पर्वत पर एक घर खरीदा ताकि जब भी यीशु लौट आता है, तब वह उसे एक प्याला चाय दे सके। उसके किसी शिष्यों में से एक को चाय देकर वह ऐसा किसी भी दिन कर सकती थी। परंतु अब वह जा चुकी है, और यीशु अब तक नहीं आया है। हमारा आतिथ्य हमारे रिश्तेदारों और मित्रों तक सीमित नहीं होना चाहिए। यीशु ने हमारी सभी मानव प्रवृत्तियों को उजागर किया जब उन्होंने कहा:

> जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाए। परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उन के पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा – (लूका 14:12–14)

हमें प्रत्येक अतिथि के साथ वैसे ही व्यवहार करना है जैसे हम प्रभु के साथ करेंगे। यह उच्च मानक है।

मध्य–पूर्व परंपरा के अनुसार, व्यक्ति अपने अतिथि की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार होता है, भले ही वह उसे पसंद करता न हो। यह बात भजनसंहिता 23 के इस पद को समझाती है: *"तू मेरे सतानेवालों के साम्हने मेरे लिए मेज बिछाता है।"* शत्रू दूर पर खड़े हैं, अतिथि को टकटकी बांधकर देख रहे हैं, परंतु वह चरवाहे की देखरेख में सुरक्षित है। अतिथि के चले जाने के बाद उसकी बुराई न करना

सामान्य शिष्टाचार है, उसने चाहे जैसा बर्ताव किया हो। जो लोग प्रभु के कार्य के लिए यात्रा करते हैं उन्हें यीशु की खातिर परमेश्वर की दया दिखाई जाती है। हमेशा प्राप्त करते रहना आरामदायक हो जाता है। परंतु इन लोगों को आतिथ्य का नमूना भी बनना है। उनके घर प्रभु के लोगों के लिए भी खुले हो।

व्यक्तिगत पवित्र जनों के लिए जो सच है, यह मण्डलियों के विषय में भी सच होना चाहिए। मैं अक्सर सोचता हूं कि मण्डली को पहली बार आने वाले अतिथियों का स्वागत करने का अवसर मिलता है और वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि उन्हें किसी और के घर में या होटल में भोजन के लिए निमंत्रित किया जाए। यह एक असामान्य प्रथा है जो अतिथि कभी नहीं भूलते। उनके पास भले ही कुछ अन्य योजनाएं हों, फिर भी ऐसे प्रेम का प्रदर्शन पाकर वे सौहार्द्रपूर्ण भावना को महसूस करते हैं। कई लोग आज मण्डलियों में भविष्यद्वाणी या कलीसिया की शिक्षा के कारण नहीं हैं, परंतु इसलिए हैं क्योंकि जब वे पहली बार आए तब उन्हें भोजन पर निमंत्रित किया गया। मैं आपको दो दृश्य बताऊंगा।

दृश्य 1: टॉम और फ्रैन हाल ही में पड़ोस में रहने के लिए आए। रविवार की सुबह आती है और वे अच्छी कलीसिया की तलाश करने का निर्णय लेते हैं। इसलिए 10:45 मिनिट पर उन्हें गिरजाघर में प्रवेश करते देखा जाता है, वे थोड़े से डरे हुए हैं। लोग झुंड बनाकर आपस में मिलने में व्यस्त हैं। एक व्यक्ति बीच में आता है, उनसे हाथ मिलाता है और अच्छे मौसम के विषय में अपनी राय व्यक्त करता है। वे बैठने के स्थान को खोजने के लिए लोगों के बीच में से जाते हैं – गिरजाघर के पीछे वाली बैठक पर। सभा समयानुसार आरंभ होती है – उत्तम गीत, उत्तम संदेश। बारह बजे हैं। अंतिम प्रार्थना होती है। लोग जाने के लिए उठते हैं। यहां वहां कुछ लोग एकदूसरे की ओर झुकते हैं और धीरे से कानाफूसी करते हैं, "ये अजनबी कौन हैं?" – मानो वे घुसपैठिया हों। अन्य लोग बड़े उत्साह के साथ अपने मित्रों से मिलते हैं, सप्ताह में क्या हुआ इसका समाचार सुनते–सुनाते हैं। टॉम और फ्रैन लगभग द्वार पर पहुंच चुके हैं, तब प्राचीन उनका अभिवादन करता है, "आप आज आए, अच्छा लगा। आशा है कि आप फिर आओगे।" वे जाते हैं और हैमबर्गर खाने के लिए पास के मैकडोनल्ड्स में प्रवेश करते हैं।

दृश्य 2: अपने पहले बच्चे के जन्म पर उल्लसित होकर, रॉन और रूथ ने फैसला किया कि उन्हें चर्च जाना चाहिए। वे नहीं चाहते कि उनका बच्चा अन्यजातियों के समान पले–बढ़े। वे डरते हुए गिरजाघर के द्वार पर पहुंचते हैं। एक स्वयंसेवक प्रेम से उनका स्वागत करता है, उन्हें बच्चों के कक्ष के विषय में समझाता है, और उन्हें बताता है कि उन्हें भोजन के लिए बाहर निमंत्रित किया जाएगा। वे नहीं जानते कि मण्डली में एक स्थायी नियम है कि सभी अजनबियों को बाहर भोजन के लिए निमंत्रित किया जाएगा। अवश्य ही आराधना होने से पहले ही एक प्यारा दम्पत्ति खुद का परिचय कराता है और नवागतों को भोजन के लिए निमंत्रित करता है। रॉन और रूथ तनावमुक्त हैं और कलीसिया के विषय में उत्कंठा महसूस करते हैं। ऐसा पहले कभी उनके साथ नहीं हुआ है।

भोजन के समय यजमान भोजन के लिए धन्यवाद देता है। वार्तालाप खामेशीपूर्ण है – केवल परिचय करने का समय। ऐसा होता है कि रॉन और रूथ दोनों मसीही पृष्ठभूमि से हैं, परंतु दोनों में

से कोई भी विश्वासी नहीं है। भेंट लाभदायक सिद्ध होती है। नवागतों को लगता है कि उन्हें कुछ परवाह करने वाले लोग मिल गए।

प्रश्नः कौनसे दम्पत्ति के लौटने की अधिक संभावना है?

उत्तरः टॉम और फ्रैन कभी वापस नहीं आए। रॉन और रूत ने अब उद्धार पाया है और सुखमय सहभागिता में हैं। परिणाम सामने है।

हम अजनबियों का आतिथ्य करने से क्यों हिचकिचाते हैं, जबकि यह भूतकाल में अत्यंत लाभदायक साबित हुआ है? संभवतः डर मुख्य कारणों में से एक है – अज्ञात का डर, नई परिस्थिति का डर, क्या करना चाहिए या उसे कैसे करना चाहिए यह न जान पाने का डर। और अर्थात किस विषय में बातें करना है यह न जान पाने, पर्याप्त रूप से 'आत्मिक' न होने, प्रभावी रूप से गवाही न दे पाने का डर होता है।

दूसरा कारण यह है कि रविवार की दोपहर के लिए हमारे पास अन्य योजनाएं होती हैं, और अजनबियों को अपने घर में बुलाने से उन प्रबंधों में दखल होगी। फिर हम सोचते हैं कि हमें अतिरिक्त काम करना पड़ेगा, घर साफ करना पड़ेगा, भोजन तैयार करना होगा, और उसके बाद फिर धोना–साफ करना होगा। और उसी समय लोगों की मेहमान–नवाज़ी करने का प्रयास करना होगा। आतिथ्य या मेहमान–नवाज़ी मेनू के आधार पर महंगी भी हो सकती है, जिन लोगों को सीमित बजट पर घर चलना पड़ता है उनके लिए यह निरूत्साहित कर सकता है।

आतिथ्य प्रगट न करने का अंतिम कारण। मंडली के कुछ गिनेचुने लोगों को हर समय ज़िम्मेदारी दी जाती है। वे ही सब करते हैं, और कुछ समय बाद ऊब जाते हैं। पहले आक्षेप के उत्तर के रूप में, डरने की सचमुच कोई ज़रूरत नहीं है। आपको अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव करने का निर्णय लेना है, हम जैसे हैं, वैसे लोग हमें देखने पाएं। उन पर सुसमाचार थोंपना आवश्यक नहीं है। मात्र धन्यवाद देना, गवाही बांटना, या भोजन के बाद वचन पढ़ना इतना काफी है। यह सच है कि यदि हमें आतिथ्य करना है, तो इससे हमारी रविवार की योजनाओं में खलल पड़ सकता है। हमें पहले से यह निर्णय लेना है कि यह हमारी प्राथमिक सेवकाइयों में से एक होगी।

आतिथ्य में काम और असुविधा दोनों आते हैं, परंतु हमें प्रभु को ऐसा कुछ अर्पण नहीं करना है जिसमें हमें कोई मूल्य चुकाना न पड़े। और हमें यह याद रखना है कि जो उसके नाम में किया गया है वह स्वयं उसके लिए किया गया है। कल्पना करें कि हम यीशु को रविवार के भोजन के लिए घर पर बुलाते हैं! आतिथ्य महंगा हो ऐसा ज़रूरी नहीं है। प्यारे लोगों के साथ सादा भोजन महत्वपूर्ण है। परंतु आतिथ्य की सेवकाई मण्डली के एक या दो लोगों पर नहीं छोड़ना है। यदि काफी संख्या में लोग इस सेवकाई की ज़िम्मेदारी उठाते हैं, तो बिना किसी पर बोझ डाले ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभ पहुंचाया जा सकता है।

यहां पर कुछ व्यवहारिक बातें हैं कि किस प्रकार कुछ मण्डलियों में आतिथ्य के कारण बढ़ौतरी हुई है।

एक मण्डली में प्राचीन और उनकी पत्नियां लगातार अतिथियों को अपने घर निमंत्रित करती हैं। यदि ज्यादा अतिथि नहीं रहे, तो वे कुछ पवित्र जनों को निमंत्रण देते हैं जिनकी वे किसी न किसी रीति से सेवा कर सकें। इसमें कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्राचीनों का उदाहरण अन्य विश्वासियों के सामने है।

दूसरी मण्डली में स्वर्गदूतों की समिती है। हर रविवार दो दम्पत्तियों को पुलाव, सलाद, रोल्स और मिठाई लाने के लिए नियुक्त किया जाता है। सुबह की सभा के बाद स्वयंसेवक अतिथियों को भोजन के लिए गिरजाघर के भोजनकक्ष में भेजते हैं। इस प्रकार पवित्र जन अनजाने में स्वर्गदूतों का आतिथ्य करते हैं, अपनी समिती का नाम ऊंचा करते हैं। फिर से, यदि पर्याप्त अतिथि न रहे, तो यजमानों को स्वतंत्रता होती है कि चर्च के ही अतिथियों को निमंत्रित करें। अधिकतर मंडली के पास यजमान होते हैं जो विशिष्ट रविवार के दिन अतिथियों को नियुक्त करते हैं। ज़ोर उन लोगों से संपर्क करने पर है, जो पहली बार आते हैं।

अधिकतर संगतियां इस बात का ध्यान रखती हैं कि अतिथि वक्ता को किसी के घर में भोजन के लिए बुलाएं। वे इस बात को नहीं जानते कि यदि प्रचारक यह जान पाता कि अजनबियों का ध्यान रखा जा रहा है, तो वह इस विशेषाधिकार को त्यागना अधिक पसंद करता।

यदि कोई परिवार इस डर से पीछे हट जाता है कि वे लाभदायक वार्तालाप नहीं कर पाएंगे, तो वे सेवकाई के भाग को पूरा करने हेतु अतिथि के साथ अजनबियों को निमंत्रित करने का विचार करें। यदि मसीही लोग अजनबियों को निमंत्रित करने से डरते हैं, तो उन्हें यह भी जानना है कि अक्सर विदेशी भी नए स्थान में प्रवेश करने से उतना ही डरते हैं। और अतिथि बारबार निमंत्रण स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास पहले से दूसरी योजनाएं होती हैं। परंतु उन्हें निमंत्रित किया गया है यह वस्तुस्थिति उनमें सौहार्द्र और स्वीकार किए जाने का बोध उत्पन्न करती है।

आज मण्डलियों में कई लोग इस बात की गवाही देंगे कि वे न तो नए नियम की कलीसिया की व्यवस्था से आकर्षित हुए हैं, न प्रचार के द्वारा, या शिक्षा के द्वारा, परंतु उस प्रेमपूर्ण आतिथ्य से जो उनकी पहली भेंट के समय उन्हें दिखाया गया था। क्या यह संभव है कि कलीसिया की बढौतरी करने के हमारे प्रबल प्रयासों में हम एक अत्यंत स्पष्ट और सफल कार्यपद्धति को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं?

अध्याय - 47

विश्वास का जीवन

विश्वासियों को विश्वास से जीने के लिए बुलाया गया है। *"हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे"* (मत्ती 6:11) यह प्रार्थना दावा करती है कि हम प्रभु के प्रयोजन पर निरंतर निर्भरता का जीवन बिता रहे हैं। जिनकी संसारिक नौकरी है उन्हें नियमित आमदनी मिलती है। उनके लिए प्रश्न यह नहीं है कि पैसा कहां से आएगा परंतु वह मिलने के बाद भी वे उससे क्या करेंगे, यह है। उनके लिए विश्वास का जीवन उनकी वर्तमान ज़रूरतों की पूर्ति के लिए और उनके परिवार की ज़रूरतों के लिए परिश्रम करना है, उससे अधिक जो कुछ है उसे प्रभु के काम के लिए उपयोग में लाना है, और भविष्य के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना है।

परंतु जो प्रभु के लिए पूरे समय काम में लगा हुआ है, उसके लिए विश्वास का जीवन उसकी सारी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए प्रभु पर निर्भर रहना है। वह विश्वास करता है कि परमेश्वर ने उसे बुलाया है और जिस वस्तु के लिए वह आदेश देता है, उसका परमेश्वर भुगतान करता है। वह जानता है कि परमेश्वर का काम यदि परमेश्वर के तरीके से किया जाए, तो उसे परमेश्वर के प्रयोजन की कभी कमी नहीं होगी। उसे पैसों के लिए याचना नहीं करना होगा। परमेश्वर उसकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। दुख की बात यह है कि इस नये नियम के नमूने को आज मसीही दायरों में बड़े पैमाने पर इन्कार किया जाता है। उच्च तौर पर संगठित अनुरोधपूर्ण याचना नियम है, अपवाद नहीं। यह इतने अजीब मात्रा तक पहुंच गई है कि लोग देखकर कहते हैं, "कलीसिया केवल आपका पैसा चाहती है।"

इस प्रथा के विरोध में सबसे महत्वपूर्ण विवाद यह है कि इसके लिए पवित्र शास्त्र में कोई मिसाल या समर्थन नहीं है। प्रेरितों ने कभी दूसरों पर अपनी ज़रूरतों को प्रकट नहीं किया। उदाहरण के तौर पर, पौलुस ने यरूश्लेम के ज़रूरतमंद विश्वासियों की ज़रूरतों को जाहीर किया (2 कुरिन्थियों 8:10–15)। परंतु खुद की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए उसने केवल प्रभु की ओर देखा। उसके बाद भी,

पूरा विषय विश्वास के जीवन से जुड़ा हुआ है। परमेश्वर चाहता है कि हम उसी की ओर देखें। जितना अधिक हम उस पर निर्भर रहेंगे, उतना अधिक महिमा वह प्राप्त करेगा। जितना अधिक हम अपने भविष्य के साथ हेराफेरी करेंगे, उतनी कम उसे महिमा मिलेगी और हमें अधिक।

विश्वास के जीवन के विषय में जी. एच. लॅन्ग कुछ मुल्यवान समझ देते है: "क्योंकि विश्वास मनुष्य का, उचित, नैतिक रूप से अनिवार्य गुण है जो परमेश्वर को सक्षम बनाता है कि वह अपनी मान्यता प्रदान करे, वे कार्यपद्धतियां जो हम में, और नये विश्वासियों में वास्तविक विश्वास उत्पन्न करती हैं, वे ही उचित और धन्य कार्यपद्धतियां हैं। इस कारण, विश्वास में रुकावट लाना शैतान का सबसे आवश्यक लक्ष्य बन जाता है, और उसके अन्य फंदो में ये सबसे अधिक प्रभावी हथियारों में से एक है जो हमें ऐसी पद्धतियों का उपयोग करने के लिए राजी कर लेता है, जो अच्छे परिणामों का झूठा वादा करती हैं, भले ही वे आवश्यक विश्वास की मांग नहीं करते, जैसे हर समय सभी बातों में परमेश्वर पर निर्भर रहना।

संस्थाओं में मासिक पत्रिकाओं में यह वास्तविक सामर्थ है जो कार्यकर्ताओं और उनकी ज़रूरतों के विषय में उदार हृदयों पर प्रगट करती हैं; उनके विषय में जानकारी देने वाली कार्यकर्ताओं की सूची में, बड़ी धनराशियों में जो उनकी आमदनियों को और वितरण को घोषित करते हैं। कोई इस बात पर सवाल नहीं करता कि ऐसी पद्धतियों में कुछ निश्चित लक्ष्यों को पूरा करने की सामर्थ है, परंतु उसके लिए जीवित परमेश्वर में अनाव्रत, ओजस्वी और प्रत्यक्ष विश्वास की ज़रूरत नहीं है। आवश्यक तौर पर, उनका रूझान परमेश्वर की ओर से हृदय हटाकर खुद की ओर आकर्षित करना होता है; प्रारंभ में उसमें और उनमें ध्यान बंट जाता है, और उसके बाद उस व्यक्ति के और परमेश्वर के बीच में वह स्थान ले लेता है। यही वह मूल कारण है कि क्यों कुछ लोग ऐसी सारी पद्धतियों का विरोध करते हैं; यही पर्याप्त कारण है कि प्रभु ने क्यों कभी उनका उपयोग नहीं किया। इन पद्धतियों से ग्रोव्हज् और म्युलर जैसे लोग जानबूझकर दूर हो गए, ताकि विश्वास न करने वाले संसार को और अविश्वासी कलीसिया को परमेश्वर की वास्तविकता और विश्वासयोग्यता का और विश्वास और प्रार्थना की सामर्थ और प्रचुरता का ताजा प्रमाण दे सकें।"[79]

यदि मैं सचमुच केवल प्रभु पर निर्भर हूं, तब वह तब तक प्रयोजन करेगा जब तक काम उसका है। जब वह काम को बंद करना चाहेगा, तब वह आपूर्ति बंद कर देगा। इससे सेवक आत्मा के चले जाने के बाद भी काम को करते रहने के दुख से बचते हैं। परंतु निवेदनों और अभियाचनाओं का उपयोग करके, हम उस कार्य को जारी रख सकते हैं, जबकि प्रभु ने बहुत पहले ही उस पर *इकाबोद* लिख दिया है, अर्थात् – बहुत पहले ही महिमा के चले जाने के बाद।

जैसे ही आप याचना करना आरंभ कर देते हैं, आप मसीही कार्य में सफलता का एक नया पैमाना परिचित कराते हैं। जो लोगों से संबंध बनाने में सबसे अधिक चतुर है, उसे सबसे ज्यादा पैसा मिलता है। और ऐसा हो सकता है कि नेक कामों को कष्ट उठाना पड़ता है क्योंकि उच्च दबाव वाले धन अभियान बेईमानी से उनका पैसा निकाल लेते हैं। इससे ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा और फूट उत्पन्न होती है।

जब आप केवल प्रार्थना पर निर्भर रहते हैं तब क्या होता है?

"परमेश्वर सभी क्षेत्रों में सर्वशक्तिमान है। वह कई तरीकों से काम कर सकता है, परंतु एक तरीका जिसमें वह काम करता है वह है मनुष्यों के मनों के क्षेत्र में "काम करना"। परमेश्वर व्यक्ति के मन में एक विचार डाल सकता है। वह किसी के मन में कुछ करने की तीव्र "इच्छा" या "दृढ़ मत" डाल देता है।

इसलिए जब हम पैसों की विशिष्ट रकम के लिए प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर व्यक्ति को प्रेरित करता है कि वह चेक–बुक उठाए और वह पैसा भेज दे, या वह दर्जनों लोगों को प्रेरित करता है कि वे उस रकम के अलग–अलग हिस्से भेजें और कुल मिलाकर निश्चित रकम प्राप्त हो। वह ऐसा करता है शायद इस पर आपको विश्वास नहीं होगा, परंतु मैं ही केवल यह कह रहा हूं कि जब हम पैसों के लिए प्रार्थना करने के विषय में बातें करते हैं, तब मेरा यही आशय होता है।"[80]

केवल वे लोग जिन्होंने उनकी प्रार्थना के उत्तर के रूप में परमेश्वर को उन्हें बिल्कुल निश्चित और उचित समय पर निश्चित रकम देते हुए देखने के गहरे रोमांच को अनुभव किया है, जबकि ज़रूरत बताई नहीं गई थी, वे ही उस अनुभव की रुचिरता का मूल्य जान सकते हैं।

जब परमेश्वर का कार्य मनुष्य के निवेदन पर निर्भर होता है, तब अक्सर ऐसा होता है कि वह निवेदन अपनी प्रभावकारिता खो बैठता है। लोग उनके प्रति अधिकार उत्पन्न करते हैं, और उनकी गुहार को और ज़ोरदार एवं और सनसनीखेज बनना होगा ताकि आवश्यक परिणाम उत्पन्न कर सकें। आज हम इसी स्थान में हैं। फिलिप्पियों 4:6–7 का आधुनिक संस्करण है: *"हर एक बात में तुम्हारे निवेदन विज्ञापन के द्वारा,* और याचना भरे पत्रों के द्वारा बड़ा–चढ़ा कर *मनुष्यों के सम्मुख उपस्थित किए जाएं* और पैसों की अनिश्चितता, जो सारे धीरज से परे है, तुम्हारे हृदयों और मनों को निरंतर संदेह में रखेगी।"

मैं जानकारी और याचना के बीच फर्क करता हूं। परमेश्वर क्या कर रहा है यह लोगों को बताना मुझे उचित लगता है, परंतु हमारा इरादा शुद्ध होना चाहिए। हमें गुप्त रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के बजाय मनुष्यों की ओर नहीं देखना है।

> विश्वास की भाषा है, *"हे मेरे मन, परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है।"* प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से, अपनी मांगों को मनुष्यों पर प्रगट करना विश्वास के जीवन से दूर होना है, और परमेश्वर के प्रति सकारात्मक अनादर है। यह वास्तव में उसे धोखा देना है। यह इस प्रकार कहने के बराबर है कि परमेश्वर ने मुझे धोखा दिया है, और मैं सहायता के लिए अपने साथी की ओर देखता हूं। यह जीवित सोते को छोड़कर टूटे हुए हौद की ओर फिरना है। यह मेरे प्राण और परमेश्वर के बीच सृष्ट प्राणी को रखना है, इस प्रकार खुद से समृद्ध आशीष को, और परमेश्वर की महिमा को चुरा लेना है जो केवल उसी को देने योग्य है।[81]

इसमें कोई संदेह नहीं है कि परमेश्वर कई दलों का उपयोग पैसों की याचना के लिए कर रहा है। परंतु मुझे लगता है कि वे बहुत कुछ खो रहे हैं। और एक बेहतर तरीका है। "विश्वास का सच्चा जीवन सर्वोच्च वास्तविकता है। परमेश्वर उसमें प्रसन्न होता है और उसके द्वारा महिमा पाता है। इस संपूर्ण संसार में ऐसा कुछ नहीं जो उसे विश्वास के जीवन के समान संतुष्ट करे और महिमा प्रदान करे।"[82]

हडसन टेलर के शब्द स्मरण करने योग्य हैं:

> गलत इरादे से गलत तरीके से रखा और दिया गया पैसा, दोनों का बहुत डर रखना चाहिए। प्रभु हमें जितना कम–से–कम देने का चुनाव करता है, उतना ही हम रख सकते हैं, परंतु हम असमर्पित या अपवित्र पैसा बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम इस बात का ध्यान रखें कि हम परमेश्वर को अपनी आंखों के सामने रखें; हम उसके मार्गों में चलें, और हर छोटी–बड़ी बात में उसे प्रसन्न करने और महिमा देने का प्रयास करें। उस पर निर्भर रहें, परमेश्वर का काम जो परमेश्वर के तरीके से किया जाता है, उसे कभी परमेश्वर के प्रयोजनों की कमी नहीं होती।

कॉरी टेन बूम ने कहा, "मैं संसारिक मनुष्यों के दरवाजे पर याचक बनने के बजाय धनी स्वर्गीय पिता की विश्वास करने वाली संतान बनना पंसद करूंगी।" किसी और ने इस प्रकार कहा है: "राजा के बेटे शैतान के याचकों के समान आचरण नहीं करते।"

अध्याय - 48

यीशु के लिए आवेशी बनें

आवेशी या उत्साही व्यक्ति वह है जो दूसरे व्यक्ति या काम के निमित्त उत्साहपूर्ण रूप से समर्पित होता है। वह उसे सुनने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ अपनी धुन के विषय में बोलता है। इसी केंद्र बिंदू के चारों ओर जीवन परिक्रमा करता है। अतिउत्साही लोग भिन्न होते हैं। वे साधारण सांचे में नहीं समाते। वे अलग ढोलवादक की धुन पर कुछ करते हैं। लोग सोचते हैं कि वे मानसिक रूप से विक्षिप्त हैं, परंतु यह बात उन्हें रोक नहीं सकती। उन्हें किसी की प्रशंसा या आरोप की परवाह नहीं होती।

मसीही व्यक्ति को कौनसी बात उत्साही व्यक्ति या जोशीला बनाती है? किसी अप्रत्याशित क्षण में दो बड़ी सच्चाईयां उसके प्राण के सामने प्रगट होती हैं। वह इस एहसास से अभिभूत होता है कि जो कलवरी के क्रूस पर मर गया वह सनातन परमेश्वर, आकाश और पृथ्वी का सृजनहार था। दूसरा चौका देने वाला प्रकटीकरण जो उसे जकड़ लेता है, वह यह है कि पुत्र परमेश्वर उस पापी के लिए मर गया। जीवन पहले जैसा नहीं हो सकता। वस्तुतः वह कहता है:

मैंने एक दर्शन देखा है, और मैं खुद के लिए नहीं जी सकता।
जब तक मैं अपना सर्वस्व नहीं दे देता तब तक जीवन निरर्थक से भी बुरा है।

प्रभु यीशु उत्साही व्यक्ति थे। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा है, जब उसने सर्राफों को मंदिर के आंगनों को अपवित्र करते देखा, तब वह परमेश्वर के प्रति आवेश से भर गया।

डब्ल्यू. मॅकिन्टॉश मॅके उद्धारकर्ता के आवेश या उत्साह के विषय में विस्तारपूर्वक लिखते हैं:

> वह अपने काम में इतना उत्साही है कि अक्सर उसके पास खाने के लिए भी समय नहीं होता था, और एक बार उसकी मां और भाई उसे घर ले जाना चाहते थे क्योंकि उन्होंने सोचा कि वह "अपना मानसिक संतुलन खो रहा है।" उन्होंने कहा, *"उसका चित्त ठिकाने नहीं है।"*
>
> परंतु यीशु ही मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति था, उसके भाई नहीं। परंतु प्रचार में उत्साह एक बात होती है जिसके बिना आप कोई उन्नति नहीं कर सकते। इतिहास उत्साही–आवेशी लोगों

> द्वारा लिखा गया है। समय के पर्वत की सभी चोटियां ज्वालामुखी से भरी हैं। वे एक समय उनके अंदर जलने वाली गुप्त आग से ऊंची उठती हैं।[83]

प्रेरित पौलुस उत्साही मनुष्य थे। लोगों ने उसे मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का आरोप लगाया। उसका *आत्मांगिकार* यह था: *"यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिए "* (2 कुरिन्थियों 5:13)। विश्वासी के रूप में उसके जीवन में अथक यात्रा, लगातार भूख, सताव, लूटमार, जहाज की तबाही, कैद, परीक्षाएं थीं जिसकी वजह से दूसरे पीछे हट जाते।

जॉन वेस्ली उत्साही व्यक्ति थे:

> उसने घोड़े की पीठ पर बैठकर चालीस वर्षों में 250,000 मीलों की, अर्थात् औसत प्रतिदिन 20 मील की यात्रा की; उसने 40,000 संदेश दिए, सैकड़ों पुस्तकों का प्रकाशन किया, वह दस भाषाएं जानता था। 83 वर्ष की उम्र में वह इसलिए नाराज़ हो गया क्योंकि आंखों को तकलीफ दिए बगैर वह दिन में 15 घंटों से अधिक नहीं लिख सकता था, 86 वर्ष की उम्र में उसे शर्म महसूस हो रही थी कि वह दिन में दो से अधिक बार प्रचार नहीं कर सकता था। उसने अपने रोजनामचे में यह शिकायत की है कि उसे लगातार सुबह के 5:30 तक बिस्तर में पड़े रहने की इच्छा होती है।

सी. टी. स्टड उत्साही व्यक्ति थे। उन्होंने लिखा, "कुछ लोग चर्च की घंटी की आवाज के दायरे में रहना चाहते हैं। मैं नर्क के आंगन में मुक्ति की दुकान खोलना चाहता हूं।" जिम इलियट का उत्साह संस्मणीय है। इस वचन पर मनन करते हुए उसके हृदय की धड़कन सुनें, *"वह अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है "*:

> क्या मैं दहनीय हूं? परमेश्वर मुझे "अन्य वस्तुओं" के ॲस्बेस्टॉस के भय से छुड़ाए। मुझे आत्मा के तेल से भिगो दे ताकि मैं जल उठूं। परंतु ज्वाला क्षणस्थायी होती है, अक्सर अल्पकालिक होती है। हे मेरे प्राण, क्या तू कुछ समय इसे सह नहीं सकता? मुझमें महान अल्पजीवी का आत्मा वास करता है, परमेश्वर के लिए जिसके उत्साह ने उसे ग्रसित कर दिया था। "हे परमेश्वर की ज्वाला, मुझे अपना ईंधन बना।"[84]

हमें उत्साही या आवेशी स्त्री पुरुष बनना चाहिए। जब हम इस बात को जानते हैं कि मसीह हमारा प्रभु है, वह हमारे लिए मर गया, और बाहर एक संसार है जो बिना किसी आशा के मर रहा है, तो हम आत्मसंतुष्ट कैसे रह सकते हैं?

लोग खेलकूद में और राजनैतिक जुलूसों में बेहद उत्साह दिखाते हैं। गाय के चमड़े से बनी हुई गेंद पर प्रतियोगिता करने वाले मनुष्यों की टीम को, पुरुषों की टीम को देखने के लिए वे गर्मी और ठंड़ को सहने के लिए विशाल क्रीडास्थल को भर देने हेतु अमर्याद कीमत चुकता करते हैं। या यदि कोई राजनैतिक जुलूस होता है, और जब उनके उम्मीदवार उनके सामने वायदे, खोखले वायदे करते हैं तो वे गला फाड़कर चिल्लाते हैं। यदि वे कुछ ही क्षणों के अप्रांसगिक और क्षणस्थायी गौरव के लिए इतना उत्साहित हो सकते हैं, तो हमें सनातन बातों के लिए कितना अधिक उत्साही होना चाहिए? मुझे कुछ वर्षों पहले केस्विक सम्मेलन में बिशप जॉन टायलर द्वारा कही गई बात पंसद आती है:

> जवानों, मसीह के लिए जितना अधिक जोशिले (आवेशी) बनना चाहते हैं बनें, क्योंकि यदि आप अपनी जवानी में और 20 वर्षों की उम्र में उत्साही नहीं हैं – तो क्या आप 40 वर्ष की उम्र में नीरस बनेंगे! आप बनेंगे, अवश्य बनेंगे! मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं, मैं मरने से पहले कब्र में ले जाने वाली स्थिर सतर्कता की तुलना में अति आवेशी होने के खतरे को अधिक पंसद करता हूं जो संभवतः गुमराह कर सकता है।[85]

मुझे विश्वास है कि बाइबल यदि सच है, और यदि छुटकारा इतना विलक्षण है, तो जो यीशु के दुराग्रही लोग हैं, तो वे ही सही हैं।

अध्याय – 49

लोगप्रसिद्धी से बचें

प्रभु के कार्य में सामान्य तौर पर लोग–प्रसिद्धी बुरी बात है। *"क्या तू अपने लिए बड़ाई खोज रहा है? मत खोज"* (यिर्मया 45:5)। मसीह ने ऐसा नहीं किया।

> परमेश्वर के पुत्र ने वे सारे वर्ष एक बढ़ई की दुकान पर क्यों खर्च किए? उसने रोम और एथेन्स और एलेक्झेंड्रिया को भेंट देकर विशाल विश्व–केंद्रों में व्याख्यान क्यों नहीं दिया? और उसने अपने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा बढ़ई के रूप में कहीं अधिक क्यों खर्च किया? लोगप्रसिद्धी के पीछे पागल जनसंचार के इस युग में हमारे छोटे कम्प्यूटरों पर उसका अर्थ नहीं निकलता, जबकि लोग सुर्खियों में और टेलीविजन पर आने के लिए सूर्य के नीचे कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। हमारा प्रभु पृथ्वी पर पूरी उम्र में, विश्वयात्री, विश्वविद्यालय के व्याख्याता के रूप में आया होता। सोचें कि समाचार माध्यमों ने उसके लिए क्या किया होता! इसके बजाय, जब उसने आश्चर्यकर्म किया, तब उसने कहा, "उसके विषय में मत बताओ।" उसके भाइयों ने उससे बिनती की कि वह जंगल के रास्ते और मुख्य मार्ग से निकल जाए। उसे एक उत्तम अखबार के प्रतिनिधि की ज़रूरत थी। उसने चमत्कार किए और उनका विज्ञापन नहीं दिया। आज हम विज्ञापन देते हैं, परंतु चमत्कार नहीं कर सकते (वॅन्स हॅवनर)।

> जब सामर्थ को एक 'बड़े सौदे' के रूप में देखा जाता है, तब हमने जो कुछ किया है उसकी ओर हम ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। हम अपने नामपट्ट लगाते हैं और हम महत्वपूर्ण हैं यह दिखाने के उन्मत्त प्रयास में हमारे विज्ञापन अभियान चलाते हैं। हम एक बात स्वीकार नहीं कर सकते कि परमेश्वर का यह महान कार्य (और हमारा स्वयं का) अनदेखा रह जाए (रिचर्ड फोस्टर)।

अपनी पुस्तक *क्राईस्ट एण्ड द मिडिया* में माल्कोम मगरिज ने यह प्रस्तावित किया है कि यदि मसीह आज जंगल की परीक्षा में से होकर गुज़रता, तो शैतान चौंथी परीक्षा लाता, अर्थात् राष्ट्रीय दूरदर्शन पर आना। *जीज़स, द मैन हू लिव्हज़* में वह लिखता है:

> मान लो यीशु ने, इस निश्चित ज्ञान से कि परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को इस बात का ध्यान रखने के लिए भेज देगा कि उसके साथ कुछ बुरा न हो खुद को मंदिर के एक ऊंचे कंगूरे से छलांग लगाकर गिरा दिया होता। तो इससे कितनी सनसनी फैल जाती! सारे अखबारों में सुर्खियां छपती, टीवी नेटवर्क पर कहानियां प्रसारित होती, हर कोई उस व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए यरूश्लेम जाता जिसने बिना किसी हानि के मंदिर की चोटी से छलांग लगाई थी। सब तरफ यीशु की मांग होती; एक तैयार अंतरराष्ट्रीय श्रोतागण उसके वचनों से लिपटा रहता; हेरोदेस दिलचस्पी लेता, पिलातुस भी, और शायद स्वयं सम्राट तिबेरियस। यह सबकुछ यीशु को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं – बिल्कुल नहीं, परंतु यह निश्चित करने के लिए कि केवल गलील में उसका अनुसरण करने वाले निम्न वर्ग के लोगों को सुसमाचार पहुंचाने के बजाय, उसके वचन महान रोमी साम्राज्य में गूंज उठें।[86]

सी. ए. कोट्स प्रभु के कार्य में लोकप्रसिद्धी के खतरे के विरोध में चेतावनी देते हैं:

> जिस क्षण हम खुद को प्रकट करते हैं, हम गलत होते हैं और सेवा के वर्तमान गुण से बेमेल हो जाते हैं। प्रभु लोक प्रसिद्धी से पीछे हटता रहा; वह अत्यंत संवेदनशील होती है क्योंकि हम जो स्वाभाविक तौर पर हैं, उसके वह बिल्कुल विपरीत होती है। हमें स्वाभाविक रूप से लोकप्रसिद्धी पसंद है, परंतु प्रभु ने मरकुस के सुसमाचार में 5 या 6 अवसरों पर उन लोगों को जिन्होंने चंगाई प्राप्त की थी, स्पष्ट रूप से आदेश दिया कि वे उस विषय में न बोलें। हमें जो सेवा के छोटे अवसर दिए गए हैं उनसे हमें संतुष्ट रहना है, और थोड़ी भी लोकप्रसिद्धी की चाह नहीं रखना है। लोक प्रसिद्धी अत्यंत हानिकारक चीज़ है; यदि प्रभु वह देता है, जैसा वह कभी–कभी करता है, तो उसके लिए बहुत अनुग्रह की ज़रूरत है। लोक प्रसिद्धी का प्रमाण जितना अधिक होगा, उतनी ही गुमनामी में रहने की इच्छा बनाए रखना सेवक के लिए आवश्यक है – वह छोटा जहाज़ नज़र से दूर रहे – उसका काम करना और उस विषय में न बोलना या हमारे विषय में चर्चा होना। सच्चा सेवक अपना काम करता है और नहीं चाहता कि कोई उस विषय में बोले; फिर भी वह उसमें आगे बढ़ना चाहता है।[87]

यह देखना दिलचस्प है कि डर्बी की कब्र पर ये शब्द लिखे हुए हैं *"अज्ञात, फिर भी सुप्रसिद्ध।"* यह वही है जिसने कहा, "यह परमेश्वर का काम है। मनुष्य को छिपे रहना चाहिए और परमेश्वर को महिमा मिलना चाहिए। प्रभु की बातों में लोकप्रसिद्धी अच्छी नहीं है।"

यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने लोकप्रसिद्धी की खोज नहीं की। उसने किसी भी प्रकार की महानता को स्वीकार करने से इन्कार किया। वह मसीह के जूतों के बंध बांधने योग्य नहीं था। वह केवल जंगल में पुकारने वाले की आवाज़ थी। प्रेरितों ने ऐसा नहीं किया।

अपने प्रभु की उपस्थिति में, उन्होंने खुद को निम्न वर्ग के अनाड़ी और गलती करने वाले शिक्षार्थियों के रूप में देखा। पौलुस ने कहा, *"परंतु ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।"* (गलातियों 6:14)।

लोकप्रसिद्धी गलत व्यक्ति पर रोशनी डालती है। परमेश्वर का आदेश यह है कि उद्धारकर्ता को सब बातों में प्रमुखता मिले। केवल वही चर्चा या लोकप्रियता के योग्य है। केवल उसी के आगे हर

एक घुटना झुके और हर जीभ अंगीकार करे कि वही प्रभु है। लोकप्रियता अन्य सेवकों में ईर्ष्या उत्पन्न करती है। एक के श्रेष्ठ बनने की, आत्माओं के बचाए जाने में, सभागार के भर जाने में और पैसे की कटनी काटने में सेवक एक दूसरे से बढ़कर होने की कोशिश करते हैं। परमेश्वर अपनी महिमा किसी के साथ नहीं बांटेगा (यशायाह 42:8)। बल्कि वह मानव गौरव के अहंकार को कलंकित करेगा (यशायाह 23:9)। जो शिष्य सुर्खियों की लालच करता है, खुद को लज्जित और अपमानित करता है। लोकप्रसिद्धी व्यक्ति के जीवन में शैतान के आक्रमण का मार्ग खोल देती है।

> जब व्यक्ति या उसका काम असाधारण हो जाता है, तब हमेशा बहुत बड़ा खतरा मंडराने लगता है। उसे यकीन कर लेना चाहिए कि स्वयं प्रभु यीशु मसीह को छोड़ किसी और वस्तु या व्यक्ति पर जब ध्यान दिया जाता है, तब शैतान का लक्ष्य पूरा होता है। काम को अत्यंत संभवनीय सरलता से आरंभ किया जा सकता है, परंतु काम करने वाले की ओर से पवित्र जागरूकता और आत्मिकता के अभाव में वह स्वयं या उसके काम के परिणामों पर व्यापक तौर पर ध्यान दिया जाता है और वह शैतान के जाल में फंस सकता है। शैतान का मुख्य और अनावृत्त उद्देश्य प्रभु यीशु को अनादर देना है। और यदि वह ऐसा मसीही सेवा के द्वारा कर पाया, तो उसने उस समय के लिए सबसे बड़ी विजय हासिल कर ली है (सी एच मैकिन्टॉश)।

सत्य को बढ़ा–चढ़ा कर कहने और अतिरंजित दावे करने का मोह व्यक्ति को होता है।

> *मुझे सादगीपूर्ण क्षेत्र में सेवा करने दें;*
> *मैं इसके अलावा और कुछ नहीं चाहता,*
> *यदि परमेश्वर को महिमा मिलती है,*
> *तो उस छोटे से स्थान को भरने से मैं संतुष्ट हूं*
>
> *(अज्ञात)।*

चार्ल्स वेस्ली की प्रार्थना हमारी प्रार्थना भी होनी चाहिए।

> *कभी संसार को बीच में न आने दें।*
> *बीच में बड़ी खाई बनाओ।*
> *मुझे छोटा और अज्ञात बने रहने दो।*
> *केवल परमेश्वर द्वारा बहुमूल्य माना गया और प्रिय।*

अध्याय - 50

स्थानीय मण्डली के विशेषाधिकार और जिम्मेदारियां

विशेषाधिकार

मसीही जीवन की अपूर्व विशेषताओं में से एक है स्थानीय मण्डली में संगति का विशेषाधिकार। उसके जैसी दूसरी कोई बात नहीं है। कोई खेमा या बिरादरी उसके साथ प्रतियोगिता नहीं कर सकता। पवित्र जनों की संगति मानवजाति के लिए सबसे निकट और सबसे अनमोल रिश्तों में से एक है। उसे एक बड़ी किंमत देकर हमारे लिए खरीदा गया है, यह उन चार मुख्य उद्देश्यों में से एक है जो विश्वासियों को इकट्ठा करते हैं – प्रेरितों की शिक्षा, सहभागिता, रोटी तोड़ना, और प्रार्थना (प्रेरितों के काम 2:42)।

जब परमेश्वर के लोग इन उद्देश्यों के लिए इकट्ठा होते हैं, तब उन्हें प्रभु यीशु मसीह की प्रतिज्ञात उपस्थिति का आश्वासन होता है (मत्ती 18:20)। यह सच है कि वह हमेशा अपनों के साथ होता है, यह भी सच है कि एक विशेष अर्थ से वह बहुत निकट आता है जब विश्वासी उसके नाम में इकट्ठा होते हैं। हम यह सच्चाई विश्वास से ग्रहण करते हैं।

स्थानीय कलीसिया की सभाओं में, हम हमारे अस्तित्व के मुख्य कारणों में से एक को पूरा करते हैं – परमेश्वर की आराधना। कौन वर्णन कर सकता है कि कैसे "मधुर वे क्षण होते हैं जो आशीष में, हम क्रूस पर मनन करते हुए बिताते हैं, पापियों के मरने वाले मित्र से जीवन और स्वास्थ्य और शांति पाते हैं?" या कौन पूर्ण रूप से संपूर्ण अनंतकाल में गूंजने वाले गीत के गाने का रोमांच समझ सकता है, "योग्य है वह मेम्ना जो वध किया गया था?" स्थानीय मण्डली में हम वचन में दृढ़ होते हैं जिसे प्रेरितों के काम 2:42 में प्रेरितों की शिक्षा कहा गया है। मैं परमेश्वर के जनों के लिए प्रभु को कैसे धन्यवाद देता हूं जो बाइबल की मौखिक प्रेरणा पर दृढ़ खड़े रहे, जिन्होंने हमें वचन समझाया, और प्रत्येक बात को पवित्र शास्त्र से जाचंना सिखाया। वह मण्डली मेरी बाइबल शाला और सेमिनरी थी।

कुछ लोग कहते हैं, "कलीसिया मेरी मां थी।" मैं जानता हूं कि वे क्या कहना चाहते हैं। जिस प्रकार प्रारंभिक विश्वासी निरंतर प्रार्थना में लगे रहे, उसी तरह हम सामूहिक प्रार्थना के अभ्यास को मूल्यवान समझने लगते हैं। प्रार्थना सभा में, हम सीखते हैं कि प्रार्थना कैसे की जाती है। हम अपनी प्रार्थनाओं के क्षेत्र का विस्तार करते हैं। और जब उत्तर आता है तब हम एक साथ आनंद मनाते हैं।

स्थानीय कलीसिया हमें सेवा का विशेष लाभ प्रदान करती है, चाहे संडेस्कूल की कक्षा में हो, पर्चे बांटने में, सुसमाचार सभा में, या लोगों को भेंट देने में। सामूहिक परिश्रम से मित्रता में गहराई आती है। परमेश्वर उसका उपयोग हमारे चरित्र के ऊबड़–खाबड़ स्थानों को चमकाने के लिए और हमें अधिकाधिक उसके स्वरूप में बदलने के लिए करता है। अक्सर सिखाया जाता है कि देना एक कर्तव्य है। उसे विशेषाधिकार क्यों न समझा जाए? जब हम देते हैं, हम प्रभु को देते हैं। जो हम देते हैं वह दूसरों के प्रति आशीष में बहुगुणित हो जाता है और उसका प्रतिफल हमें मिलता है। स्थानीय कलीसिया के वरदान पृथ्वी के दूर कोनों को सुसमाचार के द्वारा प्रभावित कर सकते हैं। यह अनंतकाल के लिए निवेश है। स्थानीय मण्डली हमें एक परिवार में ढालती है जो ज़रूरत के समय, दुख, परीक्षा, या त्रासदी के समय हमारी सेवा करती है। इस संसार में मैं और किसी बात को नहीं जानता जो उसके तुल्य है।

जिम्मेदारियां

जहां कहीं विशेषाधिकार होते हैं, वहां हमें जिम्मेदारियों से भी अवगत होना चाहिए। एक फ्रेंच कहावत है, *नोब्लेस ओब्लाइज।* उसका अर्थ है महानता के कर्तव्य होते हैं। यह स्थानीय कलीसिया में हमारे स्थान के विषय में सच है। पृथ्वी पर परमेश्वर के शिष्टजनों के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम उसके बच्चों के रूप में जीवन बिताएं और जैसी आज्ञा उसने हमें दी है उसके अनुसार करें। मैं स्थानीय मण्डली में हमारी जिम्मेदारियां क्या हैं इसकी सूची देना चाहूंगा।

यह सूची सांकेतिक है, परंतु संपूर्ण नहीं। हमें पवित्र जनों से प्रेम करना है और उनके लिए प्रार्थना करना है। कुछ विश्वासी मण्डली की निर्देशिका लेते हैं और प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। यह अत्यंत नेक आदत है, जिसका अनुकरण करना चाहिए। हमें सभी सभाओं में विश्वासयोग्यता के साथ उपस्थित रहना चाहिए। जब हम वहां नहीं होते, तब प्रभु हमारी कमी महसूस करता है और उसके साथ होने के अत्यंत श्रेष्ठ अधिकार से हम वंचित रह जाते हैं। अनियमित उपस्थिति कमज़ोर विश्वासियों के लिए गलत उदाहरण प्रस्तुत करती है जो उनकी विश्वसनीयता के अभाव के लिए बहाना ढूंढने उत्सुक रहते है।

हमें प्राचीनों के अधीन रहना चाहिए जिन्हें हमारे लिए लेखा देना होगा। *"अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।"* (इब्रानियों 13:17)।

हम हमारे आत्मिक वरदानों का उपयोग करने के लिए जिम्मेदार हैं। जिस प्रकार मानव शरीर का स्वास्थ्य व्यक्तिगत अंगों के उचित कार्यों पर निर्भर रहता है, उसी प्रकार स्थानीय संगति आंशिक रूप से सदस्यों पर निर्भर रहती है जो अपने कर्तव्य पूरे करते हैं। व्यक्तिगत पवित्रता एक बड़ी जिम्मेदारी

है। जो शरीर के एक हिस्से को प्रभावित करता है वह पूरे शरीर को प्रभावित करता है। जब पाप अंगीकार नहीं किया जाता और उसे त्यागा नहीं जाता, तब वह कलीसिया में आशीष के प्रवाह को रोक लेता है। हमें मेल के बन्ध में आत्मा की एकता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। जब कभी हमें आलोचना के अपने वरदान का उपयोग करने का मोह होता है, तब हमें अपने उस वरदान को दफन कर देना है। बल्कि हमें ऐसी सहभागिता के विषय में सकारात्मक और उत्साही बनना है जो संसार के समक्ष मसीह की देह का नमूना प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

मण्डली की आर्थिक ज़रूरतों में और पूर्णकालीन सेवकों की आर्थिक संगति में भाग लेना विशेषाधिकार है और ज़िम्मेदारी भी। यह आज भी सच है कि लेने से देना धन्य है। परस्पर सहायता, प्रोत्साहन, उन्नति आदि मार्गों से हम एक दूसरे की सेवा कर सकते हैं। इन मार्गों में हम अपनी संगी विश्वासियों के पांव धो सकते हैं, जैसा हमारे प्रभु ने सिखाया। आतिथ्य की सेवकाई में भाग लेना स्वस्थ उन्नतिप्रद मण्डली का चिन्ह् है। मसीही प्रेम का यह व्यावहारिक प्रदर्शन अक्सर प्रवचन से भी प्रभावी सिद्ध होता है। गिरजाघर के रखरखाव के व्यावहारिक कार्य में भाग लेना नीरस काम लग सकता है और विशेष करके आत्मिक कार्य नहीं है, परंतु यदि उसे प्रभु के लिए किया जाए, तो वह उतना ही आत्मिक है जितना कि सुसमाचार प्रचार करना और वचन की शिक्षा देना।

इस विषय में कोई संदेह नहीं है। हम पृथ्वी पर सबसे अधिक गौरवान्वित लोग हैं। प्रभु यीशु के सच्चे शिष्य होने के लिए यह आवश्यक है कि हम उन ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करें जो स्थानीय मण्डली में हमारी सहभागिता से संबंध रखती हैं।

अध्याय - 51

कलीसिया (मण्डली) रोपन

होनोलूलू के होटल के आंगन में, मैंने मेरा पहला बरगद का पेड़ देखा। जैसे–जैसे इस पेड़ की डालियां बढ़ती जाती हैं, वैसे–वैसे वे अपनी टहनियां नीचे ज़मीन की ओर भेजती हैं जो जड़ पकड़ती हैं, और उनसे दूसरा तना बनता है। मैंने हमेशा यह महसूस किया है कि यह पेड़ आदर्श कलीसियाई उन्नति का दृष्टांत है। मण्डलियों को जिस तरह बहुगुणित होना चाहिए, उसकी यह तस्वीर पेश करता है। जैसे–जैसे स्थानीय संगतियां बढ़ती जाती हैं, उन्हें मानव टहनियों को भेजना है ताकि वे पड़ोस के क्षेत्रों में जड़ पकड़ें और नई मण्डलियों को तैयार करें।

यह आदर्श है, परंतु दुख की बात यह है कि हम आदर्श संसार में नहीं रहते। सामान्यतः अगुवे कलीसिया रोपन की चर्चा करते हैं, परंतु जब कभी वह जीवित संभावना बनती है, तब वे उसके प्रति स्वाभाविक विरोध प्रकट करते हैं। वे इस बात के साठ उत्तम रीति से अभ्यास किए हुए कारण बताते हैं कि क्यों उनके विशिष्ट मामलों में, वह इष्ट विकल्प नहीं है, या क्यों समय नहीं आया है। वे यथास्थिति में देखना नहीं चाहते जब सबकुछ इतना सुचारू रूप से चलता है। जितनी सहायता वे पा सकते हैं उस सब की उन्हें आवश्यकता होती है। नए कार्य के लिए पर्याप्त योग्यता प्राप्त अगुवे नहीं है। इस कार्य के लिए अलग होना घरेलू कलीसिया के लिए आर्थिक कर्तव्यों को पूरा करना मुश्किल कर देगा। नए कार्य में बच्चे और जवान लोगों को उनके अपनी आयु समूहों के साथ संगति करने के अवसर नहीं मिलेंगे, जैसा कि बड़े कार्य में उन्हें मिल पाता। अगुवे इस बात से सहमत होते हैं कि वे नए कार्य को किसी दिन प्रोत्साहन देंगे – परंतु अभी नहीं।

अन्य सुसमाचारीय कलीसियाएं इन विचारों से नहीं रुकती, और वे स्थिर उन्नति अनुभव करती हैं। अवश्य ही पंथ या सम्प्रदाय इस रूढ़िगत बुद्धि से रुक जाने से इन्कार नहीं करते, और वे गिरोह के उपद्रवी लोगों के समान आगे बढ़ते हैं।

यदि हम इस अभियोग से बचना चाहते हैं, "बिना फलदायकता के विश्वासयोग्यता" या "बढ़ोत्तरी के बगैर सत्य," तो हमें हमारी दुविधा की नहीं सुनना है, परंतु हमारी स्वाभाविक विमुखता को त्यागना है और परमेश्वर के सामने संकल्प करना है कि हम कलीसिया रोपन की सेवकाई के लिए खुद को समर्पित करेंगे, फिर चाहे उसके लिए जो कीमत चुकनी पड़े।

नई मण्डली का जन्म कैसे होता है? उसका आरंभ परमेश्वर द्वारा भेजे गए दर्शन से होता है जो एक या अनेक विश्वासियों के हृदय पर रखा जाता है। वहां ऐसा बोझ होना चाहिए जो हटेगा नहीं, वहां लगातार यह एहसास होगा कि परमेश्वर अगुवाई कर रहा है। पवित्र आत्मा मन में विचार बोता है, और उसके लोगों के हृदयों में उसका उत्तर देने वाली इच्छा उत्पन्न करता है।

दर्शन प्रार्थना में डुबा हुआ होना चाहिए। इस तरह से सही निर्णय लेने की हमारी अयोग्यता को और उसकी बुद्धि पर हमारी पूर्ण निर्भरता को हम कबूल करते हैं। आखिरकार, मसीह मण्डली का सिर है, और केवल सिर के पास निर्णय लेने का अधिकार है। जब हम प्रार्थना करते हैं, तब दर्शन और स्पष्ट होता जाता है। आरंभ में जो साधारण बोझ था वह धीरे–धीरे स्थान, कार्यक्रम और नेतृत्व के विषय में स्पष्ट होता जाता है।

मज़बूत आत्मिक अगुवे होने चाहिए। उसके बिना कार्य प्रारंभिक अवस्था में ही विफल होने की संभावना होती है। जिसे कलीसिया रोपन टीम कहा जाता है उसका होना वांछनीय है – कम–से–कम दो या तीन दंपत्ति। केवल एक व्यक्ति के प्रयास या अकेले काम करने के अच्छे परिणाम नहीं देखे गए हैं। प्रभु यीशु ने 12 चेलों के साथ काम किया। पौलुस ने मण्डलियों का रोपन करते हुए कुछ लोगों की टीम के साथ यात्रा की। यह दैवीय नमूना दिखाई देता है। यदि विद्यमान मण्डली या मण्डलियों से अलग होकर काम करना है, तो कुशलता, प्रेम और एकजुटता के साथ आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है। अक्सर विद्यमान मण्डलियां उनके महत्वपूर्ण सदस्यों को जाते देख झिझक या अनिच्छा महसूस करते हैं। प्राचीनों को अक्सर यह डर होता है कि उनके सदस्यों की संख्या कम हो जाएगी। अगुवों के हृदय नये कार्य की ओर सहभागिता का दाहिना हाथ बढ़ाने के लिए प्रवृत्त हो इसके लिए प्रार्थनापूर्वक प्रभु की बाट जोहने की ज़रूरत है। कलीसिया रोपन टीम कुछ मूल विषयों पर सहमत होना चाहेगी और कुछ मौलिक नियमों को अपनाना चाहेगी। उदाहरण के तौर पर, वे विश्वास का बयान तैयार करेंगे। इसके अलावा, वे निम्नलिखित मौलिक नियमों का विचार करेंगे जिस पर एक टीम सहमत हुई थी:

1. मसीही विश्वास के मूलभूत सिद्धातों पर पूर्ण एकता होनी चाहिए। इन मौलिक सत्यों से किसी भी प्रकार से दूर होना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।
2. गौन विषयों पर मण्डली सहभागिता की सर्वसम्मति के अधीन रहेगी।
3. ज़रूरी नहीं कि कलीसिया रोपन टीम स्थायी रूप से अगुवों की भूमिका निभाए। वे कम–से–कम एक साल तक सेवा करेंगे। उस समय के अंत तक, मण्डली यह निश्चित करने के लिए इकट्ठा होगी कि परमेश्वर ने किन लोगों को प्राचीन बनने के लिए तैयार किया है। उसके बाद इन अगुवों को सार्वजनिक तौर पर मान्यता दी जाएगी और कलीसिया रोपन टीम विसर्जित की जाएगी।

4. जब मण्डली की संख्या 100 से 150 तक बढ़ेगी, तब दूसरे कार्य के निर्माण की ओर सकारात्मक कदम बढ़ाए जाएंगे।
5. अन्य मण्डलियों या कलीसियाओं से सदस्यों को अपनी मण्डली में लेकर कलीसिया को बढ़ाने का कोई प्रयास नहीं किया जाएगा। बल्कि कलीसिया का लक्ष्य होगा उद्धार न पाए हुओं को सुसमाचार सुनाना, उन्हें बदलते हुए, बपतिस्मा पाते हुए, शिष्य बनते हुए और सहभागिता में आते हुए देखना।

स्थान के विषय में निर्णय लिया जाना चाहिए। नये स्थानीय पड़ोसी आदर्श होते हैं, परंतु बेहतर होगा कि पहले से स्थापित सुसमाचारीय कलीसिया के सामने के आंगन में स्थान निर्धारित करना ठीक नहीं होगा। प्रारंभ में, मण्डली किसी घर में इकट्ठा हो सकती है। उसकी संख्या इतनी बढ़ जाती है कि घर में सभा लेना संभव नहीं होता, तब किराए के स्थान में चले जाएं या एक अच्छी–सी इमारत खरीद लें या उसका निर्माण करें। कभी–कभी उस क्षेत्र के नियम और गाड़ी पार्क करने के नियम घर में हो रही सभाओं में बाधा डालते हैं। अगुवों को सारे अच्छे–बुरे परिणामों का मूल्याकंन करना चाहिए। सभाओं का स्वरूप और क्रम तय करना सामान्य तौर पर अत्यंत आसान होता है। टीम आराधना की केंद्रीयता, सामूहिक प्रार्थना का महत्व, और झुंड के लिए ज़रूरी आत्मिक आहार पर विचार करेगी।

जिस प्रकार बालक के पैदा होने पर आनंद होता है, उसी प्रकार नई मण्डली की स्थापना के संबंध में गहरा उल्लास होता है। विश्वासी सहभागिता के नए उत्साह को, नई मण्डली को बढ़ते हुए देखने के लिए एक साथ परिश्रम करने की उमंग को और उन वरदानों का उपयोग करने के संतोष को अनुभव करते हैं जिसे बड़ी मण्डलियों में दबा दिया जाता है। जिस प्रकार बेटे और बेटियों के ब्याह होने और उनका अपना नया परिवार आरंभ करने पर मानव परिवार आनंद मनाता है, उसी तरह जब मण्डलियों को नए काम को 'जन्म देने' का और स्वतंत्र कलीसियाओं के रूप में काम करते हुए देखने का विशेषाधिकार प्राप्त होता है, तब मण्डलियों को आनंद मनाना चाहिए।

मण्डलियों का रोपन परमेश्वर की इच्छा है। धन्य हैं वे जो उसकी इच्छा पूरी करने हेतु उसके साथ काम करते हैं!

अध्याय - 52

सुसमाचार प्रचार द्वारा कलीसिया की उन्नति

कोई भी मण्डली जो संख्या में बढ़ना चाहती है, उसे इस वस्तुस्थिति को ध्यान में रखना है कि 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत नये विश्वासियों से पहले व्यक्तिगत विश्वासियों ने अपने प्रतिदिन के जीवनों के संदर्भों में, स्कूल में, कार्यस्थल पर या पड़ोस में संपर्क किया है। इससे सुसमाचार प्रचार की अन्य पद्धतियों का महत्व कम नहीं होता, परंतु इससे यह दिखाई देता है कि व्यक्तिगत, जीवनशैली का सुसमाचार बाकी सबसे ऊंचा स्थान रखता है।

हमें अचंभित नहीं होना चाहिए। कलीसिया के प्रारंभिक दिनों में विश्वास इसी तरह फैला। मसीहियों ने पुनरूथित उद्धारकर्ता के शब्दों को गंभीरता के साथ ग्रहण किया, *"... तुम मेरे गवाह बनोगे "* (प्रेरितों के काम 1:8ब)। वे *"वे सर्वत्र सुसमाचार सुनाते हुए फिरे"* (प्रेरितों के काम 8:4)। जगत में अन्य किसी भी रीति से कभी सुसमाचार प्रचार नहीं किया जाएगा।

हमें यह आम गलत धारणा त्यागना है कि विश्वासियों की एकमात्र ज़िम्मेदारी उद्धार न पाए हुओं को सभाओं में लाना है ताकि पासबान सुसमाचार सुना सकें और उन्हें मसीह के पास ला सकें। प्रत्येक विश्वासी को सुसमाचार प्रचारक का काम करना है। जिनसे उसने संपर्क किया है उन्हें सुसमाचार का मार्ग दिखाने की योग्यता उसमें होनी चाहिए। इस प्रकार जब वह देखता है कि पवित्र आत्मा ने पूर्ण रूप से उन्हें पाप के विषय में कायल किया है, तब उन लोगों की स्वर्ग की एकमात्र आशा के रूप में मसीह की ओर अगुवाई करने की योग्यता उसमें होनी चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारा सुसमाचार प्रचार स्थानीय मण्डली से जुड़ा न हो। हमारा मुख्य लक्ष्य लोगों को मसीह के करीब आते देखना है, परंतु हम चाहेंगे कि वे संगति में जुड़ जाएं। हम उद्धार न पाए हुओं को सभाओं में इसलिए लाते हैं ताकि जो गवाही हमने पहले ही उन्हें दी है, उसकी पुष्टि हो। या हमने पहले ही मसीह की ओर संकेत किया है, तो हम उन्हें मण्डली में इसलिए लाते हैं ताकि महान आदेश के अनुसार उन्हें शिष्य बनता हुआ देख सकें।

सुसमाचारीय मण्डली प्रार्थना करने वाली मण्डली है। आरंभ करने का स्थान प्रार्थना में है। यहीं काम किया जाता है। पवित्र जनों को अपने खोए हुए रिश्तेदारों, मित्रों और पड़ोसियों के लिए गिड़गिड़ाकर मध्यस्थी करने के विषय में परमेश्वर के सामने अति व्याकुल होना चाहिए। कोई भी कार्यक्रम या कोई भी हथकंडा कभी प्रार्थना का स्थान नहीं ले सकता। हम आत्मिक युद्ध में हैं, और उसे आत्मिक हथियारों के साथ लड़ा जाना चाहिए।

सुसमाचारीय मण्डली पवित्र मण्डली है। प्रभावी गवाह को पवित्र जीवनों से अलग नहीं किया जा सकता। वृक्ष जो फल लाता है वह उसी वृक्ष की दशा का प्रतिबिंब है। स्वस्थ वृक्ष अच्छा फल लाता है। प्रभु के पात्रों को ढोने वालों को पवित्र होना चाहिए।

सुसमाचारीय मण्डली प्रेमी मण्डली है। उसमें गर्माहट है, स्वीकारणीय वातावरण है। वह अजनबियों की ओर, जो आहत हैं, जिनके पास ज़रूरतें हैं, उनकी ओर हाथ बढ़ाती है। वह लोगों का ध्यान रखती है। वह आतिथ्य के द्वारा अपना प्रेम प्रगट करती है। वह बर्हिगामी होती है, अन्तर्वर्धित नहीं। वह निगरानी करती है।

सुसमाचारीय मण्डली एकजुट मण्डली होती है। आत्माओं का उद्धार पाते हुए देखने हेतु पवित्र जन उत्साह के साथ एकजुट होते हैं। वे सामान्य, प्रार्थना प्रत्याशा में एकजुट होते हैं। जब लोग उद्धार पाते हैं, तब वे साझा आनंद में एकजुट होते हैं।

हम ने कहा कि विश्वासीयों की प्रतिदिन की गवाही के द्वारा नए लोगों से संपर्क करना प्रभावशाली तरीका है। परंतु और कई तरीके है जिनका यहा उल्लेख करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए घर घर जाकर भेंट करना। यह तरीका यकीनन किसी भी समाज में कलीसिया के अस्तित्व की जानकारी देता है। इसके अलावा गृह बाइबल अध्ययन है जो उन लोगों के लिए सैधांतिक बुनियाद डालने के लिए बडा ही उपयोग किया गया है जो बाद में प्रभु पर विश्वास करते है। एक और तरीका स्कुलों और कॉलेजों में सुसमाचार प्रचार का कार्य है जो प्रभु और कलीसिया के लिए जवानों तक पहुंचने का अच्छा मार्ग है। अन्य एक और तरीका साहित्य सेवा है; इसकी संभावनाएं बहुत अधिक हैं (देखें परिशिष्ट ग)। विशेष सुसमाचारीय सभाएं होती हैं जिसमें अभिषिक्त सुसमाचार प्रचारक बुलाए जाते हैं। कुछ स्थानों में ये अद्‌भुत रीति से उपयोग किए गए हैं, परंतु दुख की बात यह है कि कुछ स्थानों में वे प्रभावरहित रहे हैं। मण्डली स्थानीय समाचार पत्रों में अपनी सभाओं का विज्ञापन दे सकती हैं। परमेश्वर ने छिटपुट व्यक्तियों को इन सभाओं की ओर ले जाने के लिए इस तरीके का उपयोग किया है। उसके बाद, अर्थात् विशेष कार्यक्रम, फिल्म और संगीत कार्यक्रम हैं।

पहली बार मण्डली में उपस्थित होने का स्वाभाविक विरोध दूर करने के लिए, कुछ संगतियों ने कम और औपचारिक पद्धतियों का सफलतापूर्वक उपयोग किया हैः पिकनिक, बेसबॉल या वॉलीबाल के खेल, घरों में आतिथ्य। इनमें उपस्थित रहने पर लोग स्थानीय मसीहियों के साथ पहचान बनाते हैं और उन्हें और आसानी से सभाओं में आने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

जिन लोगों से विश्वासियों का संपर्क है उन लोगों को मण्डली की सभाओं में लाने के विषय में उत्साहित होने के लिए, उन्हें यह आश्वासन दिया जाना चाहिए कि सेवकाई ऊंचे आत्मिक दर्जे की

होगी। इस कारण प्राचीनों को उन लोगों के लिए प्रभु के सामने बहुत समय बिताना होगा जिन्हें वे वचन की सेवकाई प्रदान करते हैं। मसीही लोग अपने मित्रों को लड़खड़ाता हुआ, असम्बद्ध प्रवचन सुनने के लिए नहीं लाएंगे। वे यकीन करना चाहते हैं कि सुसमाचार प्रचार की एक *यथार्थ* प्रस्तुति होगी और उन लोगों के लिए ठोस शिक्षा होगी जो पहले से विश्वासी हैं।

क्या इसका अर्थ यह है कि वक्ता सेमिनरी में प्रशिक्षित पुरुष हो या जिन्होंने उच्च श्रेणी के शैक्षणिक प्रमाणपत्र पाए हैं? बिलकुल नहीं! बिना गहरी आत्मिकता के मात्र विद्वत्ता उबाऊ और नीरस होगी। घमंड फुलाता है, प्रेम उन्नति करता है। विद्वत्तापूर्ण संदेश दिमाग में पहुंचता है, परंतु हृदय में नहीं उतर पाता। आवश्यकता है पवित्र आत्मा से सामर्थ प्राप्त सेवकाई की, अभी अभिषिक्त सेवकाई की, ऐसी सेवकाई जो कायिलियत, पश्चाताप, परिवर्तन, और समर्पण उत्पन्न करती है। परमेश्वर अक्सर इस काम के लिए अनाड़ी और अप्रशिक्षित लोगों को उपयोग करता है, ताकि महिमा उसे मिले, मनुष्य को नहीं।

मण्डलियों के पास नियमित रूप से आत्माओं को बचते हुए देखने के अलावा बहुत कम दूसरी अच्छी बातें हैं। यह वैसा ही उल्हास उत्पन्न करती है जैसा अस्पताल के प्रसुति कक्ष में देखा जाता है। और यह ऐसी किसी भी मण्डली का अनुभव हो सकता है जो नये नियम के सुसमाचार प्रचार के लिए समर्पित है। परंतु बिना किसी परिवर्तन को देखे सालों–साल आगे बढ़ते जाने का पवित्र भय हमारे मनों में होना चाहिए। और हमें नये तरीकों का उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए जहां पुराने तरीके एकदम ही प्रभावरहित साबित हो रहे हैं। हम जीवन में जिस बात के पीछे जाते हैं वह हमें मिलता है। हम आत्माओं के पीछे जाएं।

अध्याय - 53

व्यक्तिगत रूप से शिष्य बनाना

पिछले अध्याय में, हमने आत्मा की अगुवाई में सुसमाचार के द्वारा कलीसिया की बढ़ौतरी के विषय में चर्चा की। अब प्रश्न है, "हम नए विश्वासियों के साथ क्या करने वाले हैं? आत्मिक परिपक्वता की ओर उनकी तरक्की को सुनिश्चित करने का उत्तम तरीका क्या है?"

सामान्य तरीका है नए विश्वासियों को मण्डली की सभी सभाओं में विश्वासयोग्यता के साथ भाग लेने और इस तरह से शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करें। परंतु इस पद्धति की कुछ अपनी कमियां हैं। यह अत्यंत धीमी है; इसे कई दिनों तक करते रहना पड़ता है। यह अधूरी है; यह निश्चित नहीं है कि सभी महत्वपूर्ण विषयों की शिक्षा दी जाएगी। यह नए विश्वासियों को यह नहीं सिखाता कि व्यावहारिक मसीही कार्य में कैसे सहभागी होना चाहिए; वह सब शिक्षाविषयक होता है। यीशु ने न केवल सिद्धान्त सिखाया; बल्कि वह शिष्यों को बाहर ले जाकर यह दिखाता था कि काम कैसे करना चाहिए।

जैसे ही किसी का उद्धार होता है, वैसे ही आत्मिक रूप से परिपक्व विश्वासी को उसे शिष्य बनाने की ज़िम्मेदारी स्वीकार करना चाहिए। यदि विश्वासी स्त्री या लड़की है, तो बड़ी बहन को शिक्षक बनना चाहिए (तीतुस 2:3–5 देखें)।

हर एक व्यक्ति के लिए घिसा–पिटा एक–सा कार्यक्रम का अनुसरण करने के बजाय, जो शिष्य बनाने का काम कर रहा है उसे व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए पवित्र आत्मा की ओर देखना चाहिए। फिर उसे स्वयं से पूछना है, "हमें कौनसे विषय सिखाने चाहिए, ताकि यह नया व्यक्ति अभिज्ञ और विकसित विश्वासी बन जाए?" नीचे नमूने के तौर पर एक सूची दी गई है: उद्धार का आश्वासन; सनातन सुरक्षा, बपतिस्मा, आराधना और प्रभुभोज, नियमित शांत समय, व्यक्तिगत पवित्रता, बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, मार्गदर्शन, वचन कंठस्थ करना, समय, गुणों, और पैसों के भण्डारी; व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार। और इस सबके साथ स्वयं पवित्र शास्त्र का एक तर्कसंगत, क्रमानुगत अध्ययन होना चाहिए।

यह महत्वपूर्ण है कि नये विश्वासियों के साथ साप्ताहिक तौर पर मुलाकात की जाए, यह मुलाकात 1 घंटें से अधिक न हो। यहां पर शिक्षक न केवल विश्वासी के बपतिस्मे के सत्य को उसे बताता है, बल्कि विश्वासी को प्रोत्साहन देता है कि वह आज्ञाकारिता के इस कदम को आगे बढ़ाए। यहां पर शिक्षक प्रभुभोज की आराधना या रोटी तोड़ने के विषय में समझाता है और उद्धारकर्ता के बिनती का पालन करने का अनुरोध करता है, *"यह मेरे स्मरण में किया करो।"* वह मसीह में जो बालक है उन्हें उसके साथ प्रार्थना करना सिखाता है। वह उन्हें दिखाता है कि उपलब्ध सहायता के आधार पर (टीका, बाइबल शब्दकोष और समीक्षा, आदि) बाइबल का अध्ययन कैसे करना चाहिए। वह उसके वाचनालय के लिए पुस्तकों का चयन करने हेतु उसका मार्गदर्शन करता है। प्रश्न उत्पन्न होने पर उनका उत्तर देता है। वह व्यक्तिगत समस्याओं में सहायता प्रदान करता है। वह उन्नति के प्रत्येक कदम की प्रशंसा करता है, और मसीही चरित्र के उन क्षेत्रों के संबंध में परामर्श देता है जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

जब अध्यापक गवाही देने के लिए बाहर जाता है, तो वह शिष्य को अपने साथ ले जाता है। जब वह बीमारों को भेंट देता है, तब वह शिष्य को अपने साथ लेता है। वह अपने घर के द्वारों को खोल देता है और मसीही विवाह, मसीही घर, बच्चों की उचित शिक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। जहां तक संभव है, वह अपने व्यक्तिगत जीवन को उसके साथ बांटता है जिसे वह प्रशिक्षण देने का प्रयास कर रहा है।

जो मण्डलियां अभी जोश में हैं, वे जानती हैं कि सभाओं में प्रत्येक नया विश्वासी जो प्रशिक्षण प्राप्त करता है उसके अतिरिक्त उसे व्यक्तिगत ध्यान देना महत्वपूर्ण है। यह महंगा है, परंतु प्रभावी है। यह तरीका प्रभु ने अपनाया, और इसलिए यह उत्तम होना चाहिए।

अध्याय - 54

नेतृत्व प्रशिक्षण

रिक बेलेस

कलीसिया के मिशन में सुसमाचार प्रचार महत्वपूर्ण तो है ही, साथ ही साथ यदि हम अपने दर्शन को आत्माओं के उद्धार से और ऊंचा नहीं उठाते, हमारा अंतिम लक्ष्य यह नहीं बनाते कि अविश्वासी विश्वासयोग्ता के साथ सभाओं में हिस्सा लें, तो हम संकुचित दृष्टि के दोषी हैं और अंततः आत्मिक रूप से कमज़ोर और निर्बल मण्डली की संभावना का हमें सामना करना पड़ेगा। यदि हम उस परमेश्वर का दर्शन बांटते हैं जिसने कहा है, *"मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा,"* तो हमें अपनी दृष्टि अपरिपक्व विश्वासियों के परिवर्तन पर लगानी होगी जिनमें कलीसिया के अगुवे की क्षमता है। वस्तुतः, मुख्य बात जो उसके जीवित भवन की अखंडता को सुरक्षित करती है, वह है प्रत्येक पीढ़ी में आत्मिक अगुवों को खड़ा करना, ऐसी कार्यनीति जिसमें स्वयं हमारा स्वामी व्यस्तता के साथ लगा हुआ था जब उसने यह पिछला बयान दिया।

यदि कलीसिया के अगुवों के लिए हम प्रभु यीशु के दर्शन में भागी होना चाहते हैं, तो हमें भी उसका तरीका अपनाना होगा, यदि हम सफल होने की आशा रखते हैं। और उसका तरीका था व्यक्तिगत शिष्यता – कुछ लोगों को उसके साथ रहने के लिए चुनना। यदि स्वयं उद्धारकर्ता ने साढ़े तीन वर्षों तक अखंड और व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने के द्वारा अपने लोगों को प्रशिक्षित किया, तो हम कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि प्रभावी अगुवे मात्र बाइबल कक्षाओं पर और पुलपिट की सेवकाई पर निर्भर रहकर तैयार किए जाएं?

प्रभु की कार्यनीति का एक उदाहरण पतरस के साथ उसके कार्य में देखा जा सकता है। उन बयानों और प्रश्नों का अध्ययन करें जो उसने पतरस की ओर संबोधित किए, और आपको पतरस और उसके प्रभु के बीच के व्यक्तिगत रिश्ते की झलक देखने मिलेगी। और आप उद्धारकर्ता को उसके शिष्य के जीवन में कार्य करते हुए देखेंगे – उसका सामना करते हुए, चुनौति देते हुए, प्रोत्साहन देते

हुए – एक अनाड़ी, अशिष्ट मछुआरे को परमेश्वर की झुण्ड के विश्वासयोग्य चरवाहे में बदलते हुए देखेंगे। हम दावा कर सकते हैं कि उद्धारकर्ता का तरीका अन्य ग्यारह शिष्यों से भिन्न नहीं था। जब प्रशिक्षण पूरा हो गया, तब उसने ऐसे पुरुषों को तैयार किया जिन्होंने, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बाद संसार को उलटपुलट कर दिया।

अर्थात, हमें हमारे अपने जीवनों में इस कार्यनीति का अनुसरण करने के आक्षेपों का विचार करना चाहिए। हमें ऐसा दिखाई देता है कि प्रशिक्षण संबंध में जितनी अधिक संख्या होगी, अंत में उसके लाभ उतने ही अधिक होंगे। अतः हम बड़ी कक्षाओं को सिखाना और हज़ारों को प्रचार करना अधिक पसंद करते हैं और एक ही समय में अधिक जीवनों को प्रभावित करने की आशा करते हैं। परंतु परिणाम अक्सर सैंकड़ों सतही मसीही तैयार हो जाते हैं। आप भीड़ को शिष्य नहीं बना सकते। फिर भी नियमित रूप से एक या दो मुख्य लोगों के साथ अपना समय बिताने के विकल्प पर जब हम विचार करते हैं, तब हम अपने मनों में सोचते हैं, "यह बर्बादी क्यों?" और हमारे प्रयासों को जनसमुदाय के सामने बिखेरना चाहते हैं। परंतु मज़बूत अगुवों के हाथों में विरासत छोड़ने का यह प्रभु का तरीका नहीं है।

हमारे प्रभु का तरीका अपनाने में दूसरी कठिनाई है पारदर्शिता की कीमत। हमारे पास हमारे शिष्य द्वारा यह पहचाने जाने का खतरा है जो कक्षा में या पुलपिट से कभी सच नहीं होगा। प्रभु उस घनिष्ठता से पीछे नहीं हटा, परंतु उसने अनुमति दी कि बारह पुरुष तीन वर्षों तक प्रतिदिन उसे देखते, सुनते और छूते थे। जब समय समाप्त हुआ, तब एक को छोड़ बाकी सभों ने दूसरों के लिए वही समान प्रेम पाया था जो उन्होंने उसमें देखा और अनुभव किया था।

इसके द्वारा यह सूचित नहीं किया जा रहा है कि विशेष वरदान प्राप्त और करश्मिाई लोग मात्र जनसमुदाय के प्रति सेवकाई के द्वारा मज़बूत प्रभाव नहीं डाल सकते। परंतु ऐसे लोग कम प्रतिशत में प्रभु की देह में हैं, और यह तरीका कलीसिया के अगुवों का मुख्य स्रोत हो, यह अवास्तविक और पवित्र शास्त्र के विपरीत है। इस पद्धति का परिणाम ऐसी कलीसिया में होगा जो एक व्यक्ति की सक्रिय सेवकाई के दौरान उन्नति करती है और उसके जाते ही मिट जाती है – उसके स्थान पर कार्य को आगे बढ़ाने हेतु विश्वासयोग्य लोगों के अभाव में। जाते समय प्रभु ने पतरस को जो शब्द कहे थे (यूहन्ना 21:15) और पौलुस ने तीमुथियुस को (2 तीमु. 2:2), उनसे इस परिस्थिति की तुलना करें।

प्रत्येक व्यक्ति को शिष्यता प्रदान करने हेतु विशेष वरदान प्राप्त या कैरिस्टमैटिक अगुवों को प्रभावी रहने की ज़रूरत नहीं होती। उसकी सफलता आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति पर निर्भर करती है जो परमेश्वर से, उसके वचन से और उसके लोगों से प्रेम करता है, और अपना जीवन दूसरों के लिए खोलने तैयार रहता है। यदि यह तरीका अपनाया जाए, तो कार्यनीति सरल है।

- बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के लिए अक्सर इकट्ठा हों।
- उदाहरण से सिखाएं। शिष्य नज़दीक से आपका धर्मी जीवन और लोगों के लिए आपका बोझ देखने पाए। यीशु ने यही किया।

- व्यावहारिक उदाहरण से सिखाएं। पवित्र जनों से भेंट करते समय और अविश्वासियों को गवाही देते समय अपने शिष्य को अपने साथ लें, और बाद में समझाएं कि आपने क्या किया और क्यों किया। यीशु ने ऐसा ही किया।
- चरित्र पर कार्य करें। प्रभु के विषय में सोचें कि वह पतरस को किस प्रकार उसकी आवेगशीलता और आत्म–विश्वास का स्मरण दिलाता है। क्या है जो आपके शिष्य को 'पवित्र और निर्दोष' इन विशेषणों को व्यवहारिक तौर पर लागू करने से रोकता है?

'उसे वचन में प्रोत्साहन और उपदेश दें, और उसके लिए प्रार्थना करें। यीशु ने वही किया।

यदि किसी के पास कलीसिया की उन्नति का दर्शन था, तो वह प्रभु यीशु मसीह था, जिसने खुद को उसके लिए दे दिया। यदि हमें संपूर्ण अर्थ से उसके साथ वह दर्शन बांटना है, अर्थात, आत्माओं को उद्धार पाते हुए देखने से आगे झुण्ड के अगुवे के रूप में खड़े होते हुए देखना है जो दूसरों को भी सिखा पाएंगे, तो हमें उसके तरीके को अपने तरीके के रूप में स्वीकार करना होगा। यदि स्वयं परमेश्वर के पुत्र को कुछ चंद विश्वासयोग्य लोगों पर अपना ध्यान एकाग्र करना आवश्यक लगा, तो हमें कितना लगना चाहिए।

अध्याय - 55

पैराचर्च संस्थाएं

पैराचर्च ऑर्गनायज़ेशन एक सेवकाई है जो कलीसियाओं के साथ साथ काम करती है। यह सामान्य तौर पर व्यापार निगम के रूप में संगठित होती है, बपतिस्मा और प्रभु भोज जैसे कार्यों में सहभागी नहीं होती। इन संस्थाओं के विषय में काफी चर्चा की गई है। क्या मसीही समाज में उसे स्थान है या परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए केवल कलीसिया ही परमेश्वर की एकमात्र अभिकर्ता है? शायद उचित तरीका इन कंपनियों के पक्ष में और विरोध में दोनों ही तर्कों पर विचार किया जाए।

पक्ष में

1 पैराचर्च ऑर्गनायज़ेशन्स उन कामों को करती हैं जिन्हें कलीसिया नहीं कर सकती, या करना चाहिए परंतु नहीं करतीं, उदाहरण के तौर पर, अनुवाद, प्रकाशन, रेडियो, टी. व्ही. प्रसारण, कैदखाने की सेवकाई, सुसमाचार प्रचार, शिष्य बनाना, सलाह देना, आदि। यह देखना मुश्किल है कि जो काम अब बाइबल सोसायटियां कर रही हैं, उन्हें स्थानीय संगतियां कैसे कर सकती हैं।

2. वे जनसंख्या के बड़े हिस्सों तक सुसमाचार लेकर पहुंच जाती हैं जिन्हें कलीसियाओं ने सुसमाचार नहीं सुनाया है। हम यह इन्कार नहीं कर सकते कि लाखों ने उनके द्वारा सुसमाचार सुना है।

3. पैराचर्च सेवकाइयां प्रभावी रूप से कई लोगों को सुसमाचार सुना सकती हैं जिन्हें कलीसिया ने रोक दिया है। वे अक्सर सुनाई देने वाले चूभते हुए बयान से बचने की कोशिश करते दिखाई देते हैं, "सभी कलीसियाओं को आपका पैसा चाहिए।"

4. मिशन, समाज सेवा, सुसमाचार प्रचार, और कलीसिया रोपन में पैराचर्च संस्थाओं ने मुख्य भूमिका ली है। प्रभु के कार्य के लिए उन्हें और उत्साह के लिए प्रेरित करते हुए, वे हर्ष के साथ कलीसियाओं की सेवा करते हैं।
5. जबकि संगठित कलीसिया को अक्सर उनके पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं को औपचारिक प्रशिक्षण देने की ज़रूरत होती है, पैराचर्च संस्थाएं आम विश्वासियों को प्रशिक्षण देती हैं और उन्हें काम में लगाती हैं।
6. वे उन्हें सेवकाई के अवसर प्रदान करती हैं जो मसीही विश्वासी स्थानीय कलीसियाओं में नहीं पाते। जिन मसीहियों को कलीसियाओं ने आलसी बनाकर क्षीण कर दिया है, वे अपनी आकांक्षाओं और गुणों के लिए स्थान पाते हैं।
7. वे कुछ लोगों को आदरयोग्य, वेतनभोगी नौकरी देते हैं। कई मामलों में, यह परिवार की मुख्य आमदनी होती है।
8. वे प्रभावी रूप से फल ला रहे हैं। परमेश्वर उन्हें आशीष दे रहा है। उदाहरण के तौर पर, गिडियन्स हज़ारों के उद्धार का लिखित प्रमाण दे सकते हैं जिन्होंने होटल में छोड़ दिए गए बाइबल के द्वारा उद्धार पाया।
9. कलीसियाएं मिशन से ज्यादा इमारतों पर ज़ोर देने की प्रवृत्ति रखती हैं। जो पैसा ईंटों और सिमेंट पर खर्च किया जाता है, उसे सुसमाचार के पर्चे बांटने में बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है।
10. कलीसियाएं अलचीली हैं, परिवर्तन का विरोध करती हैं। पैराचर्च संस्थाएं इस लचीलेपन के अभाव के लिए उत्तर हैं। यह तस्वीर का एक पक्ष है। अब हम इन पैराचर्च संस्थाओं के साथ जुड़ी हुई समस्याओं पर विचार करेंगे।

विरोध में

1. पैराचर्च संस्थाएं बाइबल आधारित नहीं हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में या नए नियम में वे कहीं दिखाई नहीं देतीं। कलीसिया विश्वास का प्रचार करने हेतु पृथ्वी पर परमेश्वर की एक इकाई है। जहां कहीं प्रेरित गए वहां उन्होंने कलीसियाओं का रोपन किया। जहां कहीं हम जाते हैं, वहां हम पैराचर्च संस्थाओं की स्थापना करते हैं।
2. स्त्री और पुरुषों के समय और गुण स्थानीय कलीसिया से भिन्न दिशा की ओर लग जाते हैं। प्रचारक, शिक्षक और अगुवें उनकी प्राथमिक सेवकाई से हटकर प्रशासकों की मेज के पीछे बैठा दिए जाते हैं।
3. स्थानीय कलीसिया से पैसा किसी और काम में लग जाता है, फिर भी ये संस्थाएं अपनी सहायता के लिए कलीसियाओं पर निर्भर रहती हैं।

4. पैराचर्च संस्था के साथ काम कर रहे लोग महान आदेश को पूरा नहीं कर सकते, *"उन्हें सब बातें करना सिखाना।"* क्योंकि वे सहायता के लिए कलीसिया की व्यापक पहुंच पर निर्भर रहते हैं, वे परमेश्वर की पूर्ण मनसा की घोषणा नहीं कर सकते। कई विभिन्न कलीसियाओं के साथ व्यवहार करने के प्रयास में वे अपने सैद्धान्तिक स्थान में कमज़ोर पड़ जाते हैं।
5. कई परस्परव्याप्त और आपस में होड़ करने वाली सेवकाइयां हैं जिनमें विभाजन, ईर्ष्या और विरोध है। यह अटल होता है जब संस्थाएं उनकी उपलब्धियों का प्रचार करती हैं और अपनी सफलता की बड़ाई करती हैं।
6. वे खुद को छोड़ और किसी को उत्तरदायी नहीं रहते। यह अक्सर सच होता है कि उनके कई अगुवे अनियंत्रित एवं अनपेक्षित आचरण रखने वाले होते हैं, और इससे अनैतिक, व्यवसाय संबंधी, और सैद्धान्तिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।
7. कुछ पैराचर्च के लोग कलीसिया विरोधी होने की प्रवृत्ति रखते हैं। वे अपने काम को और संस्था के काम को श्रेष्ठ मानते हैं।
8. अन्य लोग जिनमें पैराचर्च मानसिकता होती है अक्सर स्थानीय कलीसिया की सहभागिता के साथ अनुकूलता बनाना, और अधिकतर मण्डलियों में पाए जाने वाले कई लोगों के साथ काम करना उन्हें मुश्किल लगता है। वे खुद को समर्पित लोगों का चुना हुआ समूह समझते हैं (और अक्सर होते हैं)।
9. कलीसिया के कार्यों और ज़िम्मेदारियों को छीन लेते हैं।
10. नए विश्वासियों को स्थानीय कलीसियाओं में खिलाने (शिक्षा देने) के बजाय, ये संस्थाएं लोगों के जीवनों में कलीसिया का स्थान ले लेती है। वे उन्हें ऐसे काम सौंपते हैं जो उन्हें कलीसिया की सभाओं से हटा लेते हैं।
11. वे व्यावसायिकतावाद को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक सीढ़ी चढ़ जाते हैं आदि।

पैराचर्च संस्थाओं के विरोध में कुछ तर्क हैं जो कलीसियाओं के विषय में भी सच होते हैं:

1. पैराचर्च संस्थाएं आसानी से बंद नहीं होतीं, परंतु अपनी उपयोगिता के बाद जीवित रहने के बाद भी वे चिरंजीवी होती हैं।
2. कैरिस्मैटिक अगुवे पर ध्यान केन्द्रित करने का खतरा होता है, और इस प्रकार व्यक्तित्व संप्रदाय की स्थापना करने का।
3. वे लोगों की कुल ज़रूरतों को पूरा नहीं करते हैं।
4. वे कभी कभी दूसरों के साथ काम न कर पाने की लोगों की असमर्थतता का परिणाम होते हैं। अपनी निराशा में वह ऐसा काम आरंभ करता है जहां पर वह स्वतंत्र रह सके।

इस बात का निष्कर्ष क्या है? शायद हम लूका 9:49–50 में देखते हैं। एक दिन शिष्यों ने यीशु से कहा, *"हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हम ने उसे मना किया, क्योंकि*

वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता।'' प्रभु ने उत्तर दिया, ''उसे मना मत करोय क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।''

सुसमाचारीय पैराचर्च संस्थाएं हमारे समान ही किसी आत्मिक युद्ध में लगी रहती हैं। हमें उन्हें मनाई नहीं करना है। वे हमारे लिए हैं।

अध्याय - 56

जितना छोटा उतना बेहतर

हमारे समाज में आकार पर ज़ोर इतना पक्का और इतना व्यापक है कि हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि जितना छोटा उतना बेहतर होता है। कलीसिया की सफलता का जो परिलक्षण संख्याओं से मापा जाता है, उसने कलीसिया को पूरी रीति से निगल लिया है। परंतु संख्याओं से संबंधित तथ्य क्या हैं? यह तत्वज्ञान कि बडा आकार सुंदर होता है और वह ईश्वरीय लक्ष्य है जो बाइबल में नहीं पाया जाता, परंतु पवित्र शास्त्र के विपरीत है।

1. बड़ी मण्डली बाढ़ में नाश हो गई; केवल आठ लोग बचे।
2. गिदोन की सेना 32000 से घटाकर 300 कर दी गई, ताकि विजय का श्रेय मात्र परमेश्वर की सामर्थ को मिले।
3. यीशु ने बारह हज़ारों को नहीं, परंतु केवल बारह शिष्यों को चुना।
4. वॉल्टेयर का यह व्यंगपूर्ण विचार कि परमेश्वर बड़ी बटालियन के पक्ष में रहता है, संसारिक बुद्धि को दर्शाता है, इस मामले में, एक नास्तिक की बुद्धि।
5. पवित्र शास्त्र में संख्या से अधिक बल गुणवत्ता पर दिया गया है।
6. पिछले युगों में परमेश्वर ने विशेषतया अंशभाग की गवाही के माध्यम से कार्य किया है।

पिछली सदी की बहुसंख्य मसीही कलीसियाएं छोटी रही हैं और संपूर्ण विश्व में यह आज भी सच है। कलीसिया जितनी बड़ी होगी उतना ही अगुवों को संपूर्ण मण्डली की प्रभावी व्यक्तिगत पासबानीय सेवकाई करना मुश्किल होगा। कलीसिया जितनी विशाल होगी उतना ही विश्वासियों को एकदूसरे को जानना, आनंद और दुःख बांटना, मण्डली के जीवन का आनंद उठाना मुश्किल होगा। उचित ही कहा गया है कि जो कलीसिया अजनबियों का झुण्ड है, या मात्र परिचितों का, वह इस शब्द के गहरे अर्थ के अनुसार सच्ची कलीसिया नहीं है।

कलीसिया जितनी बड़ी होगी उतने ही प्रतिशत में पवित्र जनों को उनके वरदानों का उपयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा। यदि आकार लक्ष्य बन जाता है, तो सुसमाचार के संदेश को, मसीही शिष्यता की कठोर मांगों को, पवित्रता के उच्च मानकों को, और यीशु मसीह के अन्य कठोर कथनों का महत्व कम करके पेश करने का दबाव बढ़ जाता है। यदि आकार लक्ष्य बन जाता है, तो अनुशासन की उपेक्षा करने का मोह अधिक होता है। दूसरी ओर देखने की प्रवृत्ति होती है ताकि सदस्यों को न खो दे। परंतु कलीसिया की सच्ची सफलता उसके सदस्यों की संख्या में नहीं पाई जाती, परंतु उनकी पवित्रता में पाई जाती है।

यह सोचने की बात है कि बड़ी कलीसियाएं मनुष्य के अहंकार का पोषण करती हैं और वे मण्डली के बजाय अगुवों के लिए होती हैं। सताव और दबाव के समयों में छोटी कलीसियाओं को भूमिगत होना आसान होता है। बड़ी कलीसियाओं में सामुहिक प्रार्थना अक्सर बड़ी जनहानि में से एक होती है।

इतना सब कहने के बाद भी, यदि उसका छोटा होना सुसमाचार प्रचार का अभाव, उदासीनता, या अन्य असफलताओं के कारण है, तो हम यह कह सकते हैं कि छोटी कलीसिया में कोई गुण नहीं है। छोटी कलीसियाओं को बढ़ती हुई कलीसियाएं बनना है। परंतु अति विशाल – मेगा चर्चेस बनने के बजाय, उन्हें नई कलीसियाओं को जन्म देना चाहिए। विशिष्ट संख्या तक पहुंचने पर, अगुवों को अलग होने के विषय में सोचना चाहिए।

विशाल कलीसियाओं के लिए सामान्य तौर पर कौनसे तर्क या विवाद किए जाते हैं?

- बेहतर सुविधाएं रखना संभव होता है।
- व्यापक और विविध सेवकाई हो सकती है।
- और अधिक लोगों की संख्या का अर्थ है प्रभु के कार्य के लिए और पैसा।
- बेहतर सांस्कृतिक मान्यता होती है।
- बच्चों और जवानों के लिए अपने उम्र के लोगों के साथ रहने के और अवसर होते हैं।
- बड़ी कलीसिया का अर्थ विशाल मिशनरी आऊटरीच के बेहतर अवसर।
- उससे बेहतर गुणवत्ता वाली शिक्षा।

इनमें से कुछ विवादों में कुछ अंश में सत्य हो सकता है; आवश्यक नहीं है कि कुछ बिल्कुल सच हों; और वचन से किसी का समर्थन नहीं किया जा सकता। मैं सम्मानित मसीही अगुवों के दल को गवाही देने के लिए बुलाना चाहूंगा जिन्होंने इस विषय पर बोला है। पहला व्यक्ति है वैन्स हैवनर; अनुभवी और सुस्पष्ट दक्षिण प्रचारक। वह लिखतें है:

> आकार पर ज़ोर देते समय कलीसिया तहखाने से कॉलिज़ियम तक बढ़ गई है। हम विशाल प्रदर्शनों और दीर्घाकार दीक्षांत समारोहों का मंचन करते हैं। हम ख्याति प्राप्त लोगों को मंच पर बुलाकर मसीह के ध्वज को ऊंचा करने के लिए कैसर से उधार लेते हैं। हम बड़प्पन के पीछे पागल हो गए हैं।
>
> वास्तव में, हमें मोटा बनने के बजाय पतला बनने की ज़रूरत है (संख्या में कम)। मैंने बहुत पहले सीखा था कि अनाज़ और कपास की फसल बढ़ाना कम करना है। गुणवत्ता में सुधार लाने के

लिए हमने प्रमाण कम कर दिया। गिदौन को अपनी सेना की संख्या कम करनी पड़ी और यही तरीका आज परमेश्वर की सेना की भी सहायता करेगा। यीशु ने अपनी भीड़ को कम किया जैसा कि यूहन्ना के छठें अध्याय में लिखा गया है, और निःसंदेह ऐसे अन्य कई अवसर थे। आज सताए हुए अल्पसंख्यक लोग लोकप्रिय बहुसंख्य बन गए हैं।

यह मूर्खों का, धोखाधड़ी का, छलकपट का, मौजमस्ती का, छल–कपट का युग है, "अब आप देखते हैं और अब आपको नहीं दिखाई देता।" सब कुछ दर्पणों से किया जाता है। सारी बातों का मूल्यांकन "कितना बड़ा?" और "कितनी ऊंची आवाज़?" से किया जाता है। सब कुछ विशाल, अतिविशाल, बड़ा, महाकाय, सुपर–डूपर होना चाहिए। हर नई औषधियां "वंडर ड्रग" है, याने कि चमत्कारी औषधी है – आप उसे लेते हैं और सोचते हैं कि आगे क्या होगा। ऐसे समय में पुरानी आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता में लोगों की रुचि उत्पन्न करना मुश्किल है। मसीही लोगों का भी रविवार के दिन मनोरंजन करना ज़रूरी है। सत्य की ज्योति को देखा जाता है, परंतु उसमें प्रवेश नहीं किया जाता, सुनने वाले तो हैं, परंतु उसके अनुसार करने वाले नहीं, ज्यादा रोशनी से लोगों की आंखें धुंधली हो जाती हैं। जिस प्रकार पर्याप्त रोशनी न होने से व्यक्ति अंधा होने लगता है, उसी तरह बहुत अधिक रोशनी भी आंखों को अंधा कर देती है।

रॅल्फ शॅलिस *फ्रॉम नाऊ ऑन* नामक अपनी पुस्तक में परामर्श देते हैं:

एक कलीसिया चुनें जो पवित्र शास्त्र के प्रति विश्वासयोग्य है और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है; अर्थात्, ऐसा समूह जहां यीशु वास्तव में उपस्थित है। वह छोटी हो या बड़ी इस बात का महत्व नहीं है। यदि मसीह वहां है, तो आप संसार की समस्त बैंकों से अधिक धनवान हैं। इसके अलावा छोटी कलीसिया में आप जीवित रहने में एक मकसद देखेंगे; आप परिवार का मूल्यवान और महत्वपूर्ण सदस्य होंगे; आपके पास देने के लिए सच्चा योगदान होगा। दूसरी ओर, यदि आप बहुत बड़ी कलीसिया में हैं, तो आप अज्ञात भीड़ में छिप जाएंगे – जो आपके आत्मिक स्वास्थ्य के लिए बहुत बुरा है। आप निकम्मे और आलसी बन जाते हैं, और निराश हो जाते हैं।[88]

फ्रांसिस शेफर इन प्रभावशाली शब्दों के साथ अपनी गवाही जोड़ते हैं:

परमेश्वर की दृष्टि में कोई छोटे लोग नहीं हैं, इसलिए कोई स्थान छोटे नहीं हैं। अमेरिका से अध्कि और किसी स्थान में ऐसे लोग नहीं है जो बीसवीं सदी के आकार के रोग लक्षण से पीड़ित हों। आकार सफलता दिखाएगा। यदि मैं समर्पित हूं, तो आवश्यक तौर पर लोगों की बड़ी संख्याएं, डॉलर्स आदि होंगे। यह ऐसा नहीं है। परमेश्वर केवल यह नहीं कहता कि आकार और आत्मिक सामर्थ एक साथ चलते हैं, बल्कि वह बिलकुल इसके विपरीत कहता है (विशेषकर यीशु की शिक्षा में) और हमसे कहता है कि हम सावधान रहें और बहुत बड़ा स्थान न चुनें। हम सभी बड़े कामों और बड़े स्थानों पर ज़ोर देते हैं, परंतु यह सब ज़ोर शरीर का है। इस तरह विचार करना केवल वापस पुराने, उद्धार न पाए हुए, अहंकारी, स्वार्थी *मैं* की सुनना है। यह स्वभाव जो कि संसार से लिया हुआ है मसीही व्यक्ति के लिए शारीरिक मनोरंजन या आदत से अधिक खतरनाक है। यह शरीर का स्वभाव है।[89]

जेम्स एस. स्टुअर्ट इस बात से सहमति जताते हैं। वे लिखते हैं:

परमेश्वर की कार्यनीति संख्याओं पर निर्भर नहीं है। हम सिर गिनते हैं। परमेश्वर नहीं गिनता। परमेश्वर हृदयों को गिनता (महत्व देता है)। हम राज्य के विस्तार के विषय में चर्चा करते हैं, और

> शिष्यों को उत्पन्न करते हैं। परमेश्वर का लक्ष्य राज्य को प्रबल बनाना है और बेहतर शिष्यों को जन्म देना है। हम ऊंची कलीसिया, निम्न कलीसिया, चौड़ी कलीसिया के विषय में बोलते हैं, परंतु परमेश्वर गहरी कलीसिया देखना चाहता है। "मुझे पादरियों की बड़ी बटालियन मत दो," जॉन वेस्ली ने कहा, "मुझे सौ लोग दो जो पाप के अलावा ओर किसी बात से नहीं डरते, और परमेश्वर के अलावा किसी बात से प्रेम नही करते, और मैं नर्क के फाटकों को हिला कर रख दूंगा!" वेस्ली ने यह रवैया कहां सीखा? अवश्य ही उसके राजकीय स्वामी यीशु की ओर से... जिसने एक बार हमेशा के लिए उसके विश्व अभियान की ईश्वरीय कार्यनीति स्पष्ट कर दी। इस कार्यनीति का अर्थ यह है, कि विशाल नब्बे प्रतिशत बहुसंख्या जो मसीह की नहीं मानती और उसके प्रति अपनी निष्ठा में अदृढ़ है, उसके साथ काम करने के बजाय वह पाच प्रतिशत दृढ़प्रतिज्ञ दीन लोगों के साथ किसी भी दिन काम करना पसंद करेगा।[90]

न्यायियों की पुस्तक पर अपनी व्याख्या प्रस्तुत करते हुए सॅम्युएल रिडआऊट कहते हैं:

> हम सभों के मन में संख्या के लिए एक सूक्ष्म इच्छा है। यदि मनुष्य ने यह नहीं सोचा है कि संख्याओं में सामर्थ है, तो आकंडेवारी, उद्धार पाए हुओं की संख्या, 'सदस्यों' की संख्याएं आदि बातों के लिए इच्छा क्यों? इसके विपरीत, क्या पवित्र शास्त्र में इसके विपरीत उदाहरण नहीं पाए जाते? संख्या अक्सर घमंड को अवसर देती है जो विनाश के पहले आता है। जब शिष्यों की संख्या बढ़ गई, तब कुड़कुड़ाना शुरू हो गया। यह विचार दूर रहे कि हमें अपने आप में संख्याओं का इन्कार करना चाहिए। हमें अवश्य ही उन कई लोगों के लिए आनंद मनाना है जो आशीष पाते हैं, परंतु हमारी आंखें बहुतों पर नहीं होनी चाहिए, परंतु प्रभु पर होनी चाहिए।
>
> विशेष तौर पर यह बात पतन के दिन सच है जब परमेश्वर ने अपने सत्य के लिए शेष गवाहों को खड़ा किया है। संख्याएं ... गवाही को दुष्कर कर देगी। अपनी संख्याओं के कारण संसार की दृष्टि में आदर कमाने वाली विशाल और प्रतिष्ठित मंडली से परमेश्वर द्वारा जांची और परखी हुई छोटी मंडली बेहतर है।[91]

ई. स्टॅन्ली जोन्स ने कहा, "मैं संख्या के लिए इस हाथापाई का तिरस्कार करता हूं, जो सामूहिक अहंकारवाद की ओर ले जाती है।"

अंत में, चार्ल्स बिंग ने यह अप्रगट टिप्पणी की: "श्रेणियों की यह भीड़ चमक और राख पैदा करती है।"

जब एक सबसे विशाल प्रोटेस्टंट पंथ सदस्यों के लिए अभियान चला रहा था, तब उसने यह घोषणा स्वीकार की, "84 में दस लाख और।" जब इस आकर्षक घोषवाक्य की घोषणा की गई तब एक सेवक ने दूसरे की ओर झुककर दूसरे के कान में कहा, "यदि हमारे पास इस समय जो संख्या है उसके समान और दस लाख मिल जाते हैं, तो हम डूब जाएंगे।"

परमेश्वर की महिमा के लिए संख्याओं की चाह रखना ठीक है। परंतु बल के लिए उन पर निर्भर रहना गलत है। उन पर घमंड करना गलत है। उन्हें पाने के लिए अपने मानकों को नीचा करना गलत है। जैसा कि वॅन्स हॅवनर ने सुझाया है, "परमेश्वर को जानने के बजाय ध्वजों को जीतना और अंश बढ़ाना गलत है।" विशाल, बेढंगे, सिद्धांतहीन लोगों के बजाय छोटी, बढ़ती हुई आत्मिक मण्डलियां पाना बेहतर है।

भाग - 5

समारोप

अध्याय - 57

अंतिम सुझाव

आपने मसीही शिष्यता के कुछ मुख्य तत्वों का अध्ययन किया है। ध्यान दें कि मैंने कहा "कुछ "। और भी हैं। इस विषय पर एकमात्र संपूर्ण पुस्तक नया नियम है। इस पुस्तक की विषयवस्तुओं का मात्र बौद्धिक ज्ञान पाना पर्याप्त नहीं है। जैसा वह बोलता है वैसा उसे चलना चाहिए। उसे खुद को प्रभु यीशु का समर्पित अनुयायी साबित करना है। अन्य लोग उसमें यीशु को देखने पाएं।

और भी कुछ महत्वपूर्ण है। गुरू अपने शिष्य के सामने मसीही सेवा के विभिन्न रूपों को रखता है। बदले में शिष्य को उसके शिक्षक के साथ जाने के लिए और यह देखने के लिए तैयार रहना चाहिए कि वह किस प्रकार उद्धार न पाए हुओं को गवाही देता है, वह मसीहियों को कैसे सिखाता है, वह सुसमाचार प्रचार कैसे करता है, जिन्हें अभिदिशा की ज़रूरत है उन्हें वह कैसे परामर्श देता है, वह कैसे विवाह और मृत संस्कार पूरा करता है, वह बीमारों को कैसे भेंट देता है। आदर्श तौर पर शिष्य सीखेगा कि स्थानीय कलीसिया के प्राचीन को जो करने के लिए बुलाया गया है वह सब कुछ उसे कैसे करना चाहिए।

प्रेरित पौलुस ने कहा,

> *"उसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें"* (कुलुस्सियों 1:28)।

यह कहते समय उसने हमारे सामने कार्यरत शिष्य का एक उत्तम चित्र रखा है। हम कुछ अर्थपूर्ण सुझावों के साथ समाप्त करना चाहेंगे जिसे कोई भी शिष्य अपने जीवन के नमूने के रूप में गूथना चाहेगा।

- प्रतिदिन दया के आकस्मिक कार्य और सुंदरता के एक असंभव कार्य का अभ्यास करें। यह गवाही देने के लिए उत्तम अवसर प्रदान कर सकता है।

- प्रतिदिन प्रोत्साहन का एक शब्द कहें, किसी को उसकी ज़रूरत है।
- शिकायत न करें। यदि आपने 1 कुरिन्थियों 10 पढ़ा है, तो आप देखेंगे कि परमेश्वर को शिकायत करना पसंद नहीं है।
- प्रार्थना करें कि ॲन्ड्र्यू बोनर के समान आप "अंत तक बने रहेंगे।"
- रोमी मोमबत्ती के समान मसीही रंगमंच पर विस्फोटित न हों, और बाद में गिरती हुई राख के समान धीरे धीरे समाप्त न हो जाएं।
- प्रसन्न रहें। प्रभु आपको इसके लिए क्षमा करेगा। फ्रॅन्झ़ जोज़फ हेडन ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे प्रसन्न हृदय दिया है। यदि मैं प्रसन्नता के साथ उसकी सेवा करता हूं, तो वह अवश्य ही मुझे क्षमा करेगा।" क्या भजन के लेखक ने नहीं कहा, *"हर्ष के साथ प्रभु की सेवा करें।"*
- यदि आप वचन देते हैं, तो उसका पालन करें। यदि आप उस विषय में गंभीर नहीं है, तो उसे न कहें।
- कुछ अच्छा करने की भीतरी प्रेरणा को कभी इन्कार न करें। उसे तुरंत करें।
- धन्यवाद देते रहें। अपनी आशीषों को गिनें। आपको आश्चर्य होगा कि प्रभु ने क्या किया है।
- समय बर्बाद न करें। प्रभु के लिए व्यस्त रहें।
- बीमारों, वृद्धों, और विलाप करने वालों को भेंट दें। वहां उपस्थित रहना ही बताता है कि आप उनकी परवाह करते हैं।
- प्रत्येक दिन मसीह के न्याय सिंहासन के प्रकाश में जीएं। हम कल वहां होंगे; हम केवल यह नहीं जानते कि कौनसा कल।
- अपनी जीभ का ध्यान रखें। अच्छे श्रोता बनें। आपको आश्चर्य हो सकता है कि आप कितना सीखते हैं।
- दूसरे लोगों का जीवन चलाने की कोशिश न करें। विश्व के महाप्रबंधक के रूप में इस्तिफा दें।
- आपके दर्द और आपकी पीड़ाओं की घोषणा न करें। हर एक के पास अपने पर्याप्त दर्द हैं।
- अन्य विश्वासियों में मसीह को देखने की कोशिश करें। इससे आपको उनके प्रति अच्छा भाव रखने में सहायता मिलती है।
- लड़के और लड़कियों में ईश्वरीय दिलचस्पी दिखाएं। यीशु उनसे प्रेम करता है।
- मानसिक और शारीरिक रूप से चुनौती प्राप्त लोगों के साथ मित्रता करने का हर संभव प्रयास करें। उनमें से प्रत्येक प्रभु के लिए विशेष और अनमोल है।

"और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों" (2 तीमुथियुस 2:2)।

इस पुस्तिका में चर्चा किए गए विषयों पर अतिरिक्त सामग्री लेखक द्वारा लिखे गए निम्नलिखित पुस्तकों में पाई जा सकती हैः

ज्तनम क्पेबपचसमेीपच
जीम थ्वतहवजजमद ब्वउउंदकय ठम भ्वसल
बीतपेज स्वअमक जीम बीनतबी
डल भ्मंतजए डल स्पमिए डल।सस
व्दबम पद बीतपेजए प्द बीतपेज थ्वतमअमत
ठववासमजेरू
जीपदा व ल्वनत थ्नजनतम
स्वतकए ठतमां डम
जीम क्ंल श्रमेने ब्ंउम जव डल भ्वनेम
ळतेंचपदह वित ळ्ैंकवू
क्वमे पज च्ंल जव च्तंलघ
ैपदहसमदमेकृ। डंसम च्मतेचमबजपअम

परिशिष्ट – अ

उसे दिखाएं, उसका डंका न बजाएं

ऐसे जवान की कहानी जिसने मसीह को तो पाया, परंतु अपने माता–पिता को खो दिया

जवानों का उत्साह अक्सर बुजुर्गों की सतर्कता से टकराता है। जब जवान व्यक्ति बिलकुल नया मसीही होता है, और मसीह के लिए जोश में होता है, और जब बुजुर्ग लोगों को लगता है कि उनका अपना धर्म खतरे में है, तब गवाही प्रभावरहित हो जाती है।

जब बुजुर्ग लोग जवान व्यक्ति के माता–पिता होते हैं, तब परिणाम दुखद हो सकते हैं। ग्रेग का अनुभव ऐसा ही उदाहरण है। परंतु यदि ग्रेग प्रेम और बुद्धिमानी के साथ अपने उत्साह को संयमित करना सीखता है, तो आकस्मिक दुर्घटना को विजय में बदला जा सकता है। अभी हम ग्रेग से उसकी अपनी कहानी सुनेंगे:

> भाई, क्या मैंने अपना अवसर खो दिया!
>
> मेरा उद्धार होने के बाद, मैं अपने घर गया और सुसमाचार अपने परिवार के गले उतारने की कोशिश करने लगा। उन्होंने बड़ी उग्रता के साथ मेरा विरोध किया और मैंने विद्वेष के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसीलिए मैं कहता हूं कि मैं असफल हो गया।
>
> मैं आपको थोड़ी पृष्ठभूमि देना चाहूंगा। काफी धार्मिक परिवार में मेरी परवरिश हुई। हम कैटेकिज़्म सीखते थे, अंगीकार करते थे, नियमित रूप से गिरजाघर जाते थे। समय आने पर मैं वेदी के पास सेवा करने वाला लड़का बन गया। जहां तक आज मैं बता सकता हूं, हमारे धर्म में विधी संस्कारों का पालन करना समाहित था, परंतु हम में से किसी का भी वास्तव में नया जन्म नहीं हुआ था।
>
> हायस्कूल में, मेरी ड्रग की आदत को पूरा करने के लिए मैं चोरी करने लगा। मेरे पिता को तीन बार मेरी जमानत लेनी पड़ी। परंतु उसके बाद भी काम करने के बजाय चोरी करके पैसा कमाना

ज्यादा आसान था। परंतु अर्थात् इस बार भी मैं यौनाचार में गहराई से डूब चुका था। लड़कियां पाना मुश्किल नहीं था। मैं खुद को माचो (मर्द) समझता था।

कुछ समय तक मैं सफल होता रहा। मैंने अपने मित्रों के इकरार का आनंद उठाया, मेरे बेलगाम जीवन ने मुझे सचमुच बड़ा महत्व दिया।

एक बात ने मुझे सचमुच गंभीर बना दिया, वह था मेरे एक अत्यंत निकटतम मित्र की दुर्घटना में मृत्यु। जब मैं जमानत देकर बाहर हुआ, तब मैं अस्पताल में दाखिल हुआ, संदेह था कि मुझे ल्यूकेमिया हो गया है। अस्पताल में पहली बार मुझे याद है, मैंने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, यदि कोई परमेश्वर है, तो खुद को मुझ पर प्रकट कर।"

एक घंटे बाद, हायस्कूल के दिनों का एक मित्र बगल वाले पलंग पर बीमार पड़े व्यक्ति से मिलने के लिए आया। मुझे देखकर उसे आश्चर्य हुआ, उसने बताया कि अब वह मसीही है, उसने अपना जीवन मसीह यीशु को सौंप दिया है। फिर उसने बड़े गौर से समझाया कि किस प्रकार मैं भी मसीह में नया जीवन आरंभ कर सकता हूं। मैं तैयार था।

हमने प्रार्थना की। मैं जानता था कि ऐसा करने का उत्तम तरीका क्या है, मैंने मसीह पर अपने ऐवजदार, मेरे प्रभु और मेरे उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया।

मेरा जीवन आमूल रूप से बदल गया। परमेश्वर ने मुझे नई जुबान दी, अब मेरे मुँह से गंदी बातें और गालियां नहीं निकलती थी। मैंने नशीले पदार्थों का और शराब का सेवन करना छोड़ दिया, और अब तक की अनैतिक जीवनशैली त्याग दी। मेरे पुराने मित्र मुझे छोड़ने लगे। उनमें से एक ने कहा, "तुम तो अब मर चुके!"

खैर, मुझे उम्मीद थी कि मेरे जीवन में आए बदलाव से मेरे माता–पिता खुशी से पागल हो जाएंगे। मैंने सोचा कि जब मैं उन्हें सुसमाचार सुनाऊंगा, तब वे तुरंत उद्धार पाना चाहेंगे। अवश्य ही वे मेरे समान बुरे नहीं थे, परंतु फिर भी उन्हें उद्धार पाने की ज़रूरत थी। मुझे तो मानो झटका लगा। मेरे जीवन में आए हुए बदलाव पर उन्होंने कोई उत्साह नहीं दिखाया। बल्कि मानो वे कहना चाहते थे कि एक धर्मोन्मत्त व्यक्ति से घर में एक शराबी का होना बेहतर है।

मेरी मां रोने लगी कि मैंने उसके धर्म को त्याग दिया है, वह मुझे विश्वासघाती और पाखंडी कहने लगी। मैंने उन्हें सुझाव दिया था कि उन्हें "नया जन्म पाने की ज़रूरत है," मेरे सुझाव से वे नाराज़ हो गए। वे चाहते थे कि मैं इस बात को जानूं कि जब शिशुओं के रूप में उनका बपतिस्मा हुआ, तभी उन्होंने "नया जन्म" पाया था। अब मैंने अपने परिवार की एकता भंग कर दी थी।

जितना अधिक मैं उन पर सुसमाचार का दबाव लाने लगा, उतना अधिक वे मेरे साथ शत्रुता करने लगे। चिल्लाने, धमकियां देने और अपमान करने की घटनाएं होने लगीं। मुझे ऐसा लगा कि मेरे परिवार में और मेरे बीच में की दरार चौड़ी होती जा रही है। उनके स्वभाव और आचरण से मैं चिढ़ने लगा, और ज्यादा से ज्यादा उनसे दूर रहने लगा। अंत में, एक दिन चिल्ला–चिल्लाकर झगड़ा करने के बाद, मैंने गुस्से से घर छोड़ दिया।

इसलिए मैं कहता हूं कि मैं असफल रह गया। उन्हें मसीह के लिए जीतने के बजाय, मैं उन्हें दूर करने में सफल रहा। मैं सचमुच उनसे प्रेम करता हूं, और इसलिए चाहता था कि वे उद्धार पाएं। इसीलिये मैं बार–बार सुसमाचार को उनके सामने दोहराता रहा। परंतु मुझे लगता है कि

> यह बिना ज्ञान के जोश था। अब मैं उनसे दूर हो गया हूं और मेरी आत्मा में निराश हूं। क्या मैं अतीत की गलतियों को सुधारने के लिए कुछ कर सकता हूं?

ग्रेग का अनुभव एक परिचित कथानक है। कई युवा नये विश्वासियों ने मसीह के प्रति और अपने विश्वासियों के प्रति विश्वासयोग्य रहने की कोशिश की, परंतु उन्होंने इस प्रकार आचरण किया जिससे उनकी गवाही निष्फल रही। हम उसे क्या बताएंगे?

यीशु ने अत्यंत स्पष्ट रूप से कहा कि उसके आने का अर्थ होगा परिवारों से अलगाव और परिवारों में विभाजन। उदाहरण के तौर पर, उसने कहा, *"मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे"* (मत्ती 10: 35–36)।

प्रभु के कहने का यह आशय नहीं था कि उसके आने का सीधा उद्देश्य परिवारों में शत्रुता उत्पन्न हो, बल्कि यह था कि कभी कभी इसका अटल परिणाम हो सकता है। जब कभी लोग उसका अनुसरण करते हैं, तब वे रिश्तेदारों और मित्रों से कड़वे विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं। इस अर्थ से, वह *"मिलाप कराने को नहीं, परंतु तलवार चलवाने आया"* (पद 34)।

परंतु हम में से कोई भी ग्रेग के परिवार के प्रति उसके गुस्से और नाराज़गी का समर्थन नहीं करता। मसीह के साथ हमारे संबंध की वजह से यदि हमारा उपहास किया जाता है, हमें सताया जाता है और हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, तो इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। जब हम अपनी मूर्खता, दैहिकता और प्रेमहीनता के कामों के कारण दुख उठाते हैं, तब उसमें कोई गुण नहीं होता।

ग्रेग को यह महसूस करने की ज़रूरत नहीं है कि सब कुछ खो गया है। इस समय उसे ज़रूरत इस बात है कि वह अपने रिश्तेदारों को यह दिखाए कि मसीह जीवन में परिवर्तन लाता है। ऐसा करने के लिए उसे वापस जाकर अपने क्रोध और कड़वाहट के लिए उनसे क्षमा मांगनी होगी। नम्रता दिखाना मुश्किल होता है, परंतु उसे ऐसा करना होगा। और उसे यह कहकर प्रभाव को कम नहीं करना है कि, "यदि मैंने कुछ गलत किया है, तो मुझे खेद है। कृपया मुझे क्षमा कीजिए।" बल्कि, स्पष्ट रूप से यह कहने का निर्णय लें जो आप कहने में संकोच करते थे, "मैं गलत था। मुझे खेद है। कृपया कर मुझे क्षमा कीजिए।"

इस बात का उसके माता–पिता और उसके भाई–बहनों पर ज्यादा असर पड़ेगा। वे सोचेंगे, "ग्रेग ने इससे पहले इस प्रकार कभी क्षमा नहीं मांगी, और न ही गलत होने पर हम कभी ऐसा करते हैं।"

उसके बाद सुसमाचार उनके गले उतारने की कोशिश करने के बजाय, ग्रेग को शांति के साथ और उनका इंतज़ार करना चाहिए कि वे उस विषय को फिर सामने लाएं। वे अवश्य ही उस विषय को सामने लाएंगे। वे उसे अवसर देंगे कि वह शालीनता के साथ और बिना किसी दबाव के उन्हें उत्तर दे। यदि वे उसे निमंत्रण देते हैं, तो अच्छा होगा कि ग्रेग वापस अपने घर लौट जाए। वहां जाने पर उसे काम में मदत करना चाहिए, काम को पूरा करने पर ध्यान देना चाहिए और बिना कहे उसे करना चाहिए। पहले उसका कमरा बम पीड़ित आपदाग्रस्त क्षेत्र के समान था, उसके बजाय उसे अपना कमरा साफ और स्वच्छ रखना होगा। ग्रेग को दया के काम प्रकट करना चाहिए जो उसके पिछले स्वभाव

के बिलकुल विपरीत है। इसमें जन्मदिन, शादी की सालगिरह और अन्य विशेष दिन याद रखना, और ईनाम देना शामिल होना चाहिए, और इसमें प्रेम को व्यक्त करने के अलावा दूसरा कोई उद्देश्य न हो। उसे दयालुता दिखाने में मौलिकता और नवीनता प्रकट करने के मार्ग दिखाने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

ग्रेग को अपने माता–पिता के अधिकार का सम्मान करना चाहिए, और जहां पर उनकी सलाह प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं है, वहां तक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। उसके बाद भी उसे किसी प्रकार का तमाशा न करते हुए (या उकसाते हुए) धीरे से इन्कार करना है।

माता–पिता के प्रति सराहना व्यक्त करने हेतु ऐसा हो, क्योंकि जो कुछ भी उन्होंने किया है उसके लिए पर्याप्त रूप से कभी उन्हें धन्यवाद नहीं दिया जाता। उसकी मां के जन्मदिन पर, या मातृदिवस पर, चॉकलेट से भरा डब्बा देने के बजाय, ग्रेग पाएगा कि इस प्रकार हाथ से लिखा पत्र बहुत अधिक पसंद किया जाएगा।

मेरी मां:

> यह दिन जो विशेष रूप से आपको आदर देने के लिए अलग किया गया है, मैं उन सारी बातों के लिए जिसमें आप मेरे जीवन में मायने रखती हैं, धन्यवाद महसूस करता हूं, उसे व्यक्त करना चाहता हूं। आप ही ने मुझे संसार में लाया – और मैं आज समझता हूं कि आपके लिए उसका अर्थ पीड़ा और क्लेश था। परंतु एक बेटा आपको पैदा हुआ है इस आनंद के लिए आप जल्द ही और निस्वार्थ भाव से वह सब कुछ भूल गई।
>
> जैसे जैसे मैं बड़ा होता जा रहा हूं, मैं उन दिनों, और महीनों, और वर्षों को बेहतर रीति से समझता हूं जो आपने मेरे परवरिश के लिए दिए। मैं अक्सर उन समयों के विषय में सोचता हूं जब मैं बीमार था या दुर्घटनाग्रस्त था, और इसकी किमत आपने रात में जागकर और व्याकुलता के साथ इंतज़ार करते हुए चुकाईं। मैं उस बात के लिए आपको कभी पर्याप्त धन्यवाद नहीं दे पाऊंगा जब ऐसा लगा कि मृत्यु हममें से एक को छीन लेगी और आप अकेले रातभर जागती रही।
>
> धन्यवाद मां, भोजन पकाने, कपड़े धोने, सिलने, दुरुस्त करने, घर साफ करने के लिए। हमें अनुशासित करने के लिए भी धन्यवाद जब हम उसके लायक थे; हम जानते थे कि आप प्यार के कारण ऐसा कर रही हैं।
>
> मैं और बहुत कुछ कह सकता हूं, परंतु मुझे लगता है कि इससे आप जान पाएंगी कि जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसके लिए मैं आपकी कितनी सराहना करता हूं। मैं चाहता हूं कि आप इस बात को जानें कि मैं आपके लिए प्रभु को धन्यवाद देता हूं, और प्रार्थना करता हूं कि परिवार के रूप में हम न केवल इस जीवन में, बल्कि अनंतकाल में भी एकजुट रहेंगे।

आपका बेटा
ग्रेग

इस प्रकार का पत्र मां के लिए ओरिजनल डियोर से भी अधिक महत्व रखेगा। और ग्रेग को ऐसा ही पत्र पितृ दिवस पर अपने पिता को लिखने की कोशिश करनी चाहिए। पिता अपने आंसू रोकने का भरसक प्रयास करेंगे, परंतु पत्र उन्हें गहराई से छू लेगा।

बच्चों के बड़े होने के बाद भी, माता–पिता को अच्छा लगता है कि उनकी सलाह ली जाए। इस रीति से भी ग्रेग उनका आदर और सम्मान कर सकता है।

आशा है कि ग्रेग के जीवन में आने वाले इन मौलिक बदलावों से उसके माता–पिता को दिल का दौरा न पड़ जाए। परंतु यदि उन्हें दूसरे प्रकार का दिल का दौरा पड़ता है, तो यह बात उसके लायक ही है – अर्थात, यीशु के प्रेम से ओतप्रोत हृदय।

एक अंतिम शब्द, ग्रेग। आपके जीवन में आए हुए परिवर्तन के लिए जब आपके माता–पिता प्रश्न पूछते हैं और अपनी सराहना व्यक्त करते हैं, तो इसे अवसर के रूप में उपयोग करते हुए प्रभु को उसका श्रेय देना। वे जानने पाएं कि आप नहीं, परंतु आपमें जो यीशु है उसी ने यह किया है। ग्रेग, परमेश्वर परिवारों को बचाना चाहता है। आप अपने प्रतिदिन के जीवन में उसके समक्ष मसीह के प्रेम का प्रात्यक्षिक दिखाकर उसके साथ सहयोग कर सकते हैं। ताना न देते हुए या उन पर दबाव न डालकर, आप प्रार्थना और अच्छे कामों से उन्हें जीत सकते हैं। परमेश्वर आपको आशीष दे।

परिशिष्ट – ब

सुसमाचार प्रचारकिय जीवन-शैली

सुसमाचार प्रचार को अक्सर आऊटरीच, या किसी कार्यक्रम के रूप में देखा जाता है, जब सामर्थी रूप से किसी को सुसमाचार सुनाया जाता है। परंतु बहुत कम लोग सुनने के इच्छुक होते हैं, और बहुत कम सुसमाचार के अद्भुत संदेश के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने इच्छुक होते हैं। उन्हें दिलचस्पी नहीं होती, वे उनके जीवनों में सुसमाचार की प्रासंगिकता को नहीं समझते। हम क्या कर सकते हैं?

"प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो; और इसके साथ ही साथ हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद में हूं। और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है"(कुलुस्सियों 4:2–4)। पौलुस के प्रार्थना निवेदन में हम देखते हैं कि उसने कैसे कार्य किया। वह नए क्षेत्र में जाता था, सुसमाचार की घोषणा करता था और आत्मिक फसल की कटनी काटता था। इस प्रकार के सुसमाचार प्रचार के लिए वचन के लिए खुले द्वार की ज़रूरत है। हर स्थान में वह ऐसे लोगों को ढूंढ़ने की कोशिश करता था जो सुसमाचार के लिए तैयार होते थे। सिनेगॉग में वह उन लोगों को पाता था जो पुराने नियम के संदेश के माध्यम से परमेश्वर के द्वारा तैयार किए गए थे (प्रेरितों के काम 16:13; 17:1–3)। प्रभु ने प्रेरित को अन्य व्यक्तियों की पास भेजा जो वचन सुनने के लिए तैयार थे (प्रेरितों के काम 16:30)। फिर पौलुस नए विश्वासियों को सिखाता था, कलीसिया तैयार करता था और दूसरे स्थानों की ओर बढ़ जाता था। अर्थात नए विश्वासियों को काम आगे बढ़ाना सीखना है, जिसमें सुसमाचार प्रचार शामिल है। परंतु उन्हें कैसे सुसमाचार सुनाना है?

"अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए" (कुलुस्सियों 4:5–6)। जो खुले दिल के थे वे सभी विश्वासी बन गए थे, इसलिए सुसमाचार प्रचार की उसी प्रणाली का उपयोग करने द्वारा उसके उदाहरण को अपनाने के लिए वह नहीं कहता। वह उनसे नहीं कहता

कि वे सिनेगॉग में या बाजार के स्थान में प्रचार करें। यह पौलुस के साथ प्रभावकारी था, और फसल प्राप्त हुई। जो तैयार थे उन्होंने अपना जीवन प्रभु को दे दिया था। अब सुसमाचार प्रचार की प्रक्रिया फिर बीज बोने से आरंभ करने की ज़रूरत है। जिस तरह वे चलते फिरते हैं और अपने आसपास के लोगों से बोलते हैं, वह महत्वपूर्ण है। इससे उनमें जिज्ञासा उत्पन्न होगी, वे सोचने लगेंगे और प्रश्न पूछने लगेंगे। नमक उन्हें प्यासा कर देगा और वे अधिक जानना चाहेंगे। हमारा जीवन दूसरों के लिए सहायक या बाधा हो सकता है। इसलिए हमें हमारे प्रतिदिन की चालचलन में और बोलचाल में बुद्धि की ज़रूरत है।

सुसमाचार प्रचार सभी विश्वासियों की जीवनशैली बनने पाए। वे उसे एक कार्यक्रम के रूप में न देखने पाए जैसे कि जब एक सुसमाचार प्रचारक क्रूसेड का आयोजन करता है, परंतु उसे जीवन जीने का एक तरीका माना जाए। आसपास के लोगों को प्रभु का सुसमाचार सुनाने हेतु उनके प्रति प्रेम से परिपूर्ण जीवन। परमेश्वर ने हमारे आसपास जो लोग रखे हैं, ये वे ही लोग हैं जिनके निकट वह चाहता है कि हम सुसमाचार लेकर जाएं। यह हमारा परिवार, पड़ोसी, कार्यस्थल के साथी हो सकते हैं या अन्य लोग जिन्हें हम बार–बार मिलते हैं। उस व्यक्ति के समान जो दुष्टात्मा से पीड़ित था और चंगा हो गया, हमें भी वापस उनके पास जाने की ज़रूरत है (लूका 8:39)। भविष्यद्वक्ता को उसके अपने नगर या परिवार में सम्मान नहीं मिलता (मत्ती 13:57), इसलिए हमें भविष्यद्वक्ता या सुसमाचार प्रचारक के समान आचरण करने की ज़रूरत नहीं है, परंतु परिवार, टीम या समाज के सदस्य के रूप में बर्ताव करना है। धैर्य और मित्रता के साथ उनकी सेवा करके हमें दिखाना है कि हम उनसे प्रेम करते हैं। इसके साथ बुद्धिमानी की बात होनी चाहिए जिससे लोग खीज न जाएं, परंतु उनकी राय का आदर हो, भले ही वह राय गलत क्यों न हो। कभी कभी जब हम अपने अत्यंत निकटतम लोगों को जीतना चाहते हैं, तब चुप रहना भी बेहतर होता है (1 पतरस 3:1–2)। हमारे मित्र और रिश्तेदार हमारी सुनने के लिए तैयार हों इसके लिए समय लग सकता है।

इसलिए प्रभु यह स्पष्ट करता है कि सुसमाचार प्रचार एक प्रक्रिया है। वह उसकी बराबरी एक खेत से करता है (यूहन्ना 4:35–38)। कटनी को संभव बनाने के लिए, किसान को खेत तैयार करना पड़ता है, बीज बोना पड़ता है, उसे सींचना पड़ना है, घास निकालना पड़ता है, और इंतज़ार करना पड़ता है। इस प्रक्रिया के लिए समय लगता है। जब गेहूं सफेद हो जाता है, तब किसान कटनी काटेगा। कटनी के बाद बीज बोने और फसल उगाने की प्रक्रिया फिर शुरू होनी है। इससे हम कई पाठ सीख सकते हैंः सुसमाचार की प्रस्तुति सुसमाचार प्रचार के अंतिम चरणों में से मात्र एक है। इसकी बराबरी कटनी से की गई है। आत्मिक कटनी हो सके इसलिए हल चलाने की, घास काटने की, बीज बोने की और पानी देने की ज़रूरत है। और इसके लिए समय लगेगा।

हम इस प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। अपने आसपास के लोगों का निरीक्षण करके और उनकी सुनने के द्वारा, हम यह पता कर सकते हैं कि वे आत्मिक रीति से कहां हैं। वे विश्वास करते होंगे कि परमेश्वर नहीं है, या प्रकृति के पीछे एक उच्च शक्ति कार्यरत है। कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर है, और वे उसके प्रति ज़िम्मेदार हैं। अन्य लोग और भी जानते होंगे – जो कुछ उन्होंने किया है उसके

लिए वे खुद को दोषी समझते होंगे। बाद में वे समझेंगे कि उन्होंने पाप किया है और खोए हुए हैं। फिर वे उद्धार की ज़रूरत को महसूस करेंगे, उद्धार का मार्ग समझेंगे और अंत में उद्धार पाएंगे। सुसमाचार प्रचार उन्हें प्रभु की ओर लाने में, एक और कदम आगे चलने में सहायता करेगा।

सुसमाचार प्रचार की प्रक्रिया में सहभागी होने का एक अच्छा तरीका है दूसरों के साथ गहरा रिश्ता स्थापित करना। इफिसुस के धार्मिक अगुवों में प्रेरित पौलुस के अत्यंत निकट मित्र थे (प्रेरितों के काम 19:31)। उसका लक्ष्य सुसमाचार लेकर सब प्रकार के मनुष्यों के पास जाना था (1 कुरिन्थियों 9:19)।

ऐसा करने के लिए वह उनके यथासंभव निकट आया, वह यहूदियों के लिए यहूदी बन गया (1 कुरि. 9:20–23)। संसार का मित्र न बनते हुए, वह उनका मित्र बन सकता था।

प्रभु यीशु पापियों का मित्र था। उसने उनके साथ समय बिताया, यहां तक कि दूसरों ने शिकायत की। प्रभु ने उन्हें उत्तर दिया: *"उसने यह सुनकर उनसे कहा, "वैद्य की जरूरत भले चंगो को नहीं, परन्तु बीमारों को है"* (मत्ती 9:12)। वैद्य को बीमारों के पास जाने की ज़रूरत होती है, फिर उन्हें संक्रामक रोग क्यों न हो। उन्हें उसकी ज़रूरत होती है, और उनके पास जाना उसकी बुलाहट है। परंतु जब वह बीमार के पास जाता है, तब वह उस रोग से बचने का हर तरह से प्रयास करता है। वह हर प्रकार के आरोग्य संबंधी उपायों को उपयोग करता है। उसी तरह हमें पापियों के पास जाने की ज़रूरत है (मत्ती 28:19)। उन्हें प्रभु यीशु की ज़रूरत है। जाते समय हमें पाप में गिरने से बचने के लिए जो कुछ करने की ज़रूरत है, उसे करना है।

हमें अपने आसपास के अविश्वासियों के इतने निकट रहने की ज़रूरत है कि वे हमारे जीवन को देख सकें और हमारे शब्दों को सुन सकें। हमें हमारे आसपास के अविश्वासियों से इतना अलग होने की आवश्यकता है कि हम प्रभु के साथ अपनी संगति न खो दें। जब हम में पापमय आदतों का विकास होता है तब हम अपनी गवाही खो बैठते हैं।

अब कुछ सुझाव दिए जाते हैं कि हम अपने वर्तमान रिश्तों को कैसा गहरा बनाएं और नए रिश्तों को कैसे बढ़ाएं। व्यक्ति के साथ समय व्यतीत करने को प्राथमिकता दें। एकसाथ मिलकर ऐसा कुछ काम करें जिसमें दोनों को आनंद आता है। अपने विश्वास, मूल्यों और कठिनाइयों के विषय में बातें करें और सुनना सीखें। हम यह समझने की कोशिश करें कि वह जीवन की ओर उस दृष्टि से क्यों देखता है। प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको ऐसे विचार दें कि आपको क्या करना है और क्या कहना है।

जब आपके मित्र दिलचस्पी लेते हैं, तब आप उन्हें निमंत्रण देना चाहेंगे कि वे आपके साथ सुसमाचारों में पढ़ें और प्रभु यीशु के जीवन और शिक्षा का अध्ययन करें। या उन्हें किसी उचित सभा में बुलाएं जहां वे सुसमाचार सुन सकें और प्रभु के विषय में और जान सकें।

ये कुछ तरीके हैं जिससे आप अपने आसपास के लोगों को तैयार कर सकते हैं ताकि वे प्रभु यीशु को जान सकें।

परिशिष्ट - क

शिष्यता की जीवन-शैली

जब प्रभु ने पतरस, यूहन्ना और अन्य शिष्यों को बुलाया, तब उन्होंने उसके पीछे चलने के लिए अपना काम छोड़ दिया (मरकुस 1:20)। शिष्यों ने काफी समय प्रभु के साथ बिताया, उसे काम करते देखा, उससे सीखा। उनके चरित्र का निर्माण हुआ और उन्होंने योग्यताएं प्राप्त की। उन्होंने उसके काम में, प्रचार करने हेतु बाहर जाने में हिस्सा लिया। इन सारी बातों के द्वारा वे भविष्य के कार्य के लिए तैयार किए गए।

हम में से अधिकतर लोग अपने परिवारों को और काम को इस तरह नहीं छोड़ते। परंतु क्या हमारी शिष्यता सप्ताह अंत या शाम के फुरसत के समय तक सीमित है? नहीं, हम अपने जीवन के प्रतिदिन के अनुभवों में कई बहुमूल्य पाठ सीखते हैं। हम प्रभु से कैसे सीख सकते हैं एवं और बड़े कामों के लिए तैयार होते हैं?

एक दिन प्रभु यीशु ने भीड़ को संबोधित करने के लिए पतरस की नाव का उपयोग पुलपिट के रूप में किया। फिर उसने पतरस से कहाः *"गहिरे में ले चल, और मछलियां पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।"* (लूका 5:4)। पतरस को अपेक्षा नहीं थी कि वह सफल होगाः *"हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा"* (लूका 5:5)। यहां पर पहली बार पतरस अपना प्रतिदिन का काम करने लगा क्योंकि प्रभु ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था। जब पतरस ने ऐसा किया, तब उसके साथ कई बातें हुई। और जब हम अपने प्रतिदिन के कार्य को प्रभु की सेवा के रूप में करेंगे, तब हमारे साथ भी यही होगा।

1. पतरस के मल्लाहों ने ढेर सारी मछलियां पकड़ीं। प्रभु ने पतरस को प्रतिफल दिया। हममें से हर एक को अपना जीवन प्रभु के हाथों में सौंपना है, उससे पूछना है कि वह हमसे क्या करवाना चाहता है और फिर उसे उसके लिए करें। प्रभु के प्रति हमारी सेवा में ऐसी बातें शामिल होंगी जैसे हमारी उपजीविका के लिए काम करना (2 थिस्सल. 3:12), हमारे घराने का प्रबंध करना (1 तीमु. 5:14)।

जब एक शिष्य प्रभु के प्रति सेवा के रूप में अपना प्रतिदिन का काम करेगा, तब प्रभु उसे प्रतिफल देगा। प्रतिफल हमेशा व्यापार में सफलता नहीं होगा जैसे उस दिन पतरस के लिए था। परंतु प्रभु की सेवा के रूप में हम जो कुछ करते हैं, उसके लिए सनातन प्रतिफल होगा (देखें कुलुस्सियों 3:24)।

2. पतरस प्रभु के चरणों में गिर गया क्योंकि उसने जान लिया कि प्रभु कौन है। जब प्रभु ने इन सारी मछलियों को उस जाल में आने की आज्ञा दी, तब पतरस ने सृजनहार की सामर्थ देखी। पतरस ने परमेश्वर की पवित्र उपस्थित को महसूस किया, और इसलिए कहाः *"हे प्रभु मेरे पास से जा"* प्रभु ने पतरस के भोजन का प्रयोजन कर अपना प्रेम और निगेहबानी प्रगट की, और उसे इन शब्दों में सांत्वना प्रदान कीः *"मत डर।"*

प्रेरित पौलुस के जीवन का लक्ष्य था प्रभु को बेहतर रीति से और गहराई से जानना (फिलिप्पियों 3:10), और हमारे लिए भी यह अच्छा लक्ष्य होगा। प्रभु को जानने में समय बिताना बाइबल में और सभाओं में जो समय हम बिताते हैं, वहीं तक सीमित नहीं है। अन्य किसी भी रिश्ते के समान, जब हम उसके साथ समय बिताते हैं, तब हम उसे जानने लगते हैं। *"उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।"* नीतिवचन 3–6।

3. पतरस ने खुद के विषय में सीखा – कि वह पापी मनुष्य है। यह अनोखी बात है कि प्रवचन सुनते समय उसने यह नहीं सीखा, परंतु जब वह प्रभु की आज्ञा सुनकर काम कर रहा था, तब सीखा। हम कौन हैं यह हम जितना अधिक सीखते हैं, उतना अधिक हम प्रभु पर भरोसा करेंगें न कि खुद पर।

4. अंत में पतरस अन्य कामों के विषय में और समझ गया जो परमेश्वर चाहता था कि वह करे। *"अब से तू मनुष्यों को पकड़ने वाला बनेगा"* (लूका 5:10)। पतरस जब प्रभु के लिए अपने प्रतिदिन का काम कर रहा था, तब उसे सेवा के अन्य क्षेत्र में बुलाया गया। और मछुआरे के रूप में जो कई बातें पतरस ने सीखी थीं, उन्हें अब वह मनुष्यों के मछुआरों के रूप में कर पाएगा। उदाहरण के तौर पर, मछुआरे को वहां जाना पड़ता है जहां मछलियां होती हैं, जिस प्रकार सुसमाचार प्रचारक को वहां जाना पड़ता है जहां लोग होते हैं (मत्ती 28:19); और मछुआरा और सुसमाचार प्रचारक दोनों को धीरज रखने की, परिश्रम करने की, अपने लक्ष्य में बने रहने की, और मछली पकड़ने के लिए सब प्रकार की पद्धतियों का उपयोग करने की ज़रूरत होती है।

उसी तरह प्रभु हमारे प्रतिदिन के कार्य का उपयोग भविष्य के कामों के लिए हमें प्रशिक्षित करने के लिए करेगा। जब तक हम यहां पृथ्वी पर हैं, तब तक प्रभु हमें अन्य कामों के लिए तैयार करता है, या यहां के बाद जो दूसरा काम प्रभु ने अपने विश्वासयोग्य सेवकों के लिए रखा है (लूका 19:17)। जब दाऊद अपनी भेड़ों को चराता था, तब शायद ही उसने सोचा होगा कि यह "राज्य करने के समय के लिए प्रशिक्षण का समय" था। राजा के रूप में, वह परमेश्वर के लोगों का सच्चा चरवाहा था। अपने पिता की भेंड़ें चराते समय उसने राजपद के लिए कई सबक सीखे। *"यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे* (2 तीमुथियुस 2:12)।

मछली पकड़ना मुश्किल और नीरस का काम है। पतरस अक्सर कई कारणों से मछली पकड़ने जाता था। इस समय उसने प्रभु की आज्ञा मानकर मछलियां पकड़ी, परिणामस्वरूप प्रभु ने उसे अपने

लिए काम करने हेतु भेजा। उसकी आज्ञा के अनुसार आपका प्रतिदिन का काम उसके लिए करें। यह शिष्य की जीवनशैली है।

पतरस इससे इतना प्रभावित हुआ कि, उसने इस पत्री का बड़ा हिस्सा इस विषय के लिए दे दिया। वह चाहता है कि विश्वासी इस बात को जानें कि वे सभी याजक, राजकीय याजकगण का हिस्सा हैं (1 पतरस 2:8)। अपने याजक पद का अभ्यास करने के लिए विश्वासियों को किस बात की ज़रूरत है? क्या उन्हें अपना व्यवसाय बदलने की ज़रूरत है? नहीं, प्रभु चाहता है कि वे जहां थे वहीं रहें, जहां वे सेवक या गृहिणियां थे, हो सकता है कि उनके स्वामी क्रूर थे और पति अविश्वासी थे। उन्हें निर्देश दिए गए थे कि अपने इन पदों में याजकों के रूप में उन्हें कैसे आचरण करना चाहिए (1 पतरस 2:18–3:6)।

यदि हम प्रभु से प्रेम करते हैं और उसे प्रथम स्थान देते हैं, तो हमारे जीवन बर्बाद नहीं हुए। प्रभु सारी बातों को हमारी भलाई के लिए उपयोग करेगा (रोमियों 8:28)। हम अपने सामान्य कार्य परमेश्वर की महिमा के लिए करना सीख सकते हैं – प्रतिदिन के काम भी जैसे आपका भोजन खाना (1 कुरिन्थियों 10:31)। इसमें एक महत्वपूर्ण कदम है, प्रभु को प्रथम स्थान देनाः *"इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जायेगी।"* (मत्ती 6:33)।

कुछ मसीही लोग सोचेंगेः "मेरा प्रतिदिन का काम केवल मेरी उपजीविका का प्रयोजन करना है। वास्तव में महत्वपूर्ण वह सेवा है जो मैं अपने दफ्तर के बाद प्रभु के लिए करता हूं – पर्चे बांटना, बाइबल अध्ययन समूह में सिखाना आदि।" अविश्वासी पैसा कमाने के लिए काम पर जाते हैं (मत्ती 6:31–32); हमें काम के विषय में अलग रवैया रखना चाहिए। जब हम इस प्रकार सोचते हैं, तब हम अपने प्रतिदिन के कामों में प्रभु को पहला स्थान नहीं देते। दफ्तर के समय के बाद प्रभु की सेवा करना अच्छा है, परंतु उसकी प्रसन्नता के लिए हमारे प्रतिदिन के काम करने के द्वारा दफ्तर के समय में भी क्यों न उसकी सेवा करें?

जब हम शिष्य की जीवनशैली अपनाएंगे और उसके लिए अपने प्रतिदिन के काम करेंगे, तब हम समझ–बूझकर उसकी धार्मिकता की खोज करेंगे। प्रभु धर्मी है। वह हमें अपने स्वरूप में बनाना चाहता है (रोमियों 8:29)। हम अपने प्रतिदिन के कामों में धर्मी होना सीख सकते हैं। सारी कठिनाइयों और परीक्षाओं के बावजूद वह एक आदर्श प्रशिक्षण शिविर हो सकता है। यह उन चरित्र गुणों को भी लागू होता है जो प्रभु पवित्र आत्मा के द्वारा हम में उत्पन्न करना चाहता है (गलातियों 5:22)। काम में मेज पर हम धीरज सीखते हैं। हमें मुश्किल परिस्थितियों में ग्राहकों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने की चुनौती मिल सकती है, या हमारे फोरमन के साथ व्यवहार करते समय हम आज्ञाकारी और विनम्र बनना सीखते हैं। हम सलाह सुनना, अपने पापों को अंगीकार करना, और दूसरों को खुद से बेहतर समझना सीखते हैं।

शायद कोई सोचेगाः प्रभु की सेवा करने के लिए, मुझे मेरे पद को बदलना होगा; मुझे गुलाम की तरह महसूस होता है। प्रेरित पौलुस ने गुलामों को लिखते हुए कहाः *"हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे। यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि*

तू स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर" (1 कुरिन्थियों 7:20–21)। हममें से कोई भी वास्तव में गुलाम नहीं है, परंतु हम ऐसी परिस्थितियों में हो सकते हैं जिन्हें वर्तमान में बदला नहीं जा सकता। हमारी वर्तमान परिस्थितियां प्रभु के प्रति हमारी सेवा के लिए बाधा प्रतीत होती होगी। मां बर्तन मांजने तक सीमित रह जाती है मानों वह सिंक से बंध गई हो, पति दफ्तर में अपनी मेज से जकड़ा गया है, और विद्यार्थी अपनी प्रयोगशाला और कम्प्यूटर तक सीमित है। फिर भी हम प्रतिदिन अपने जीवनों को प्रभु के हाथों में सौंप सकते हैं, उसके लिए काम कर सकते हैं, जैसा कि पतरस ने उस समय किया जब उसने कहाः *"तेरे कहने से जाल डालूंगा।"*

ऐसा हो सकता है कि हमें अलग रीति से प्रभु की सेवा में और समय का योगदान देने हेतु अवसर प्राप्त हो। अन्य लोगों को सहायता की ज़रूरत होती है और उन्हें सुसमाचार की आवश्यकता होती है। हम प्रचार करने के द्वारा या जो ऐसा करते हैं उनकी सहायता करने के द्वारा सुसमाचार फैला सकते हैं। जब प्रभु ने शिष्यों को उसके साथ पूर्णकालीन रूप से काम करने के लिए बुलाया, तब उन्होंने मछुआरों के रूप में अपना काम छोड़ दिया और अलग क्षमता में उन्होंने प्रभु के लिए काम किया। जब हम माताओं और गृहिणियों के रूप में, दुकान में या निर्माणकार्य के स्थान पर काम करते हैं, तब हम प्रभु के लिए काम कर सकते हैं। यदि हमें इन कर्तव्यों से मुक्त किया जाता है, तो हमें इस स्वतंत्रता का उपयोग प्रभु और उसके राज्य के लिए करना चाहिए। प्रभु यीशु जब बढ़ई की कुर्सी में बैठता था तब भी वह परमेश्वर की इच्छा में था, जैसा कि उस समय जब वह प्रचार करने जाता था। जिस प्रकार वह उसमें था, उसी प्रकार वह अपनी सार्वजनिक सेवकाई के समय भी वह आत्मिक और पवित्र था। हमारे प्रतिदिन के कामों को करते समय हम इस बात को स्मरण रखें।

एक मिशनरी की पत्नी निराश होने लगी क्योंकि उसका पति प्रचार करता हुआ यात्रा करता था, और उसे प्रभु की सेवा करने का बहुत कम अवसर मिल पाता। उसे बच्चों के साथ घर में रहना पड़ता, घर आने वाले मेहमानों के लिए बर्तन साफ करने पड़ते। एक दिन उसके मन में विचार आया कि प्रभु चाहता था कि वह इन सारे कामों को करे। वह प्रभु के लिए अपने काम करने लगी, एक समय की बात के रूप में नहीं – यह उसकी जीवनशैली बन गई। उसने अपनी रसोई में एक चिन्ह लगायाः "यहां प्रभु की सेवा प्रदान की जाती है – दिन में तीन बार।"

परिशिष्ट – ड

मुझे मण्डलियां पसंद है

मुझे माफ कीजिए, परंतु मुझे मण्डलियां पसंद हैं। इस प्रकार कुछ कहना संस्कृति के विपरीत लगता है। 'प्रचलित' बात है उनके पीठ पीछे उनकी आलोचना करना, उनके सारे दोष और असफलताओं पर रोशनी डालना। ऐसे असंख्य आलोचक हैं जो मण्डलियों के साथ क्या गलत है इस विषय में सिद्धांतवादी बात कहते हैं। शायद अब समय आ गया है कि कोई आगे कदम बढ़ाकर कहें कि उनमें क्या अच्छा है। मैं वह व्यक्ति बनना चाहूंगा। मुझे बताने दीजिए कि वे मुझे क्यों पसंद हैं।

मुझे रोटी तोड़ने में साप्ताहिक तौर पर प्रभु का स्मरण करना पसंद है। पचास वर्षों से मैंने हर रविवार प्रभुभोज की मेज पर प्रभु का स्मरण करने का प्रयास किया है, और उसका आकर्षण कभी मेरे लिए समाप्त नहीं हुआ। ऐसी सभा के विषय में कुछ विशेष है जहां मेरा प्रिय प्रभु एकमात्र आकर्षण केंद्र और आराधना का केंद्रीय विषय है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब लोग अलग प्रकार की संगति के लिए मण्डली छोड़ जाते हैं, तब वे अनिवार्य रूप से कहते हैं, "मुझे आराधना सभा की याद आ रही है।" मुझे इससे दुख होता है कि वे उसे छोड़ गए।

मण्डली मेरे लिए प्रिय बन गई है क्योंकि मैंने इफिसियों 4:12 पर अमल होते और कहीं नहीं देखा। वरदान सेवकाई के काम के लिए पवित्र जनों की उन्नति के लिए दिए गए थे। मैंने अनपढ़ पुरुषों को इस हद तक परिपक्व होते देखा हैं जहां उन्होंने कायल करने वाली सामर्थ के साथ सुसमाचार का प्रचार किया। मैंने घरेलु पुरुषों को परमेश्वर के लोगों के हृदयों को सेवा प्रदान करते देखा, केवल उनके दिमाग (बुद्धि) को नहीं। मैंने समर्पित स्त्रियों को न केवल परमेश्वर के लिए बेटे बेटियों की परवरिश करने में संतुष्टि पाते देखा है, बल्कि अपनी सेवकाई के समर्थन में अपने पति के साथ सहयोग देते हुए, अन्य स्त्रियों और बच्चों को सिखाते हुए देखा है, घर में और विदेश में मिशनरियों के काम में सहायता करते देखा है, बीमारों और पीड़ितों को भेंट देते देखा है, और पवित्र जनों और अपरिचितों के प्रति समान रूप से आतिथ्य प्रकट करते देखा है। मैंने जवान पुरुषों को इस तरह अपने वरदानों का

उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित होते हुए देखा है, जैसा एक औसत कलीसिया में कभी नहीं होगा। कई नामी सुसमाचारीय अगुवे इफिसियों 4:12 के लिए दिखावटी प्रेम दिखाते हैं, और कुछ लोग, जिस तरह से मण्डलियां उन पर अमल करती है उसकी प्रशंसा करते हैं।

मण्डलियों की एक महत्ता हैं, समान भाईचारे को पासबान और सामान्य विश्वासी में विभाजित करने से दृढ़ इन्कार। करिश्माई प्रचारक के बजाय व्यक्ति का मसीह के लिए इकट्ठा होना सिद्धांत और विवाह दोनों में दैवीय है। नया नियम प्राचीनों की बहुलता के विषय में सिखाता है और एक व्यक्ति की सेवकाई को कभी नहीं सिखाता। परंतु जो मण्डलियां प्रचार करती और सिखाती और उन पर अमल करती हैं, हमेशा मसीही समाज में चित्तीदार शिकार पक्षी ठहरेगी। इस प्रकार की मण्डली होने में कुछ अंश में बदनामी है, और जो लोग इस मण्डली में भागी होते हैं उन्हें यह सहने के लिए तैयार रहना होगा।

मुझे यह सच्चाई पसंद है कि प्रत्येक मण्डली स्वतंत्र है, केवल प्रभु के प्रति ज़िम्मेदार है। पृथ्वी पर कोई मुख्यालय नहीं है, मनुष्य द्वारा नियुक्त कोई पुरोहित पद नहीं है, कोई भी संस्था सिर और देह के बीच नहीं आ सकती। यह उदारतावाद, अपरिचित सिद्धांतों, या तानाशाही द्वारा मण्डलियों पर नियंत्रण करने को रोकता है।

मण्डलियों की आर्थिक नीतियां प्रशंसनीय होती हैं। यह विशेष है कि अधिकतर संगतियों में सप्ताह में केवल एक ही बार भेंट ली जाती है। और फिर भी वह एक भेंट बिना किसी तूरही–नाद के या याचना करके नहीं ली जाती और स्थानिक खर्चों को पूरा करने के लिए और स्वदेशी एवं विदेशी मसीही सेवकाईयों की सहायता करने के लिए पर्याप्त होती है। पारम्परिक तौर पर, पूर्णकालीन सेवकों ने अपनी ज़रूरतों को जाहिर न करते हुए उन ज़रूरतों की पूर्ति के लिए केवल प्रभु की और देखा है। संसार मण्डलियों के विषय में इस बात को नहीं कह सकता जो सामान्य तौर पर मसीही विश्व के विषय में कहता है, "सारी कलीसियाएं केवल आपका पैसा चाहती हैं।"

मैं इस बात की सराहना करता हूं कि मण्डलियां आवश्यकता पड़ने पर ईश्वरीय अनुशासन पर चलने के लिए तैयार होती हैं, भले ही ऐसा करते समय वे मेगा चर्च बनने के उनके अवसरों को सीमित क्यों न कर दें। उनकी मण्डलियों को उनके आकार से नहीं, परंतु उनके सदस्यों की पवित्रता से परखने से वे संतुष्ट हैं।

मण्डलियों की साहित्य सेवा उत्कृष्ट होती है। शायद सुसमाचारीय जीवन में उनका यह मुख्य योगदान है। डॅर्बी, केली, मॅकिन्टॉश, वाईन, और अन्य कई लोगों ने समस्त संसार में गहरा और लाभदायक प्रभाव डाला है। कुछ वर्षों पहले एक मसीही कॉलेज के लायब्रेरियन ने "ब्रेदरन" लेखकों की ग्रंथसूची का संकलन करने का प्रयास किया। बाद में उस प्रोजेक्ट को पूरा करने की उम्मीद उसने छोड़ दी। और मण्डलियों से सलग्न मिशनरी आंदोलन का उल्लेख किया जाना चाहिए, ऐसा आंदोलन जो उसका समर्थन करने वाली स्थानीय संगतियों के समानुपात में नहीं था।

अन्य लोगों के पास मण्डलियों को पसंद करने के अन्य कारण हैं। कुछ बिल्कुल अनपेक्षित हैं। उदाहरण के तौर पर, अलग अलग कलीसियाओं में घूमने फिरने के बाद हाल ही में संगति में आई

हुई एक बहन ने कहा कि वह प्रसन्न है कि वह पुरुष नेतृत्व के साथ है। स्त्री स्वतंत्रता के दिन में यह एक अजीब बात है।

संभवतः कुछ समूह मण्डलियों के समान खुद की आलोचना में लगे रहते हैं। स्पष्ट शब्दों में, मुझे यह निहायत अतिरेक लगता है जिससे अतिसंवेदनशील लोग अनावश्यक तौर पर मोहभंग होकर चले गए। प्रशंसा के बाद आलोचना उत्तम है। समय आ गया है कि हम दोनों के बीच संतुलन बनाएं।

पूर्ववर्ती बातों का अर्थ यह नहीं है कि मैं यथास्थिति से संतुष्ट हूं। मैं मानता हूं कि ऐसे क्षेत्र है जिनमें हमें सुधारने की ज़रूरत है, जैसे सुसमाचारीय आऊटरीच और मण्डली के अगुवों का विकास। मैं बाइबल सिद्धांतों के प्रति अटल रूप से समर्पित हूं, फिर भी मैं समय समय पर बदलती हुई पद्धतियों की ज़रूरत जानता हूं। मैं इस बात से सहमत हूं कि हमारे कुछ लोगों में, जिनमें जवान भी शामिल है, उचित चिंता है, और उनका सुनना ज़रूरी है।

विनाशकारी कार्य करने वालों को (जहाज तोड़ने वालों) को पुकारने के बजाय, हमें अपनी अस्तीन तानकर समस्याओं को सुलझाने की ज़रूरत है। हमें आराम–कुर्सी में बैठने वाले सेनापतियों के बजाय रचनात्मक कार्य कैसे करना चाहिए यह दिखाने वाले पुरुष दें। आराम कुर्सी में बैठने वाले सेनापति मण्डलियों को अस्वीकार करते हैं या पूरी तरह से छोड़ देते हैं। और जो मण्डलियों से सहायता पाते हैं उन्हें "खिलाने वाले हाथ को काटने" जैसी बातों से बचाने के लिए कुछ अंश में निष्ठा दिखानी चाहिए।

परिशिष्ट – इ

क्या हमें पासबान को परिश्रमिक के रूप में रखना चाहिए?

अधिकतर व्यवसायों में अदायगी का उचित तरीका वेतन होता है, फिर भी जो लोग परमेश्वर के वचन की सेवा करते हैं उनके लिए इसमें विशिष्ट खतरे जुड़े हुए हैं। निसंदेह इसी कारण से वैतनिक सेवकाई नये नियम के लिए अपरिचित है। प्रभु यीशु ने अत्यंत स्पष्ट रूप से सिखाया कि *"मज़दूर को अपनी मज़दूरी मिलनी चाहिए"* (लूका 10:7) और पौलुस ने इस बात का समर्थन किया कि *"जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो"* (1 कुरिन्थियों 9:14), फिर भी कोई संकेत नहीं है कि इन लोगों को हर महीने निर्धारित रकम प्राप्त होनी चाहिए। एक संभवनीय समस्या यह है कि जो वेतन को नियंत्रित करते हैं, वे अक्सर प्रचार को नियंत्रित करते हैं। ऐसा हमेशा नहीं होता कि जो बांसुरी बजाने वाले को वेतन देते हैं, वे धुन बजाने का आग्रह करें, परंतु ऐसा हुआ है और ऐसा हो सकता है। जो बटुवे की रस्सी पकड़ता है, वह बकरों के समान दैविक हो सकता है, फिर भी वे ऐसे किसी भी प्रचार को दबाने का आग्रह कर सकते हैं जो उन्हें उचित नहीं लगता।

यह भी सच है कि जो वेतन देते हैं वे कार्यसंपादन के एक निश्चित मानक को देखना चाहते हैं। उदाहरण के तौर पर, वे कलीसिया की सदस्यता में बढ़ौतरी देखना चाहें, या तो धर्मांतरण के द्वारा या अन्य कलीसियाओं से तबादले के माध्यम से। यह प्रभु के सेवक पर एक सूक्ष्म दबाव लाता है कि संख्या बढ़ाने हेतु अपने मानक को कम करे। सच्चे विश्वासियों या परिवर्तनों को उत्पन्न करना उसकी सामर्थ में नहीं है; परमेश्वर है जो बढ़ौतरी देता है। परंतु वह वार्षिक प्रतिवेदन में अच्छा दिखने वाला खोखला प्रकाशन प्रस्तुत कर सकता है। उसी तरह अनुशासन के मामलों में उसकी आवाज़ में मृदुलता आएगी ताकि वह किसी को खो न बैठे। दूसरों की ओर से दबाव के अलावा शिक्षकों को यह परीक्षा होती है कि अपनी मण्डली को ठेस न पहुंचे इसलिए वह सत्य को कमज़ोर बनाकर पेश करता है।

यदि लोग धनवान हैं, तो वह इस विषय पर बोलना आवश्यक नहीं समझेगा कि *"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।"* (मत्ती 6:19), *"इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।"* (1 तीमुथियुस 6:17)। प्रचारक को परमेश्वर का स्वतंत्र जन होना चाहिए, वह परमेश्वर की पूर्ण मनसा की घोषणा करने हेतु स्वतंत्र हो, परमेश्वर का प्रवक्ता होने के लिए स्वतंत्र हो, परमेश्वर की वाणी के रूप में बोलने के लिए स्वतंत्र हो। जो बात परमेश्वर के कार्य में बाधा लाती है वह बड़ी त्रासदी है। पतन और स्वधर्मत्याग के समयों में, अक्सर प्रचारकों में यह प्रवृत्ति होती है कि वे विश्वास के महान, मौलिक सिद्धान्तों के पक्ष में खड़े रहने के बजाय उन लोगों के पक्षधर होते हैं जो पैसों पर नियंत्रण रखते हैं।

उदारतावाद और स्वधर्मत्याग से छलनी हो चुके एक फिरके के सम्बंध में बोलते हुए, डेविड ओ. बिले लिखते हैं, "एक चिरस्थायी विनोद है जो पासबान प्रत्येक वार्षिक सभा में बताते हैं: 'यदि सभा में विभाजन आता है, तो मैं वार्षिक वेतन बोर्ड में चला जाऊंगा!' यह बोर्ड या मंडल साम्राज्य का 'सिमेंट' प्रतीत होता है।" आर्थिक मुआवजा सामर्थी तरीके से परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्यता से अधिक प्रधानता प्राप्त करता है। निर्धारित वेतन विश्वास के जीवन को कमज़ोर करने की अत्यंत संभावना रखता है। प्रभु के सेवक को दूसरों के सामने उदाहरण बनना चाहिए जो विश्वास से चलता है और देखकर नहीं। उसका जीवन प्रभु पर निर्भरता की चिरंतन संकट–स्थिति हो। जी. एच. लैंग ने अपनी गवाही दी:

> मैं इन पचास वर्षों में कई देशों में सुसमाचार के सेवकों के साथ मधुर संगति में रहा हूं और उनके साथ मैंने काम किया है और मैं सन्तुष्ट हूं कि एक आश्वस्त या नियमित आमदनी, अवश्य ही आत्मिक हानि है, और किसी भी रीति से लाभ नहीं है, क्योंकि वह संसारिक ज़रूरतों की पूर्ति के विषय में परमेश्वर में प्रत्यक्ष और स्थिर विश्वास अनावश्क बना देती है।[92]

पादरियों की दुनिया में, बड़े वेतन के लिए सौदेबाजी करना असामान्य बात नहीं है। वे भौतिक उन्नति को परमेश्वर का मार्गदर्शन समझने की भूल कर बैठते हैं। यह अनुमान लगाना आसान है कि आकर्षक वेतन की पेशकश परमेश्वर की बुलाहट का दर्शक है। पुराने नियम में, गुलाम की कीमत परिश्रमिक सेवक से दुगना होती थी (व्यवस्थाविवरण 15:18)। दूसरे शब्दों में, जो अपने स्वामी का होने के कारण सेवा करता था, वह उस से अधिक मूल्यवान था जो लाभ या वेतन पाने के लिए काम करता था। क्या इसमें वर्तमान समय के लिए संदेश है? अर्थात, प्रश्न उतपन्न होता है, "यदि वेतन के द्वारा नहीं, तो प्रभु के सेवक को किस रीति से सहायता प्राप्त होगी?"

सर्वप्रथम, विश्वासी में यह पूर्ण भरोसा होना चाहिए कि प्रभु ने उसे पूर्णकालीन आधार पर सेवा करने के लिए बुलाया है। इस पर अत्यधिक बल नहीं दिया जा सकता। और उसे न केवल स्वयं यकीन होना चाहिए, बल्कि अवपे आत्मिक मार्गदर्शकों का भरोसा होना चाहिए कि उसने अपने कंधे पर आत्मिक शाबाशी पाई है। बहरहाल, कोई भी मनुष्य अपने वरदान का पर्याप्त रूप से कुशल निर्णय कर्ता नहीं हो सकता। दूसरी बात, जैसा कि हडसन टेलर ने कहा, उसे पूर्ण रूप से आश्वस्त होना चाहिए

कि जिस बात का ऑर्डर परमेश्वर देता है, उसका बिल वही चुकाता है। फिर उसे आर्थिक सहायता के किसी भी दृश्यमान साधनों के बिना, परंतु इस अटल विश्वास के साथ आगे कदम रखना है, कि प्रभु मसीह यीशु द्वारा अपने महिमा के धन के अनुसार उसकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। यह अवश्य ही पर्याप्त होना चाहिए। परंतु परमेश्वर यह कैसे करेगा? वह अपने लोगों के द्वारा यह करेगा। किसी ने इस प्रकार इस प्रक्रिया का वर्णन किया है:

> परमेश्वर व्यक्ति के मन में विचार डाल सकता है। वह कुछ करने के लिए किसी के मन में "तीव्र इच्छा" या "पूर्ण विश्वास" डाल सकता है। इसलिए जब हम किसी निश्चित रकम के लिए प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर एक व्यक्ति को प्रेरित करता है कि वह अपना चेकबुक ले और वह रकम भेजे, या वह दर्जनभर लोगों को प्रेरित कर सकता है कि वे अलग अलग हिस्सों में वह रकम भेजे जिससे कुल मिलाकर समुचित रकम हो। शायद आपको विश्वास नहीं होगा कि वह ऐसा करता है, परंतु मैं केवल यह कह रहा हूं कि जब मैं पैसों के लिए प्रार्थना करने के विषय में बोलता हूं, तो मेरे कहने का यही अर्थ है।[93]

यह विश्वास के जीवन का रोमांचक भाग है – ज़रूरतें जैसे जैसे बढ़ती जाती हैं, वैसे आमदनी को बढ़ते देखना, और इसके विपरीत जब ज़रूरतें नहीं होती, तब आमदनी का कम होना। यह नियंत्रण और संतुलन की बहुमूल्य प्रणाली है। जब तक मैं परमेश्वर का काम करता हूं, मैं जानता हूं कि वह ज़रूरतें पूरी करेगा, मेरी ज़रूरतों को जाहीर न करते हुए भी। यदि मैं अपनी बुद्धि के अनुसार सेवा करता हूं, तो मैं उससे अपेक्षा नहीं कर सकता कि जो उसने आदेश नहीं दिया है, उसके लिए वह भुगतान करे। *एकोज़* नामक पत्रिका के संपादक रे विलियम्स ने लिखा है, मैं विश्वास करता हूं कि यही मार्ग है।

> यदि नहीं, तो हम उसके मार्गदर्शन पर कैसे निर्भर रह सकते हैं? यदि मैं खुद से कहता हूं, "मैं यह करना चाहता हूं" और मेरे मित्रों से कहता हूं, "क्या आप यह काम करने में सहायता हो इसलिए मुझे पैसा दे सकते हैं?" मैं वह करना चाह सकता हूं और मेरे मित्र मेरी सहायता करना चाह सकते हैं, परंतु मैं नहीं जान पाऊंगा कि यह प्रभु की इच्छा थी या नहीं। यदि मैं केवल परमेश्वर से कहता हूं कि मैं यह कार्य करना चाहता हूं, और पैसा आ जाता है जिसके विषय में प्रभु को छोड़ और कोई नहीं जानता, तब मैं यह जानता हूं कि मेरे लिए यह प्रभु की इच्छा थी।[94]

सायलस फॉक्स की गवाही सुनें:

> सन 1926 में, सहायता के लिए सीधे प्रभु की ओर देखना मेरे लिए बेहतर है यह समझकर, और विशेष सभाओं के लिए आने वाले निमंत्रणों को स्वीकार करने हेतु स्वतंत्र रहने के लिए, मैं पत्नी और पांच बच्चों के साथ, और परमेश्वर की महिमा के लिए एक चौथाई सदी के बाद (पच्चीस वर्षो बाद) निकल पड़ा। बिना किसी मिशन की आर्थिक सहायता के मैं गवाही दे सकता हूं, या हमारे घर की ज़रूरतों को बताने के निए कोई सचीव हमने नियुक्त नहीं किया, कोई निवेदन नहीं भेजे, या कोई पैसा इकट्ठा नहीं किया... या किसी भी 'सूची' में अपना नाम दर्ज़ नहीं कराया, ुरि भी प्रभु ने अनुग्रह के साथ, अद्भुत रीति से, विश्वासयोग्यता के साथ इन पच्चीस वर्षों में सारी ज़रूरतें पूरी की, और हम उसकी स्तुति करते हैं, और इसमें इस तरह गवाही देते हैं।[95]

अंत में, डॅन क्रॉफोर्ड अपनी आत्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं:

> एक सोसायटी मिशनरी मित्र ने निर्धारित वेतन का दावा न करने वाले विवाहित पुरुष के रूप में मुझसे प्रतिवाद किया – उसका विचार निश्चित था। तब परमेश्वर ने अपने वचन से मुझसे बातचीत की। विश्वास ही एकमात्र निश्चित वस्तु है इस बात को परमेश्वर के निम्नलिखित सत्य ने स्थापित किया: *"प्रतिज्ञा विश्वास के द्वारा मिलती है कि वह ...दृढ़ हो।"* एक ही बात दृढ़ है जो है विश्वास![96]

परिशिष्ट – फ

परमेश्वर के समान सोचना

मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के विचारों के अनुसार सोचना होगा। इसमें संसार के मानको का इन्कार करना और राज्य के मानकों को स्वीकार करना शामिल है। बहरहाल, किसी भी बात की कसौटी यह है कि वह प्रभु यीशु की दृष्टि में कैसी दिखाई देती है। इस संसार के मनुष्यों द्वारा बहुमूल्य समझी जाने वाली बातें उन बातों के विपरीत हैं जिसे मसीह का मन मूल्यवान जानता है, या यीशु के शब्दों में, *"जो मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है"* (लूका 16:15)। दीन। हमारा प्रभु कइयों को बुद्धिमान, सामर्थी या उदात्त नहीं कहता। बल्कि, अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वह दीनों का उपयोग करता है।

सुलैमान ने संसार का विरोधी उत्तर दिया कि "रुपयों से सबकुछ प्राप्त होता है।" यदि आपके पास पर्याप्त पैसा है, तो आप कुछ भी कर सकते हैं। यह कल्पना कलीसिया में प्रवेश कर गई है। हमें बताया गया है कि आज परमेश्वर के कार्य में सबसे बड़ी ज़रूरत पैसा है। परंतु यह गलत है। परमेश्वर निर्धन नहीं है। आधारभूत धन और आंसू निकालने वाले निवेदनों की ज़रूरत के बगैर जो कुछ वह आदेश देता है, उसका वह भुगतान करता है। जब निर्धन लोग परमेश्वर के लिए बड़े बड़े काम करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि वह सारा श्रेय प्रभु को जाता है। उसे महिमा मिलती है। हडसन टेलर ने उचित ही कहा कि हमें सबसे ज्यादा डर बहुत कम पैसों का नहीं होना चाहिए, परंतु बहुत अधिक असमर्पित पैसों का होना चाहिए। निर्बल। परमेश्वर का बल निर्बलता में ही सिद्ध होता है। क्रूस पर जिसके हाथ और पांव कीलों से ठोक दिए गए उससे निर्बल और कौन हो सकता है? फिर भी उन लाखों लोगों का विचार करें जो उस निर्बलता के द्वारा सनातन दंड से बचाए गए हैं। यह प्रतीयमान विरोधाभास व्हिटलॉक ग्रैंडी द्वारा अप्रतिम रूप से वर्णन किया गया है।

> *निर्बलता और पराजय से उसने महिमामय मुकुट जीत लिया; कुचले जाने से उसे अपने पांवों तले अपने शत्रुओं को कुचल दिया। उसने शैतान की सामर्थ को परास्त कर दिया; पाप बनकर*

उसने पाप को हरा दिया; कब्र में झुककर उसने उसे नाश कर दिया, और मी कर मृत्यु को वध कर दिया।

तुच्छ। ये वे लोग हैं जो निचले पद या स्थान पर हैं। वे समाज की सीढ़ी के निचले सोपान पर हैं। जॉन बनियन ठठेरा था। परमेश्वर ने उसे ऊंचा उठाया कि वह मुसाफिर का सफर नामक पुस्तक लिख सके। वर्षों तक बाइबल के बाद यही पुस्तक दूसरे क्रमांक तक बिकती रही। हम कोयला खदानों में काम करने वाले अनक्षर मज़दूरों के विषय में पढ़ते हैं जो काम के बाद, घर जाकर नहां धोकर, भोजन करके अपनी बाइबल का अध्ययन करते थे। उन्होंने सामर्थ के साथ सुसमाचार का प्रचार किया और अपने घुटनों पर और देख सके जो कई विद्वान अपने पंजों के बल नहीं देख पाए। उन्होंने अद्भुत रीति से परमेश्वर की महिमा की। तुच्छ। यहां पर तुच्छ अल्पसंख्यकों में से एक समर्पित मसीही है जो इस चेतावनी के साथ अपने कांधों पर विज्ञापन का तख्ता लेकर शहर में जाता है "अपने परमेश्वर से भेंट करने के लिए तैयार हों।" राह चलते लोग उसका उपहास करते हैं या उसके लिए दुख महसूस करते हैं। या कोई भ्रमणकारी प्रचारक है जो कॉलेज के आवास में प्रचार करता है। उसके कुछ दांत गिरे हुए हैं। पौलुस के सामन वह अपने शरीर पर "प्रभु यीशु के घावों को लेकर फिरता है।" उसे तुच्छ न समझें। वह प्रभु के चुने हुए सेवकों में से एक है, जो खुद की महिमा नहीं चाहता, परंतु केवल प्रभु यीशु की महिमा खोजता है।

मैंने लोगों को बैठक घर में, भोजनालय के हॉल में, किराए के गोदामों में लिते हुए देखा है। उनके पास पाइप ऑर्गन जैसे वाद्य, स्टेन्ड ग्लास लगी हुईं खिड़कियां या गद्देदार बेंच नहीं थे। परंतु प्रभु वहां था और पवित्र आत्मा सामर्थ के साथ काम कर रहा था। वस्तुएं जो नहीं है। परमेश्वर उन बातों का उपयोग करने में विशेष प्रसन्नता महसूस करता है जिसे संसार निरूपयोगी समझता और जिन लोगों को कोई नहीं समझकर तुच्छ जाना जाता है, जैसे स्पर्जन, टोज़र, और आयनसाईड्स। मैं उन मनुष्यों के विषय में बोलता हूं जिनके पास कभी आडंबरपूर्ण उपाधियां नहीं थी, जिनके पास खेल की कोई पदवियां नहीं थीं और जिन्हें ठाठदार परिचय कराने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वे ऐसे लोग थे जिन्होंने प्रार्थना की, जैसे चार्ल्स वेस्ली: *मुझे छोटा और अज्ञात रहने दीजिए, केवल मसीह मुझे प्रेम करे और मूल्यवान जाने।* मूर्खता। लोगों के लिए सुसमाचार निरी निरर्थक बात है। यीशु मसीह में विश्वास करने से और किसी भी प्रकार के भले कामों के बगैर व्यक्ति उद्धार पा सकता है, यह कल्पना हास्यप्रद है।

सत्य यह है कि सुमाचार परमेश्वर की बुद्धि है। संसार की बुद्धि मूर्खता है। सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ है जिसके द्वारा पापी लोग उद्धार पाते हैं। जो परमेश्वर की मूर्खता दिखाई देती है वह वास्तव में उन लोगों के उद्धार हेतु कार्य करती है, जो विश्वास करते हैं। जो मूर्खता दिखाई देती है, वह मनुष्यों से बुद्धिमान होती है और जो कमज़ोरी दिखाई देती है वह मनुष्यों से अधिक बलवान होती है। विश्वास बनाम दृष्टि। यह दूसरा तरीका है जिसमें परमेश्वर संसार से बिल्कुल अलग विचार करता है। संसार कहता है, "देखना ही विश्वास करना है।" परमेश्वर कहता है, "विश्वास करना देखना है।" यीशु ने मार्था से कहा, *"क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।"* (यूहन्ना 11:40)। क्रूस पर वे लोग चिल्ला उठे, *"इस्राएल का राजा मसीह अब क्रूस पर से*

उतर आए ताकि हम देखकर विश्वास करें" (मरकुस 15:32)। परंतु यीशु जानता था कि उसके मरकर जी उठने के बाद भी वे विश्वास नहीं करेंगे (लूका 16:31)। बाद में पुनरूत्थित यीशु ने थोमा से कहा, *"तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।"* (यूहन्ना 20:29)।

हमारा प्रभु ऐसे विश्वास से प्रसन्न नहीं होता जिसे देखने की ज़रूरत होती है। दूसरा विस्मयकारी तरीका जिसमें परमेश्वर मनुष्य से अलग सोचता है, वह है अगुवों के मामले में। प्रभु ने इन वचनों में वह फर्क समझाया है। (मत्ती 20:25–28)। मसीही शिक्षा के अनुसार मसीही जीवन बिताने के पीछे एक बदनामी है। लोग सोचेंगे कि आप अजीब हैं। वे आपको नापसंद करेंगे क्योंकि आप उनके समान नहीं हैं। वे आप से नाराज़ होंगे क्योंकि आप उनकी सारी गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेते। वे आपका उपहास करेंगे। यह आपका बड़ा अवसर है कि *"उसके निकट जाओ, उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलो"* (इब्रानियों 13:13)। वैसे ही सोचें जैसे परमेश्वर सोचता है।

परिशिष्ट - ग

मसीही साहित्य - संभावनाएं और सीमाएं

दुनियावी समाजों में आज भी मान्य किया जाता है कि संसार में सर्वाधिक विस्फोटक वस्तु न्यूक्लियर हथियार नहीं, परंतु छपाई की स्याही है।

> क्यों? क्योंकि, थोड़ी सी ले लो, उसे वर्णाक्षरों में छिड़क दो, तो वह ऐसे विचारों को विस्फोटित करेगी जो ऐसी सामर्थ के साथ मनुष्यों के मनों को हिलाकर रख देगी जो निश्चित रूप से बम के फूटने पर पैदा होने वाले बवंडर से कई अधिक ताकतवर और स्थायी होगी। छपाई की स्याही या तो अच्छी होगी या बुरी, परंतु सकारात्मक पक्ष का प्रमाण नकारात्मक प्रमाण से अधिक है। क्योंकि जब दर्शनधारी व्यक्ति का उच्च भवितव्य कागज़ में स्याही लगाता है, तब उसकी कालिमा संसार की ज्योति को थामकर रखती है।[97]

डॉ. ओस्वाल्ड स्मिथ लिखते हैं,

> 30 वर्षों से अधिक समय से मैंने प्रार्थनापूर्वक इस समस्या पर विचार किया है, "हम एक पीढ़ी में संसार को कैसे सुसमाचार सुनाएंगे?" बहुत पहले, मुझे यकीन हो गया था कि हम पर्याप्त मिशनरियों को नहीं भेज पाएंगे। परंतु इसका रास्ता होना चाहिए। 53 देशों में यात्रा और अध्ययन करने के पश्चात, मैं इस निष्कर्ष तक पहुंच पाया हूं कि महान आज्ञा को केवल एक ही रीति से ले चल सकते हैं, वह है प्रकाशित पृष्ठ के क्रमबद्ध उपयोग से। उसी रीति से हम हर घर में प्रवेश कर पाएंगे और प्रत्येक व्यक्ति को सुसमाचार का संदेश पहुंचा पाएंगे। संसार तेज़ी से सुशिक्षित हो रहा है। हर सप्ताह दस लाख नए पाठक हमें साहित्य सुसमाचार का अवसर प्रदान करते हैं। यहोवा के साक्षी जाग उठे हैं, वे साहित्य के माध्यम से अपना संदेश पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। मसीही कलीसिया अब तक नहीं जागी है। जल्द ही देर हो चुकी होगी। अब समय है।[98]
> सुसमाचार के लिए प्रकाशित पृष्ठ का काम में लाने के लाभ चौंका देने वाले हैं।

लिखित वचन किसी का भय नहीं रखता – वह किसी मनुष्य के सामने हिचकता नहीं। वह धनवान और निर्धनों को, राजा को और सामान्य जन को एक ही संदेश सुनाता है।

- वह कभी अपना आपा नहीं खोता, कभी वापस क्रोध से नहीं बालतो।
- वह उपहास, ठट्ठा, और अपमान पर ध्यान नहीं देता।
- वह कभी थकता नहीं, परंतु प्रतिदिन 24 घण्टे काम करता है, जब हम सोते हैं और विश्राम करते हैं, उस समय भी।
- वह कभी निराश नहीं होता, परंतु अपनी कहानी बार बार बताएगा।
- वह एक व्यक्ति के साथ भी उतनी ही खुशी से बोलेगा जितनी खुशी से वह भीड़ से बोलता है, और भीड़ को उतनी ही तत्परता से बातें करेगा जितनी एक व्यक्ति से।
- वह हमेशा व्यक्ति को उस समय पकड़ता है जब वह ग्रहण करने की सही मनोवस्था में होता, क्योंकि जब वह सुनने का निर्णय लेता है, तभी यह बोलता है।
- उसे गुप्त रूप से स्वीकार किया जा सकता है, पढ़ा जा सकता है, और उसका अध्ययन किया जा सकता है।
- शांत घड़ी में उस पर अविभाजित रूप से ध्यान दिया जा सकता है।

वह बिना किसी विदेशी स्वर के बोलता है।

- लिखित वचन मनुष्य की आवाज़ से अधिक स्थायी होता है।
- वह कभी समझौता नहीं करता, कभी अपना संदेश नहीं बदलता।
- श्रवणीय शब्दों के भूल जाने और खो जाने के बाद भी वह बोलते रहता है और अपने संदेश को स्पष्ट करता है।
- किसी भी देश के देशवासी बहुतायत से उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।
- वह सभी रोगों से मुक्त है।[99]

"छोटे से छोटा दाऊद की गोफन का पत्थर बन सकता है। मसीह के हाथ में वह महान हस्ती को धराशायी कर सकता है (रॉबर्ट म्यूरे मॅकेनी)। "जब लेखक प्रचार नहीं कर सकता, जब उसे प्रचार करने की अनुमति नहीं होती, जब लेखक प्रचार करने का साहस नहीं कर सकता, और हां, और जब लेखक नहीं होता, तब पुस्तक प्रचार कर सकते हैं (थॉमस ब्रूक्स)।" "और कोई अभिकरण (एजेन्सी) इतनी गहराई से भेद नहीं सकता, इतने साहस के साथ गवाही नहीं दे सकता, इतने दुराग्रहपूर्वक डेरा नहीं कर सकता और इतने जबर्दस्त ढंग से प्रभावित नहीं कर सकता जितना कि प्रकाशित पृष्ठ करता है (सैम्यएल ज्वेमर)।"

हम यह मानते हैं कि साहित्य में सत्य का प्रसार करने हेतु जबर्दस्त क्षमता होती है, फिर भी हमें यह मानकर नहीं चलना है कि वही एकमात्र कार्यविधि या उत्तम प्रणाली है। अपने सुसमाचार अभियान का विस्तार करने में यह मिशनरियों के लिए एक अद्भुत सहायक है, फिर भी यह कभी स्वयं मिशनरी का स्थान नहीं ले सकता। हम स्पष्ट रूप से साहित्य की सीमाओं को कबूल करें:

1. वह पहले से मानकर चलता है कि लोग पढ़ सकते हैं। फिर भी लाखों होंगे जो पढ़ नहीं सकते। इन्हें अलग रीति से सुसमाचार सुनाया जाना चाहिए।
2. साहित्य हमेशा व्यक्ति के मन में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों के उत्तर नहीं देता। ऐसा वार्तालाप के माध्यम से अधिक प्रभावी रूप से किया जा सकता है।
3. प्रभु ने शिष्यों को भेजा जो सत्य के जीवित उदाहरण बनने थे। पवित्र जीवन जैसा प्रभावी और कोई विवाद नहीं होता।
4. सारे सुसमाचारीय कार्य का लक्ष्य उद्धार से परे सत्य में विश्वासियों को मज़बूत बनाना और स्थानीय मण्डलियों का निर्माण होता है। साहित्य नए विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया के विषय में सिखा सकता है, परंतु उन्हें सत्य की ओर अगुवाई करने हेतु मानव कारक (मिशनरी या प्रचारक या शिक्षक) अपरिहार्य रूप से आवश्यक है। नेविगेटर्स के पूर्व अध्यक्ष, डॉसन ट्रॉटमन कहा करते थेः उत्तर मनुष्य है, साहित्य नहीं। शायद आज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि जिस बात को होठों से कानों तक और हृदय से हृदय तक पहुंचना चाहिए, उसे हम प्रकाशित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। साहित्य या सामग्रियां साधन हैं। साधन अपने आप में निरूपयोगी हैं। यदि चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करने वाला युवा छात्र है जिसके पास बड़ी शल्यचिकित्सा के सारे आवश्यक साधन हैं, और एक वृद्ध डॉक्टर है जिसके पास केवल रेज़र ब्लेड और साधारण, टेढ़ी–मेढ़ी सुई और सादा धागा है, तो मैं सारे साधन रखने वाले लड़के के बजाय शल्यक्रिया के लिए खुद को उस पुराने डॉक्टर के हाथ में सौंप दूंगा। क्या आप भी ऐसा नहीं करेंगे? केवल साधन नहीं; परंतु वह मनुष्य जिसके हाथों में साधन है।

परिशिष्ट – च

मौलिक, महत्वपूर्ण और अनावश्यक विषय

मण्डली में मतभेदों को सुलझाने हेतु प्रस्तावित पद्धति। मसीही विश्वास के कुछ निश्चित सिद्धांत हैं जो पूर्णतया मौलिक या बुनियादी हैं। उनका प्रथम महत्व है। जहां तक उनकी बात है, कोई भिन्न राय नहीं हो सकती। विश्वासियों को इन महान सत्यों के विषय में एकजुट होना चाहिए। अन्य बातें भी हैं जो मौलिक नहीं हैं, परंतु फिर भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बाइबल शिक्षा का विषय हैं और उनका पालन करना आवश्यक है। अन्य कुछ विषय हैं जो अनावश्यक हैं। वे न तो सही हैं और न ही गलत। प्रभु प्रत्येक को स्वतंत्रता देता है कि वह अपने मन में उस विषय में पूर्ण रूप से यकीन कर ले।

1. मौलिक या बुनियादी बातें क्या हैं?

जब हम मौलिक बातों के विषय में बोलते हैं, तब हम निम्नलिखित का उल्लेख करते हैं:

पवित्र शास्त्र की प्रेरणा। बाइबल परमेश्वर का वचन है। *त्रिएकता।* एक ही परमेश्वर है जो सनातन रूप से तीन व्यक्तियों में विद्यमान है। इससे यह अनिवार्य रूप से प्रमाणित होता है कि यीशु मसीह परमेश्वर है। *देहधारण।* यीशु मसीह सिद्ध मनुष्य भी है। कल्वरी में मसीह की प्रतिस्थापक मृत्यु। वह पापियों के बदले में मरा। *उसका गाड़ा जाना, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण।* वह दफनाया गया, महिमान्वित देह के साथ तीसरे दिन फिर जी उठा, और स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है। *सुसमाचार।* उद्धार अनुग्रह से विश्वास के द्वारा, कामों के बगैर है। *द्वितीय आगमन।* मसीही फिर आ रहा है। भले ही सभी उसके लौटने की सारी बातों पर सहमत नहीं हैं, फिर भी यह सच्चाई अपने आप में विश्वास का मूल सिद्धान्त है। *उद्धार पाए हुओं की सार्वकालिक धन्यता। खोए हुओं का सनातन दंड।*

इन सिद्धान्तों के विषय में किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। हमें आग्रहपूर्वक उनके लिए लड़ना है। उनके विषय में पवित्र शास्त्र में स्पष्ट शिक्षा दी गई है। सुसमाचारीय कलीसिया

ने उन्हें सदियों से बरकरार रखा है। विवादग्रस्त विचारों को पाखण्डी करार दिया गया है। इन बहुमूल्य सत्यों के लिए विश्वासी मरने तैयार हैं। जो इन मौलिक बातों का इन्कार करते हैं उनके साथ हम संगति नहीं रख सकते।

2. महत्वपूर्ण भले ही मौलिक न हों

दूसरे वर्ग के विषय हैं जो भले ही मौलिक न हों, फिर भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। यीशु ने फरीसियों से कहते हुए इस प्रकार के भेद को सूचित किया था, *"तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है..."* (मत्ती 23:23)। दूसरे शब्दों में, व्यवस्था के कुछ भाग अन्य भागों से अधिक "प्रभावशाली" हैं। परंतु यीशु ने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि व्यवस्था की कम महत्वपूर्ण बातों का भी पालन करना अनिवार्य है... "चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।" इसलिए, नए नियम में, कुछ बातें है जो मौलिक नहीं हैं परंतु उनके लिए आज्ञापालन आवश्यक है। इन बातों के विषय में बाइबल बोलती है। उनमें से कुछ का वर्णन प्रभु की आज्ञाओं के रूप में किया गया है (1 कुरिन्थियों 14:37)। हमें उन्हें अनावश्यक नहीं कहना चाहिए या उन्हें ऐसा नहीं मानना है। इन विषयों में बपतिस्मा, तलाक और पुनर्विवाह, भविष्यवाणी की रूपरेखा, विश्वासियों की सनातन सुरक्षा, स्त्रियों का सिर ढांकना, कलीसिया में स्त्रियों की सार्वजनिक सेवकाई, आत्मा के वरदान, और कैल्विनवाद में प्रस्तुत पांच मुद्दे शामिल हैं। समस्या यह है कि मसीही लोगों के इन मामलों में भिन्न मत हैं। केवल एक ही सही विवेचन है, परंतु विश्वासी वह विवेचन या व्याख्या क्या है इस विषय में सहमत नहीं हैं। महान और धर्मी विश्वासी कभी संपूर्ण रूप से सहमत नहीं होते। हम इनमें से कुछ विषयों को देखेंगे जिस पर बाइबल शिक्षा देती है और जो महत्वपूर्ण हैं, भले ही उन्हें विश्वास की मौलिक बातें कभी नहीं माना गया।

बपतिस्माः बपतिस्मा के विधि और साधन के विषय में मसीही कलीसिया में काफी असहमति है। कुछ लोग डुबाकर बपतिस्मा देते हैं, कुछ लोग तीन बार डुबाते हैं, और कुछ लोग जल छिड़ककर बपतिस्मा देते हैं। कुछ लोगों की दृष्टि में बपतिस्मा मसीह के साथ उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरूत्थान में समानता दर्शाता है। अन्य लोग छिड़काव को पवित्र आत्मा के उतर आने के चित्र के रूप में देखते हैं।

आप सच्चे विश्वासी हो सकते हैं और इनमें से किसी भी मत का पालन कर सकते हैं, और यह आपकी संगति में रुकावट न बनने पाए। परंतु जब मण्डली किसी विषय पर अपना निश्चित मत स्वीकार कर लेती है, तब किसी को भी वैकल्पिक विचार लादकर मुश्किल खड़ी नहीं करना है। जब व्यक्ति बपतिस्मा द्वारा नए जन्म में विश्वास करता है, तब अलग बात हो जाती है, अर्थात् उद्धार पाने हेतु व्यक्ति को बपतिस्मा लेना चाहिए। या नन्हें बच्चे को बपतिस्मा देकर आप उसे मसीह का सदस्य और परमेश्वर के राज्य का वारिस बनाते हैं। यह झूठा सुसमाचार है, और इस सत्य का इन्कार है कि केवल विश्वास से उद्धार होता है। क्योंकि यह विश्वास के मौलिक सत्य के विपरीत है, इसलिए वह बाइबल पर विश्वास करने वाले विश्वासियों की संगतियों में बाधा उत्पन्न करता है।

तलाक और पुनर्विवाहः कुछ लोग कहते हैं, "तलाक का समय नहीं।" कुछ कहते हैं, "तलाक, परंतु पुनर्विवाह नहीं।" अन्य लोग कहते हैं, "विश्वासघात के लिए तलाक, परंतु पुनर्विवाह नहीं।" और कुछ लोग कहते हैं, "विश्वासघात के लिए तलाक और निर्दोष पक्ष को पुनर्विवाह की आज़ादी।" और भी कुछ लोग कहते हैं, "परित्याग के लिए तलाक।" विभिन्न मतों के लिए कोई अंत नहीं है, और संदेह की बात है कि जब तक हम यहां पृथ्वी पर हैं, तब तक इस विषय में कभी हमारा एक मत होगा। जल्द ही, प्रत्येक स्थानीय मण्डली को इस विषय में परमेश्वर का भय रखते हुए अपना एक दृष्टिकोण स्वीकार कर लेना चाहिए, और उसी का पालन करना चाहिए। विभिन्न व्यक्ति अलग व्याख्याओं का अनुसरण करते होंगे, परंतु उन्हें अपने विचारों को सार्वजनिक तौर पर या निजी तौर पर दूसरों पर लादने का प्रयास नहीं करना चाहिए, जिससे विभाजन उत्पन्न हो। यह भी कहा जा सकता है कि मण्डली एक दृष्टिकोण स्वीकार कर लेती है, उसके बावजूद प्राचीनों को फिर भी प्रत्येक मामले पर व्यक्तिगत रूप से विचार करना चाहिए। ऐसी पेचिदा परिस्थितियां आज विवाह संबंधों में उत्पन्न होती हैं कि कोई भी निर्दिष्ट नीति प्रत्येक मामले को सम्मिलित नहीं कर सकती।

भविष्यद्वाणी की रूपरेखाः कुछ विश्वासी हज़ार वर्षों (सहस्त्राब्दी) के राज्य के पहले वाला दृष्टिकोण रखते हैं, अन्य लोग बाद वाला, और कुछ लोग हज़ार वर्षों के समय के दौरान के दृष्टिकोण का पालन करते हैं। हज़ार वर्षों के राज्य से पहले वाले मत का पालन करने वालों में भी चार मुख्य मत हैं: कलीसिया का महाक्लेश पूर्व समय में उठा लिया जाना, महाक्लेश के बीच में उठा लिया जाना, क्रोध से पहले उठा लिया जाना, और महाक्लेश के बाद उठा लिया जाना। प्रत्येक दृष्टिकोण के साथ समस्याएं जुड़ी हैं। व्यक्ति इनमें से किसी भी मत का पालन कर सकता है, फिर भी वह अच्छा मसीही है। यह उचित है कि प्रत्येक को वह क्या विश्वास करता है जानना चाहिए, और उसमें आनंद मनाना चाहिए। परंतु यह भी उचित है कि हम इस बात को याद रखें कि कुछ धर्मी, ईमानदार विश्वासी हैं जो अन्य विचार रखते हैं। ये प्रामाणिक मतभेद हमें एक साथ रोटी तोड़ने से रोकने न पाएं। दूसरी ओर, जो अन्य मत रखते हैं, उन्हें मण्डली के भविष्यात्मक रवैय्ये का आदर करना चाहिए, और अपने विचारों का आग्रह नहीं करना चाहिए और उसके द्वारा कलह उत्पन्न नहीं करना चाहिए। जब कोई यह आग्रह करता है कि प्रत्येक को उसके अल्पसंख्यक दृष्टिकोण से सहमत होना चाहिए, तो परेशानी उत्पन्न होगी ही।

सनातन सुरक्षाः कई विश्वासी विश्वास करते हैं कि जब व्यक्ति का सचमुच नया जन्म हुआ है, तो वह अपना उद्धार कभी नहीं खोएगा। वे यह मानते हैं कि विश्वासी की सनातन सुरक्षा का इन्कार करने से मसीह के कार्य की यथेष्टता पर सवाल उत्पन्न होता है और यह विश्वास और कार्य को मिलाता है। अन्य कुछ लोग हैं जो प्रभु से प्रेम करते हैं और फिर भी सचमुच यह विश्वास करते हैं कि मसीही विश्वासी पाप के द्वारा अपना उद्धार खो सकते हैं। इन पवित्र जनों के साथ संगति करने से इन्कार करने का अर्थ हम जॉन वेस्ली के साथ और उस आत्मिक कद के लोगों के साथ रोटी नहीं तोड़ेंगे। फिर से हम प्रत्येक मण्डली से कहते हैं कि, "आप क्या विश्वास करते हैं और क्यों वह विश्वास करते हैं यह जानें। इस बात को मण्डली के अधिकृत उद्‌देश्य के रूप में स्वीकार करें," और जो लोग

भिन्न विश्वास रखते हैं उनसे कहें, "आप अलग मत रख सकते हैं, परंतु उसे सार्वजनिक तौर पर या निजी तौर पर न सिखाएं। यदि आप चर्चा करना चाहते हैं, तो प्राचीनों से बात करें।"

स्त्रियों का सिर ढांकनाः एक ओर वे लोग हैं जो मानते हैं कि सिर ढांकने के विषय में पौलुस की शिक्षा केवल उस संस्कृति के लिए थी, जिसमें वह रहता था। अन्य लोग इस बात का आग्रह करते हैं कि वे प्रभु की आज्ञाएं हैं, कि पौलुस उन्हें सृष्टि के क्रम और उद्देश्य पर आधारित करता है, और वे "स्वर्गदूतों के कारण" हैं, इसलिए हर समय के लिए हैं और केवल पौलुस के दिन की संस्कृति के लिए नहीं। प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि सिर ढांकना केवल कलीसिया की सभाओं के लिए है (और, यदि ऐसा है, तो कलीसिया की सभा क्या है?), उचित रीति से ढांकने में क्या आता है? आदि। यदि मण्डली के प्राचीन इस विषय पर नीति नहीं अपनाते, तो उलझन पैदा होगी। उन्हें यह बात पवित्र जनों पर छोड़ देना चाहिए कि पवित्र शास्त्र जो सिखाता है, उस पर वे क्या विश्वास करते हैं इसे स्पष्ट रूप से निवेदन करें।

महिलाओं की सेवकाईः स्त्री कलीसिया की सभा में कब गा सकती या बोल सकती है? आज दिए जाने वाले उत्तर कई हैं। पवित्र शास्त्र का यथासंभव पालन करने की सच्ची इच्छा के साथ, प्राचीनों को स्पष्ट, एक मत अपनाना चाहिए। ये प्रार्थनापूर्वक लिए गए निर्णय मण्डली की नीति बन जाती है।

चिन्ह् रूप वरदानः दूसरा विषय जिसके लिए मुश्किल उत्पन्न होने की संभावना है, वह करिस्मा संबंधी प्रश्न है। अन्य अन्य भाषाएं, चंगाई, भविष्द्वाणी करना वे वरदान प्रतीत होते हैं जिनके चारों ओर विवाद घिरा हुआ है। कैरिस्मैटिक लोगों के मध्य भी विभिन्न दृष्टिकोण बड़ी संख्या में हैं। हमें उन मसीही लोगों से प्रेम करना है और हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो हमारे साथ असहमत हैं, परंतु वह विषय विभाजन का कारण न बनने पाए। इसलिए, मण्डली को निर्णय लेना है कि इस विषय पर बाइबल सचमुच क्या सिखाती है। प्राचीनों को अधिकार भी है और ज़िम्मेदारी भी है कि उस किसी भी व्यक्ति का दृढ़तापूर्वक सामना करें, जो मण्डली में संघर्ष करने वाले और मण्डली की शांति के लिए खतरा उत्पन्न करने वाले मतों को सिखाने का आग्रह करते हैं।

कैल्विनवाद के पांच मुद्देः पांच मुद्दों पर विश्वास करने वाले कैल्विनवादी मनुष्य की पूर्ण भ्रष्टता, परमेश्वर का बिनशर्त चुनाव, सीमित प्रायश्चित्त (अर्थात् केवल चुने हुओं के लिए), अनिवार्य अनुग्रह, और पवित्र जनों का *विश्वास में टीके रहना* इन बातों में विश्वास करते हैं। बुद्धिमानी पूर्ण निर्णय लेने से पहले इन संज्ञाओं की यथार्थ परिभाषा अनिवार्य है। कई विश्वासी केवल पाचवीं बात स्वीकार करते हैं, यद्यपि वे उसे मसीह का धीरज कहना अधिक पसंद करेंगे। जो लोग अन्य लोगों के साथ असहमत हैं, वे आग्रह करते हैं कि मसीह का प्रायश्चित्त सबके लिए पर्याप्त और उपलब्ध था। वे यह भी याद दिलाते हैं कि कैल्विनवाद मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा को नामुमकिन कर देता है, जबकि मसीह ने उद्धार के मामले में अखंडित रूप से मनुष्य की इच्छा से अनुरोध किया। आत्मिक मानसिकता रखने वाले, आत्माओं को जीतने वाले मसीही इस विवाद के दोनों पक्ष में हैं। जब व्यक्ति उसके मत स्वीकार न किए जाने पर उन्हें आगे बढ़ाने का आग्रह करता है, या जब वह एक ही विषय का राग आलापता

है, मानो वही बाइबल का एक मात्र सिद्धांत हो, तो विरोध की आतिषबाजियां शुरू हो जाती हैं। उसे खामोश कर दिए जाने पर वह मण्डली छोड़कर जाता है, और अपने साथ दूसरों को भी छोड़ जाने के लिए उकसाता है। बुद्धि का मार्ग उस विषय पर अपने विश्वास का निजी रूप से आनंद लेना है, परंतु उन्हें दूसरों पर इस प्रकार नहीं लादना है मानो वे संपूर्ण सत्य प्रगट करते हों।

इन सारे विषयों पर जो महत्वपूर्ण हैं, परंतु मौलिक नहीं है, मण्डली को अपनी अधीनता में अपना स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। चिंताशील अध्ययन और शोध के बाद, बहुत प्रार्थना के बाद, और पवित्र शास्त्र का यथासंभव निकटता से पालन करने की प्रमाणिक इच्छा के साथ ऐसा किया जाना चाहिए। यदि मण्डली ऐसा दृष्टिकोण अपनाती है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है, तो समझने लायक बात है कि विश्वासी छोड़ देना चाहेंगे। यदि ऐसा है, तो उन्हें यह बड़ी शालीनता के साथ करना चाहिए, और अपने साथ दूसरों को ले जाने की कोशिश न करें। प्रत्येक मण्डली स्वतंत्र है, अर्थात् केवल प्रभु के प्रति ज़िम्मेदार है, इसलिए अन्य कोई कलीसिया को या बाहरी व्यक्ति इन महत्वपूर्ण सिद्धांतों के संबंध में नीति निर्धारण नहीं कर सकता। हमें उन लोगों के प्रति प्रेम रखना है जो इन महत्वपूर्ण मामलों पर हमसे असहमत हैं। मसीही होकर भी निम्न स्तर की शिक्षा पाना संभव है और हमें हमेशा यह याद रखना है कि यदि हम खुद को परमेश्वर की सिद्धता के प्रकाश में देख सकें, तो हम जानेंगे कि ज्ञान हमारे साथ नहीं मिट जाएगा। हमें परमेश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक चलना है।

3. अनावश्यक बातेंः

उपर्युक्त विषयों के अलावा, अन्य कुछ बातें हैं जिन्हें स्पष्ट रूप से अनावश्यक या गैरज़रूरी करार दिया जा सकता है। जब इनकी बात आती है, तब बिना संघर्ष के और विभाजन उत्पन्न किए असहमत होने की हमेशा आज़ादी होनी चाहिए। यहां पर सिद्धांत की दूसरा वाक्य लागू होता हैः 1. मौलिक बातों में एकता। 2. गैरज़रूरी बातों में आज़ादी। 3. सब बातों में, प्रेम।

अनावश्यक विषयों में कुछ हैं जिस पर नया नियम विशिष्ट रूप से विधान नहीं बनाता, परंतु कुछ लोगों की दृष्टि से उसमें महत्वपूर्ण सिद्धांत सम्मिलित हैंः मतदान और सैनिक सेवा; प्रभुभोज में मद्य या दाखरस; एक प्याला या अलग अलग प्याले; और कलीसिया की आराधना में संगीत वाद्यों का उपयोग।

मतदान और सैनिक सेवा – इन विषयों में, प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु के सामने जाकर खुद के लिए उसकी इच्छा जानने का प्रयास करना है। प्रत्येक को अपने मन में पूरा यकीन हो जाना चाहिए। ऐसा होने के बाद, उसे उसके मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए और अन्य लोगों को ऐसा करने की अनुमति देना चाहिए।

प्रभुभोज में मद्य या दाखरस – हमें इस विषय में हमें वास्तविक बने रहना है! दोनों पक्ष में उचित तर्क हैं। इसमें संदेह नहीं है कि जब प्रभु ने प्रभुभोज की स्थापना की, तब उसने खमीर उठे हुए अंगूर के रस और अखमीरी रोटी का उपयोग किया (दाखरस तब तक नहीं आया जब तक कि पाश्चर ने पाश्चरीकरण का विकास नहीं किया)। परंतु जिन लोगों को शराब से समस्या है उन्हें मद्य ठोकर दिलाता है, और हमें कभी ऐसा कुछ नहीं करना है जो दूसरों को ठोकर दिलाता है या ठेस पहुंचाता

है (1 कुरिन्थियों 8:13)। उसी तरह, संसार में ऐसे स्थान हैं जहां पर मद्य उपलब्ध नहीं है। आखिरकार, रोटी और दाखरस महत्वपूर्ण नहीं हैं। हमें उनसे परे स्वयं प्रभु के निकट जाना है।

एक प्याला या अलग अलग प्याले – फिर से, इस विषय के दो पक्ष हैं। एक ओर, एक प्याला मसीह के देह की एकता का प्रतीक है। परंतु जैसे जैसे मएडली बढ़ती जाती है 2,3,4 प्यालों का भी उपयोग करना असामान्य बात नहीं है। यदि चार उचित हैं, तो चालीस क्यों नहीं हैं? अलग अलग प्यालों के लिए विवाद एक ही प्याले से रोग के फैलाने के खतरे पर आधारित है, क्योंकि दाखरस में जन्तुओं को मारने हेतु पर्याप्त अल्कोहोलिक तत्व नहीं होते। हर हालत में, यह मौलिक महत्व का विषय नहीं है। बल्कि जो हमारे साथ असहमत हैं, उन्हें यह प्रेम और आदर प्रकट करने का अवसर प्रदान करता है।

संगीत वाद्यों का उपयोग – फिर से यहां मण्डली को अपनी खुद की नीति स्वीकार करने आज़ादी होनी चाहिए। किसी भी मुख्य संप्रदाय में कभी वाद्य के उपयोग को विश्वास के मौलिक तत्व के रूप में नहीं सोचा है। पौलुस के शब्दों को हानि न पहुंचाते हुए, हम उनका भावानुवाद प्रस्तुत कर सकते हैं। "क्योंकि मसीह यीशु में न तो ऑर्गन कुछ है, और न ही ऑर्गन न होना कुछ है, परंतु नई सृष्टि है" (देखें गलातियों 6:15)।

सभाओं का समय – स्पष्ट रूप से परमेश्वर ने यह निर्णय स्थानीय मण्डली या उसके अगुवों के हाथों में रख छोड़ा है। कभी कभी स्थानीय परिस्थिति के अनुसार बदलाव करने पड़ते हैं। एक बस्ती में उद्धार न पाए हुओं को सुसमाचार सुनाने का उत्तम समय दूसरी बस्ती के लिए उत्तम समय न हो। पारंपरिक समय पवित्र नहीं हैं। हमें दर्शाए जाने पर परिवर्तन करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

आप बनाम तुम – कई पुराने मसीही परमेश्वर को आदरभाव की वजह से आप या आपका कहकर सम्बोधित करना पसंद करते हैं। युवा विश्वासी आदर के अभाव में नहीं परंतु घनिष्ठता के बोध से तू शब्द का इस्तेमाल अधिक पसंद करते हैं। यह बाइबल की समस्या नहीं है। नए नियम की मूल भाषा में औपचारिक तू और परिचित के बीच में कोई भेद नहीं है। परंतु जब किंग जेम्स संस्करण का प्रकाशन हुआ, तब लोग एकदूसरे को आप कहकर पुकारते थे। इस प्रकार किंग जेम्स संस्करण में यीशु यहूदा से इस प्रकार कहता हुआ बताया गया है, "क्या आप चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाते हैं?" यह अवश्य ही आदर की भाषा नहीं थी? निष्कर्ष यह है कि: मण्डली को इतना बड़ा होना चाहिए कि डरावना वातावरण तैयार न करते हुए या लोगों को न खदेड़ते हुए दोनों शब्दों की अनुमति दे सके।

बाइबल संस्करण – हाल ही के वर्षों में विभिन्न संस्करणों की प्रचुरता के परिणामस्वरूप इस विषय पर काफी वादविवाद गर्माता रहा है। कुछ विश्वासी सच्चे मन से विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का सत्य जोखिम में है। अन्य लोग यह प्रतिपादन करते हैं कि सुविख्यात संस्करणों के मध्य मतभिन्नताएं छोटी हैं और वे विश्वास के किसी सिद्धान्त को प्रभावित नहीं करतीं। हम भले ही किसी अंग्रेज़ी संस्करण को पसंद करें, हम यह आग्रह नहीं कर सकते कि वही एकमात्र सही संस्करण है, क्योंकि तब कोई भी विदेशी भाषा के संस्करण सही नहीं होंगे। व्यक्तिगत मसीहियों को उनका प्रिय संस्करण रखने की अनुमति दी जाए। सार्वजनिक तौर पर बोलते हुए, यदि सामान्य तौर पर संबंधित संस्करण

उपयोग में नहीं है, तो व्यक्ति को उस संस्करण का नाम घोषित करना चाहिए जिससे वह पढ़ रहा है। यह सरल शिष्टाचार है।

भोजन, पेय, और दिन मनाना – ये नैतिक उपेक्षा के अन्य मामले हैं। ये ऐसे कार्य हैं जो अपने आप में न तो सही हैं, और न गलत। इन गैर–ज़रूरी बातों के विषय में पौलुस लिखता है: "हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले" (रोमियों 14:5ब)। वह विश्वास के मौलिक सिद्धान्त के विषय में ऐसा नहीं कहता, परंतु नैतिक उपेक्षा के विषय में हर एक के पास अपने ही मन में पूर्ण यकीन कर लेने का स्वातंत्र्य है। "सब वस्तुएं मेरे लिए उचित हैं," (1 कुरिन्थियों 6:12; 10:23)। यह केवल उन बातों या कार्यों का उल्लेख करता है जिसकी परमेश्वर के वचन में मनाही नहीं की गई है। "सब कुछ शुद्ध तो है," (रोमियों 14:20ब)। "शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तु शुद्ध है," (तीतुस 1:15)। इसका अर्थ पूर्णतया सभी बातें नहीं हो सकता, परंतु वे सभी बातें जो अपने आप में न तो सही हैं, और न ही गलत। "मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं," (रोमियों 14:14अ)। विषय भोजन है। पुराने नियम की अर्थव्यवस्था में कुछ अन्न अशुद्ध होते थे। अनुग्रह के समय में, शुद्ध और अशुद्ध के बीच का अंतर नहीं रहा (मरकुस 7:19 एन ए एस बी)। यह स्पष्ट होना चाहिए कि इन अनुच्छेदों में पौलुस अनावश्यक बातों के विषय में लिख रहा है। वह परमेश्वर के लोगों में भिन्न राय की अनुमति देता है। फिर भी अक्सर इन नगण्य विषयों पर गंभीर फूट पड़ती है। क्या प्रधान है और क्या गौर है यह पहचानना हमें सीखना है।

निष्कर्षः–

आइये, हम भू बातों को संक्षेप में दोहराये। किसी भी मसीही मण्डली में एकमत होना चाहिये। पवित्रशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण मसले जो भले ही मूलभूत मसले न हो, उन पर प्रत्येक मण्डली परमेश्वर के भय में एक नीति तय करे कि वे क्या मानेगे। कोई भी विपरीत शिक्षा, सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, यदि झगड़े और विभाजन लाती है तो उसे अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। यदि कोई व्यक्ति मण्डली की नीति से असहमति रखता हे तो उसे अपनी भावनाये परमेश्वर की शरण में विश्वास योग्यता से रख देनी चाहिये, और यह कार्य चुपचाप एवं शांति बनाये रखते हुये करना चाहिये।

हमने कुछ मसलो की चर्चा की है जो महत्वपूर्ण नहीं है, उन पर आपसी समझौता (उग्हा।ह् ऊंव) करके एकता और शांति बनाकर रखनी चाहिये (इफि. ४: १–६) हो सकता है इन क्षेत्रों में हमारे विश्वास पक्के हो, परन्तु हमें स्मरण रखना होगा कि मसीह के समान अन्य पवित्र लोग है जो हमसे सहमति नहीं रखते। इस कारण वश हमें अधिक रुढ़िवादी बनने से बचना होगा। क्रॉमवेल ने कहा था, ''मैं तुम्हे परमेश्वर की दया स्मरण कराके विनम्र निवेदन करता हूं कि हम यह विचार रखें कि हम गलत हो सकते है '' जब भी किसी ने डॉ. आयरन साइड से किसी अमहत्वपूर्ण मसलें पर उलझने का प्रयास किया उन्होंने उत्तर दिया, ''ठीक है, भाई, जब हम स्वर्ग जाएंगे, हम में से कोई एक गलत होगा – और अधिक संभावना है कि मैं गलत हूंगा '' आग तुरन्त बुझ जाती थी क्योंकि डॉ. आयरन साइड उसे हवा नहीं देते थे। (पढे, नीतिवचन २६:२०) जितने भी विषयों पर हमने चर्चा की है उन पर एक मण्डली को स्पष्ट विचार या नीति तय करनी चाहिये। ऐसा न करने पर गड़बड़ियां होती है।

विश्वासी सामान्य रुप में अनुसारण के लिये एक मार्गदर्शन चाहते है। जब परमेश्वर के सामने देर तक रुककर अगुवे किसी नीति (या विचार) को स्वीकार करते है तब उसमेंकहा जा सकता है कि उनका निर्णय स्वर्ग से अनुमोदित है (मत्ती १६:१९ य १८: १८) यदि वह पवित्रशास्त्र के किसी निर्देश, आज्ञा या नियम के विपरीत नहीं है।

किसी अमहत्वपूर्ण मसले पर असहमति के कारण मण्डली छोड़ देना कभी भी अच्छी बात नहीं होगी। ऐसी सहभागिता हो सकती हे जिनमें इन मसलों पर पूर्ण सहमति न हो, पर जहां प्रेम, और टूटापन, प्रार्थना और धीरज, विनम्रता और सहनशीलता हे, मतभेदों को सर्वमान्य रुप में हल किया जो सकता है। विश्वासीजन आपसी सहमति तोड़े बिना भी असहमत रह सकते है। मण्डली को छोड़ना केवल तब उचित माना जा सकता हे जब मण्डली में बने रहने पर व्यक्ति को यह महसूस हो कि वह प्रभु के प्रति अविश्वास योग्य है अथवा मण्डली की शांति भंग किये बिना उसका वहां रहना संभव न हो। किंतु तब भी हमारा तीसरा और रहकाल एवं परिस्थिति में प्रमाणित सूत्र – प्रेम – हर बात में काम करता है।

टिप्पणियां

1 इस पुस्तक में हमने पुरुष सर्वनामों का अनन्य रूप से उपयोग किया है। हमें आशा है कि महिलाएं खुद को उपेक्षित नहीं समझेंगी। ऐसा हमारा उद्‌देश्य नहीं है। अधिकतर शिक्षा उन्हें और पुरुषों को भी लागू है। यह है कि लगातार उसका, उसकी जैसे शब्दों का बार बार उपयोग एकसुरा हो जाता है।यह अनावश्यक भी है क्योंकि सामान्य तौर पर ऐसा माना जाता है कि पुरुष सर्वनाम का उपयोग स्त्री और पुरुष दोनों के लिए जातीय हो जाता है। वृद्ध स्त्रियों को स्पष्ट रूप से सिखाया गया है कि वे भी शिष्य बनाने वाली हों (तीतुस 2:4)।

2 Tozer, A. W., *Born After Midnight,* Camp Hill, PA: Christian Publications, 1989, p. 141.

3 Tozer, A. W., *That Incredible Christian,* Camp Hill, PA: Christian Publications, 1964, p. 87.

4 Adapted from oral message by Harry Foster, English Bible teacher.

5 Shields, T. T. Dr., *The Herald of His Coming,* August 1981, p. 1.

6 A. Naismith, *1200 Notes, Quotes, and Anecdotes,* London: Pickering and Inglis Ltd., 1963, p.83.

7 Sanders, J. O., *On To Maturity,* Chicago: Moody Press, 1962, pp. 132-133.

8 Marsh F, E, *Fully Furnished,* Glasgow, Scotland: Pickering & Inglis, n.d., p.305.

9 The last clause of verse 16 KJV (for many be called, but few chosen) are omitted in many versions.

10 Meyer, F. B., *The Heavenlies,* Westchester, IL,:Good News Publishers, p. 50).

11 किंग जेम्स में लिखा गया है, "स्वामी ने अधर्मी भण्डारी को सराहा।" यह प्रभु यीशु का उल्लेख करता है या उस व्यक्ति के नियोक्ता को यह स्पष्ट नहीं है। वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। प्रशंसा सच होगी, चाहे जिसने की हो – जैसा कि हम देखेंगे।

12 *Decision Magazine,* December 1981, p. 12.

13 Jowett, J. H., *God Our Contemporary,* New York: Fleming Revell Co., 1922, p. 147.

14 *TIME Magazine,* December 13, 1976, pp. 20-41.

15 Ronald J. Sider, *Rich Christians in an Age of Hunger*, Downers Grove, IL: Intervarsity Press, 1977, p. 123.

16 परमेश्वर के कुछ अनुकूल नियम उसके लोगों की स्वास्थ्य रक्षा के लिए तैयार किए गए थे। यहां पर, उदाहरण के तौर पर, यहां पर चरबी खाने से इसलिए मना किया गया है ताकि लोगों को धमनी काठिन्य से बचाने के लिए किया गया था इसका कारण अतिरिक्त कोलोस्ट्रोल का बनना है। परंतु इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को यह सिखाना था कि परमेश्वर को उत्तम दें।

17 Babcock, Floyd C., *Quarterly News Letter, Winter 1991.*

18 *Our Daily Bread,* Radio Bible Class, Grand Rapids, MI: October 18.

19 Ibid. September 16.

20 Ibid. April 12, 1988.

21 Ironside, H. A., *The Keswick Convention,* London: Pickering & Inglis, 1939, p. 119.

22 *Our Daily Bread,* Radio Bible Class, Grand Rapids, MI, August 18, 1992.

23 The Keswick Week 1946, London: Marshall, Morgan and Scott, 1946, pp. 128-129.

24 Farrar, Steve, *Finishing Strong,* Sisters, OR: Multnomah Books, 1995, pp. 158.

25 Ibid. pp. 162-3.

26 Meyer, F. B., *The Christ Life for Your Life*, Chicago: Moody Press, n.d., pp. 70-72.

27 Roger Steer, *George Mueller: Delighted in God,* Wheaton, IL: Harold Shaw Publishers, 1981, p. 136.

28 From *Points to Ponder, Anglican Digest,* Quoted in *National Enquirer*, quoted in *Reader's Digest*, Nov. 1977, p. 229.

29 Sanders, J. O. *Spiritual Leadership,* Chicago: Moody Press, 1975, pp. 90-91.

30 Hession, Roy, *The Calvary Road,* Fort Washington, PA: Christian Literature, Crusade, n.d., pp. 58-59.

31 Sanders, J. Oswald, *Shoe-Leather Commitment,* Chicago: Moody Press, 1990, p.139.

32 Farrar, Steve, *Finishing Strong,* Sisters, OR, Multnomah Press, 1995, p. 6.

33 Adapted from *Doing Time with Jesus* by the author, published by Emmaus Bible College, Dubuque, Iowa, pp. 23-25.

34 Sanders, J. O., *Shoe Leather Commitment,* Chicago: Moody Press, 1990, p. 56-57.

35 Stewart, James S. *King For Ever,* Nashville, TN: Abingdon, 1973, pp. 60-61.

36 Haddon W. Robinson, *Biblical Preaching,* Grand Rapids, MI: Baker Book House, 1980, p. 144.

37 Foster, Richard, *Freedom of Simplicity,* London: Triangle, SPCK, 1981, pp. 94-95.

38 Sanders, J. O., *Shoe Leather Commitment,* Chicago, IL: Moody Press, 1990, p. 31.

39 Vernon Schlief, *Our Great Adventure in Faith*, Grand Rapids, MI: Beeline Books, 1976, p. 13.

40 Sanders, J. O., *On To Maturity,* Chicago: Moody Press.

41 Wiersbe, Warren W., *The Bible Exposition Commentary,* Vol. 2, Wheaton, IL: Victor Books, 1989, p. 111.

42 Henrichsen, Walter A., *Disciples are Made—Not Born,* 1974:Victor Books, p. 100.

43 Quoted in *Reader's Digest*, July 1993, p. 149,

44 Op. Cit., p. 100.

45 Author unknown.

46 R. A. Matthews, *Born for Battle,* Bromley, Kent, England: STL Books, 1978. P. 14.

47 Op. Cit., p. 72.

48 Macpherson, Ian, *The Burden of the Lord,* Nashville, TN: Abingdon, 1951, p. 14.

49 इस पुस्तक में*असेम्ब्ली* इस ॉब्द का उपयोग *कलीसिया* के बदले में किया गया है।*मण्डली* या असेम्ब्ली लोगों का समूह है जबकि *कलीसिया* या चर्च का सामान्य तौर पर अर्थ है, इमारत।

50 Lamb, Jonathan, *Truth on Fire,* Keswick Ministry 1998, Carlisle, England: OM Publishing, 1998, p. 240.

51 *Barnes on the New Testament,* Vol. VIII, Thessalonians-Philippians, p. 155.

52 *The Expositor's Bible, Colossians and Philemon,* London: Hodder & Stoughton, 1903, pp. 338-330.

53 *Keep in Step with the Spirit,* Old Tappan, NJ: Fleming Revell Co., 1984, p. 29.

54 *God's New Society, The Message of Ephesians*, Downer's Grove, IL: InterVarsity Press, 1979, p. 167.

55 *The Measure of Your Faith,* p. 21.

56 Ford, Leighton, *The Christian Persuader*, NY*:* Harper and Row, 1966, p. 49.

57 Jones, E. Stanley, *The Reconstruction of the Church—On What Pattern?.* Nashville, TN: Abingdon Press, 1970, pp. 42-43.

58 Ibid., p. 109.

59 Ibid., p. 46-47.

60 Quoted by E. Stanley Jones in *Conversion,* Abingdon Press, 1959, p. 219.

61 Ford, Leighton, *The Christian Persuader, NY: Harper & Row, 1966,* p. 46.

62 Parshall, Phil, *New Paths in Muslim Evangelism,* Grand Rapids, MI: Baker Book House*, 1980,* p. 169.

63 Gooding, David, *Freedom Under God,* Bath, England: Echoes of Service, 1988, p. 18.

64 Stewart, James, *Evangelism,* Asheville, N.C: Revival Literature, 1955, p. 14..

65 Paul Vitz, quoted by Dave Hunt, *The Seduction of Christianity,* Eugene, OR: Harvest House Publishers, 1985, p. 205.

66 Elisabeth Elliot, *Shadow of the Almighty,* New York: Harper Collins, 1989, p. 115.

67 Bosch, H. G., *Our Daily Bread,* Grand Rapids, MI:Radio Bible Class, August, 17. 1992.

68 Bosch, H. G., *Our Daily Bread,* Grand Rapids, MI: Radio Bible Class, Sunday, August 17.

69 Quoted by Tony Campolo in tape, *It's Friday. Sunday's a Coming.*

70 Taylor, Mrs. Howard, *Hudson Taylor in Early Years. The Growth of a Soul,* London: China Inland Mission, 1921 p. 347.

71 Swindoll, Charles, *Growing Strong in the Seasons of Life,* Portland, OR: Multnomah Press, 1983, pp. 105-106.

72 Farrar, Steve, *Finishing Strong,* Sisters, OR: Multnomah Books, 1995, pp. 127-128.

73 J. H. Jowett, *The Preacher: His Life and Work,* New York: Hodder and Stoughton, 1912, pp. 21-22.

74 Macpherson, Ian, *The Burden of the Lord,* Nashville, TN: Abingdon Press, 1955, p. 14.

75 Source unknown.

76 Stewart, James A., *Evangelism,* p. 14.

77 Jowett, J. H., *The Preacher: His Life and Work,* pp. 236-7.

78 *Hearts Afire,* Westwood, NJ: Fleming H. Revell Co., 1952, pp. 59-60.

79 Lang, G. H., *Anthony Norris Groves,* London: The Paternoster Press, 1949, p. 275.

80 Schaefer, Edith, *L'Abri,* Westchester IL: Crossway Books, 1992, p. 126.

81 Mackintosh, C. H., *Living by Faith,* p. 260.

82 Mackintosh, C. H., *Miscellaneous Writings,* further documentation unavailable.

83 Mackay, W. Mackintosh, *The Men Whom Jesus Made,* London: Hodder and Stoughton, 1924, p. 187.

84 Elisabeth Elliot, *Shadow of the Almighty,* New York: Harper and Brothers, 1958, pp. 58-59.

85 Taylor, Bishop John, *The People and the King (Living in Hope),* Bromley, Kent, England: STL Books, n.d., p. 98.

86 Quoted in *Money, Sex, and Power*, Ronald Sider, San Francisco: Harper & Row, 1985, p. 180

87 Coates, C. A., *An Outline of Mark's Gospel and Other Ministry,* Sussex, England: Kingston Bible Trust, 1964, p. 30.

88 Ralph Shallis, *From Now On*, Bromley, Kent, England: STL Books, 1973, p. 143.

89 Francis A. Schaeffer, *No Little People* (in the complete works of Francis A Schaeffer), Westchester, IL: Crossway Books, 1982, Vol. 3, page 9).

90 James S. Stewart, *King For Ever*, Nashville: Abingdon, 1975, p. 91.

91 Samuel Ridout, *Lectures on Judges and Ruth,* NY, Loizeaux Bros., 1958, p. 125.

92 G. H. Lang, *Anthony Norris Groves*, London: Paternoster Press, 1949, p. 66.

93 Schaefer, Edith, *L'Abri*, Westchester IL: Crossway Books, 1992, p. 126.

94 Ray Williams, *Why this Way?,* Echoes of Service Magazine, February 1984, p. 75.

95 Donald Fox, The White Fox of Andhra, Philadelphia: Dorrance and Co., 1977, p. 153.

96 Dan Crawford, *Your Salary*, Assembly Annals Magazine, June 1959.

97 From *Dun's Review and Modern Industry*

98 *The Harvester*, February 1963, p. 17.

99 From *The Revelator*.

GOSPEL'S POWER & MESSAGE

PAUL WASHER

"Praise God for the gospel and books like this that help us know, understand, and love it more deeply."

- Voddie Baucham -

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

If You Bite & Devour One Another

Alexander Strauch

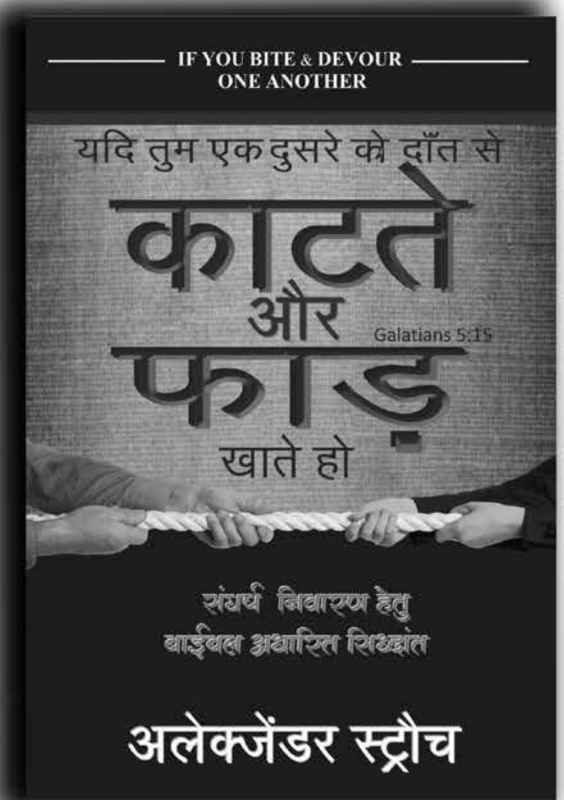

Conflict is all too common where two or more people are present. The church is no different. If You Bite & Devour One Another is perhaps the only Christian book of its kind dealing with conflicts in the church.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

Biblical Eldership

Alexander Strauch

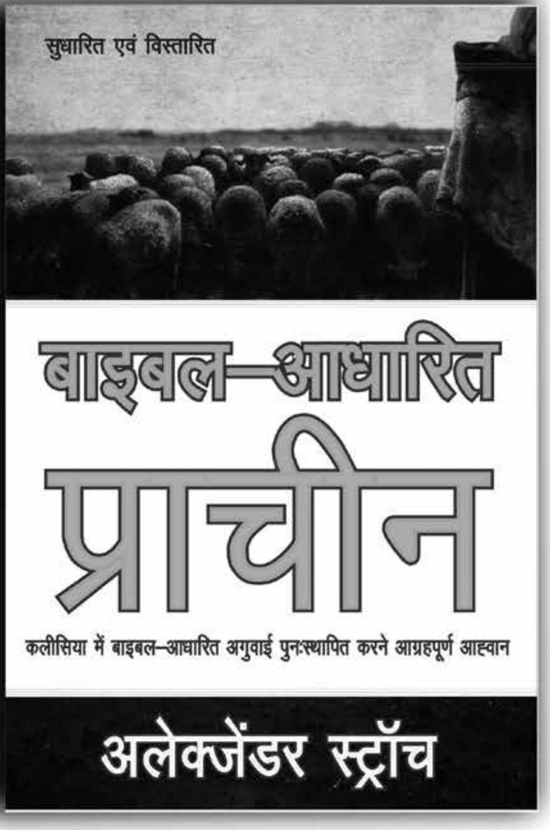

Do you want a Biblical Church? It all starts with Biblical leadership. With over 200 000 English copies sold, this comprehensive look at the role and function of elders/pastors shows us from scripture how your church can achieve this.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:

www.alethiabooks.com

THE GOSPEL CALL & TRUE CONVERSION

PAUL WASHER

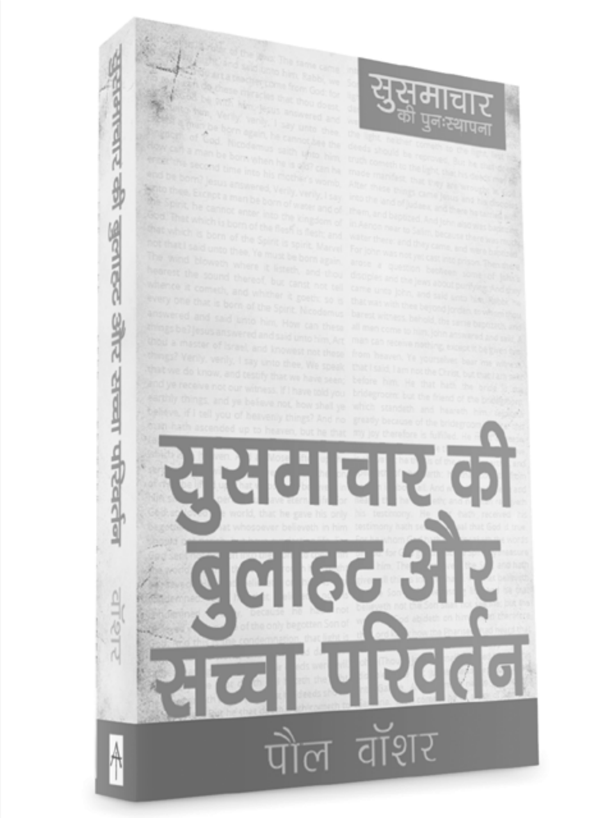

"In *The Gospel Call and True Conversion*, Paul Washer brilliantly and clearly helps the reader understand truth, carefully opening the Scriptures and explaining how the power of the gospel ought to impact our lives as Christians."

Greg Gilbert, author & senior pastor of Third Avenue Baptist Church

ALETHIA Publications

For more information about our publications, or to order, please visit our website:

www.alethiabookshop.com